# وفاء الوفا

# باخبار دار المصطفی صلی اللہ علیہ وسلم

## جلد ٤

تالیف

**الشیخ العلامۃ نور الدین علی بن احمد السمہودی**

المتوفی سنہ ۹۱۱ھ

مترجم

**شاہ محمد چشتی**

نظر ثانی

**محمد محسن**

ادارہ پیغام القرآن
۴۰۔ اردو بازار، لاہور, Ph:042-7323241

# وفاء الوفا
# باخبار دار المصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم

تالیف

الشیخ العلامۃ نور الدین علی بن أحمد السمہودي

المتوفی سنہ ۹۱۱ھ

مترجم:
شاہ محمد چشتی

نظر ثانی:
محمد محسن

حصہ چہارم

ادارہ پیغام القرآن
۴۰۔ اردو بازار ○ لاہور ☎ 042-7323241

# فہرست حصہ چہارم

عنوان صفحہ نمبر
فصل نمبر۸ 289
حرف الف 289
آرام 289
آره 289
آلقه 290
آبار اور اُبَیر 290
اَبرق خترب 290
اَبرقُ الذّاث 290
اَبرقُ الغرّاف 290
اُبلی 291
اَبواء 291
اَلاَثمه 292
اُثال 292
اَثایه 292
اُثبَه 292
اُثَیفِیه 293
اُثَیل 293
اُجرد 293
اَجشّ 293
اَجفَر 294
اُجُم بنو ساعده 294
اَحامر 294
اَحباب 294
اَحجار الزّیت 294
اَحجار المراء 296

عنوان صفحہ نمبر
اُحُد 296
اَلاُحیَاء 296
اَلاَخَارِج 296
اَخزَم 296
اَلاَخُضَر 296
اَدیه 296
اَذَاخِر 296
اَذبَل 297
اُرَابِن 297
اَرَاك 297
اَرثَد 297
اَرجَام 297
اَرحَضِیَّه 297
ارض جابر 297
اَروی 298
اُرُوم 298
اُرَیکَة 298
اُسقُف 298
اَسوَاف 298
اَشَاقِر 300
اَشعَر 300
اَشنَف 300
اَشیق 300
اَضَاةُ بَنِی غِفَّار 300
اُضَاح 300

اَضَافِر 300
اِضَم 301
اَلْاُطُوْل 301
اَعشار 301
اَعْظُم 302
اَعْماد 302
اَعْواف 302
اَلْاَعْوَص 302
اَغْلَب 302
اَفَاعِيَة 303
اُفْرَاق 303
اَقْلَس 303
اَقْعَس 303
اُكْحَل 303
اَلْاَبُ 303
اَلْبَن 303
اَلْهَان 304
اُمُّ الْعيال 304
اَمَجْ 304
ذُوْاَمَر 305
اِمَّرَه 305
اِنسان 305
اَنْعُم 305
اَهَاب 306
ذُوْاَوَان 306
اَوْسَاط 306
اَيِّد 306

حَرْفُ الباء

بِئرِ اَرْمٰی 307
بئر اَلْيَة 307
بئر جُشَم 307
بئر الحَرّه 307
بئر خَارِجَة 308
بئر خُرِيف 308
بئر الخصی 308
بئر خُطْمَة 308
بئر دُرَيْك 308
بئر ذُرْوَان 308
بئر رِئَاب 310
بئر ركانه 311
بئر زمزم 311
بئر زياد 311
بئر السَّائب 311
بئر سميحه 311
بئر شَدّاد 311
بئر عائشه 311
بئر عَذْق 311
بئر عروه بن زُبَيْر 312
بئر ذَاتُ الْعَلَم 312
بئر غَامِر 312
بئر غَدَق 312
بئر فاطمه 312
بئر فُجَّار 313
بئر مِدْرٰی 313
بئر مَرَق 313
بئر مُطَّلِب 314
بئر مَعْرُوْنَه 314
بئر اَلْمَلِك 315

| | | | |
|---|---|---|---|
| بئر الهجيم | 316 | بَطن إضم | 321 |
| بأُلَى | 316 | بَطن ذی صُلب | 321 |
| بتراء | 316 | بَطن نَخل | 321 |
| بَجَرَات | 316 | بُطَیحان | 321 |
| بجدان | 316 | بعاث | 321 |
| بُحرَان | 316 | بُعبح | 322 |
| بَخرَج | 317 | بُغَیبِغَه | 322 |
| بَدَا | 317 | بَقّال | 323 |
| بدائع | 317 | بُقعَاء | 324 |
| بَدر | 317 | بُقع | 324 |
| برَاق | 318 | بقيع بطحان | 324 |
| برَاق خَوره | 318 | بَقیع خَبجَبَه | 324 |
| برَاق خَبت | 318 | بَقیع الخیل | 325 |
| بِرَام | 318 | بقیع الزبیر | 325 |
| بِرثان | 318 | بقیع الغرقد | 325 |
| بَرج | 318 | بکرات | 326 |
| برریان | 319 | بَلَاط | 326 |
| بُرق | 319 | بَلاکِث | 326 |
| بُرقَة | 319 | بُلحان | 326 |
| بِرک | 319 | بُلدود | 326 |
| برکة | 319 | بَلدَة اور بُلَیدَة | 326 |
| بُرمَه | 319 | بواطان | 327 |
| برود | 319 | بویرمه | 327 |
| بزرَه | 319 | بویره | 327 |
| بزوراء | 320 | بَیداء | 328 |
| بصه | 320 | بَلیسان | 329 |
| بضیع | 320 | حَرفُ التّاء | 329 |
| بطحاء | 320 | تاراء | 329 |
| بطحان | 320 | تبوک | 330 |

نُختم 331
تُربان 331
تَرعه 331
تُرن 331
تُريم 331
تسرير 332
تُضَارُع 332
تِعَار 332
تَعَانِيق 332
تَعهَن 332
تُمَنى 333
تَناضِب 333
تَهمَل 333
تَيدَدُ 334
تَيس 334
تَيم 334
تَيماء 334
حَرفُ الثَّاء 334
ثاجّه 334
ثافل 334
ثِبَار 335
ثُجل 335
ثَرَا 335
ثُرَيّا 335
ثُعال 335
ثُغُرَه 335
ثُمَام 335
ثَمغ 335
ثنيّة البول 336
ثَنيّة الحوض 336
ثَنيّة الشَّريد 337
ثَنيّة العاير 337
ثَنيّة عَثعُث 337
ثَنيّة مِدران 337
ثَنيّة الُمِرّة 337
ثَنيَّة الوَداع 337
ثَوُر 341
ثَيب 341
حَرفُ الجِيم 341
الجَار 341
جَاعِس 342
جَبَّار 342
جَبَّانَه 342
جَبَل بنى عُبَيد 342
جَبَل جُهَينه 342
جَبُوب 342
جُثا 342
جَشجَاثَه 343
جَحَّاف 343
جُحفَه 343
جَداجد 343
جُدّالاَثافى 343
جُدّالهَوالى 343
ذُوالجدُر 343
جُذمَان 344
جَرَادِيح 344
جُرُف 344
جرّ هشام 345

| | |
|---|---|
| جَزُل | 345 |
| جَزِیرَۃُ العَرب | 345 |
| جسر بطحان | 345 |
| جِفَاف | 345 |
| جِفر | 345 |
| اَلجَلسی | 346 |
| جُلَیّہ | 346 |
| جَماوات | 346 |
| جُمُدان | 346 |
| جُمُوح | 347 |
| جُمَّہ | 347 |
| جَنَاب | 347 |
| جُنَفَاء (یا جنفا) | 348 |
| جُنَینہ | 348 |
| جِوَاء | 348 |
| جَوَانِیَّہ | 348 |
| جِبَار | 349 |
| ذاتُ الجیش | 349 |
| ذُوالجِیفَہ | 349 |
| جِی | 349 |
| حَرفُ الحَاء | 349 |
| حاجر | 349 |
| حَاطِب | 349 |
| حَالۃ | 350 |
| حائط بنی المَدَاش | 350 |
| حِبَرَہ | 350 |
| حُبُس | 350 |
| حُبَیش | 350 |
| حُتّ | 350 |
| حِثاث | 350 |
| حِجَاز | 350 |
| حِجُر | 352 |
| حُدَیلَہ | 352 |
| حُرَاض | 352 |
| حَربی | 353 |
| حُرُض | 353 |
| حَرَّۃُ اَشجع | 353 |
| حرّہ حقل | 353 |
| حرّۃ الحوض | 353 |
| حرّۃ راجل | 353 |
| حرّۃ الرجلی | 353 |
| حَرَّۃ رُمَاح | 354 |
| حرّہ زُہرہ | 354 |
| حرّہ بنی سُلَیم | 354 |
| حرّۃ شوران | 354 |
| حرّۃ عباد | 354 |
| حرّۃ بنی العُضَیدیّہ | 354 |
| حرّۃ قباء | 354 |
| حرّۃ لیلی | 354 |
| حرّۃ مِعصَم | 355 |
| حرّۃ میطان | 355 |
| حرّۃ النّار | 355 |
| حرّۃ واقم | 356 |
| حرّۃ بنی بَیاضہ | 356 |
| حرّۃ الوَبَرَہ | 356 |
| حَزرَہ | 357 |
| حَزم بَنِی عَوال | 357 |
| حزن | 357 |

حُسنٰی 357
حُسَیکَہ 358
حَشا 358
حِشان 358
حَشّ طلحہ 358
حصن (خَلّ) 358
حِضوَہ 358
حَضِیر 359
حَفیاء 359
حَفِیر 359
حَقل 360
حِلاءۃ 360
حِلائی صعب 360
حَلائق 360
حِلّیت 360
حُلَیف 360
حُلَیفہ 360
حماتان 362
حُمام 362
ذات الحُمّاط 362
حُمت 363
حمراء الاسد 363
حُمَیراء 363
حِمٰی 363
حمیّہ 363
حَنان 363
حُنذ 364
حَورتان 364
حوضی 364
حوض عمرو 364
حُوض مروان 365
حوض ابن ہاشم 365
حیفاء 365
حرف الخاء 365
خاخ 365
خاص 366
خُبأ 366
خَبار 366
خُبان 366
خبراء العِذق 366
خبراء صائف 367
خبزہ 367
خرّار 367
خُربٰی 367
خُرماء 367
خَریق 367
خُرَیم 367
خُزَیمیّہ 368
خَشاش 368
خُشب 368
خشرمہ 368
خُشَین 368
خُصیّ 368
خَضِرہ 369
خطمی 369
خُفَینن 369
خَفیّہ 369
اَلخلائق 369

خلائق 370
خُلائل 370
خَلص 370
خل 370
خَلِيقَه 370
خُمّ 370
خندق 371
خُوَيفَه 374
خَيبَر 375
خَيط 376
خَيل 376
حَرفُ الدَّال 376
دار القضاء 376
دَارُ ابن مكمل 376
اَدارُ النابغه 376
دار نَخلَه 376
دَبَّه 376
دَرّ 377
دَرَك 377
دَعان 377
دَفّ 377
دِمَاخ 377
دهما مرضوض 377
دَهناء (دَهُنى) 377
دُوَدَاء 377
دَوران 378
دَومَه 378
دُومَةُ الجَندل 378
دُوَيخِل 379
حَرفُ الذَّال 379
ذَات اَجدال 379
ذات القطب 379
ذات النُّصُب 379
ذُبَاب 380
ذرع 380
ذروان 380
ذُفران 380
ذوحده 380
ذَهَبَان 380
حَرفُ الرَّاء 381
رائع 381
رَابِغ 381
رَاتِج 381
راذان 381
رامه 382
رانوناء 382
راية الاعلى 382
راية الغراب 382
رَبَاب 382
رُبا 382
رَبَذَة 382
رُبيع 382
رِجَام 383
رجلاء 383
رَجِيع 383
رَحَابه 383
رَحَبَه 383
رَحرَحان 383

| | |
|---|---|
| رُحضِیّہ | 383 |
| رُحقَان | 384 |
| رَدِیهہ | 384 |
| رُحَیب | 384 |
| رُحَیَّہ | 384 |
| رَسّ | 384 |
| رَشاد | 384 |
| ذَات الرَّضم | 384 |
| رَضَمَہ | 385 |
| رَضوی | 385 |
| رَعُل | 385 |
| ذَاتُ الرِّقاع | 385 |
| رَقعَہ | 386 |
| رقمتان | 386 |
| رَقَم | 386 |
| رُقَیبَہ | 387 |
| رکابیّہ | 387 |
| رُکنَان | 387 |
| رَکُوبہ | 387 |
| الرُّمَّہ | 388 |
| رُوَاوَہ | 388 |
| رُوَحَاء | 388 |
| روضة الاَجاول | 389 |
| رَوضةُ الاَجُدَاد | 389 |
| رَوضة الجَام | 389 |
| روضة خَاخ | 389 |
| روضة الخُرج | 390 |
| روضة الخُرجَین | 390 |
| روضة الخَزرج | 390 |
| روضة الحماط | 390 |
| روضة ذی الغُصُن | 390 |
| رَوضةُ الصُّهَا | 390 |
| روضة عُرَینہ | 390 |
| روضة العقیق | 390 |
| رَوضةُ الفِلاج | 390 |
| رَوُضةُ مَرَخ | 391 |
| روضة نَسر | 391 |
| ذو رَوَلان | 391 |
| رُوَیثہ | 391 |
| رُهَاط | 391 |
| رَیَّان (سیر ہو جانا) | 392 |
| رَیدان | 392 |
| رِیم | 392 |
| ریمہ | 393 |
| ذوریش | 393 |
| حَرفُ الزَّای | 393 |
| زبالة الزّجّ | 393 |
| زُجّ | 393 |
| زِرَاب | 393 |
| زَرُود | 394 |
| زُرَیق | 394 |
| زَغَابہ | 394 |
| زَمزَم | 394 |
| ذُوَر | 394 |
| زَوراء | 394 |
| زُهرَہ | 396 |
| الزَّیَّن | 396 |
| حَرفُ السِّین | 396 |

سائر 396

سَافِله 396

سَاهِيَه 397

سَايَه 397

سَبّر 397

سِتّار 397

سَجاسِج 398

سُدّ 398

سَرَاة 399

ذُوالسَّرح 399

سِرّ 399

سَرَّاره 399

سَرِغ 399

سُرَير 399

سَعْد 399

سَفا 400

سَفان 400

سَفَوان 400

سِقاية سليمان 400

سُقيا 401

سقيفه بنى ساعده 401

سِگاب 401

سِلَاح 401

سلاسل 401

سُلَالم 401

ذوالسّلائل 401

سَلْع 401

ذُوسَلَم 402

سُلَيع 402

سَلِيل 402

سليله 402

سُلَيم 402

سمران 402

ذوسمر 403

سُمَيحَه 403

سنام 403

سُنح 403

سَنْحَه 7403

سِنّ 403

سُوَاج 403

سَوَارِق 403

سُوَارِقيّه 404

سوق اَهدٰی 404

سوق بنی قَيْنقاع 404

سُوَيداء 404

سويد 404

سُوَيقَه 404

سِیّ 405

سَيَاله 405

سِيُح 405

سَيَر 405

حرف الشين 406

شَابَه 406

شاس 406

شَبا 406

شِباع 406

شُبَاك 406

شَبْعان 406

شُبکه 406
شَجَرَه 406
شَدُخ 407
شَرَاة 407
شَرَبَّة 407
شَرَج 407
شَرْعَبِیّ 407
شَرَف 407
شُرَیق 407
شُطَان 407
شُطْمان 408
شطون 408
شَطِیبَه 408
شَظَاة 408
شُعب 408
شُعَبی 408
شعب المشاش 409
شعب شوکه 409
شُعْبَه 409
شُعُث 409
شَعُر 409
شَغُبی 409
شُفَر 409
شُقَر 409
شُقْراء 410
شقراة 410
شُقْرَة 410
شَقّ 410
شقة بنی عذره 410
شُلُول 410
شَمّاء 410
شَمّاخ 411
شَمَنصِیر 411
شناصیر 411
شَنُوکه 411
شُنَیف 411
شُوَاحِط 411
شُوران 411
شَوط 412
شُوطی 413
شَیْخان 413
حَرْفُ الصَّاد 414
صَاحَه 414
صَارة 414
صَارِیُ 414
صایف 414
صُبح 414
صُحْرَه 415
صِحُن 415
صُخَیْرَات الثماد 415
صُدَار 415
صِرَار 415
صَعْبِیّه 416
صُعَیب 416
صِفَاح 416
صفاصف 416
صفراء 416
صَفَر 417

صُفَّه 417
صَفْنه 417
صَفِيْنه 417
ذُوصُلُب 417
صُلْحَه 417
صُلْصُل 417
صَلاصِل 418
صَمْد 418
صَمْغَه 418
صَمَّان 418
صُوَار 418
صَوَرٰی 418
صَوْرَان 419
ذُوصُوَيْر 419
صُهِّی 419
صهباء 419
صَهْوَه 419
صَيَاصِی 419
صَيْصَه 420
حَرْفُ الضّاد 420
ضَاحِك 420
ضَاْس 420
ضاف 420
صَبْعُ 420
ضَبُوْعَه 420
ضَجْنَان 420
ضَحْيَان 420
ضرعاء 421
ضَرِيّه 421
ضری 421
ضِع ذرع 421
ضَغَاضِغ 421
ضِغْن 421
ضَفِيْرة 421
ضلع 422
ضُوَيْحِك 422
ضَيْقَه 422
حَرْفُ الطّاء 422
طاشا 422
طِخْفَه 422
طَرَف 422
ذو الطُّفَيْتَيَن 423
طفيل 423
طُوَيْلِع 423
طَيْخَه 423
حرف الظّاء 423
ظاهره 423
ظَبْيَةٌ 423
ظُبْيَه 424
ظَلِم 424
ظِهَار 424
حرف العين 424
عَابِد 424
عَارِمه 424
عاص‘عويص 424
عَاصِم 424
عَاقِل 425
عَالِيه 425

عَائِذ 426
عائذ 426
عائر 426
عبابید 426
عباثر 426
عُبْلاء 426
عَبُّود 426
عِتْر 427
عثاعث 427
عَثْعَث 427
عُجْمَتان 427
عَدَنَه 427
عُدَيْنَه 427
عَذَق 427
عُذَيْبَه 427
عَرَاقیب 427
عُرّٰى 428
عَرِبْ 428
عَرْج 428
عَرْصَه 428
عِرْض 428
عرفات 428
عرفجاء 429
عُرْفَه 429
عرق الظبية 429
عُرْيان 429
عُرَيْض 429
عُرَيْفِطان 429
عُرَيْنَه 429
عَزَّاف 430
عزوزی 430
عسعس 430
عُسفان 430
عَسِيب 430
عَسِيَّه 431
عُشّ 431
عُشَيْرَه 431
عَصْبَه 431
عِصْر 431
عَظْم 432
عَقْرَب 432
عِقْيان 432
عُقَيْرِبا 432
عَقِيق 432
عَلاء 432
عَلَم 432
عَمْق 432
عُمَيْس 433
عُتَاب 433
عَنَابِس 433
عُنَابَه 433
عَناقَه 433
عواقر 433
عُوَال 433
عوالی 434
عوسا 434
عُوَيْقِل 434
عُيَر 434

عِیُص 434
عَیُنَان 435
عین ابراهیم 435
عین ابی زیاد 435
عین ابی نَیُّزَر 435
عین الْاَزْرُق 436
عین تُحَنِّس 436
عین الحدید 436
عیون الحسین 437
عین الخیف 438
عین رسول الله ﷺ 438
عین الشهداء 438
عین الغوار 438
عین فاطمه 438
عین القشیری 439
عین مروان 439
عُیَیْنَین 439
حَرْفُ الْغَیْن 439
غَابه 439
ذات الغار 440
غُبَیُب 440
ذو غُشَث 440
غدیر الْاَشْطاط 440
غدیرخم 441
غُرَاب 441
غُرَان 441
ذو الغَرَاء 441
غُرَّة 441
غَزال 441
غَشِیَّه 442
ذو الغُصُن 442
غَضُوَرُ 442
ذو الغضوین 442
غَمْره 442
غُمُوض 442
غَمِیس 442
غَمِیم 442
غُوُر 443
غَول 443
غَیُقَه 443
حَرْفُ الْفَاء 443
فَارِع 443
فَاضِجَه 443
فَاضِح 443
فَجّ الرَّوُحَاء 443
فُحلان 443
فُحُلَتَان 444
فَدُك 444
فَرَاء 444
فرش ملل 445
فُرُع 445
فُرَیُقَات 445
فَضاء 445
فُعُرای 445
فَغُوه 446
فقار 446
فَقِیُر 446
فُلُجَان 446

| | |
|---|---|
| فُلَجَه | 446 |
| فُلَيج | 447 |
| فُنَيق | 447 |
| فُوَيرع | 447 |
| فيفاء الخبار | 447 |
| فيفاء الفحلين | 447 |
| حرف القاف | 447 |
| قائم | 447 |
| قار | 447 |
| قاحة | 447 |
| قاع | 448 |
| قُباء | 448 |
| قُباب | 449 |
| قَبَلِيَّه | 449 |
| قُدُس | 449 |
| قدوم | 449 |
| قُدَيد | 450 |
| قُدَيمَة | 450 |
| قُرَاضِم | 450 |
| قَرَاقِر | 450 |
| قُرَائِن | 450 |
| قُرّان | 450 |
| قُرح | 450 |
| قُرُد اور ذوقرد | 451 |
| قُردَه | 451 |
| قُرصَهُ | 451 |
| قرقرة الكديد | 451 |
| قُرَيَّه | 451 |
| قُرىٰ | 451 |
| قُسيَان | 452 |
| قُشَام | 452 |
| قصر اسمٰعيل بن وليد | 452 |
| قصر ابراهيم بن هشام | 452 |
| قصر بنى حديله | 452 |
| قصر خارجه | 452 |
| قصر خلّ | 452 |
| قصر ابن عراك | 453 |
| قصر ابن عوان | 453 |
| قصر ابن ماه | 453 |
| قصر مروان | 453 |
| قصر نفيس | 453 |
| قصر بنى يوسف | 453 |
| ذُوالقَصّه | 453 |
| قُصَيبَه | 454 |
| ذوالقُطُب | 454 |
| قف | 454 |
| قِلَادة | 454 |
| قُلَهىّ | 455 |
| قَلَهىٰ | 455 |
| قُمُوص | 455 |
| قناة | 455 |
| قُنَيع | 455 |
| قواقل | 455 |
| قُوَيع | 455 |
| قوران | 456 |
| قُورىٰ | 456 |
| قَينُقاع | 456 |
| حَرفُ الكاف | 456 |

كَاظِمه 456
كَبًّا 456
كَتَانَه 456
كُتَيْبَه 457
كُدُر 457
كَدِيُد 457
كراع الغميم 458
كُرّ 458
كُشب 458
كفَاف 458
كُفت 458
كفتة 458
كُلَاب 458
كُلَاف 458
كلب 458
كُلَيَّه 458
كُمْلى 459
كُنس حُصَين 459
كُوَاكِب 459
كوث 459
كومه 459
كُوَيْر 459
كُوَيره 459
كُيْدَمه 459
حَرْفُ اللَّام 460
لأى 460
لَابَتان 460
لأى 460
لَحْيَاجمَلٍ 460
لَطِى 460
لُعْبَاء 460
لَعْلَع 461
لُفت 461
لِقْف 461
لِوٰى 461
حَرْفُ الْمِيم 461
مابه 461
ماجشونيه 461
مئشب 462
مَأْثُول 462
مَبْرَك 462
مَبْضعه 462
مُتَابع 462
مَثْغَر 462
مِثْقَب 463
مجتهر 463
مِجْدَل 463
مَجْر 463
مَحْضَه 463
مُحَنِب 463
مُحَيْصِر 463
مَحِيص 463
مخاضه 464
مُخَايل 464
مختبى 464
مُخَرّى 464
مَخِيض 464
مدارج 464

مُدَجّج 464
مدران 464
مُدَرَّج 465
مِدْعٰی 465
مُدَیْن 465
مَذَادُ 465
مذاهب 465
مُذَیْنِب 465
مَرَابِد 465
مُرَاخ 466
مَرَاض 466
مَرَّان 466
مراوح 466
مِرْبَد 466
مربد النعم 466
مِرْبَع 467
مُرْتَج 467
مُرْجَح 467
مُرْحَب 467
ذوالمَرْخ 468
ذُومُرْخ 468
مَرْوان 468
ذوالمَرْوه 468
مُرَیح 469
مُرَیخ 469
مُرَیسیع 469
مُزَاحِم 469
مُزَج 469
مُزْدَلِف 469
مُسْتَظِلّ 470
مُسْتَعْجَله 470
مُسْتَنْذَر 470
مُسَیْر 470
مُسْكَبَه 470
مَسْلَح 470
مُسْلِح 470
مشاش 470
مَسْرُوح 470
مِشْعَط 470
مِشْعَل 471
مشفق 471
مُشَیْرِب 471
مَسَرّ 471
مَصْلُوق 471
مُصَلّٰی 471
مُضَیّح 471
مطلوب 472
مُطْعِن 472
معجب (معجف) 472
معدن الاحسن 472
معدن بنی سُلَیم 472
معدن المامون 472
معدن النقره 472
مُعَرَّس 472
معرض 473
مُعْرَقَه 473
مُعَصَّب 473
مُغْسَله 473

مُغَلَاوان 473
مُغِيث 473
مُغُوثَه 474
مُفْحِل 474
مَقَارِيب 474
مَقَاعِد 474
مُقْشَعِرّ 474
مُقَمَّل 474
مَكْرُعَه 475
مُكَسَّر 475
مكيمن 475
مُلْتَد 475
ملحاء 475
مِلْحه 475
ملحتان 475
مَلَل 475
مَنَاصِع 476
مَنَاقِب 476
مُنْبَجِس 476
مُنْتَخِر 476
مُنْحَنى 476
مُنْشِد 477
مَنْحِج 477
مُنَقَّى 477
مَنْكَثَه 477
منور 477
مَنِيع 478
مُنِيف 478
مهايع 478
مهجور 478
مِهْرَاس 478
مَهْرُوز 478
مهزُور 479
مَهزول 479
مَهيَعَه 479
موجا 479
مياسر 479
ذو المِيثَب 479
مُيطان 479
مُنْفَعَه 479
حَرْفُ النُّون 480
نَابِح
نَاجِيَه 480
نَازِيَه 480
نازِيين 480
ناصفه 481
ناعم 481
نَاعِمَه 481
نِبَاع 481
نُبَيع 481
نَبِي 481
نَجْد 481
نُجَيْر 481
نُجَيْل 482
نُخَال 482
نَخْل 482
نَخَلِي 482
نُخَيْل 482

نِسَار 483
نُسُر 483
نِسح 483
نُصُب 483
نِصُح 483
نَضَاد 483
نَضِير 483
نِطَاة 483
نُعُمان 484
نُعَيم 484
نعف مناسير 484
نَقَّاع 484
ذونَفَر 484
نَفِيس 484
نِقَاب 484
نَقَا 484
نقب بنی دینار 485
نَقْعَاء 485
نَقَمٰی 485
نَقِيع 485
نقيع الخَضِمات 485
نمره 486
نَمَلٰی 486
نَهْبَان 486
نواحان 486
نَواعم 486
نُوبَه 486
نِيَار 487
نِير 4857
نِيق العُقاب 487
حَرْفُ الهاء 487
هَدَبيّه 487
هَجَر 487
هُجَيم 487
هَدَّار 487
هُدُن 488
هَرْشٰی 488
هلوان 488
هَكْرٰی 488
هَكْرَان 488
هَمَج 489
هيفاء 489
حرف الواو 489
وَابِل 489
واتده 489
وادی 489
وادی ابی كبیر 489
وادی اُحَيْلِيِّين 489
وادی اَزْرق 489
وادی بطحان 490
وادی جزل 490
وادی دحیل 490
وادی دوم 490
وادی سُمُك 490
وادی القرٰی 490
واردات 491
واسط 491
وَاقِم 491

والج 492
وبُرَه 492
وَبعَان 492
وَجُمَه 492
وَحِيُدة 492
وَدّان 492
وَدُعان 492
هضب 492
وَرُقَان 493
وَسُبَاء 493
وسط 493
وسوس 493
وَشِيُجَه 493
وَطِيح 493
وظيف الحمار 494
وَعِيُره 494
ولعان 494
حَرُفُ اليَاء 494
يَتِيُب 494
يثرب 494
ذويدوم 494
يديع 494
يراجم 495
يَرَعَه 495
يَلُبن 495
يسيره 495
يَلُيَل 495
يَنُبع 495
يَهِيق 496
يَبُين 496

آٹھواں باب

اس میں زیارۃ النبی ﷺ کا ذکر ہے 498
فصل نمبر ا 498
زیارت کے بارے میں واضح قسم کی احادیث 498
پہلی حدیث 498
دوسری حدیث 498
تیسری حدیث 499
چوتھی حدیث 499
پانچویں حدیث 500
چھٹی حدیث 500
ساتویں حدیث 500
آٹھویں حدیث 501
نویں حدیث 501
دسویں حدیث 501
گیارھویں حدیث 502
بارھویں حدیث 502
تیرھویں حدیث 502
چودھویں حدیث 503
پندرھویں حدیث 503
سولہویں حدیث 503
سترھویں حدیث 504
فصل نمبر ۲ 505
زیارت کی باقی دلیلیں اگرچہ ان میں لفظِ زیارت کا ذکر نہیں ہے 505
زیارتِ قبور کا مقصد 515
فصل نمبر ۳ 522
حالِ اوّل 522
حالِ دوم 523

حالِ سوم 523
حالِ چہارم 525
خاتمہ 529
حضرت منکدر کا استغاثہ 529
حضرت امام ابوبکر بن مقری وغیرہ کا استغاثہ 529
ابن الجلاذ کا استغاثہ 530
ابو الخیر الاقطع کا استغاثہ 530
ابوعبداللہ محمد بن ابو زرعہ صوفی رحمہ اللہ کا استغاثہ 530
حضرت احمد بن محمد صوفی رحمہ اللہ کا استغاثہ 531
ایک اور شخص کا استغاثہ 531
حضرت ابو اسحاق ابراہیم بن سعید رحمہ اللہ کا استغاثہ 531
ابو محمد سیّد عبد السلام بن عبد الرحمٰن حسینی فاسی رحمہ اللہ کا استغاثہ 531
حضرت ابوعبداللہ محمد بن ابو الامان رحمہ اللہ کا استغاثہ 532
حضرت صالح عبد القادر التلیسی رحمہ اللہ کا استغاثہ 532
ایک اور شخص کا استغاثہ 533
حضرت ابو العباس بن نفیس مقری کا استغاثہ 534
فصل نمبر۴ 535
زیارتِ قبرِ انور اور آپ کی خدمت رہنے کے آداب 535
زیارت کہاں سے شروع کرے؟ 553

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

## فصل نمبر ۸

اس فصل میں مدینہ منورہ کے قطعات زمین کا ذکر ہے، عالموں اور اس کے اردگرد کا حال ہے، یہاں کی ندیوں، پہاڑوں اور ٹیلوں کا ذکر ہے، مشہور کنوؤں، پہاڑوں اور وادیوں کا بیان ہے نیز ان جگہوں کے ناموں کا ذکر ہے جہاں یہ سب کچھ موجود تھا، پھر مسجدوں اور قلعوں کا بیان ہے، یہاں کے غزوات کا ذکر ہے، مدینہ کے اطراف میں جو کچھ تھا، اس کے احوال کا بیان ہے۔ یہ سب کچھ ہم حروفِ تہجی کی ترتیب سے بیان کر رہے ہیں، جو کچھ پہلے ہے اس کا ذکر پہلے کر دیا ہے۔ بہت سے مقامات پر مرکب الفاظ میں میں نے ان چیزوں کا ذکر کیا ہے جو مشہور ہونے کی وجہ سے اس مقام کی طرف منسوب ہیں۔ ان سب الفاظ کی شدید ضرورت تھی خصوصاً ان لوگوں کو جو حدیث اور لغات سے تعلق رکھتے ہیں۔ یہ سب کچھ علامہ مجد نے اپنی کتاب المغانم میں بیان کیا ہے۔ میں نے انہی کی کلام کا خلاصہ بیان کیا ہے البتہ وہ چیزیں چھوڑ دی ہیں جن کی چنداں ضرورت نہ تھی پھر ان اشیاء کا اضافہ کر دیا ہے جنہیں بیان کرنا فائدے سے خالی نہیں اور جو اضافے کئے ہیں ان کے امتیاز کے لئے "ز" کا حرف اس نام کے ساتھ ہی دے دیا ہے چنانچہ بیان کرتا ہوں۔

## حرف الف

### آرام

یہ ربذہ کے نزدیک پہاڑ کا نام ہے۔ شاید یہ لفظ اِرم کی جمع ہے۔ اِرم اس پتھر کو کہتے ہیں جو علامت کے طور پر گاڑ دیا جاتا ہے، اسی سلسلے میں ایک شاعر کہتا ہے:

> "سنو! ہو سکتا ہے میری یہ بات یونہی ہو کیا ہمارے بعد شابہ اور حضر کی نشانیاں غائب ہو جائیں گی۔ ان کے بعد شابہ ہے اور حصر بھی تو ہے کیا "اُبلی" اپنے سیاہ پہاڑ چھوڑ دے گی۔"

پھر مکہ اور مدینہ کے درمیان ایک اور پہاڑ بھی اسی نام کا ہے۔ ابوزید کہتے ہیں کہ ذباب کے پہاڑوں میں سے ایک سیاہ چوٹی کا نام ذاتِ آرام تھا۔

### آرہ

مزینہ کا ایک عظیم پہاڑ تھا جو قدس کے سر پر تھا اور فُرع سے ملتا تھا۔

عرّام کہتے ہیں کہ آرہ، قدس کے سامنے ایک بلند پہاڑ تھا جس کے پہلوؤں سے ہر بستی کی طرف چشمہ بہتا تھا،

انہی بستیوں میں سے فرع نام کی بستی کافی بڑی تھی اور پھر اُم العیال نامی بستی حضرت فاطمہ زہراء رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا مالِ صدقہ کہلاتی تھی' پھر مضیق نامی بستی بھی قریب ہی تھی جو کافی بڑی تھی نیز محضہ' وبرہ' خضرہ اور فعوہ نامی بستیاں بھی تھیں جن میں سے ہر ایک میں کھجوروں کے باغ اور زرعی زمین تھی' ان کی وادیاں ابواء اور پھر ودّان میں جا گرتی تھیں' اس وادی آرہ کو حقیل کہتے تھے' وہیں ایک بستی تھی جسے وبعان کہتے تھے اور اس آرہ کے پیچھے وادی تھی جس میں اور بستیاں تھیں۔ انتہٰی۔

## آنقہ

یہ وہ وادی تھی جس کا ذکر پہلے آ چکا ہے اور یہ وادیٔ عقیق میں گرتی تھی۔

## آبار اور اُبیُر

یہ اُجرُدَ کی وادیوں میں سے تھی جو ینبع میں گرتی تھیں۔

## اَبُرق خترب

یہ ضریّہ کی چراگاہ میں تھی اور یہاں چاندی کی کان تھی جسے بہت استعمال میں لایا جاتا تھا۔

## اَبُرقُ الدّاث

یہ بھی چراگاہ میں تھی اور اس کی دلیل جبلہ کے ذکر میں آ رہی ہے اور داث ایک عظیم وادی تھی' اس کی بالائی جانب اور ضریّہ کے درمیان آٹھ میل کا فاصلہ تھا۔

## اَبُرقُ الغُرّاف

یہ مدینہ اور ربذہ کے درمیان' مدینہ سے بیس میل کے فاصلے پر تھی' یہاں قدیم دور میں بھاری پانی کے کنوئیں تھے۔ آگے لفظِ غراف میں آ رہا ہے کہ اس نام رکھنے کی وجہ یہاں جنات کی آوازیں تھیں چنانچہ ابن اسحاق کہتے ہیں کہ خریم بن فاتک نے حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے کہا تھا کہ کیا میں آپ کو اپنے اسلام لانے کا ابتدائی واقعہ نہ بتاؤں؟ میں اپنے اونٹ تلاش کرتا پھر رہا تھا' ابرق الغراف پہنچا' رات بیت رہی تھی کہ میں نے بلند آواز نکالی اور کہا: میں اس وادی کے بیوقوفوں سے اللہ عزیز کی پناہ مانگتا ہوں' یکایک سنا تو آواز آئی:

> ''اے نوجوان! عظمت والے ربّ کی پناہ مانگو جو بزرگ ہے' نعمتیں دیتا ہے اور فضل و کرم فرماتا ہے'
> پھر سورۂ انفال کی آیات پڑھا کرو' اللہ کی توحید بیان کرو اور پھر بے فکر ہو جاؤ۔''

یہ آواز سن کر میں بہت خوفزدہ ہوا' جب میں سنبھلا تو کہا:

> ''اے ہاتف! جو کچھ تم نے کہا ہے' کیا یہ درست ہے یا گمراہ کر رہے ہو؟ اللہ تمہیں ہدایت دے'

مجھے بتاؤ‘ اب میں کیا کروں؟‘‘

ہاتف نے پھر جواب دیا:

’’یہ دیکھو! اللہ کے رسول آئے ہیں جو بھلائی کی بات کرتے ہیں‘ بھلائی کی طرف بلاتے ہیں اور راہِ نجات کی راہنمائی کرتے ہیں‘ روزے اور نماز کا حکم دیتے ہیں اور لوگوں کو مشکلات سے نکالتے ہیں۔‘‘

پھر ابن اسحاق نے اور شعر ذکر کئے‘ پھر ان کے حضور ﷺ کی خدمت میں حاضر ہو کر اسلام لانے کا ذکر کیا۔ یہ ابارق نامی وادیاں بہت سی تھیں۔ لغت میں ابرق اس زمین کو کہتے ہیں جس میں پتھر‘ ریت اور مٹی ہو۔

## اُبْلٰی

یہ لفظ حُبْلٰی کے وزن پر ہے۔ علامہ حرام‘ حجر اور رحضیّہ کا ذکر کرنے کے بعد لکھتے ہیں: پھر مکہ کو جائے اور اس وادی کی طرف مڑے جسے عریفطان کہتے ہیں جو پہاڑوں کے سامنے ہے اور اسے ’’اُبْلٰی‘‘ کہا جاتا ہے۔

علامہ حرام نے اس کے بعد ان کنوؤں (چشموں) کا ذکر کیا جن کا ذکر آگے آ رہا ہے اور بتایا کہ یہ بنو سلیم کے تھے۔

میں کہتا ہوں کہ یہ وادی آج کل سوارقیہ اور رحضیہ کے درمیان مشہور ہے اور مدینہ سے چار دن کی مسافت پر ہے چنانچہ زہری سے ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے بنو سلیم کی اراضی کی طرف انہیں بھیجا اور وہ ان دنوں جرف اُبلیٰ میں بئرِ معاویہ پر تھے اور یہ ابلیٰ ارحضیہ اور قران کے درمیان تھی۔

## اَبْواء

یہ لفظ حَلْواء کے وزن پر ہے۔ اس کا ذکر مسجدِ رمادہ اور مسجد ابواء میں گذر چکا ہے۔

کثیر عزہ سے پوچھا گیا کہ اس کا نام ابواء کیوں رکھا گیا تو انہوں نے کہا‘ اس لئے کہ لوگوں نے وہاں ٹھکانہ بنایا تھا اور یہ بھی کہتے ہیں کہ سیلابوں نے یہاں گھر کر رکھا تھا۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ یہ فُرع کے ماتحت ایک بستی تھی‘ اس کے اور مدینہ کی طرف سے جحفہ کے درمیان تیئس میل کا فاصلہ تھا چنانچہ مدینہ سے اس کا فاصلہ پانچ دن کی مسافت بنتا ہے۔ یہ بھی کہتے ہیں کہ ابواء آرہ کی دائیں طرف اور اس راستے کی دائیں طرف جو مکہ کی طرف جاتا تھا‘ وہاں ایک شہر بھی تھا جو اس پہاڑ کے نام پر مشہور تھا اور یہ حافظ ابن حجر کی زبان میں یوں ہے: ابواء فُرع کے زیرِ عمل ایک پہاڑ ہے‘ نام رکھنے کی وجہ یہ تھی کہ یہ دل پر بھاری تھا اور یہ بھی کہتے ہیں کہ چونکہ سیلاب یہاں داخل ہو جایا کرتے تھے۔

میں کہتا ہوں‘ سب معانی جمع کرنے کی صورت یہ ہے کہ یہ پہاڑ کا نام بھی ہے‘ بستی کا بھی اور وادی کا بھی‘ اس کا ذکر حدیثِ صعب بن جثامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ میں آتا ہے اور یہیں حضور ﷺ کی والدہ کی قبرِ انور بھی ہے (رضی اللہ

تعالیٰ عنہا) اور واقعہ یہ ہے کہ آپ کے والدِ گرامی کھجوریں لینے کے لئے مدینہ منورہ تشریف لے گئے اور وہیں فوت ہو گئے، آپ کی زوجۂ محترمہ ہر سال ان کی قبرِ انور کی زیارت کے لئے جایا کرتیں اور جب رسولِ اللہ ﷺ چھ سال کے ہو گئے تو وہ آپ کو ہمراہ لئے نکلیں، حضرت عبد المطلب رضی اللہ تعالیٰ عنہ بھی ساتھ تھے، کچھ کہتے ہیں کہ ابو طالب تھے نیز اُمِ ایمن بھی تھیں چنانچہ واپسی پر وہ یہاں انتقال فرما گئیں۔ ایک روایت میں ہے کہ ان کی قبرِ انور مکہ میں ہے تاہم علامہ نووی کہتے ہیں کہ پہلی بات صحیح ہے۔

## الاُتُمه

اس سے مراد حضرت عبد اللہ بن زبیر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی وادی ہے۔ اس کا ذکر عقیق کی وادیوں میں گزر چکا ہے، علامہ ھجری کہتے ہیں کہ یہ ایک وسیع وادی تھی اور جفیر میں جا گرتی تھی، وہاں ابنِ زبیر کے نام سے ایک کنواں بھی مشہور ہے۔

## اُثال

یہ وادی، وادی ستارہ میں شامل ہو جاتی تھی جسے قدید کہتے تھے، یہ اُم معبد کے خیموں کی وادی میں بہتی تھی۔

## اَثایه

علامہ مجد نے عیاض کی طرح اسے ہمزہ کی پیش اور زیر سے پڑھا ہے۔ انہوں نے مساجد فتح میں اسے ترجیحی طور پر یونہی لکھا ہے۔ چنانچہ فضائل کے بیان میں ایک حدیث گذر چکی ہے: نبی کریم ﷺ جب مکہ سے واپس تشریف لاتے اور اُثایہ میں پہنچتے تو اپنی چادر بچھا لیتے اور فرماتے: کتنی پاکیزہ ہوائیں آ رہی ہیں پھر حضور ﷺ کے مکہ کو تشریف لے جانے کے ذکر میں مؤطا کے اندر یہ حدیث ملتی ہے: آپ تشریف لے گئے اور جب آپ رویثہ اور عرج کے درمیان اثایہ کے مقام پر پہنچے تو یکایک دیکھا ایک ہرن چھاؤں میں بیٹھا تھا جس کے جسم میں تیر لگا ہوا تھا، آپ نے ایک شخص کو حکم فرمایا کہ اس کے پاس کھڑا رہے تا کہ کوئی اسے تکلیف نہ پہنچائے۔

## اُثبُه

یہ لفظ اُثُب کا واحد ہے اور یہ ایک مشہور درخت کا نام ہے۔ عقیق وادی کے کنوؤں کے ذکر میں ذوالاثبہ کا ذکر آ چکا ہے چنانچہ ابو وجزہ کہتے ہیں:

”خواتین نے ذواثب کے باغوں کا ارادہ کیا کہ وہاں قیلولہ کر سکیں، وہ عقیق کے چشمہ کی رونق تھیں۔“

علامہ ھجری نے نقیع کی چراگاہ کے بارے میں کہا ہے: حرہ کے مشرق میں دو مثلث تھیں جن کا پانی صاف ستھرا تھا، ایک اثب اور دوسرا اثیب، پھر ان کی ترتیب بیان کرتے ہوئے بیان کیا کہ: پھر اثبہ تھا، وہاں ایک کنواں تھا جسے اثبہ

کہتے تھے' اسی کی وجہ سے وادی کا نام اثبہ رکھا گیا' اسی جگہ عبداللہ بن ضمرہ زبیری کی جائیداد تھی اور یحییٰ زبیری کا کھجوروں کا باغ بھی تھا۔

## اُثَیفِیه

یہ مدینہ میں وادیٔ عقیق کے اندر ایک جگہ تھی۔ علامہ صغانی کہتے ہیں کہ اس کی وادیوں میں ذو اثیفہ کا ذکر آ چکا ہے۔

## اُثَیل

یہ اُثل کی تصغیر ہے' یہ جگہ بدر اور صفراء کے درمیان تھی' وہیں آلِ جعفر بن ابو طالب کا چشمہ تھا' جسے ذواثیل کہا جاتا تھا۔ ابن السکیت کہتے ہیں کہ یاء پر شدّ ہے (اثیّل)۔ چنانچہ جب بدر سے واپسی پر نضر بن حارث بن کلدہ کو قتل کر دیا گیا تو اس کی بیٹی قتیلہ نے مرثیہ لکھا اور نبی کریم ﷺ کی تعریف کرتے ہوئے اس لفظ کا استعمال یوں کیا تھا:

یـــارا کبـــا انّ الاثیـــل مـظـنّـة　　　مـن صبـح خـامسة و انـت مـوفّق

جب رسول اللہ ﷺ نے اس کے یہ اشعار سنے تو نرم دل ہو گئے اور فرمایا: اگر میں نضر کے قتل سے پہلے اس کے یہ اشعار سن لیتا تو اس کا والد اس کے سپرد کر دیتا۔

علامہ واقدی کہتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے بدر سے واپسی پر "اثیل" کے مقام پر عصر کی نماز پڑھی تھی' جب ایک رکعت پڑھ لی تو تبسم فرمایا' آپ سے اس بارے میں پوچھا گیا تو آپ نے بتایا میرے ہاں سے حضرت میکائیل علیہ السلام گذرے ہیں' ان کے پروں پر گرد و غبار تھا' وہ میری طرف دیکھ کر ہنسنے لگے اور بتایا کہ میں کافروں کو تلاش کرتا پھر رہا ہوں (کہ انہیں قتل کر سکوں)۔

یہ اثیل اس میدان میں ایک اور جگہ کا نام بھی تھا جس کا اکثر حصہ بنو کنانہ میں سے بنو ضمرہ کا تھا پھر اسی جگہ ایک اور مقام ذاتِ اجدال تھا جو صفراء کی تنگ جگہ میں تھا۔

## اَجُرد

بصّہ کے نزدیک بنو خدرہ کا ایک قلعہ تھا نیز جہینہ کا پہاڑ تھا جو بواط جلسی شامی جانب تھا جو اشعر کے ساتھ تھا' اجرد ایک اور پہاڑ کا نام بھی ہے اور مدلجہ سے پہلے ایک جگہ کا نام بھی ہے۔

## اَجَّش

یہ قباء میں بنو انیف کا ایک قلعہ تھا۔

## اَجْفُر

خزیمہ اور فید کے درمیان ایک جگہ کا نام تھا۔

## اُجُمِ بنو ساعدہ

یہ بنو ساعدہ کے قلعے تھے جو ذباب کے قریب تھے۔ مدینہ کے اجم اور اطم وہاں کے قلعے کہلاتے تھے۔ ابن السکیت کہتے تھے کہ اجم وہ قلعہ تھا جسے اہلِ مدینہ نے بنایا تھا نیز ہر گھر جو مربع شکل اور چھت والا ہوتا تھا' اسے اجم کہتے تھے۔

## اُحَامِر

علامہ عرام کہتے ہیں کہ اُبلیٰ کے مقابلے میں ایک پہاڑ تھا جو اس کے مشرق میں تھا اور اسے ذو الموقعہ کہتے تھے' یہ بنو سلیم کا معدنی پہاڑ تھا' پھر اس کے بالمقابل دائیں جانب قبلہ کی طرف ایک پہاڑ تھا جسے احامر کہتے تھے۔ علامہ یاقوت اپنی کتاب المشترِک میں لکھتے ہیں کہ احامر البغیبغہ ایک سرخ پہاڑ تھا جو ضریہ کی چراگاہ کے پہاڑوں میں سے تھا۔

## اَحُباب

یہ لفظ حبیب کی جمع ہے اور سوارقیہ کے پہلو میں ایک شہر ہے۔

## اَحُجَار الزّیّت

یہ زوراء کے قریب وادی تھی چنانچہ علامہ یاقوت لکھتے ہیں' یہ وہ جگہ تھی جس میں پتھر بہت تھے' راستہ ان کے اوپر تھا چنانچہ وہ پتھر مٹی وغیرہ میں دفن ہو گئے۔ ابن جبیر کہتے ہیں کہ یہ ایک پتھر تھا جو آج بھی موجود ہے اور لوگ اس کی زیارت کرتے ہیں۔ کہتے ہیں کہ اس میں سے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے لئے زیتون کا تیل رِس آیا تھا۔ نمازِ استسقاء (بارش کے لئے) یہیں پڑھی جایا کرتی تھی۔ جہاں پہلے یہ ذکر ہو چکا ہے کہ یہ پتھر شہداءِ اُحد کے ہاں سے لایا گیا تھا وہیں یہ بھی لکھا ہے کہ مالک بن سنان اصحابِ عباء کے پاس دفن کئے گئے تھے۔

ابن زبالہ سے ایک روایت ہے کہ وہاں احجار زیت ہے اور حضرت مالک بن سنان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا مزار مشہور ہے چنانچہ اس مزار کے قریب احجارِ زیت زوراء میں تھی جس کا تعلق بازارِ مدینہ سے تھا جیسے ابنِ شبہ کے کلام سے سمجھ آتا ہے۔

وہ کہتے ہیں' ابن ابی فدیک نے کہا کہ میں نے تین احجار زیت دیکھے جو اُمِ کلدب کے گھر کے سامنے تھے' وہ کہتے ہیں کہ آج کل اس کی پہچان بیت بنو اسد کے نام سے ہے' مٹی ان پتھروں پر چڑھ گئی تو وہ دفن ہو گئے تھے۔

حلال بن طلحہ عمری کہتے ہیں' انہیں حبیب بن سلمہ نے لکھا کہ حضرت کعب نے مجھ سے کہا کہ میں انہیں اپنی قوم

میں سے اس شخص کے بارے میں بتاؤں جو سرزمین میں کا عالم ہے چنانچہ جب حضرت کعب مدینہ آئے تو کسی ضرورت سے میرے پاس پہنچے اور کہا کہ زمین بھر میں عالم تم ہی ہو؟ میں نے کہا کہ ہاں۔ انہوں نے کہا کہ آئندہ دن میرے پاس آنا چنانچہ صبح ہوئی تو میں ان کے پاس گیا: انہوں نے کہا: کیا تم احجار زیت کے بارے میں جانتے ہو کہ کہاں ہے؟ میں نے کہا' ہاں جانتا ہوں۔ زوراء میں کچھ پتھر تھے جن پر تیل لگانے والے تیل ڈالا کرتے تھے' میں ان کے پاس پہنچا اور کہا کہ یہ ہیں احجارِ زیت۔ اس پر حضرت کعب نے کہا' بخدا احجارِ زیت یہ نہیں' نہ ہی ہماری کتاب میں اس کی نشانی لکھی ہوئی ہے' میرے آگے آگے چلو کیونکہ تم راستے کو مجھ سے زیادہ جانتے ہو' ہم چل پڑے اور بنو عبد الاشہل کے پاس پہنچے۔ حضرت کعب نے کہا جن احجارِ زیت کے بارے میں کتاب اللہ بتاتی ہے' وہ یہاں ہیں' چاہو تو لوگوں سے پوچھ لو چنانچہ میں نے ان سے اس بارے میں پوچھا۔ پھر کہا کہ عنقریب مدینہ میں اسی کے پاس گھمسان کی جنگ ہو گی۔

میں کہتا ہوں کہ احجار زیت دو مقام تھے' پہلا وہ جو ابو داؤد کی اس حدیث میں مذکور ہے: آبی اللحم کے غلام عمیر نے نبی کریم ﷺ کو دیکھا کہ زوراء کے مقام پر آپ نے احجار زیت کے نزدیک بارش کے لئے دعا کرنے کی خاطر اپنے ہاتھ مبارک چہرۂ انور کے سامنے اُٹھائے۔

ایک اور روایت میں ہے' حضرت محمد بن ابراہیم کہتے ہیں' مجھے اس شخص نے اطلاع دی جس نے نبی کریم ﷺ کو احجار زیت کے پاس ہتھیلیاں پھیلائے دعا فرماتے دیکھا تھا۔

دوسرا مقام وہ ہے جو حضرت کعب احبار رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے بنو عبد الاشہل کے گھروں میں "حرہ" سے مراد لیا ہے' واقعۂ حرہ یہیں ہوا تھا (جہاں ظالم یزید نے قتل و غارت کرائی تھی کہ اس کی بیعت ہو سکے) اور شاید اس حدیث میں بھی یہی مراد ہے: (رسول اللہ ﷺ نے فرمایا تھا) اے ابو ذر! اس وقت تمہاری حالت کیسی ہو گی جب تم احجارِ زیت کو دیکھو گے کہ خون میں نہا گیا ہو گا؟ وہ کہتے ہیں' میں نے عرض کی' جیسے اللہ و رسول اللہ ﷺ کو منظور ہو گا۔ آپ نے فرمایا: اس وقت تمہیں اس کا ساتھ دینا ہو گا جس کے ساتھ ہو گے۔ ابو داؤد کی ایک روایت میں ہے: تم ان کے ساتھ ہو جانا جن سے تمہارا تعلق ہو گا۔

یہ بھی کہتے ہیں کہ (آپ نے فرمایا تھا) لوگوں کو سولیاں دی جائیں گی اور احجارِ زیت خون میں نہا جائے گا۔ احتمال یہ بھی ہے کہ اس سے مراد پہلی جگہ ہو کیونکہ اس حدیث کو ذکر کرنے کے بعد کچھ حضرات کے قول کا تقاضا یہ ہے کہ یہ واقعہ محمد کے قتل سے تعلق رکھتا تھا جنہیں "نفسِ زکیّہ" کہا جاتا ہے کیونکہ یہ بھی احجارِ زیت کے قریب قتل کئے گئے تھے جیسے ان کے جائے شہادت کے بارے میں پہلے اشارہ دیا جا چکا ہے۔

علامہ مرجانی کہتے ہیں کہ حرہ کے مقام پر ایک زمینی ٹکڑا تھا جسے احجارِ زیت کہتے تھے کیونکہ اس کے پتھر سیاہ رنگ کے تھے' لگتا تھا جیسے ان پر زیتون کا تیل لگایا گیا ہو اور یہی وہ جگہ تھی جہاں حضور ﷺ نے بارش کی دعا فرمائی تھی۔ انتہی۔

میں کہتا ہوں' علامہ مرجانی ان دونوں مقامات کی پہچان نہیں رکھ سکے کیونکہ بارش کی دعا آپ نے اس مقام پر فرمائی تھی جو زوراء کے قریب تھی جیسے بتایا جا چکا۔

## اَحْجَار المراء

علامہ مجد کے مطابق یہ جگہ قباء میں تھی۔ اس کا ذکر بنو عمرو بن عوف کے گھروں کے بیان میں گذر چکا ہے اور نہایہ ابن الاثیر میں ہے کہ نبی کریم ﷺ نے احجار البراء کے قریب حضرت جبریل علیہ السلام سے ملاقات فرمائی تھی لیکن علامہ مجاہد کہتے ہیں کہ یہ جگہ قباء تھی۔

## اُحُد

اس کا ذکر پانچویں باب کی ساتویں فصل میں اُحد کے فضائل میں آ چکا ہے۔

## اَلْاَحْیَاء

یہ لفظ حَــیّ کی جمع ہے جو عرب کا ایک قبیلہ تھا۔ یہ ایک کنوئیں کا نام تھا جو رابغہ کے مقام پر ثنیۃ مرّہ کی نچلی جانب تھا۔ یہیں عبیدہ بن حارث بن مطلب کا چھوٹا سا لشکر اترا تھا۔

## اَلْاَخَارِج

ضریّہ کی جانب بنو کلاب کے پہاڑوں میں سے ایک تھا۔

## اَخْزَم

یہ لفظ اَحْمد کے وزن پر ہے' ملل اور روحاء کے درمیان ایک پہاڑ ہے' آج کل اسے خزیم کہتے ہیں۔

## اَلْاَخْضَر

یہ تبوک کے نزدیک ایک جگہ کا نام ہے۔ رسول اللہ ﷺ جب تبوک تشریف لے گئے تھے تو یہاں قیام فرمایا تھا۔

## اُدَیْہ

یہ سیاہ رنگ کی وادی تھی جو فید سے سولہ میل کے فاصلے پر تھی۔

## اَذَاخِر

یہ لفظ اِذْخَر کی جمع ہے جو مدینہ کی ایک وادی تھی جیسے پانچویں فصل میں بتا دیا گیا ہے' پھر یہ مکہ کے قریب ایک جگہ تھی جس کی طرف اذخر نامی بُوٹی منسوب تھی۔

## اَذْبَل

یہ لفظ احمد کے وزن پر ہے۔ یہ ایک قلعہ تھا جسے اُراکہ کے پاس دارِ بنو سالم میں قبیلۂ سالم اور بنو غنم نے بنا رکھا تھا۔

## اُرَابن

یہ مبرک کے مقام کے پیچھے ایک جگہ تھی جو جہینہ نامی پہاڑ کی نچلی جانب صفراء کی تنگ جگہ میں تھی چنانچہ کثیر نے کہا تھا:

''جب تم دارِ عزّہ کو یاد کرو تو اس کے قریب ہو جاؤ' پھر رحیّب' ارابن اور نخال کو یاد کرو۔''

## اَراك

یہ ایک پہاڑ ہے جس کے نزدیک اضم سے آنے والے سیلاب سمندر میں داخل ہو جاتے ہیں۔

## اَرْثَد

یہ بھی احمد کے وزن پر ہے' یہ ابواء میں ایک وادی تھی چنانچہ کثیر کہتے ہیں:

''جب اَرْثد کے مقام پر ہمیں خیمے دکھائی دیں اور مرختین دکادک کے پہاڑ نظر آئیں۔''

## اَرْجَام

یہ مدینہ کے قریب ایک پہاڑ ہے۔

## اُرْحَضِیّہ

یہ انصار اور بنو سلیم کی ایک بستی تھی' یہاں بہت سے کنوئیں اور کھیتیاں تھیں۔ اس کے بالمقابل ایک بستی تھی جسے حجر کہتے تھے۔ یہ بات علامہ عرّام نے لکھی ہے اور علامہ مجد نے اس بات کا پتہ چلایا ہے کہ اُبلیٰ کے قریب تھی' آج کل اسے رُحضِیّہ کہتے ہیں۔ علامہ عرّام کے نسخہ میں یونہی لکھا ہے اور راء سے شروع ہونے والے الفاظ میں علامہ نے اسے یونہی بیان کیا ہے جیسے آگے آ رہا ہے۔ علامہ اسدی نے ذکر کیا ہے کہ یہ مدینہ منورہ اور معدن بنو سلیم کے راستے کے عین درمیان میں ہے اور دونوں مقامات میں سے ہر ایک سے پچاس میل کے فاصلے پر ہے اور خلیفہ رشید مدینہ سے واپس آتا تو اسی راستے سے گذرتا نیز اسی نے اس کا نام ارحضیّہ رکھا تھا۔

## ارض جابر

حضرت جابر کی یہ زمین ان کے قرض خواہوں کو پیش کی گئی تھی' یہ رومہ کے راستے میں تھی۔ اس کا ذکر بئرِ قراصہ

میں گذر چکا ہے۔

## اُرْوِی

یہ لفظ ''اُرْوِیَۃ'' کی جمع ہے پہاڑی بکری کو کہتے ہیں۔ اُروی' عقیق کے قریب' حاج کے مقام پر بنوخزارہ کا کنواں تھا چنانچہ ان کا شاعر کہتا ہے:

> ''اروی کے مقام پر ایک کان ہے کہ اگر تم اسے کھود ڈالو تو بہت سے درہموں والے امیر بن جاؤ۔''

## اُرُوم

یہ ایک پہاڑ ہے جس کا ذکر ربذہ کی چراگاہ میں گذر چکا ہے۔ لفظ اراک کے ذکر میں اس کی وضاحت آ چکی ہے۔

## اُرَیکۃ

یہ جہینہ کے وزن پر ہے اور ضریّہ کی چراگاہ کے مغرب میں ایک جگہ کا نام ہے۔ مدینہ میں جو سب سے پہلے آیا تو اس کی تصدیق یہیں ہوئی تھی۔

## اُسْقُف

یہ رابوع کی جانب ایک پہاڑ تھا۔ اس کا ذکر خاخ میں موجود ہے۔

## اَسْوَاف

یہ بقیع کی شامی جانب ایک جگہ کا نام ہے جس کا ذکر مدینہ کی مسجدوں میں آ چکا ہے۔ ابن عبد البر کہتے ہیں کہ نہیں بلکہ یہ حضرت زید بن ثابت کی اراضی تھی چنانچہ طبقات ابن سعد میں ہے کہ حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ حضرت زید کو مدینہ پر حکمران بنایا کرتے اور جب واپس آتے تو انہیں کھجوروں کا ایک باغ دیتے۔ ابوالزیاد کہتے ہیں' ہم آپس میں کہا کرتے کہ اساویف وہ مقام ہیں جو حضرت عمر نے انہیں دیئے تھے۔

میں کہتا ہوں کہ اسواف کا کچھ حصہ وراثت کے طور پر عرب کے ایک گروہ کے قبضہ میں تھا جسے زیود کے نام سے جانتے تھے' شاید یہ لوگ حضرت زید بن حارث رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی اولاد میں سے تھے۔

طبرانی کی اوسط میں ہے کہ حضرت جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے بتایا: رسول اللہ ﷺ حضرت سعد بن ربیع انصاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ملنے تشریف لے گئے' ان کا گھر اسواف میں تھا' ان کی بیوی نے رسول اللہ ﷺ کے بیٹھنے کے لئے کھجور کے درخت کے نیچے چٹائی بچھائی: آپ تشریف فرمایا ہوئے اور ہم بھی آپ کے پاس بیٹھ گئے' رسول اللہ ﷺ نے مجھ سے فرمایا کہ تمہارے پاس ایک آدمی آ رہا ہے جو جنتی ہے چنانچہ حضرت ابوبکر رضی اللہ تعالیٰ عنہ آئے۔ آپ نے دوبارہ

یونہی فرمایا تو حضرتِ عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ حاضر ہوئے پھر تیسری مرتبہ یونہی فرمایا تو حضرت عثمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ حاضر ہو گئے۔

حضرت ابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ نبی کریم ﷺ اسواف میں ایک کنوئیں پر بیٹھے اور اس میں پاؤں لٹکا دیئے۔ پھر انہوں نے حضرت ابوبکر‘ عمر اور عثمان کی آمد کا ذکر کیا جیسے بئر اریس کی حدیث میں ہے اور حضرت بلال رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو حکم فرمایا کہ ان تینوں کو آنے کی اجازت دیں اور ساتھ ہی انہیں جنت کی بشارت دیں۔

حضرت واقدی کے مطابق حضرت جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ بتاتے ہیں کہ حضرت سعد بن ربیع رضی اللہ تعالیٰ عنہ جب اُحد میں قتل ہو گئے اور ان کے بھائی نے مالِ وراثت کی آیت اترنے سے پہلے ان کا مال لے لیا تو ان کی بیوی اسواف میں تھی‘ اس نے کھانا تیار کیا اور پھر رسول اللہ ﷺ کو بلایا‘ آپ نے ہمیں فرمایا کہ میرے ساتھ چلو‘ چنانچہ ہم بیس افراد آپ کے ساتھ ہو لئے اور اسواف میں جا پہنچے۔ رسول اللہ ﷺ داخل ہوئے تو ہم بھی وہاں داخل ہو گئے۔

حضرت جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں کہ نہ تو وہاں کوئی تکیہ تھا اور نہ ہی بچھونا‘ پھر رسول اللہ ﷺ نے فرمایا: تمہارے پاس اہلِ جنت میں سے ایک آدمی آ رہا ہے۔ ہم دیکھنے لگے کہ کون آتا ہے چنانچہ حضرت ابوبکر رضی اللہ تعالیٰ عنہ آئے‘ ہم اُٹھے اور انہیں جنت کی خوشخبری دی پھر انہوں نے سلام کہا تو سب نے سلام کا جواب دیا اور پھر بیٹھ گئے۔ رسولِ اکرم ﷺ نے پھر فرمایا کہ تمہارے پاس ایک جنتی شخص آ رہے ہیں۔ ہم دیکھنے لگے کہ کون آتا ہے چنانچہ حضرت عمر حاضر ہوئے۔ ہم نے کھڑے ہو کر انہیں بشارت دی‘ انہوں نے سلام کہا اور بیٹھ گئے۔ آپ نے پھر فرمایا کہ تمہارے پاس ایک جنتی آ رہا ہے‘ ہم نے اندر سے جھانکا تو حضرت علی بن ابو طالب رضی اللہ تعالیٰ عنہ آتے دکھائی دیئے‘ ہم نے انہیں جنت کی بشارت دی‘ وہ آئے اور بیٹھ گئے پھر کھانا لایا گیا‘ کھانا اتنا تھا کہ ایک یا دو شخص کا گذارہ ہو سکتا تھا‘ حضور ﷺ نے اس کھانے میں ہاتھ رکھا اور فرمایا: بسم اللہ شریف پڑھ کر کھاؤ‘ ہم نے کھانا شروع کیا اور سیر ہو کر کھایا اور اس میں سے ضائع نہیں کیا۔ حضور ﷺ نے فرمایا: یہ کھانا اٹھا لو‘ انہوں نے اٹھا لیا تو پھر ہمارے سامنے ایک طبق میں کھجوریں رکھ دی گئیں‘ وہ تھوڑی سی تھیں۔ حضور ﷺ نے فرمایا بسم اللہ شریف پڑھ کر کھاؤ‘ ہم نے خوب کھائیں اور میں دیکھ رہا تھا کہ طبق میں کھجوریں اتنی کی اتنی ہی تھیں۔

پھر ظہر کا وقت ہو گیا‘ رسول اللہ ﷺ نے ہمیں ظہر کی نماز پڑھائی اور پانی کو ہاتھ تک نہیں لگایا‘ پھر مجھ سے گفتگو فرماتے رہے کہ اتنے میں عصر کا وقت ہو گیا اور پھر باقی کھانا لایا گیا‘ ہم نے سیر ہو کر کھایا‘ حضور ﷺ اُٹھ کھڑے ہوئے اور ہمیں نمازِ عصر پڑھائی لیکن پانی کو ہاتھ تک نہیں لگایا۔

اس کے بعد حضرت سعد بن ربیع رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی بیوی اُٹھیں اور عرض کی یا رسول اللہ! سعد بن ربیع احد میں قتل ہو گئے۔ اس کے بعد ان کے بھائی نے ان کا مال لینے کا قصہ بیان کیا جبکہ مال وراثت کا حکم بعد میں اترا تھا اور یہ بھی بتایا کہ حضرت سعد بن ربیع کی بیٹی حضرت زید بن ثابت رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی بیوی تھی۔ وہ ان دنوں حاملہ تھیں۔

## اَشَاقِر

مکہ اور مدینہ کے درمیان یہ پہاڑ تھے۔

## اَشْعَر

وہاں کا پہاڑ جہاں جہینہ رہتے تھے جو نیچے کی طرف ینبع کی طرف آ ملتا تھا۔ علامہ ھجری کہتے ہیں کہ میں نے اشعر اور اجرد نامی جہینہ کے دونوں پہاڑوں کو پایا اور یہ بھی پتہ چلا کہ قریش نے وہاں زمین لی تھی چنانچہ میں نے اسے اس حدیث کے لئے نقل کیا جو ان دونوں کے بارے میں نبی کریم ﷺ سے فتنوں سے امن کے بارے میں آئی۔

علامہ اشعری کہتے ہیں کہ اسے یمن کی طرف سے وادیٔ روحاء گھیرے ہوئے تھی اور شامی جانب سے وادی بواطان۔ پھر فضیلت احد میں یہ حدیث گذر چکی ہے کہ: سب پہاڑوں میں سے احد، اشعر اور ورقان بہتر ہیں۔

## اَشْنَف

یہ وہ قلعہ تھا جو مسجد خربہ کے سامنے تھا۔

## اَشِيْق

اسے استعمال کرتے وقت لفظ ھضب اس کی طرف مضاف کیا جاتا ہے تاہم عقیلی حضرات اسے شفیق پڑھتے تھے اس کا ذکر فید کی چراگاہ میں گذر چکا ہے۔ یہ ہموار زمین پر آباد شہر تھا اور اس کی مٹی سفید رنگ کی تھی جیسے کافور ہوتا ہے۔ اس میں سب سے بہتر کنواں ریان نامی اور پھر عرفجا تھا۔

## اَضَاةُ بَنِیْ غَفَّار

یہ حَصَاۃ کے وزن پر ہے، پاک صاف پانی کو کہتے ہیں۔ مشارق میں لکھا ہے کہ یہ مدینہ میں ایک جگہ کا نام تھا، اسی سلسلے میں ایک حدیث آتی ہے کہ نبی کریم ﷺ اضاۃِ بنی غفار کے پاس ہی حضرت جبریل سے ملے تھے۔ انتٰہی شاید یہ بنو غفار کے گھروں کے بیان میں گذرا ہے لیکن "تناضب" کے بیان میں آ رہا ہے کہ یہ مکہ کے قریب ایک جگہ تھی۔

## اُضَاح

یہ لفظ غُراب کے وزن پر ہے، اس میں "واؤ" ہمزہ بن گئی ہے۔ یہ عرفجا سے ایک رات کے فاصلے پر ایک بازار تھا۔

## اَضَافِر

یہ ضفیرہ کے لفظ کی جمع ہے، ریت کے تودے کو کہا کرتے تھے۔ ان گھاٹیوں کو کہتے ہیں کہ بدر کو جاتے وقت

جب حضور ﷺ ذفران سے چلے تھے تو انہی سے گذرے تھے اور ذوالاضافر زمین پر پھیلی پہاڑیاں تھیں جو ھرشی سے دو میل کے فاصلے پر تھیں، انہیں اَضافر بھی کہتے ہیں۔

## اِضَمْ

عِنَبؐ کے وزن پر ہے۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ یہ اس وادی کا نام ہے جس میں مدینہ طیبہ واقع ہے لیکن درست بات وہ ہے جو پانچویں فصل میں وادیوں کا بیان کرتے ہوئے گذر چکی ہے، علامہ ھجری کی بات بھی اسی سے ملتی جلتی ہے کہ اِضَم سیلابوں کے اجتماع والی جگہ کو کہتے ہیں، احوص نے بھی اپنے اس قول سے اسی کو مراد لیا ہے:

> ''اے اضم کے مقام علیاء میں آگ سلگانے والے: جلائے جا کیونکہ تم نے اس شوق کو بھڑکایا ہے
> جو ختم ہونے کا نہیں۔''

وہ کہتے ہیں کہ مقامِ اضم میں کنوؤں پر قبیلۂ زعاب کی جائیداد تھی۔ اسے اضم کہنے کی وجہ یہ ہے کہ سیلاب یہاں آ کر اکٹھے ہوتے تھے۔

میں کہتا ہوں کہ آج کل اسے ''ضیقہ'' کہتے ہیں پھر اس وادی میں ایک پہاڑ ہے جسے اضم کہتے ہیں جیسے پہلے اس کی طرف اشارہ ہو چکا ہے۔

علامہ مجد کی قاموس میں ہے کہ اضم ایک پہاڑ کا نام ہے اور وہ وادی جس میں نبی کریم ﷺ کا شہر مدینہ موجود ہے اور جو مدینہ کے قریب ہے، اسے قناۃ کہتے ہیں اور اس کی بالائی جانب بند کے نزدیک شظاۃ ہے اور اس کی نچلی طرف کو اضم کہتے ہیں۔ انتہٰی اور مستدرک میں علامہ یاقوت نے لکھا ہے کہ اضم مدینہ میں ایک وادی کا نام ہے جسے مدینہ کے قریب آ کر قناۃ کہتے ہیں۔

علامہ بیہقی نے حضور ﷺ کی رکانہ پہلوان سے کشتی کے بارے میں لکھا ہے کہ رکانہ ایک وادی میں اپنی بکریاں چرایا کرتا تھا جسے اضم کہتے تھے چنانچہ رسول اللہ ﷺ حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے گھر سے اس وادی کی طرف تشریف لے گئے تھے۔

طبقاتِ ابن سعد میں حضرت ابو قتادہ کے اِضَم کی طرف چھوٹا لشکر بھیجنے کے سلسلے میں لکھا ہے کہ یہ ذی خشب اور ذی المروۃ کے درمیان تھی، اس کے اور مدینہ منورہ کے درمیان چھتیس میل کا فاصلہ تھا۔

## اَلْاُطُوْل

مسجد خربہ (جسے بعد میں صالحہ کہا گیا) کے پاس قبلہ میں، بنو عبید کے گھروں کے پاس ایک قلعہ تھا۔

## اَعشار

عقیق کی وادیوں میں سے ایک وادی یا مقام تھا۔ پہلے بیان ہو چکا ہے کہ رسول اللہ ﷺ اعشار کی غار میں

تشریف لے گئے تھے۔

## اَعْظُمْ

عظم (ھڈی) کی جمع ہے اور یہ ذات الجیش کی شمالی جانب ایک بڑا پہاڑ تھا (مجد)، علامہ مراغی اسے اَعْظُمْ پڑھتے ہیں پھر اسے عَظم بھی پڑھا جاتا ہے، اہلِ مدینہ یہی لفظ بولتے ہیں اور کلام زبیر میں یہی لفظ موجود ہے اور اسی کے بارے میں عامل زبیری کا شعر ہے۔

> ”جس نے بنو اسد کے اس قبیلہ کا ارادہ کر لیا ہے، اسے کہہ دو کہ تم نے عیر اور اَعظم کی بلند چوٹیوں کا ارادہ کر لیا ہے۔“

کتاب ھجری میں مذکور ہے کہ محمد بن قلیع کے اکابر کہتے تھے کہ جب بھی عظم پر آسمان سے روشنی پڑتی تو زوردار بارش ہوا کرتی۔ وہ یہ بھی کہتے تھے کہ اس کے اوپر کسی نبی یا نیک شخص کی قبر موجود ہے۔ محمد بن قلیع کہتے ہیں: میں کہتا ہوں کہ جب میں اپنی دونوں جائیدادوں سے دکھائی دیتا تو عظم میری منزل ہوتی یعنی میں اس کے لئے دعا کیا کرتا اور جب کبھی کبھار ہم پر بارش ہوتی تو ہمارا یہ عَظم نیک بخت واقع ہوتا اور یہاں خوب بارش ہوتی۔

## اَعْماد

یہ چار قلعے تھے جو مذاد اور ذُوَبجل کے درمیان تھے پھر یہ بنو عبید کا رہائشی پہاڑ تھا جس کا کچھ حصہ بنو عبید کا تھا اور کچھ بنو سلمہ میں سے بنو خرام کا تھا۔

## اَعْواف

اسے عواف بھی بولتے ہیں، یہ حضور ﷺ کے صدقات اور کنوؤں میں سے تھا۔

## اَلْاَعْوَص

یہ مدینہ کے مشرق میں ایک جگہ کا نام تھا جو بئر سائب اور بئر المطلب کے درمیانی راستے کی ایک جانب میں تھا، وہاں کئی گھر اور کنوئیں تھے۔ اعوص کہنے کی وجہ یہ تھی کہ بنو امیہ میں سے ایک آدمی نے ارادہ کیا کہ وہاں ایک کنواں نکالے، اسے مشکل پیش آئی، یہاں اسماعیل بن عمرو بن سعید الاشدق رہتا تھا۔ حضرت عمر بن العزیز رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اپنے اس قول میں اسی کا ارادہ کیا تھا کہ: اگر میں معاہدہ کرتا تو دو آدمیوں میں سے آگے نہ بڑھتا یعنی صاحب اعوص اور بنو تمیم کے اعمش یعنی قاسم بن محمد سے۔

## اَغْلَب

بنو سواد کا قلعہ تھا اور ان کے گھروں کے بیان میں اس کا ذکر آ چکا۔

## أُفَاعِيَة

یہ ”مجاهده“ کے وزن پر ہے' مکہ کی طرف جاتے بلند ہوئے راستے میں بنو سلیم کا گھاٹ تھا اور معدن بنو سلیم سے ساڑھے چھبیس میل کے فاصلے پر تھا۔ اسدی کہتے ہیں: یہاں اونٹوں کا گلہ اور کئی کنوئیں تھے۔ وہ کہتے ہیں کہ یہ صدیق اور زبیر کی اولاد کے پاس تھا اور کچھ حصہ قیس کے پاس تھا۔

## أُفْرَاق

مشارق میں لکھا ہے کہ یہ گویا فرق کی جمع ہے۔ کچھ نے اسے اِفْراق بھی پڑھا ہے' یہ مدینہ کی اراضی اور اس کے باغوں میں سے ایک تھا۔ علامہ بکری نے اسے اُفْراق ہی پڑھا ہے۔

## أَفْلُس

علامہ ھجری لکھتے ہیں کہ جب بقیع کے میدان سے عقیق کا سیلاب بہتا تو قراوہ اَفْلس سے نکلتا' یہ چٹیل میدان تھا جس میں کوئی درخت نہ تھا اور اس کی زمین شیشے جیسی سفید تھی۔

## أَقْعَس

ایک پہاڑ ہے جس کا ذکر ضریہ کی چراگاہ میں گذر چکا ہے۔

## أَكْحَل

اسے صاحب المسالک و الممالک نے مدینہ کے ماتحت علاقے میں شمار کیا ہے' یہاں حضرت عاصم بن عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہما کی اراضی تھی اور چھٹی فصل میں گذر چکا ہے کہ سنانہ اور اس کے قریب جند اور اکحل کی طرف کا راستہ نقیع کی چراگاہ کے سامنے بائیں طرف آتا تھا یعنی جو مدینہ سے نکل کر اس کی طرف جاتا تھا۔

## أَلَابُ

سَراب کے وزن پر ہے۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ یہ مزینہ کے گھروں کا ایک وسیع حصہ زمین تھا۔

میں کہتا ہوں کہ یہ ایک مشہور وادی تھی جسے علامہ ھجری نے اَشعر کی وادیوں میں شمار کیا ہے اور وہ کہتے ہیں یہ وادی مضیق الصفراء سے ”علا“ چشمے سے نچلی طرف مل جاتی تھی۔

## أَلْبُن

اسے لفظِ يَلْبَن سے بنایا گیا ہے' یاء کو ہمزہ سے بدل دیا گیا ہے۔

## اَلْهَان

بنو قریظہ کی ایک جگہ کا نام تھا۔

## اُمُّ الْعِیال

لفظ آرہ کی وضاحت میں اس کا ذکر آ چکا ہے۔ علامہ عرّام کہتے ہیں کہ یہ حضرت فاطمۃ الزہراء رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی رفاہی زمین تھی' یہاں ایک چشمہ تھا جہاں ایک بستی تھی۔ ابن حزم کہتے ہیں کہ یہ حضرت جعفر بن طلحہ بن عبید اللہ تیمی کا چشمہ تھا جس پر انہوں نے دو لاکھ دینار خرچ کیے تھے۔ اس کا پانی بیس ہزار کھجور کے درختوں کو سیراب کرتا تھا۔

## اَمَجْ

یہ مدینہ کے ماتحت ایک شہر تھا۔ ابو المنذر بن محمد کہتے ہیں کہ امج اور عران دو وادیاں تھیں جو حرۂ بنو سلیم سے شروع ہوتی تھیں اور سمندر میں جا گرتی تھیں۔

میں کہتا ہوں' علامہ اسدی لکھتے ہیں کہ یہ امج' خلیص کے بعد مکہ کی جانب دو میل کے فاصلے پر تھی۔ وہ مزید بتاتے ہیں کہ اس سے ایک میل کے فاصلے پر وادئ ازرق تھی جسے عران کہتے تھے۔ امج بنوخزاعہ کی وادی تھی' اس میں بیس کے قریب کنوئیں تھے جن سے زراعت کی جاتی تھی۔ انتہٰی۔

ولید بن عباس قرشی کہتے ہیں کہ میں مکہ کی طرف اپنے بھگوڑے غلام کے پیچھے گیا' خوب چلا اور تیسرے دن صبح کے وقت امج میں پہنچا' میں تھک چکا تھا۔ اپنی سواری کا سامان اُتارا اور پشت کے بل لیٹ گیا اور اشعار گنگنانے لگا:

> ''غادا اور مدلج میں سے کوئی زمین پر موجود ہے تو سنو' میری طرف سے امج کے گھر والوں سے سلام کہہ دو۔''

پھر مجھے پتہ ہی نہ چل سکا کہ ایک بوڑھا شخص عصا لئے لڑکھڑاتا ہوا میری طرف آ رہا تھا' اس نے آ کر کہا: اے جوان' میں تمہیں قسم دیتا ہوں کہ یہ اشعار دوبارہ پڑھو۔ میں نے کہا کہ سر لگا کر پڑھوں؟ اس نے کہا ہاں سُر لگا کر پڑھو چنانچہ میں نے پڑھ دئیے' وہ ناچنے لگا اور جب میں فارغ ہو گیا تو اس نے کہا: جانتے ہو کہ ان اشعار کا قائل کون ہے؟ میں نے کہا' نہیں۔ انہوں نے کہا' بخدا میں انہیں اسّی سال سے پڑھ رہا ہوں۔ مجھے اس وقت پتہ چلا کہ وہ امج میں سے تھا۔

کہتے ہیں کہ حضرت عمر بن عبد العزیز رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اس سے کہا: کیا تم وہی ہو جس نے کہا ہے کہ حمید نے اپنے گھر کو دو شعروں سے گرایا ہے؟ اس نے کہا' ہاں۔ حضرت عمر نے کہا' میں دیکھ رہا ہوں کہ وہ تجھ سے دشمنی رکھتا ہے اور تم اس کی تعریف کر رہے ہو' اور اس سے ہٹتے ہی نہیں ہو۔ اس نے کہا: کیا آپ نے سنا نہیں کہ اللہ تعالیٰ فرماتا ہے: وَ الشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُوْنَ (اِلٰی) وَ اِنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ۔ اس پر حضرت عمر نے کہا' میں دیکھ رہا ہوں کہ

تم جنگل میں پھر رہے ہو اے حمید! تم پر افسوس ہے، تمہارا باپ تو نیک شخص تھا لیکن تم برے آدمی ہو۔ اس نے کہا: اللہ تمہیں درست رکھے، باپ کی طرح کون ہوا کرتا ہے، تمہارا باپ تو بُرا تھا لیکن تم اچھے انسان ہو۔

## ذُوْ اَمَرْ

اسدی کہتے ہیں کہ یہ فید کے راستے میں مدینہ کو جاتے ہوئے ایک وادی تھی جو مدینہ سے تین مرحلوں پر بستی نخیل میں واقع تھی، ابن حزم کہتے ہیں کہ نبی کریم ﷺ نے جہینہ عوسجہ جہنی کو ہزار درہم دینے کا عہد کیا اور انہیں وادی اَمَر دی تھی۔ ابن حزم کہتے ہیں کہ حضرت عبد اللہ بن زبیر کا ایک لڑکا ایک فتنہ کے موقع پر کسی وجہ کی بنا پر اضم سے الگ ہو گیا تھا۔

## اِمَّرَہ

اِمَّعَہ کے وزن پر ہے، اسے اَمَّرَہ بھی پڑھتے ہیں، یہ جگہ ضریہ کی چراگاہ کی ایک جانب تھی جو المنار پہاڑ کے قریب تھی۔ یہ عراق کے حاجیوں کے ٹھہرنے کا مقام تھا، وہاں بہت سے ستھرے کنوئیں تھے۔ بکری کے چھوٹے چھوٹے بچوں ع کے نام پر اس کا یہ نام رکھا گیا۔

## اُنسان

یہ وہ پہاڑ تھا جس کے درمیان پانی تھا جسے ''انسان'' کہا جاتا تھا۔ علامہ ھجری فید چراگاہ کے بیان میں لکھتے ہیں کہ رخام کی شرقی جانب ایک کنواں تھا جسے انسان کہتے تھے، یہ کعب بن سعد غنوی شاعر کا تھا، یہ پہاڑ اور ریت کے اس ٹیلے کی دائیں جانب تھا جسے انسان کا ٹیلہ کہا جاتا تھا۔

## اُنْعُم

یہ عالیہ (مدینہ کا بالائی حصہ) میں ایک جگہ تھی۔ علامہ نصر کہتے ہیں کہ یہ مدینہ میں ایک پہاڑ کا نام ہے جس کے اوپر کچھ گھر آباد تھے۔

یہ تو مجد نے لکھا ہے لیکن درست قول جسے جریر نے بیان کیا ہے یہ ہے کہ یہ ایک پہاڑ ہے جو وادیٔ عاقل میں چراگاہِ ضریہ کے قریب تھا۔ علامہ مجد اسے عین کی زبر سے پڑھتے ہیں اور ان دونوں کو الگ الگ شمار کرتے ہیں، وہ کہتے ہیں کہ وادیٔ عاقل میں یہ یمامہ اور مدینہ کے درمیان تھا اور یہی وہ پہاڑ تھا جس پر مزنی اور جابر بن عبد اللہ ربعی نے گھر بنا رکھا تھا۔

علامہ مجد کا قول ''انہ الذی بنٰی علیہ المزنی'' اس ''اُنْعَم'' کے بارے میں ہے جس کے متعلق علامہ نصر نے کہا ہے کہ وہ مدینہ میں تھا۔ علامہ مجد نے وادیٔ عاقل میں موجود اُنْعَم کے بارے میں گذشتہ حدیث بھی بتائی ہے کہ حضور

ﷺ اس سرخ پہاڑ کی طرف نکلے جو منارتین میں تھا، جس کا نام اَنْعم تھا تو شاید نقل کرنے والے کو غلطی لگی۔

## اِھَاب

یہ لفظ کِتَــاب کے وزن پر ہے، مسلم شریف میں حدیث ہے کہ ''مکانات ''اھاب'' تک پہنچ جائیں گے' یا فرمایا یِھَاب تک حضرت عیاض کہتے ہیں کہ ہمارے تمام مشائخ اسدی اور صدفی وغیرہ نے اسے شک کی حالت ہی میں لکھا ہے کہ ''یا یِھَاب'' ہے، تمیمی بھی یونہی لکھتے ہیں۔ مجھے یہ لفظ اس حدیث کے علاوہ کسی اور جگہ نہیں مل سکا۔ یہ مدینہ کے قریب ایک جگہ تھی۔ انتھٰی۔ علامہ مجد نے بھی انہی کی پیروی کی ہے جبکہ روایتِ احمد میں آ چکا ہے کہ نبی کریم ﷺ نکل کر بَرا ھاب پر تشریف لائے اور فرمایا: عنقریب مکانات اس جگہ تک بن جائیں گے پھر عباد زرقی سے حرم میں شکار کے بیان میں آ چکا ہے کہ وہ اِھاب کنوئیں پر چڑیوں کا شکار کرتے تھے اور یہی وہ کنواں ہے جس کا ذکر چھٹے باب کی ابتداء میں مبارک کنوؤں کے بیان میں گذر چکا، وہاں ہم نے بتایا تھا کہ یہ غربی حرہ (پتھریلی زمین) میں ہے اور ظاہر ہے کہ آج کل اسے ''زمزم'' کے نام سے جانا جاتا ہے۔

## ذُو اُوَان

یہ لفظ اُوان بولا جاتا ہے جس کا معنٰی وقت ہوتا ہے، یہ مدینہ سے ایک گھنٹہ کی مسافت پر تھا۔ ابن اسحاق کہتے ہیں کہ نبی کریم ﷺ جب تبوک سے واپس ہوئے تو ذی اوان میں ٹھہرے۔ یہ وہ مقام ہے کہ اس کے اور مدینہ کے درمیان ایک گھنٹہ کا سفر ہے، یہیں آپ کو مسجد ضرار کے بارے میں اطلاع ملی تھی۔

## اَوْسَاط

یہ لفظ مسجد قباء کے بیان میں آ چکا ہے کہ: آپ سعد بن عبادہ کے گھر میں ایک جنازہ میں شریک ہوئے، علامہ مراغی نے بھی اسے نقطوں کے بغیر لکھا ہے لہٰذا اس سے یہ بات نکلتی ہے کہ یہ مقام بنو ساعدہ کے گھروں میں تھا۔ لیکن دوسری روایت میں انہوں نے ''بلحارث بن خزرج'' کا نام لکھا ہے۔

## اَیْد

یہ وہ لفظ اید ہے جس کا معنٰی قوت اور سختی کرنا ہوتا ہے، 'ادَ یَئِیْدُ اَیْدًا' سے یہ مدینہ کے قریب ایک جگہ کا نام تھا۔

# حَرْفُ الباء

## بئرِ اَرُمٰی

یہ وہ کنواں تھا جس کے قریب ہی ’’غزوۂ ذات الرقاع‘‘ واقع ہوا تھا‘ یہ مدینہ سے تین میل کے فاصلے پر تھا‘ علامہ مجد نے یونہی لکھا ہے‘ انہوں نے اسے واقدی سے لیا ہے تاہم ہم بتائیں گے کہ صحیح تین دن کہنا ہے (تین میل نہیں)۔

## بئرِ اَلْیَۃ

یہ لفظ اَلْیَۃُ الشَّاۃ (دنبے کی چکی) سے لیا گیا ہے۔ یہ بنو عوال کے حرم میں تھا اور مدینہ سے چالیس میل سے کچھ زائد فاصلے پر تھا۔ کچھ کہتے ہیں کہ یہ فسح الحیا میں وادی کا نام تھا‘ یہ فسح‘ عرنہ میں ایک وادی ہے اور وادی عرفہ ایک باغ میں تھی جس کی نچلی طرف دورِ جاہلیت و اسلام میں گھوڑے چرائے جاتے تھے۔

## بئرِ جُشَم

پانچویں فصل کے اندر وادیٔ رانونا کے ذکر میں اسے بیان کیا جا چکا ہے اور ظاہر یہ ہے کہ یہ جشم بن خزارج کے نام سے مشہور تھی جو بنو مالک بن عصب کا دادا تھا‘ ان کی رہائش بنو بیاضہ میں تھی جو رانونا کے مغرب میں تھی۔

مؤطا میں حضرت عمرو بن سلیم زرقی سے ہے‘ وہ کہتے ہیں‘ حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے کہا گیا کہ یہاں ایک غلام ہے یافع جو ابھی بالغ نہیں ہوا اور بنو غسان سے ہے‘ اس کی وراثت شام میں ہے‘ وہ مالدار ہے لیکن یہاں اس کی ایک چچا زاد بہن ہے۔ انہوں نے کہا کہ اسے اس کے لئے وصیت کرنی چاہیئے چنانچہ اس نے کچھ زمین کی وصیت کر دی جسے بئرِ جشم کہتے تھے‘ وہ زمین تیس ہزار درہم میں بیچی گئی اور جس چچا زاد کے بارے میں اس نے وصیت کی‘ وہ اُم عمرو بن سلیم زرقی تھی۔

بنو بیاضہ کے گھروں کا بیان کر کے انہوں نے لکھا ہے کہ عبد اللہ بن حبیب بن عبد حارثہ بن مالک بن عصب بن جشم‘ والدِ ابو جبلہ غسانی شام میں غسان پر حکمران تھے۔ اس سے پہلے قول کی تائید ہوتی ہے اور علامہ مجد نے جرف میں یاقوت کی پیروی میں کہا ہے کہ بئرِ جشم اسی مقام پر تھا۔ اگر یہ بات صحیح ہے تو یہ کنواں اس کے علاوہ ہے جو رانونا کے سیلاب کے ذکر میں بیان ہوا ہے۔

## بئرُ الحَرّہ

امام غزالی رحمہ اللہ تعالیٰ لکھتے ہیں کہ زیارت کے لئے آنے والے یہاں غسل کرتے تھے۔ شاید یہ بئر السقیا ہی

تھا۔

## بئر خَارِجَة

مسلم میں حدیث ابوھریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ میں ہے: ہم رسول اللہ ﷺ کے گرد بیٹھے تھے، حضرت ابوبکر و عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما بھی موجود تھے، رسول اللہ ﷺ ہم میں سے اُٹھ گئے اور واپسی میں دیر کر دی، ہم کو اندیشا ہوا کہ ہم سے اوجھل نہ ہو گئے ہوں، ہم گھبرا گئے اور اُٹھ کھڑے ہوئے، سب سے پہلے یہ خوف مجھ پر طاری ہوا چنانچہ میں رسول اللہ ﷺ کو تلاش کرنے نکلا اور انصار بنونجار کے باغ میں پہنچا، دروازہ ڈھونڈنے کے لئے اس کے گرد پھرا لیکن دروازہ نہ مل سکا۔ یکا یک دیکھا تو حضرت ربیع بئرِ خارجہ کی طرف سے نکلے اور باغ میں داخل ہوئے۔ میں رسول اللہ ﷺ کی خدمت میں حاضر ہوا۔ صاحبِ تحرز نے لکھا ہے کہ خارجہ وہ شخص تھا جس کی طرف یہ کنواں منسوب تھا۔

## بئر خَرِيف

بئرِ اریس میں بتایا جا چکا ہے کہ حضرت عثمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے بیرِ اریس کو اپنے صدقہ کے مال میں شامل کر لیا تھا پھر ایک روایت میں ہے کہ انگوٹھی بھی اسی میں گری تھی۔

## بئر الخصي

عنقریب خاء والے الفاظ میں اس کا ذکر آ رہا ہے۔

## بئر خَطُمة

یہ وہی بئرِ ذرع ہے جس کا ذکر چھٹے باب کی ابتداء میں آ چکا ہے۔

## بئر دُرُيك

اس کے بارے میں بئرِ زریق کا لفظ بھی بولا جاتا ہے۔ یہ علامہ مجد کا قول ہے اور بنوخطمہ کے گھروں کے ذکر میں ہے کہ انہوں نے ایک قلعہ بنایا تھا جو بئرِ درک پر تھا چنانچہ یہاں یہی مراد ہے۔

## بئر ذَرُوَان

امام بخاری کے سب راویوں کے نزدیک ذَرْوان ہی ہے، ابنِ حذاء سے بھی یونہی مذکور ہے پھر بخاری کی کتاب الدعوات میں حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی حدیث میں ہے کہ ذروان، بنوزریق میں ایک کنواں تھا۔ علامہ جرجانی کہتے ہیں کہ مسلم شریف کے تمام راویوں کے ہاں اس کا نام بئرِ ذی اروان ہے، علامہ اصیلی کے نزدیک یہ بئرِ ذی اوان ہے، اس میں راء نہیں ہے۔ حضرت عیاض لکھتے ہیں اور علامہ مجد نے بھی ان کی پیروی کی ہے کہ یہ وہم ہے کیونکہ ذی اوان ایک اور جگہ ہے جو مدینہ سے ایک گھنٹے کے سفر پر ہے اور یہ وہی جگہ تھی جہاں مسجد ضرار بنائی گئی تھی۔

میں کہتا ہوں کہ حضور ﷺ کو جب مسجدِ ضرار کے بارے میں علم ہوا تو آپ ذی اوان میں تھے۔ ابن حجر کہتے ہیں، گویا اصیلی کی روایت سے بئر ذی اروان کے نام کا پتہ چلتا ہے پھر اس سے راء گر گئی۔

وہ کہتے ہیں، روایت ذروان اور ذی اروان کو جمع کرنے کی صورت یوں بنتی ہے کہ اصل میں یہ لفظ ذی اروان تھا پھر کثرتِ استعمال سے ہمزہ میں تسہیل کی گئی تو یہ ذروان بن گیا۔ اس کی تائید اس بات سے ہوتی ہے کہ ابوعبیدہ بکری نے بئر کا نام اروان درست قرار دیا ہے اور جس نے ذروان کہا ہے، اس نے غلط کہا ہے حالانکہ یہ ظاہر ہے کہ یہ غلطی نہیں، ایک روایت میں یہ لفظ بئر اروان بھی آیا ہے، لفظ ذی شامل نہیں۔

میں کہتا ہوں، جس نے ذروان کہا ہے، اس نے اصل لفظ میں تبدیلی کی ہے، اسی لئے عیاض کہتے ہیں: اصمعی نے کہا: کچھ لوگ غلطی کرتے ہیں اور کہتے ہیں: بئر ذروان اور جسے ابن قتیبہ نے صحیح کہا ہے وہ ذواروان کا لفظ ہے۔

صحیحین وغیرہ میں اس کنوئیں سے متعلق حدیث لبید بن اعصم کے جادو کے بیان میں ہے، ایک روایت میں یہ نام اعصم سحولی لکھا ملتا ہے، ایک اور روایت میں ہے کہ یہ شخص بنو زریق میں سے تھا، یہودیوں کا حلیف تھا اور منافق تھا۔ اس نے آٹھویں سال میں رسول اللہ ﷺ پر کنگھی میں جادو کر کے اسے اس کنوئیں میں ایک پتھر کے نیچے رکھ دیا، جادو نے آپ پر اثر کر دیا پھر آپ کو یہ سب کچھ خواب میں دکھا دیا گیا اور آخر کار اسے کنوئیں سے نکال کر کھول دیا گیا۔

بخاری شریف ہی میں ایک اور روایت ہے کہ نبی کریم ﷺ اپنے صحابہ کے ہمراہ کنوئیں پر گئے، آپ نے کنوئیں کو دیکھ کر فرمایا: یہ وہی کنواں ہے جو خواب میں مجھے دکھایا گیا ہے اور پھر حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی طرف تشریف لے گئے۔ حضرت عائشہ کہتی ہیں، میں نے عرض کی یا رسول اللہ! آپ نے وہ جادو کا تعویذ نکالا نہیں؟ دوسری روایت میں ہے کہ آپ نے عرض کی تھی: آپ نے اسے جلا نہیں دیا؟ آپ نے فرمایا: نہیں کیونکہ مجھے اللہ تعالیٰ نے اپنی حفاظت میں رکھا ہے، میں نہیں چاہتا کہ اس وجہ سے لوگوں میں آگ بھڑکے، میں نے کہا ہے کہ اسے دفن کر دو۔

ابن سعد کی ایک روایت ہے: آپ فرماتی ہیں: میں نے عرض کی یا رسول اللہ! وہ نکال کر آپ اسے لوگوں کو دکھا دیتے، آپ نے فرمایا کہ اللہ نے مجھے محفوظ فرما دیا ہے۔ اس سے معلوم ہوا کہ اسے لوگوں کو دکھانے سے منع کیا گیا ہے۔ کنوئیں سے نکالنا منع نہیں، اس سے سب روایات جمع ہو جاتی ہیں۔

امام نسائی نے لکھا ہے کہ ایک یہودی نے حضور ﷺ پر جادو کیا، آپ کو کئی دن تک تکلیف رہی، اسی دوران حضرت جبریل علیہ السلام حاضر ہوئے اور عرض کی کہ آپ پر ایک یہودی نے جادو کیا ہے اور اس نے گانٹھیں دے کر فلاں کنوئیں میں ڈال دیا ہے۔ حضور ﷺ نے اسے نکالنے کے لئے کسی کو بھیجا، اسے نکلوایا اور کھول دیا چنانچہ آپ یوں اُٹھے جیسے رسّی سے بندھا انسان اُٹھ کر چنگا بھلا ہو جاتا ہے اور بالکل تندرست ہو گئے۔

حضرت عکرمہ کے مطابق، معاف فرمانے کے بعد آپ اسے دیکھ کر چہرۂ انور ایک طرف فرما لیا کرتے تھے۔ علامہ واقدی نے کہا ہے کہ ہمارے نزدیک یہ روایت اس روایت سے بہتر ہے جس میں کہا گیا ہے کہ آپ نے

اسے قتل کرا دیا تھا۔

آپ ہی کی ایک روایت یہ ہے کہ جب رسول اللہ ﷺ حدیبیہ سے واپس تشریف لائے اور محرم آ گیا تو مدینہ میں اسلام ظاہر کرنے والے رئیس منافق، لبید بن اعصم کے پاس اکٹھے ہوئے (یہ شخص بنو زریق کا حلیف تھا، یہ جادو کیا کرتا تھا اور سارے یہودی جانتے تھے کہ وہ سب یہودیوں سے زیادہ جادو جانتا تھا) اور کہنے لگے: اے ابوالاعصم! تم ہم سب میں سے زیادہ جادوگر ہو، ہم نے تو محمد پر جادو کیا تھا لیکن کوئی اثر نہیں ہوا، تم دیکھ رہے ہو کہ اس کا ہم پر اثر ہے لہٰذا ہم تمہیں اجرت دیتے ہیں چنانچہ انہوں نے رسول اللہ ﷺ پر جادو کرنے کے لئے تین دینار دینے کا کہا چنانچہ اس نے کنگھی کے ذریعے سر سے اترے ہوئے بال لئے، اس پر گانٹھیں لگائیں اور اس پر تھوکا، پھر اسے باندھ کر کنوئیں کی تہ میں دفن کر دیا۔ حضور ﷺ نے ایسی صورت دیکھی کہ آنکھ اسے دیکھ کر مان نہیں رہی تھی، ادھر اللہ تعالیٰ نے آپ کو سب کچھ بتا دیا تو آپ نے حضرت جبیر بن ایاس زرقی کو بلایا جس نے آپ کو بتایا کہ بئر ذروان میں اسے یہاں پر پتھر کے نیچے دفن کیا گیا ہے، پھر لبید بن اعصم کو بلایا اور فرمایا: یہ کام تم نے کس وجہ سے کیا ہے؟ مجھے تو اللہ تعالیٰ نے سب کچھ بتا دیا ہے۔ اس نے کہا کہ دیناروں کی محبت کی وجہ سے ایسا کیا ہے۔

اسحاق بن عبداللہ کہتے ہیں کہ میں نے عبدالرحمٰن بن کعب بن مالک کو اس بات کی اطلاع دی تو انہوں نے کہا کہ آپ کو اعصم کی بیٹیوں اور لبید کی بہنوں نے جادو کیا ہے، وہ لبید سے زیادہ ماہر اور خبیث ہیں، ہاں کنوئیں میں پتھر کے نیچے اسے لبید نے رکھا۔

حارث بن قیس نے عرض کی، یا رسول اللہ! کیا ہم کنوئیں کو ڈھا نہ دیں؟ آپ نے منہ پھیر لیا چنانچہ حارث اور ان کے ساتھیوں نے اسے گرا دیا حالانکہ اس کنوئیں سے میٹھا پانی پیا جاتا تھا۔

حارث کہتے ہیں کہ انہوں نے ایک اور کنواں خریدا، حضور ﷺ بھی ان کی مدد فرماتے رہے اور آخر انہوں نے پانی نکال لیا، وہ بعد میں گرا دیا گیا تھا۔ کہتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ کے حکم سے وہ تعویذ قیس بن محصن نے نکالا تھا۔

ابن سعد سے بھی روایت ہے: رسول اللہ ﷺ نے حضرت علی اور عمار کو بلا کر حکم فرمایا کہ اس کنوئیں پر جائیں اور اس کا بندوبست کریں۔ وہ وہاں پہنچے تو دیکھا کہ کنوئیں کا پانی مہندی رنگ کا ہو چکا تھا، وہ کنوئیں میں اترے، پتھر کو اُٹھایا تو وہ تعویذ نکلا جس میں گیارہ گانٹھیں لگائی گئی تھیں چنانچہ یہ دو سورتیں اتریں، سورۂ فلق اور سورۂ ناس، حضور ﷺ جیسے جیسے ایک ایک آیت پڑھتے جاتے تھے تو گانٹھ کھلتی جاتی تھی، یوں وہ ساری گانٹھیں کھل گئیں۔

## بئر رئاب

مدینۂ منورہ میں یہ کنواں موجود تھا۔ اس کی دلیل کا ذکر مخیض میں آ رہا ہے۔

## بئر رکانه

عراق کے راستے میں مدینہ منورہ سے دس میل کے فاصلے پر تھا۔ وہاں ایک حوض تھا، اس کی پچھلی طرف دو میل کے فاصلے پر بنو مطلب کا کنواں تھا۔

## بئر زمزم

اس کا ذکر چھٹے باب کی ابتداء میں بئر اِہاب کے ذکر میں آ چکا ہے، نام اس وجہ سے پڑا کہ اس کے پانی کو بہت متبرک سمجھا جاتا ہے۔

## بئر زیاد

عیون حسین میں اس کا ذکر آ رہا ہے۔

## بئر السّائب

یہ مدینہ سے چوبیس میل کے فاصلے پر نجدی کے راستے میں تھا، اس کے اور ''شقرہ'' کے درمیان بھی اتنا ہی فاصلہ تھا۔ یہاں ایک محل، عمارتیں اور بازار تھا۔ نام رکھنے کی وجہ یہ تھی کہ حضرت عثمان بن عفان رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اسے لوگوں کے لئے تیار کرایا تھا۔ اس کی وادی کو عرنیہ کہتے تھے، اس کا سیلابی پانی اَعواض میں جا گرتا تھا اور پھر قناۃ میں جا گرتا تھا۔ بئرِ سائب کے اوپر والے پہاڑ کو ''شباع'' کہتے تھے، کچھ دیہاتی بتاتے تھے کہ حضرت ابراہیم علیہ السلام اس کی اُوپر والی جانب میں اُترے تھے۔

## بئر سمیحه

اس کنوئیں کا ذکر حرفِ سین میں آ رہا ہے۔

## بئر شدّاد

مقام شحاشہ کی ایک جانب میں تھا۔

## بئر عائشه

عائشہ نامی شخص قبیلۂ بنو واقف سے تعلق رکھتا تھا، پورا نام عائشہ بن نمیر بن واقف تھا، یہاں اس کا قلعہ موجود تھا اور ان کے مکانات مسجد الفضیخ کے قبیلہ کی طرف واقع تھے۔

## بئر عَذُق

یہ لفظ عَذُقُ النخلہ سے لیا گیا ہے (یعنی کھجور کا درخت کاٹنا) یہ قباء میں مشہور کنواں تھا، بنو انیف کے گھروں کے

بیان میں اس کا ذکر آ چکا ہے۔

## بئر عروہ بن زُبیر

یہاں کے محل سمیت اس کنوئیں کا ذکر عقیق میں گذر چکا ہے۔ یہ مشہور کنواں تھا پھر بند ہو گیا تھا' علامہ مجد کہتے ہیں کہ میں نے ایسا کوئی شخص نہیں دیکھا جو اس کے بارے میں کچھ جانتا ہو۔

## بئر ذَاتُ العَلَم

یہ روحاء کے سامنے تھا۔ کہتے ہیں کہ حضرت علی کرم اللہ وجہہ نے یہاں جن کو قتل کیا تھا' یہ حرشی کے بعد انتہائی آخری کنواں تھا۔

## بئر غَامِر

حضرت عثمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اسے اپنے صدقہ بئر اریس میں داخل کیا تھا۔ ایک اور روایت میں ہے کہ یہ حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے مال میں سے تھا جیسے صدقات میں بتایا گیا۔

## بئر غَدَق

یہ لفظ غدقت العین سے لیا گیا ہے' جب آنکھ سے آنسو نکلیں تو بولتے ہیں۔ یہ مدینہ میں ایک کنواں تھا جو بلوائیوں (حضرت عثمان پر حملہ کرنے والوں) کے قلعے کے پاس تھا۔ مجھے اس کی اصل کا پتہ نہیں چل سکا' ہاں اس کا ذکر یہود کے منازل میں گذر چکا ہے جہاں یہ آتا ہے کہ یہ لوگ قباء میں تھے' بئر غدق کے قریب بنو انیف کا قلعہ تھا۔ علامہ مجد نے اس میدان کا نام نہیں بتایا جہاں یہ موجود تھا۔ یہ نام آج کل عین کے حرف سے بولا جاتا ہے (عدق) علامہ مجد نے اس کا ذکر نہیں کیا اور اگر ان کی مراد یہی ہے تو پھر انہوں نے اس کے مشہور نام کی مخالفت کی ہے۔

## بئر فاطمہ

یہ حضرت امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی صاحبزادی تھیں۔ ولید کے اضافے میں گذر چکا: ابن زبالہ نے حضرت امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے غلام منصور سے روایت کرتے ہوئے بتایا کہ حضرت فاطمہ' اپنی دادی حضرت فاطمۃ الزہراء رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے گھر سے اس وقت نکلیں جب ان کا مکان مسجد میں شامل کیا گیا اور وہ حرہ کے مقام پر گئیں جہاں انہوں نے اپنا مکان بنوایا' اس وقت وہ راح میں ٹھہری ہوئی تھیں' ان کا یہ گھر ذکوان اور ابراہیم بن ہشام کے مکان کے درمیان تھا اور جب انہوں نے اسے بنایا تو کہا: مجھے وضو اور ایسی ضرورتوں کے لئے کنوئیں کی ضرورت ہے چنانچہ انہوں نے اپنے اس گھر کی جگہ پر دو رکعت نفل پڑھے اور اللہ سے دعا مانگی پھر بیلچہ پکڑا اور کنواں کھودا اور مزدوروں سے کام کرایا۔ چنانچہ پانی نکل آیا اور حضرت فاطمہ بنت حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی وفات کے بعد جب ابراہیم بن ہشام

نے حرہ میں اپنا مکان بنایا اور بازار اس طرف منتقل کرنے کا ارادہ کیا تو حوض میں گڑھے کو اسی طرح بنایا جیسے فاطمہ نے بنایا تھا۔ ابراہیم بن ہشام نے حضرت عبد اللہ بن حسن بن حسن (فاطمہ بنت حسین کے بیٹے) سے پوچھا کہ فاطمہ کا گھر انہیں بیچ دیں چنانچہ انہوں نے انہیں تین ہزار دینار کے بدلے میں بیچ دیا۔

بئرِ اِھاب میں علامہ مطری کی ترجیح گذر چکی کیونکہ آج کل یہ کنواں زمزم کے نام سے مشہور ہے اور یہ قبلہ کی طرف زمزم کے نام سے مشہور ہے لیکن ہمارے نزدیک اس بات کو اولیت ہے کہ یہ بئرِ اِھاب تھا کیونکہ بئرِ فاطمہ اس کے قریب تھا، شاید یہ کنواں اس باغ کی شامی جانب تھا۔

## بئرِ فُجَّار

اس کا ذکر ''شطبیہ'' میں آ رہا ہے۔

## بئرِ مِدُرٰی

مِدرٰی وہ لفظ ہے جس کا معنٰی کُھر چنا ہوتا ہے۔ یہ مدینہ کے ان کنوؤں میں سے تھا جو غزارہ اور طیب کے نام سے معروف تھے۔ زبیر کہتے ہیں کہ بنوقریظہ میں سے ایک شخص نے بلحارث بن خزرج کی ایک عورت کو نکاح کا پیغام دیا تو اس نے کہا کہ کیا اس کی بئر مدرٰی، ھامات، ذی وشیع یا بئر فجار میں جائیداد ہے؟ اور خود وہ بئرِ اریس میں تھی۔

میں کہتا ہوں کہ یہ خبر شطبیہ کے ذکر میں آ چکی ہے اور انہی الفاظ میں ہے چنانچہ ان کا قول ہے ''وھی بئر اریس'' اگر اس سے ان کی مراد وہی ہے جس کے لئے خبر آئی ہے تو وہ شطبیہ ہے، بئر مدرٰی نہیں اور پھر لوگ جانتے ہیں کہ بئرِ اریس قباء میں تھا اور اگر تمام کنوئیں مراد لیتے ہیں تو پھر بھی یہی مراد ہے کیونکہ شطبیہ انہی میں سے ہے اور یہ اعواف کی جانب تھا اور اگر اس سے انہوں نے بئرِ فجار مراد لیا ہے تو یہ مشہور نہیں اور مہزور کے سیلاب کے بیان میں بتایا جا چکا ہے کہ حضرت عثمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہی نے بئرِ مدرٰی کے پاس والا بند باندھا تھا تا کہ مہزور کے سیلاب کو مسجد کی طرف آنے سے روکا جا سکے۔

ابن زبالہ لکھتے ہیں کہ حضرت عثمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا وہ سرج جسے مدرٰی کہتے تھے وہ آپ کی اراضی میں مہزور سے نکلتا تھا اور اریس تک آ جاتا تھا۔

## بئرِ مَرُق

یہ لفظ راء کی زبر اور جزم سے پڑھا جاتا ہے۔ یہ مدینہ کا ایک کنواں تھا۔ اس کا ذکر ہجرت کی حدیث میں آتا ہے۔

میں کہتا ہوں کہ اس کا ذکر تیسرے باب کی ساتویں فصل میں موجود ہے۔ روایت بیہقی میں ہے کہ حضرت اسعد بن زرارہ ایک دن دارِ بنوعبد الاشہل کی طرف حضرت مصعب بن عمیر کی طرف گئے اور بنوظفر کے ایک باغ میں چلے

گئے۔ (یہ بنو عبد الاشہل کے قریب بنوظفر کی بستی تھی یہ دونوں چچا زاد تھے) اسے بئرِ مرق کہتے تھے۔ اسی سے پتہ چل جاتا ہے کہ یہ دارِ بنوظفر اور بنو عبد الاشہل کے قریب تھا' وہاں مسجدِ اِجابہ کی ایک جانب کھجور کا باغ تھا جسے مرقیہ کہتے تھے تو ظاہر یہ ہے کہ یہ اسی کی طرف منسوب تھا۔

## بئرِ مُطَّلِب

یہ مدینہ منورہ سے سات میل کے فاصلے پر تھا اور مطلب بن عبد اللہ بن حنطب مخزومی کے نام سے منسوب تھا۔ یہ قول تو علامہ مجد کا ہے اور اسدی نے اسے نجدی کے راستے میں بتایا ہے' وہ کہتے ہیں کہ یہ مدینہ سے پانچ میل کے فاصلے پر تھا اور چھٹا میل حرّہ واقم پر تھا جو مدینہ کی اوپر والی جانب تھا' شائد یہی بئرِ بنو مطلب تھا۔

علامہ مجد کہتے ہیں کہ صخر بن جعد مُحاربی مدینہ کو آیا تو سیّار نامی تاجر کے پاس پہنچا' ان سے گندم اور عطر خریدا اور اس سے کہا کہ کل میرے پاس آنا' میں تمہاری ضرورت پوری کر دوں گا اور پھر اسی رات جنگل کو چلا گیا' صبح ہوئی تو سیار نے ان کے متعلق پوچھا' پھر انہی کے پیچھے سوار ہو کر چل دیا اور بئرِ مطلب پر پہنچا جو مدینہ سے سات میل کے فاصلے پر تھا' کچھ لوگ ہمراہ تھے' انہیں گرمی کا سامنا ہوا چنانچہ وہاں جا ٹھہرے اور اپنے پاس سے کھجوریں کھائیں نیز اپنے گھوڑوں کو راحت و سکون دیا اور پھر واپس آ گئے۔

## بئرِ مَعُوْنَہ

غلطی سے اسے بئرِ معاویہ کا نام بھی دیا جاتا ہے جو عسفان اور ملّہ کے درمیان تھا' معاویہ وہی جو ابوسفیان کے لڑکے تھے حالانکہ یہ کنواں وہاں موجود ہی نہیں کیونکہ یہ نون کے ساتھ ہے' یہ تو اُبلی نامی پہاڑ کے درمیان ہے' یہ اس راستے میں تھا جو مدینہ سے مکہ کو جاتا ہے اور یہ بنو سلیم کا تھا۔ یہ بات علامہ مجد نے قول عَرّام سے لے کر بتائی ہے جو عنقریب لفظ نازیہ میں آ رہا ہے کہ: اُبلی میں کئی کنوئیں ہیں جن میں سے بئرِ معونہ' ذوساعدہ' ذوحجاجم یا حماحم اور ابوسیا ہیں' یہ بنو سلیم کے تھے۔

ابلیٰ کا بیان پہلے آ چکا ہے جو سوارقیہ اور رحضیّہ کے درمیان تھا اور اس کی تائید اس بات سے ہوتی ہے کہ معونہ وہاں ایک مشہور وادی تھی جیسے مجھے امیرِ مدینہ سیّد شریف فسیطل نے بتایا تھا اور علامہ نووی کا تہذیب میں یہ قول اس کی تائید کرتا ہے: بئرِ معونہ نجد کی طرف تھا جو بنو عامر کی زمین اور حرّہ بنو سلیم کے درمیان تھا اور جو کچھ زہری نے ابلیٰ کے بارے میں لکھا ہے وہ بھی اس کی تائید کرتا ہے لیکن علامہ عیاض نے المشارق میں اس کے خلاف لکھا ہے اور اسے اس کے درمیان بتایا ہے جو عسفان اور مکہ کے درمیان تھا' ان کی پیروی ایک جماعت نے کی ہے جن میں سے آخری حافظ ابن حجر تھے۔

علامہ مجد نے واقدی سے نقل کیا ہے کہ بئرِ معونہ بنو سلیم اور بنو کلاب کی زمین میں تھا اور قصہ رجیع اسی مقام پر

ہوا تھا' اس میں علامہ عیاض کی کلام کی ترجیح پائی جاتی ہے کیونکہ رجیع وہ جگہ تھی جس کے قرب میں عاصم بن ثابت اور حبیب کا قصہ ہوا تھا' علامہ بخاری نے اسے غزوۃ الرجیع کا نام دیا ہے اور پھر امام بخاری حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی ہے' وہ بتاتے ہیں کہ نبی کریم ﷺ نے ایک چھوٹا سا لشکر عین کی طرف بھیجا جس پر عاصم بن ثابت کو امیر بنایا' وہ چلتے گئے اور جب عسفان و مکہ کے درمیان پہنچے تو ھذیل کا ایک قبیلہ یاد آ گیا۔ وہ ان کے پیچھے گئے اور جہاں وہ ٹھہرے تھے' وہاں پہنچ گئے' انہوں نے دیکھا کہ ان کے پاس مدینہ کی کھجوریں تھیں جو وہ مدینہ سے لے گئے تھے۔ پھر باقی قصہ بیان کیا۔ ابو معشر نے اپنی مغازی میں بیان کیا ہے کہ وہی جگہ رجیع تھی چنانچہ کہا کہ وہ سحری کے وقت رجیع میں جا ٹھہرے' وہاں عجوہ کھجوریں کھائیں جن میں سے ایک گٹھلی زمین پر گر گئی' یہ لوگ رات کو سفر کرتے تھے اور دن کو چھپ جاتے تھے۔ اتنے میں ھذیل سے ایک عورت چلائی کہ تم آ گئے چنانچہ وہ انہیں تلاش کرنے آئے تو دیکھا کہ وہ پہاڑ میں چھپے ہوئے تھے۔

بخاری کی روایت میں ہے کہ جب وہ ''ھدأۃ'' پہنچے۔ یہ لفظ انہوں نے ''بین عسفان و مکۃ'' کی جگہ لیا ہے' ابن اسحاق نے یہ لفظ ھدّۃ بتایا ہے' ہمزہ نہیں لکھا۔ کہتے ہیں کہ یہ مقام عسفان سے نو میل کے فاصلے پر تھا۔

پھر امام بخاری نے باب غزوۃ الرجیع میں بئرِ معونہ والوں کا واقعہ بیان کیا چنانچہ اس میں اس طرف اشارہ ہے جو علامہ واقدی نے لکھا ہے کہ یہ ایک ہی جگہ تھی اور ساتھ یہ بھی بتایا ہے کہ یہ عسفان اور مکہ کے درمیان تھی لیکن جو کچھ علامہ مجد نے لکھا ہے' اس کی گواہی ابن اسحاق کے کام سے ملتی ہے کیونکہ انہوں نے غزوۂ رجیع کے بارے میں کہا: جب وہ رجیع (ھدّہ کی ابتداء میں حجاز کی جانب ہذیل کا کنواں) پہنچے تو ان سے دھوکا کیا۔

پھر غزوۂ معونہ کے بارے میں لکھا کہ ابو براء عامر بن مالک ملاعب الاسنۃ نے عرض کی: اے محمد! کاش آپ اپنے صحابہ میں سے کچھ آدمی اھلِ نجد کی طرف بھیجتے جو آپ کی اطاعت پر انہیں آمادہ کرتے۔ اس کے بعد قاریوں کے بھیجنے کا ذکر کیا اور کہا: وہ چلے اور بئرِ معونہ پر جا قیام کیا' یہ مقام بنو عامر کی زمین اور حرّۂ بنو سلیم کے درمیان تھا' دونوں شہر اسی میں تھے اور یہ حرّۂ بنو سلیم کے زیادہ قریب تھا جس سے پتہ چلتا ہے کہ دونوں الگ الگ مقام تھے' البتہ انہیں مدینہ کے مشرق میں گھیرے ہوئے تھی چنانچہ جو کچھ علامہ مجد نے ذکر کیا ہے وہ ابن اسحاق کے کلام کے موافق ہے۔

## بئر المُلك

یہ بادشاہ تُبّع یمانی تھا' اس کنوئیں کو اس نے قناۃ والے اپنے گھر میں اس وقت کھودا تھا جب وہ مدینہ میں آیا تھا چنانچہ یہ نام اسی کی وجہ سے پڑا تھا۔ اس نے دیکھا تو یہ شہر وباء والا تھا۔ اسے بئرِ رومہ سے پانی لا کر دیا جاتا تھا۔

ابن شبہ کہتے ہیں کہ مدینہ کے صدقات میں سے حضرت علی بن ابوطالب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا قناۃ کے مقام پر ایک کنواں تھا جسے بئر الملک کہتے تھے۔

## بئر الهجيم

یہ اس قلعہ کی طرف منسوب تھا جسے عصبہ میں ھُجیم کہتے تھے۔ مسجد توبہ کے بیان میں گذر چکا کہ عصبہ میں مسجدیں تھیں جن کی معیّن جگہوں کا کوئی علم نہیں۔ مطری نے اسے بئر ھُجم لکھا ہے، مراغی کی تحریر میں ھاء پر زبر ہے۔ ابن شبہ نے مدینہ کے کنوؤں میں ایک کنوئیں کا ذکر کیا ہے جسے ھُجیر کہتے تھے۔

## بأَلّی

تبوک کی مسجدوں میں بھی اس کا ذکر آ رہا ہے۔

## بتراء

اس کا ذکر بھی تبوک کی مسجدوں میں آ گیا اور شاید یہ وہ بتراء نہیں جو مدینہ سے ایک مرحلہ (ایک دن) کے فاصلے پر تھا۔ حضور ﷺ غزوۂ بنولحیان کے موقع پر اس میں سے شام کا ارادہ ظاہر کرتے ہوئے چھپ کر گذرے تھے اور غراب کو تشریف لے گئے، پھر مخیض کو اور پھر بتراء کی طرف تشریف لے گئے، پھر بائیں جانب ہوئے، پھر بین کی طرف، پھر صخیرات الثمام کی طرف تشریف لے گئے اور پھر سیدھے محجّہ کے راستے پر چلے۔

## بَجَرَات

اس کی تصغیر بناتے ہوئے بجیرات بولتے ہیں، یہاں جبل شوران میں آسمانی پانی جمع ہوتا تھا۔

## بجدان

یہ مدینہ سے ایک رات کے فاصلے پر ایک پہاڑ ہے، اسے صاحب نہایہ نے ذکر کیا ہے، اس کے بارے میں یہ حدیث ہے کہ: چلتے جاؤ، یہ بجدان ہے کیونکہ تنہا جانے والے آگے نکل گئے۔ زہری نے یونہی ذکر کیا ہے تاہم اکثر حضرات نے اسے جمدان لکھا ہے جیسے آگے آ رہا ہے۔

## بُحْرَان

باء پر پیش ہے تاہم ابن الفرات نے اسے باء کی زبر سے پڑھا ہے۔ ابن اسحاق نے حضرت عبداللہ بن جحش رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے چھوٹے لشکر کے بارے میں لکھا ہے: وہ حجاز کے راستے پر چلتے گئے اور جب فرع کے اوپر معدن پر پہنچے جسے بحران کہتے تھے۔

پھر غزوہ ذی اَمر کے بعد کہا: پھر حضور ﷺ قریش کا ارادہ لے کر غزوہ کے لئے چلے اور بحران تک جا پہنچے جو حجاز میں فُرع کی طرف کان تھی، وہاں آپ ربیع الآخر اور جمادی الاولیٰ کے مہینوں میں ٹھہرے، پھر واپس تشریف لے آئے اور مقابلہ کی نوبت نہ آئی۔

ابن سعد کہتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ اپنے اصحاب کے تین سو افراد کو لے کر چلے اور بحران تک جا پہنچے' دیکھا تو بنو سلیم اپنے اپنے کنوؤں کی طرف بکھر گئے۔ آپ وہاں دس راتوں تک چھپے رہے۔

## بُخْرَج

قباء میں بنو عمرو و بن عوف کا قلعہ تھا۔

## بَدَا

وادیٔ قری کے قریب ایک جگہ کا نام ہے' یہاں علی بن عبد اللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہم اور ان کی اولاد کی رہائش تھی۔

## بدائع

مسجد شیخین میں بتایا جا چکا ہے کہ مدینہ میں اس کی معین جگہ معلوم نہ ہو سکی۔

## بَدْر

یہ وہ کنواں تھا جسے بنو غفار میں سے ایک شخص نے کھودا تھا' اس کا نام بدر بن قریش بن مخلد بن نضر بن کنانہ تھا۔ یہ بھی کہتے ہیں کہ بدر' بنو ضمرہ میں سے ایک شخص تھا جو اس مقام پر ٹھہرا تھا چنانچہ یہ جگہ اس کے نام سے منسوب ہو گئی اور پھر اس پر یہی نام بولا جانے لگا۔ زبیر کہتے ہیں: قریش بن حارث بن مخلد اور کہتے ہیں کہ مخلد بن نضر کی وجہ سے قریش کو قریش کہتے ہیں کیونکہ اس نے اس کا پتہ بتایا تھا اور وہ ان کا وارث تھا چنانچہ جو لوگ کہتے تھے: قریش کا لشکر آیا۔ اس کا بیٹا بدر بن قریش تھا اور اسی کے نام پر بدر کا نام رکھا گیا جہاں جنگِ بدر کا مبارک واقعہ پیش آیا کیونکہ اسے اسی نے کھودا تھا۔

یہ بھی کہتے ہیں کہ بدر اس کنوئیں کا نام تھا جس کی وجہ سے یہ نام پڑا کیونکہ وہ گولائی میں تھا یا اس لئے کہ اس کا پانی صاف تھا کیونکہ چودھویں کا رات اس میں دیکھا جا سکتا تھا لیکن واقدی نے بنو غفار کے بوڑھوں کے حوالے سے اس کا انکار کیا ہے' وہ کہتے تھے: یہی ہمارا ٹھکانہ ہے' ہمارے گھر یہیں ہیں اور ایسا کوئی نہیں جو بدر کے نام سے اس کا مالک ہوا ہو' یہ اس کا نام ویسے ہی ہے جیسے دوسرے شہروں پر بولا جاتا ہے جیسے بدر الموعد' بدر القتال' بدر الاولیٰ' بدر الثانیہ اور بدر الثالثہ' یہ سب ایک ہی جگہ کے نام ہیں' اس واقعۂ بدر میں (جب اللہ نے اسلام کو غالب فرمایا) چودہ آدمی شہید ہوئے تھے جن میں سے ابو عبیدہ بن حارث وہ شخص تھے' جو دیر سے فوت ہوئے' اس وقت وہ صفراء میں پہنچ گئے تھے۔ اہلِ سیرت کی کلام سے پتہ چلتا ہے کہ باقی شہداء' بدر میں دفن ہوئے تھے۔ یہیں مسجد عمامہ تھی۔

میں نے ''منازل الحاج'' میں لکھا دیکھا ہے کہ بدر میں پہاڑ کے اندر داخلے تک کا فاصلہ تقریباً نصف فرسخ (چا

کلومیٹر) تھا اور یہ وہ غار تھی جس میں نبی کریم ﷺ داخل ہوئے تھے، انتہی۔ یہ غار بدر سے آتے ہوئے دائیں طرف آتی تھی، میں نے خود دیکھا کہ حاجی حضرات اس میں برکت کے لئے نفل پڑھتے تھے۔

علامہ مرجانی کہتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ اپنی عضب نامی تلوار لے کر اس جنگ میں شریک ہوئے تھے اور اس میں فتح کا طبل بجا دیا تھا چنانچہ یہ سلسلہ قیامت تک جاری رہے گا۔ انتہی۔ یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ اسی جگہ پر سنی جائیگی اور یہ مدینہ سے چار مرحلہ دور تھی، وہ ایک چشمہ اور کھجور کا باغ تھا۔

## برَاق

یہ قول کثیر میں اسی مذکور بدر کی طرف مضاف ہے چنانچہ کہتے ہیں:

"میں کہتا ہوں کہ انہوں نے "راق بدر" کو دائیں طرف رکھا اور "عنابہ" کو شمالی جانب۔"

## برَاق حَوْرہ

اشعر کی وادیوں میں ایک جگہ کا نام ہے جو قبلہ کی طرف تھا۔

## برَاق خَبْت

یہ ایک جنگلی علاقہ تھا جو بدر سے مکہ جانے والے کی دائیں طرف آتا تھا اور یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ بنو بنوکلب کا ایک کنواں تھا (یا وادی تھی) چنانچہ شاعر بشر نے کہا:

"لوی کی وادیاں ہیں، پھر براق خبت ہے جسے تیز ہواؤں نے مٹا کر رکھ دیا ہے۔"

## بَرَام

یہ خیمہ کی شکل کا پہاڑ تھا جو بقیع سے شروع ہوتا تھا، یہ مغرب میں اس پہاڑ کی علامت اور پہچان تھا اور مشرق میں اس کے مقابل عسیب تھا۔

## بُرْثان

یہ ملل اور اولات الجیش کے درمیان ایک وادی تھی جس پر چل کر رسول اللہ ﷺ بدر کو تشریف لے گئے تھے۔ شاید یہ اس تربان کی بگڑی شکل ہے جو تاء کے الفاظ میں آ رہا ہے۔ علامہ مجد نے یونہی لکھا ہے۔

## بَرَج

بنو نضیر کا ایک قلعہ تھا۔

## برریان

یہ حضور ﷺ کی ازواجِ مطہرات کے استعمال میں زمین کے دو پلاٹ تھے، میرے خیال میں مدینے کے بالائی حصے میں یہ دونوں بررہ اور بریرہ کے نام سے مشہور ہیں۔

## بُرق

یہ لفظ اسی کڑک سے لیا گیا ہے جو بادلوں میں چمکتی ہے اور یہ خیبر کے نزدیک ایک بستی ہے، ان دونوں میں سے ایک کا نام برق بھی تھا۔

## بُرقة

حضور ﷺ کا رفاہی مال تھا، رہا ''برقة العبرات '' تو یہ ایک خوبصورت علاقہ تھا جو ''ضریة'' اور ''بستان'' کے درمیان تھا اور یہاں سے نصف میل کے فاصلے پر تھا۔ امرئ القیس کے اس شعر میں جو لفظ حلیت میں آ رہا ہے، یہی پتھریلا علاقہ مراد ہے۔

## بُرك

مقام شواظ کے سامنے ایک وادی تھی جو سوارقیہ کی ایک جانب تھی جہاں سلم اور عروط کے بہت سے درخت تھے اور اس میں چشمے بھی تھے۔ آگے لفظ مبرك میں آ رہا ہے کہ اسے بَرك بھی کہتے تھے۔

## برکة

ازرق نامی چشمے کے پانی جمع ہونے کی جگہ تھی۔ وہاں امیروں کا ایک خوبصورت باغ تھا۔

## بدُمَه

بلاکث کے نزدیک خیبر اور وادئ قرٰی کے درمیان مدینہ کی وادی تھی، وہاں کنوئیں اور قریش کا کھجوروں کا باغ تھا، اُسے ذوالبیضہ کہتے تھے۔

## برُود

جبل جہینہ یعنی اشعر کے درمیان ایک جگہ تھی اور حرۃ النار کے پہلو میں ایک اور جگہ کا نام تھا۔

## بزَرَه

مدینہ سے تین دن کے فاصلے پر ایک جانب کو کہتے تھے، یہ مقام اس جانب اور روئیہ کے درمیان تھا۔ علامہ یا قوت، ابن السکیت سے بتاتے ہیں کہ یہ لفظ بزرتان ہے، یہ دو وادیاں تھیں جو مقام رویثہ کے قریب تھیں اور یہ درج مضیق

میں گرتی تھیں۔

## بُزُوراء

ساحلِ سمندر سے اونچا صاف شہر تھا جو جار' ودان اور غیقہ کے درمیان تھا۔ یہاں سخت گرمی پڑتی تھی' یہاں بنو بکر میں سے بنوضمرہ رہتے تھے۔

## بُصّہ

چھٹے باب کی ابتداء میں ایک کنواں تھا جو اس کی طرف منسوب تھا۔

## بُضَیع

ابن السکیت کہتے ہیں کہ غفاریوں کے چشمے کی نچلی طرف داخل ہونے والے کی بائیں طرف وادی تھی۔ میں کہتا ہوں' ظاہر یہ ہے کہ یہ وادی وہی ہے جو حرفِ نون میں آ رہی ہے۔

## بُطْحَاء

اس میں عظم شامی وادی گرتی تھی اور صلعین بھی اسی میں گرتی تھی پھر یہ دو پہاڑوں میں سے ہوتی ہوئی عقیق میں جا گرتی تھی۔ شاید یہ بطحاءِ ابن زبیر ہے۔

## بُطْحان

محدثین اسے یونہی پڑھتے ہیں لیکن اہلِ لغت پہلے حرف کو زبر اور دوسرے کو زیر دیتے ہیں چنانچہ ابوعلی قالی کہتے ہیں کہ اس کے سوا کسی اور طرح اسے پڑھنا صحیح نہیں لیکن میں نے ٹھوس اور ماہر شخص ابو الطیب احمد بن احمد بن شافعی رحمہ اللہ تعالیٰ کا لکھا ہوا دیکھا ہے کہ بُطْحان میں باء پر زبر اور طاء پر جزم ہے۔

میں کہتا ہوں کہ کچھ حضرات نے ابوعبید قاسم بن سلام سے یہ نقل کیا ہے کہ یہ لفظ باء پر پیش اور طاء پر جزم کے ساتھ پڑھا جاتا ہے۔ یہ نام فراخی اور وسعت کی بناء پر رکھا گیا ہے کیونکہ یہ بَطح سے لیا گیا ہے اور اس کا معنیٰ فراخی ہے۔ پانچویں فصل میں یہ لفظ گذر چکا ہے چنانچہ شاعر کہتا ہے:

> "اے سعد! میں تمہارے بعد شوق کی وجہ سے مصیبت میں رہا ہوں' جس نے مجھے گھیر رکھا ہے سلع پیاس دور کرتی ہے اور بطحان کے اردگرد زندگی کا سامان ہے' میں شوق کی بناء پر شام کو ان کی طرف جاتا ہوں اور غموں کو غموں سے دور کرتا ہوں۔"

کچھ حضرات کہتے ہیں کہ بطحان بنوضباب کے کنوؤں میں ہے چنانچہ یہ اور جگہ تھی۔

## بطنِ اضم

اضم کے بیان میں اس کا ذکر آ چکا ہے۔

## بَطن ذی صُلب

اس کا ذکر پانچویں فصل میں آ چکا ہے۔

## بَطن نَخل

یہ لفظ نَخلة کی جمع ہے اور بصرہ کی طرف جاتے ہوئے مدینہ کے قریب ایک بستی تھی اور جب کوئی مدینہ کو جاتا تو برق العراف کے سامنے آتا۔ یہ مجد کا قول ہے اور علامہ اسدی فید کا راستہ بتاتے ہوئے لکھتے ہیں کہ بطنِ نخل سے ''طرف'' کی جانب بیس میل کا فاصلہ تھا جبکہ ''طرف'' سے مدینہ کی طرف پندرہ میل تھا۔ وہ کہتے ہیں کہ بطنِ نخل قبیلۂ بنو قیس میں سے بنوفزارہ کا تھا' وہاں تین سو سے زیادہ کنوئیں تھے جو سب کے سب ستھرے تھے' ربذہ کا راستہ یہیں سے گذرتا تھا اور ربذہ سے یہ پینتالیس میل کے فاصلے پر تھا۔ جموم میں ابن سعد کہتے ہیں کہ یہ بطنِ نخل کی ایک جانب تھا اور اس کی بائیں طرف تھا۔ وہ کہتے ہیں کہ بطنِ نخل مدینہ سے چار برد (اڑتالیس میل) کے فاصلے پر تھا۔

فقہاء نے بطن نخل میں خاز خوف کا ذکر کرتے ہوئے لکھا ہے کہ غطفان کی سرزمین کی یہ جگہ نجد میں تھی۔ پھر حضرت عثمان کے مسجد نبوی میں اضافے میں اس لفظ کا ذکر یوں ملتا ہے کہ: چونا بطن نخل سے لایا گیا تھا اور اسی کا ذکر کرتے ہوئے مراغی نے کہا ہے کہ بطنِ نخل مدینہ سے چار میل کے فاصلے پر ایک جگہ تھی۔ اگر یہ بات صحیح ہے تو پھر یہ جگہ پہلی سے الگ ہے' شاید یہ ذوالقصہ تھی اور آگے آ رہا ہے کہ یہ ربذہ کے راستے میں مدینہ سے پانچ میل کے فاصلے پر تھی۔

## بُطَیحان

یہ لفظ بطحان کی تصغیر ہے۔ اس کا ذکر حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے مسجد نبوی میں اضافے کے بیان میں آ چکا ہے۔

## بعاث

باء پر تینوں حرکتیں ہیں لیکن عیاض کہتے ہیں کہ صرف باء پر پیش آتی ہے۔ یہ کھلی جگہ مدینہ کے قریب تھی' یہاں دورِ جاہلیت کے درمیان اوس وخزرج میں کئی جنگیں ہوئی تھیں۔ ابو عبید بکری اسے غین سے پڑھتے ہیں لیکن ان کے سوا کسی اور نے اسے یوں نہیں بتایا۔ المطالع اور المشارق میں اسے بُعاث پڑھا گیا ہے' علامہ قابسی اسے بغاث پڑھتے ہیں۔ حافظ ابن حجر کہتے ہیں کہ ابو عبیدہ کے مطابق اسے غین سے پڑھتے ہیں' یہ ایک مکان تھا اور کچھ اسے قلعہ کہتے ہیں۔ یہ بھی کہا جاتا ہے کہ یہ بنوقریظہ کے نزدیک زرعی زمین تھی جو مدینہ سے دو میل کے فاصلے پر تھی۔ علامہ زرکشی کہتے

ہیں کہ یہ اوس کا ایک قلعہ تھا۔ کچھ کہتے ہیں کہ یہ بنو قریظہ کی جائیداد تھی، یہاں قابل کاشت زمین تھی جسے "قوری" کہتے تھے۔ علامہ رزین کہتے ہیں کہ قروراء کے پاس ایک اونچی جگہ تھی۔ چنانچہ کثیر کہتے ہیں کہ ہماری دوشیزاؤں کے کجاوے اس وقت غیقہ میں نظر آئے جب ہم براث گئے، یہ چچازاد کنواریاں مثیب میں تھیں۔

میں کہتا ہوں کہ شاید قرورا، قوری کی بگڑی ہوئی شکل ہے اور شعر میں اس کا ذکر صدقات میں آ چکا ہے کہ یہ دلال اور صافیہ کے ساتھ ہی تھی پھر اس دلال وادی کی نچلی طرف کھجور کا باغ تھا جسے قوران کہتے تھے لیکن ظاہر یہ ہے کہ یہ لفظ قوری ہے جیسے آگے آ رہا ہے چنانچہ وادیٔ بعاث اسی جہت میں تھی۔ اس کی دلیل حضرت کعب بن اشرف کے قتل کے بارے میں محمد بن مسلمہ کا قول ہے، وہ کہتے ہیں: ہم ان کے قتل کے بعد نکلے اور بنو امیہ بن زید کے پاس پہنچے، پھر بنو قریظہ کے پاس گئے، پھر بعاث کے پاس اور پھر حرۃ العریض پہنچے۔ اسی سے عیاض اور ان کے بعد والوں کے اس قول کی کمزوری دکھائی دیتی ہے جس میں انہوں نے کہا کہ یہ مدینہ سے دو راتوں کے فاصلے پر تھی۔

## بُعُبح

یہ ایک قلعہ تھا جو قباء میں بنو عمرو بن عوف کے گھروں میں تھا۔

## بُغَیبُغَہ

یہ لفظ بَغُبَغ کی تصغیر ہے۔ یہ رشاء کے قریب ایک کنواں تھا۔ ابنِ شبہ بتاتے ہیں کہ جب مقامِ ینبع حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس آ گیا تو سب سے پہلے آپ نے بُغَیبُغَہ میں عمل دخل کیا اور جب یہ آپ کا ہو گیا، آپ کو اس کی خوشخبری سنائی گئی تو آپ نے کہا تھا: وارث کو خوشی تو ہوا ہی کرتی ہے اور پھر کہا تھا کہ آج سے یہ مسکینوں، مسافروں اور قریبی ضرورت مندوں کے استعمال میں آئے گا۔ علامہ واقدی کی ایک روایت میں آتا ہے کہ حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے دور میں اس کی پیداوار ہزار وسق تک پہنچ گئی تھی۔

محمد بن یحیٰی کہتے ہیں کہ ینبع میں بغیبغات کے مقام پر حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا قبضہ ہو گیا، یہ کئی چشمے تھے جن میں سے ایک چشمے کو خیف الارک کہتے تھے، ایک کو خیف لیلی اور ایک کو خیف بسطاس کہتے تھے۔ محمد کہتے ہیں کہ بغیبغات حضرت علی کے قبضے میں آیا تو آپ نے اسے لوگوں کے لئے وقف کر دیا، یہ آپ کے صدقات میں شامل رہا پھر حضرت حسین بن علی رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے حضرت عبد اللہ بن جعفر بن ابو طالب کو دے دیا کہ اس کا پھل کھاتے رہیں، قرض اتاریں اور اپنی ضرورتیں پوری کریں لیکن اس کے لئے شرط یہ تھی کہ اپنی بیٹی یزید بن معاویہ سے نہ بیاہیں چنانچہ عبد اللہ نے یہ سب کچھ معاویہ کے ہاتھ فروخت کر دیا اور جب بنو ہاشم کا دور آیا تو صوافی (جس زمین کا کوئی وارث نہ ہو) قبضے میں لے لی گئیں چنانچہ اس بارے میں عبد اللہ بن حسن بن حسن نے ابو العباس سے بات کی، وہ اس وقت خلیفہ تھے چنانچہ انہوں نے اسے صدقۂ علی میں واپس کر دیا، یہ اسی حال میں رہی اور پھر ابو جعفر نے اپنے دورِ خلافت میں

اسے قبضہ میں لے لیا، پھر حسن بن زید مہدی نے اپنے دور میں اس بارے میں بات کی تو اسے حضرت علی کے مال میں واپس کر دیا گیا۔

میں کہتا ہوں کہ یہ جگہ ینبع میں آج کل جانی پہچانی ہے لیکن ان لوگوں کے قبضے میں ہے جو اپنے آپ کو اس کا مالک ظاہر کرتے ہیں۔

مبّرد کہتے ہیں کہ جب حضرت علی کرم اللہ وجہہ نے حضرت حسن کو وصیت کی تھی تو ابو نیزر بغیبغہ کا کنواں انہیں وقف کر دیا تھا۔ یہ مدینہ میں ایک بستی تھی اور یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ وہ زمین تھی جس میں کھجور کے بہت سے درخت تھے اور یہاں کا پانی گہرا تھا۔

اہلِ سیرت لکھتے ہیں کہ حضرت معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے مروان کو لکھا تھا: اما بعد: امیر المؤمنین کا خیال یہ ہے کہ سلسلۂ الفت کو بحال کرے، ناراضگی دور کر دے اور صلہ رحمی سے کام لے لہٰذا تم ایسا کرو کہ عبد اللہ بن جعفر سے ان کی بیٹی اُم کلثوم کا امیر المؤمنین کے بیٹے کے لئے رشتہ مانگو اور انہیں حقِ مہر کا لالچ دو۔

مروان یہ خط لے کر عبد اللہ کے پاس پہنچا، خط پڑھا اور سلسلۂ الفت و محبت کی بات کی۔ انہوں نے کہا کہ میرے خالو ینبع میں ہیں، کوئی اور ہے نہیں جس سے مشورہ کر سکوں لہٰذا ان کے آنے تک مجھے مہلت دو۔

وہ جب آ گئے تو انہوں نے ان سے بات کی، وہ اُٹھے اور لڑکی (اُمِ کلثوم) کے پاس گئے اور کہا کہ تمہارے چچا زاد قاسم بن محمد بن جعفر تمہارے ساتھ نکاح کے زیادہ حقدار ہیں، شائد تمہیں حق مہر کا شوق ہے تو وہ تمہیں بغیبات دے دیں گے۔

جب لوگ اکٹھے ہوئے تو مروان نے حضرت معاویہ کی بات کہہ سنائی۔ ادھر حضرت حسین نے بات کر کے اُم کلثوم کا نکاح قاسم سے کر دیا تو مروان نے ان سے کہا: اے حسین! یہ تم نے کیا دھوکا کیا؟ انہوں نے کہا کہ ابتداء تمہاری جانب سے ہوئی ہے چنانچہ اُم کلثوم کی طرف سے یہ مال بنو عبد اللہ کے قبضہ میں رہا، وہ اس کے وارث رہے اور یہ سلسلہ مامون الرشید تک جاری رہا۔ پھر ان کے ساتھ اس بارے میں بات ہوئی تو انہوں نے کہا، ایسا نہیں ہو سکتا کیونکہ یہ حضرت علی کا وقف شدہ مال ہے چنانچہ انہوں نے اسے چھین لیا اور اس کے عوض انہیں اور کچھ دیدیا، اسے اپنی پہلی حالت پر بحال کر دیا۔

## بقّال

حضرت زبیر نے طلحہ کے ذکر میں کہا تھا: ان کا گھر مدینے میں بقال کے مقام پر بقیع زبیر کے پہلو میں ہے اور اُمہات المومنین کی قبروں کے بیان میں گذر چکا ہے کہ یہ قبریں ان کے گھر کے روشن دان سے اس گلی تک تھیں جو بقال کو جا نکلتی تھی اور یہ کہ ابو رافع کا وہ گھر جسے انہوں نے بقال میں سعد سے لیا تھا وہ بقیع میں محمد بن زید بن علی بن حسین کے

جھونپڑے کے ساتھ ہی تھا جبکہ اسماعیل بن جعفر کے مشہد کے بیان میں آ چکا کہ وہ حضرت زین العابدین علی بن حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہم کا گھر تھا تو بقال وہیں ہوا۔

## بُقْعَاء

بنجر زمین کو کہتے ہیں، یہ جگہ مدینہ سے چوبیس میل کے فاصلے پر تھی، حضرت ابوبکر رضی اللہ تعالیٰ عنہ اس کی طرف اس وقت گئے تھے جب آپ مرتد ہونے والوں کے خلاف مسلمانوں کو تیار کر رہے تھے۔ اسے بقعاء ذی القصہ بھی کہتے تھے جیسے یاقوت نے لکھا ہے۔

## بُقع

یہ مدینہ میں ایک کنواں تھا۔ واقدی کہتے ہیں کہ بُقع وہ کنواں تھا جو بنو دینار کے پہاڑی راستے میں تھا۔ علامہ یاقوت نے اپنی ''المشترک'' میں لکھا ہے کہ بُقع مدینہ میں ایک کنوئیں کا نام تھا۔

## بقیع بطحان

بقیع کا یہ لفظ وادیٔ بطحان کی طرف مضاف ہے جس کا ذکر پہلے گذرا۔ صحیح بخاری میں حضرت ابوموسےٰ سے ہے:

''میں اور میرے وہ ساتھی جو میرے ساتھ بقیع بطحان میں اترنے کے لئے آئے۔''

## بَقِیع خَبْجَبَہ

علامہ مجد کہتے ہیں کہ ابوداؤد نے اسے اپنی سنن میں یونہی ذکر کیا ہے اور خبجبہ وہ درخت تھا جس کی وجہ سے اس جگہ کی پہچان تھی۔ سہیلی کہتے ہیں کہ یہ بات کمزور ہے جبکہ سب راویوں نے اسے دو جیم سے ذکر کیا ہے انتہٰی۔

سنن ابوداؤد میں اس کی حرکتوں (زبر، زیر، پیش) کا ذکر نہیں بلکہ انہوں نے اسے جنائز سے پہلے ''**باب قصة المقداد حین وجدبه الدنانیر**'' میں ذکر کیا ہے لیکن حرکتیں نہیں بتائیں، شائد مراد یہ ہے کہ اس میں یہ روایت انہی حرکتوں سے ہے لیکن ابن الاثیر نے اپنی ''نہایہ'' میں دو خاء سے لکھا ہے جن کے درمیان باء موجود ہے (یعنی **خبخبہ**) قاموس میں **خبجبہ** کا لفظ ہے جو ایک درخت کا نام تھا اور اسی سے مدینہ میں **بقیع الخبجبہ** کا ذکر ملتا ہے کیونکہ وہ درخت یہیں تھا یا یہ لفظ دو جیموں سے ہے (حَیبُجَبُہ) انتہٰی۔

علامہ اقشہری کے قلم سے میں نے لکھا دیکھا ہے کہ یہ دو جیم سے ہے جن میں سے پہلی پر پیش ہے۔ اس کا ذکر اس مقام پر گذر چکا ہے جہاں ان اینٹوں کا ذکر ہے جو مسجد نبوی کے لئے بنائی گئی تھیں۔

ابن ابی شبہ نے ضباعہ بنت زبیر سے مقداد کا قصہ ذکر کیا ہے، یہ مقداد کی بیوی تھیں، وہ کہتی ہیں: لوگ اپنی ضرورتوں کے لئے دو یا تین دنوں کے لئے جاتے تھے تو یوں مینگنیاں کرتے تھے جیسے اونٹ کرتے ہیں چنانچہ ایک دن کسی

ضرورت سے حضرت مقداد نکلے اور خبجبہ تک جا پہنچے یہ جگہ بقیع الغرقد میں تھی، وہ اپنی ضرورت سے نکلے ابھی وہ بیٹھے تھے کہ ایک چوہے نے اپنے سوراخ سے ایک دینار باہر نکال رکھا، پھر ایک ایک کر کے لاتا چلا گیا اور سترہ دینار تک نکال دیئے۔ وہ کہتے ہیں کہ میں نے وہ دینار لے لئے اور رسول اللہ ﷺ کی خدمت میں لے گیا اور یہ واقعہ عرض کیا۔ آپ نے فرمایا کہ کیا تم نے سوراخ میں ہاتھ تو نہیں ڈالا تھا؟ میں نے عرض کی، اس ذات کی قسم جس نے آپ کو حق دین دے کر بھیجا ہے، میں نے ایسا نہیں کیا۔ اس پر آپ نے فرمایا کہ ان دیناروں کی وجہ سے تم پر صدقہ نہیں، اللہ تعالیٰ تمہارے لئے اس میں برکت رکھے۔ ضباعہ بتاتی ہیں کہ یہ دینار آخر تک آپ کے ہاں سے ختم نہ ہوئے اور ان کے گھر میں بے شمار دولت رہی۔

## بَقِیع الخیل

یہ مدینہ کی مشرقی جانب ایک جگہ تھی جو مصلّے کے ساتھ ہی تھی۔

## بقیع الزبیر

یہ جگہ بنوغنم کے گھروں کے ساتھ تھی اور بنوزریق کے گھروں کے مشرق میں تھی، اسی کے پہلو میں مشرقی جانب بقال تھی۔

ابن شبہ حضرت کعب بن اشرف رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا وہ واقعہ بیان کرنے کے بعد لکھتے ہیں کہ جس کا ذکر بازارِ مدینہ میں گزرا، نبی کریم ﷺ نے ارادہ فرمایا تھا کہ بقیع زبیر کو بازار بنالیں تو واقعہ یہ ہوا کہ جب حضرت کعب قتل ہو گئے تو حضرت زبیر نے نبی کریم ﷺ سے زمین کا ایک ٹکڑا مانگا جو آپ نے انہیں دے دیا چنانچہ یہ بقیع زبیر کہلایا چنانچہ اس میں حضرت زبیر نے گھر بنائے، ایک دارِ عروہ تھا پھر اس کے مشرق میں حضرت عروہ کی گلی تک دارِ منذر تھا اور جب تم بنو مازن کے پاس جانے کا ارادہ کرو تو تمہاری بائیں طرف دارِ مصعب بن جبیر تھا، پھر اس میں اس گلی کے دروازے پر جو تمہیں دارِ نفیس بن محمد تک لے جاتی تھی، دارِ آل عکاشہ بن مصعب تھا، پھر اسی میں دار آلِ عبداللہ بن زبیر تھا جو دار اسماء بنت ابوبکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہما تک پھیلا ہوا تھا اور پھر اسی میں اس مقام پر جہاں راستے بکھرتے تھے، حضرت نافع زبیری کا گھر تھا، یہ سب حضرت زبیر کی طرف سے ان کی اولاد پر صدقہ تھا۔

ابن شبہ نے یہ بھی ذکر کیا ہے کہ عباس بن ربیعہ نے اپنا گھر بنوغنم میں بنایا تھا جو دارِ اُمِ کلثوم بنت صدیق اور زمین کے اس ٹکڑے کے درمیان تھا جو تمہیں بقیع زبیر کی طرف لے جاتا تھا۔ ان گھروں کا ذکر بقیع بقال، بنومزینہ میں سے بنواوس کے گھروں میں آ چکا ہے۔

## بقیع الغَرْقد

یہ ایک کانٹے دار بڑا درخت تھا جو بقیع میں اُگا ہوا تھا۔ بقیع مسلمانوں کا قبرستان تھا اور جب یہ قبرستان بنا تو وہ

درخت کاٹ دیا گیا تھا جیسے پہلے بیان ہو چکا اور وہاں اس کی فضیلت بھی بتائی جا چکی اور بقیع ہر اس جگہ کو کہتے ہیں جس میں کئی قسم کے درخت ہوں۔

عمرو بن نعمان بیاضی اپنی قوم کے قتل ہو جانے والوں کا مرثیہ لکھتا ہے جنہیں باغ میں بند کر دیا گیا تھا، وہ لڑے جس کے نتیجے میں وہ سب قتل ہو گئے تھے:

"وہ لوگ کہاں ہیں جن سے میں غبطہ کرتا تھا؟ وہ عقیق سے لے کر بقیع الغرقد تک پھیلے تھے۔"

## بکرات

ضریّہ کی چراگاہ کے بیان میں اس کا ذکر ہو چکا ہے۔ اس کی وضاحت لفظ حلیت میں آ رہی ہے۔

## بَلَاطْ

اس کی وضاحت گزر چکی ہے۔

## بَلَاکِث

یہ برمہ کی جانب تھی۔ یعقوب کہتے ہیں کہ بلکثہ ایک عظیم پہاڑی تھی جو اِضم، ذی خشب اور ذی المروہ کے درمیان تھی۔

## بَلُحان

یہ کعب بن اِسد قرظی کا وہ قلعہ تھا جو شجرہ نامی جگہ میں تھا۔ آج کل اسے شجیرہ کہا جاتا ہے۔

## بُلدود

باء پر پیش ہے اور کبھی اس پر زبر پڑھی جاتی ہے، صغانی نے اسے دو زبروں سے پڑھا ہے (بَلَدُوْد) یہ مدینہ کے قریب ہی ایک جگہ تھی۔

## بَلُدۃ اور بُلَیْدَۃ

یہ پہلے لفظ کی تصغیر ہے۔ یہ دونوں وادیاں اشعر کی وادیوں سے باغ کی نچلی طرف مشہور تھیں۔

علامہ مجد کہتے ہیں کہ بُلَیْد زبیر کے وزن پر ہے جو مدینہ کے قریب ایک وادی تھی، یہ ینبع میں جا گرتی تھی۔

نہایہ میں ہے کہ بُلَیْد آلِ علی کی بستی تھی جو ینبع کے قریب وادی میں تھی، انتہیٰ۔

میں بھی کہتا ہوں کہ بُلَیْد اسمِ تصغیر ہے، اس کا ذکر پہلے آ چکا کیونکہ یاقوت کہتے ہیں بُلَیْد کا لفظ بلد کی تصغیر ہے اور یہ دو جگہیں تھیں:

(ا) مدینہ کے قریب اس وادی میں ایک جگہ تھی جو آلِ علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی وادی میں ینبع کے اندر جا گرتی تھی۔

(۲) حجاز میں آل سعید بن عنبسہ بن سعید بن عاص کا ایک گوشہ تھا۔

## بواطان

علامہ ہجری کہتے ہیں کہ یہ اشعر میں تھی، اسنے شام کی طرف سے بواطانِ غوری و جلسی گھیرے ہوئے تھیں، یہ دو پہاڑ تھے جن کے سرے الگ الگ تھے جبکہ دونوں کی جڑ ایک ہی تھی، ان کے درمیان پہاڑی تھی جس میں سے بوجھ لدے اونٹ گذرتے تھے، رسول اکرم ﷺ غزوۂ ذی العشیرہ کی طرف جاتے ہوئے یہاں سے گذرے تھے، بواط جلسی میں رہنے والے بنو ذبیان اور بنو ربعہ تھے جن کا تعلق جہینہ سے تھا۔ یہ ملحتین کے ساتھ ملتی تھی۔

عیاض کہتے ہیں کہ بواط میں باء پر پیش ہے پھر اصیلی سے ہمیں یہ لفظ باء کی زبر اور پیش سے ملتا ہے اور یہ مشہور ہے، یہ جہینہ کا ایک پہاڑ تھا۔ اس وادی کا ذکر اس جگہ ملتا ہے جہاں مدینہ کی وادیوں کے جمع ہونے کا ذکر ہے، یہیں غزوۂ بواط واقع ہوا تھا۔

## بُوَیْرَمَہ

بنو حارث بن خزرج کا کنواں تھا جیسے ابن شبہ سے لکھا ملتا ہے اور شاید یہی کنواں بویرہ تھا جو آگے آ رہا ہے۔

## بُوَیْرَہ

لفظِ بئر کی تصغیر ہے جس سے پانی پیا جاتا ہے۔ صحیح بخاری میں ہے کہ نضیر کا باغ جلایا گیا، یہ بویرہ تھا۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ بویرہ، بنو نضیر کے گھروں کی جگہ تھی۔ مرجانی نے اس کا ذکر کیا ہے اور پھر کہا ہے: کہتے ہیں کہ ان جگہوں میں سے ایک خاص جگہ تھی۔ پہلے قول کو جمل بن جوال ثعلبی نے ترجیح دی ہے جبکہ دوسرے کو حافظ ابن حجر نے پہلا درجہ کہا ہے۔ وہ کہتے ہیں کہ اسے بویلہ کہا جاتا ہے۔

ابن سعد کہتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے زبیر بن عوام اور ابوسلمہ کو بُوَیلہ دیا جو بنو نضیر کی اراضی تھی پھر پہلے آ چکا ہے کہ بویلہ بنو نضیر کے گھروں میں ایک قلعہ تھا۔ ابن زبالہ کہتے ہیں، یہ ان کے ایک قبیلہ کے پاس تھا جو یمن سے جا ملے تھے تو شاید یہ بُوَیرہ کے پاس تھا لہٰذا اس نام سے بھی یاد کیا جاتا ہے۔

حافظ ابن حجر نے علامہ رزین وغیرہ کی اتباع کی ہے کہ "بویرہ وہ جگہ ہے جو مغربی جانب سے قبلۂ مسجد قباء میں مشہور ہے۔" علامہ رزین لکھتے ہیں: "اسی مقام پر نضیر اور قریظہ کے گھر، پھر ان کا قلعہ موجود تھا اور یہ جگہ حضور ﷺ کا مالِ صدقہ کہلاتی تھی۔"

پھر دوسری فصل، بیان صدقات میں اس کا بیان اور پھر ردّ گذر چکا ہے اور یہ بھی بتایا گیا ہے کہ یہ وہم کیونکر پیدا ہوا۔

علامہ ابن زبالہ نے مساجد مدینہ اور حضور ﷺ کے مقامات کے بیان میں تربتِ صعیب کی حدیث لکھی ہے جو

آج کل دیارِ بنو حارث میں حدیقۂ جشونیہ کے گوشے میں مشہور ہے، پھر کہا کہ یہ صعیب مرجشہ نامی باغ کے قریب تھا جو بویرہ کے مکانوں میں راستے پر تھا۔ پھر انصار کے گھروں کی فضیلت کے موقع پر بتایا جا چکا کہ نبی کریم ﷺ بویرہ کے بالمقابل راستے میں کھڑے ہوئے تھے اور فرمایا تھا: سب سے بہتر مرد وزن ان گھروں میں رہتے ہیں، آپ کا اشارہ دارِ بنو سالم، دار الحبلی اور دارِ بلحارث بن خزرج کی طرف تھا جبکہ یہ صفت اس جگہ پر سچی نہیں آتی جو مسجد قباء کے قبلہ میں ہے کیونکہ وہ بہت دور تھی۔

جہاں تک میں سمجھا ہوں کہ جو بویرہ، بنو نضیر سے تعلق رکھتا تھا، جہاں آگ لگنے کا واقعہ ہوا تھا اور جو حضرت حسان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے شعروں میں آیا ہے، وہ نہیں جو قباء میں تھا بلکہ یہ ان میں تھا جن کا ذکر پہلے اپنے مقام پر گذر چکا اور یہ گذر چکا ہے کہ ان کے کچھ گھر غرس کی جانب تھے چنانچہ یہ اس بات کے مطابق ہے کہ یہ صعیب و بلحارث کی قبروں کے قریب تھے۔

## بُیداء

علامہ مطری اور ان کے پیروکار کہتے ہیں، یہ وہ مقام تھا کہ جب حاجی لوگ ذوالحلیفہ سے کوچ کرتے تھے تو مغرب کی طرف اسے سامنے دیکھتے تھے۔

حافظ ابن حجر رحمہ اللہ تعالیٰ کہتے ہیں کہ "بیداء" وادی سے اوپر چڑھنے والے کے لئے ذوالحلیفہ کی دو علامتوں سے اوپر کی طرف تھا۔ یہ بات ابو عبید البکری وغیرہ نے کی ہے۔ انتہٰی۔ چنانچہ بیداء کی ابتداء ذوالحلیفہ کے اخیر سے ہوتی تھی، ان دونوں کے درمیان امتیاز کے لئے وہاں دو علامتیں موجود تھیں چنانچہ راستے میں ان علامات کی تعداد بتاتے ہوئے علامہ اسدی کہتے ہیں: مدینہ سے باہر ہونے کی دو علامتیں ہیں اور یونہی ذوالحلیفہ میں داخل ہونے کی بھی دو علامتیں ہیں۔

ابن حجر ایک اور مقام پر لکھتے ہیں کہ "بیداء، ذوالحلیفہ کی دو علامتوں کی اوپر والی جانب آتا ہے اور وہ اس وقت جب وادی سے اُوپر آئیں اور پھر بیداء کی ابتداء میں کنواں موجود ہے، انتہٰی اور یہ بیداء ذوالحلیفہ و ذات الجیش کے درمیان ہے۔

> آیت تیمم کے نازل ہونے کے بارے میں حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی حدیث ہے:
>
> "جب ہم "بیداء" میں تھے یا ذات الجیش میں" ایک اور حدیث میں آتا ہے: بلاشبہ کچھ لوگ بیت اللہ والوں سے لڑنے آئیں گے چنانچہ جب وہ بیداء میں اُترے تو اللہ تعالیٰ نے حضرت جبریل علیہ السلام کو بھیجا تو انہوں نے فرمایا: اے بیداء! ان مخالفین کو تباہ کر دے۔"

ابن شبہ سے ایک روایت یہ ہے کہ حضرت اُم سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے بتایا: "ایک آدمی رکن اسود اور مقا

ابراہیم کے درمیان اہلِ بدر جتنے لوگوں کے ساتھ ہوگا، اس کے پاس عراق کے سوار اور شام کے ابدال آئیں گے، ان سے اہل شام کا لشکر جنگ کرے گا اور جب وہ بیداء میں ہوں گے تو انہیں زمین میں دھنسا دیا جائے گا، پھر ان سے قریش کا ایک شخص جنگ کرے گا جس کے ننھیال قریش ہوں گے، وہ مقابلہ کریں گے تو اللہ انہیں شکست سے دوچار کرے گا چنانچہ خسارہ میں وہی رہے گا جو بنوکلب کے مالِ غنیمت سے محروم ہوگا۔"

انہی کی ایک اور روایت ہے، فرمان نبوی ہے: میری اُمت کا ایک لشکر ایک آدمی کے لشکر کی خاطر شام سے مکہ کو جانے کا ارادہ لئے آئے گا اور جب وہ دشمن ذوالحلیفہ کی طرف سے بیداء پر پہنچیں گے تو انہیں زمین میں دھنسا دیا جائے گا، وہ لوگ کئی جگہوں سے آئیں گے۔ میں نے عرض کی یا رسول اللہ! میرے ماں باپ آپ پر قربان! انہیں اکٹھے کیسے دھنسایا جائے گا جبکہ وہ الگ الگ مقام سے ہوں گے؟ فرمایا، ان میں سے ایک نے ظلم کیا ہوگا۔"

حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما بتاتے ہیں کہ "جب بیداء میں لشکر کفار کو دھنسا دیا جائے گا تو یہ اس بات کی علامت ہوگی کہ مہدی آنے والے ہیں۔"

حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ بتاتے ہیں کہ ایک لشکر شام کی طرف سے آئے گا اور مدینہ میں داخل ہوگا، وہ جنگ کریں گے، عورتوں کے پیٹ پھاڑ دیں گے اور حمل والی عورتوں سے کہیں گے، شر کی بنیاد بننے والے ان بچوں کو قتل کردو، اور جب وہ ذوالحلیفہ کی طرف سے بیداء میں پہنچیں گے تو انہیں زمین نگل لے گی، یہ پتہ نہ چل سکے گا کہ ان میں سے اعلیٰ کون ہے اور گھٹیا کون۔

ابوالھرم کہتے ہیں کہ جب ابن دبحہ کا لشکر آیا تو ہم نے سمجھا کہ یہ وہی لشکر ہے حالانکہ یہ لوگ وہ نہیں تھے۔

## بَلُیسان

یہ جگہ خیبر اور مدینہ کے درمیان تھی۔ حدیث پاک میں آتا ہے کہ رسول اللہ ﷺ غزوۂ قرد کے موقع پر ایک کنوئیں پر آئے جسے بیسان کہتے تھے۔ آپ نے اس کا نام پوچھا تو انہوں نے بتایا کہ اسے بیسان کہتے ہیں، یہ نمکین تھا۔ آپ نے فرمایا کہ اس کا نام نعمان رکھو، وہ ستھرا ہوگا۔" رسول اللہ ﷺ نے اس کا نام تبدیل کیا تو اللہ تعالیٰ نے پانی کا ذائقہ تبدیل کر دیا۔ اسے حضرت طلحہ نے خرید کر مال صدقہ بنا دیا تھا، پھر نبی کریم ﷺ کی خدمت میں آئے اور آپ کو اس کی اطلاع دی۔ اس پر رسول اللہ ﷺ نے فرمایا: اے طلحہ! تم تو فیاض ہو چنانچہ حضرت طلحہ کو فیاض کہا جانے لگا۔

# حَرْفُ التّاء

## تاراء

یہ لفظ مساجدِ تبوک میں آچکا ہے۔ علامہ نصر کہتے ہیں کہ یہ شام میں ایک جگہ کا نام تھا۔

## تبُوك

یہ صَبُور کے وزن پر ہے، وادیٔ قری اور شام کے درمیان ایک وادی تھی جو مدینہ سے بارہ دن کی مسافت (مرحلہ) پر تھی۔ کہتے ہیں کہ وہاں یہ اونٹ بٹھانے کی جگہ تھی۔ ابو زیاد کہتے ہیں کہ تبوک، حجر اور شام کی ابتداء میں ایک جگہ تھی جو حجر سے چار دن کی مسافت پر گویا شام کے آدھے راستے میں تھی، یہ ایک قلعہ تھا جہاں چشمہ، کھجور کے درخت اور باغ تھا جو نبی کریم ﷺ کی طرف منسوب تھا۔ یہ بھی کہتے ہیں کہ وہ اصحاب الایکہ جن کی طرف حضرت شعیب علیہ السلام بھیجے گئے تھے، یہیں رہتے تھے، حضرت شعیب علیہ السلام ان میں سے نہ تھے بلکہ مدین میں سے تھے۔ یہ مدین بحرِ قلزم پر تبوک سے چھ دن کے فاصلے پر تھا۔

اہل سیرت کہتے ہیں کہ حضور ﷺ ہجرت کے نویں سال تبوک کی طرف متوجہ ہوئے، یہ آپ کا آخری غزوہ تھا، آپ پہنچے تو وہاں روم، عاملہ، لخم اور جذام سے آئے لوگ تھے، آپ نے دیکھا تو بکھر گئے، ان سے جنگ نہ ہوئی، وہ ایک چشمے پر اُترے تو حضور ﷺ نے انہیں حکم دیا کہ اس کے پانی کو ہاتھ نہ لگائیں، دو آدمی آگے بڑھے تو پانی خشک ہو چکا تھا، دونوں نے پانی میں بڑھانے کے لئے اس میں تیر مارے۔ رسول اللہ ﷺ نے انہیں فرمایا: تم انہیں کب تک چلاتے رہو گے، اسی وجہ سے اسے تبوک کہنے لگے، پھر آپ نے اس میں تین نیزے گاڑے تو تین چشمے پھوٹ پڑے چنانچہ آج تک بے تحاشا پانی دے رہے ہیں۔

تبوک کے چشمے کی حدیث مسلم شریف میں ہے، اس میں ہے کہ آپ نے اس کے پانی سے اپنا چہرہ اور ہاتھ مبارک دھوئے اور باقی پانی اس میں ڈال دیا چنانچہ چشمے کا پانی بڑھ گیا۔ ابن اسحاق کی روایت میں ہے کہ اس چشمے کا پانی پھوٹ پڑا تھا۔

حضور ﷺ تبوک میں کچھ دن ٹھہرے اور جب اہلِ تبوک نے آپ سے صلح کر لی تو حضرت خالد بن ولید دومۃ الجندل کو چلے گئے۔

علامہ مجد کہتے ہیں کہ ہم نے تبوک کا ذکر کر دیا ہے حالانکہ یہ ذکر ضروری نہ تھا کیونکہ یہ مدینہ سے دور تھا کیونکہ احادیث میں اس کا ذکر بہت آیا ہے۔

میں کہتا ہوں کہ سین کے حروف میں علامہ مجد نے ''سرع'' کا ذکر کیا ہے۔ یہ مقام وادیٔ تبوک میں مدینہ سے تیرہ دن کی مسافت پر تھا، یہ مدینہ کی آخری حد تھی اور تبوک کے بعد آتی تھی پھر عنقریب مدین کے ذکر میں آ رہا ہے کہ یہ مدینہ کی حدود میں شامل تھا اور تبوک کے بالمقابل تھا۔

علاقمہ اقشہری کے مطابق صاحب ''المسالک و الممالک'' بتاتے ہیں کہ بنو قریظہ و بنو نضیر مدینہ پر حکومت کرتے تھے، وہاں اوس و خزارج رہتے تھے، مدینہ و تہامہ پر دورِ جاہلیت میں مرزبان کا عامل ہوا کرتا تھا جو ان سے خراج وصول کرتا

تھا۔ پھر کہتے ہیں کہ تیماء بھی مدینہ کے تابع تھا' وہ ان کا قلعہ تھا پھر دومۃ الجندل بھی اسی کے ماتحت تھا جو مدینہ سے تیرہ دن کی مسافت پر تھا' اس کا قلعہ ''مارد'' تھا۔

## نُختم

نون پر پیش اور زبر ہے۔ کچھ کہتے ہیں کہ اس میں دو ''تاء'' ہیں' دوسری پر زیر یا پیش آتی ہے۔ یہ مدینہ کا ایک پہاڑ تھا۔

## تُربان

یہ ذات الجیش اور ذات الململ کے درمیان ایک وادی تھی' یہ ابو زیاد کا قول ہے۔ ابن ہشام بدر کے سفر کے بارے میں لکھتے ہیں تو ابن اسحاق نے کہا کہ آپ مدینہ کے پہاڑی راستے سے چلے' پھر عقیق اور ذوالحلیفہ سے گذرے اور پھر ذات الجیش سے گذرے' (ابن ہشام ذات الجیش لکھتے ہیں) پھر آپ تربان سے گذرے اور پھر ملل سے گزرے۔

حدودِ حرم میں بیان ہو چکا کہ ذات الجیش حفیرہ کے درمیان پہاڑی راستہ تھا۔ علامہ اسدی کہتے ہیں کہ حفیرہ اور ملل کے درمیان چھ میل کا فاصلہ تھا اور تربان اسی مسافت کے درمیان تھا' اس کے اور مفرح پہاڑی کے درمیان ایک جگہ تھی جسے سمہان کہتے تھے۔

## تُرعہ

یہ وہ وادی تھی جو قبلہ کی طرف سے اِضم کے ساتھ ملتی تھی۔ زبیر اسے بیان کرنے کے بعد لکھتے ہیں کہ ''ترعہ'' کے بارے میں بشر سلمی نے لکھا:

> ''میں اپنے اونٹ دیکھ رہا ہوں' ان میں سے اونٹنیاں ترعہ کے مقام پر گنگناتی ہیں' وہ اُمید رکھتی ہیں کہ انہیں ابلی میں داخل کیا جائے گا۔''

ابن شبہ نے صدقاتِ علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ میں ایک وادی کا ذکر کیا ہے جسے ترعہ کہتے تھے' یہ فدک کے قریب اور حرہ کے دونوں اطراف کے درمیان تھی۔

## تُرَن

یہ زُفَر کے وزن پر ہے' مکہ اور مدینہ کے درمیان ایک جانب کو کہتے ہیں۔

## تُرَیم

حُذَیم کے وزن پر ہے جو مضایق اور وادئ ینبع کے درمیان ایک وادی تھی۔

## تسریر

یہ ضریۃ نامی چراگاہ میں' اس کے دونوں پہلوؤں کے درمیان تھی۔ کچھ نے اسے "سریر" لکھا ہے جس کا معنیٰ چارپائی ہوتا ہے' یہ غلط ہے چنانچہ ابوزیاد کلابی لکھتے ہیں:

> "جب وہ کہتے ہیں کہ تمہیں کس شے سے شفاء ہوگی' میں ان سے کہتا ہوں' اس دھوئیں سے جو تسریر سے نکلتا ہے' وہ میرے لئے شفاء ہوتا ہے۔"

## تُضَارُع

اسے تُضَارِع بھی پڑھا جاتا ہے پھر تاء پر زبر اور راء پر پیش بھی پڑھتے ہیں۔ یہ تضارع کی اس چراگاہ کا نام ہے جس کا ذکر عقیق میں آچکا پھر تضارع اور تضرع' تہامہ یا نجد میں بنوکنانہ کے دو پہاڑ بھی تھے۔

## تِعَار

اسے تِغار بھی پڑھتے ہیں۔ علامہ عَرَّام اُبلی کی طرف بیان کرتے ہوئے کہتے ہیں:

> "قبلہ کی جانب ایک پہاڑ ہے جسے یَرَمُرَم کہتے تھے ایک پہاڑ ہے جسے تعار کہتے تھے' یہ بلندی ہیں' ان میں کوئی شے اُگتی نہیں' اور شیر بہت ہیں۔"

بعید کہتے ہیں: میں عرصہ سے موجود ہوں اور یرموم وتعار کو دیکھتا آرہا ہوں۔

## تَعَانِق

عالیہ کی طرف ایک جگہ تھی۔

## تُعْهِن

ابوذر ھروی کہتے ہیں' انہوں نے اس جگہ کے بارے میں عربوں سے سنا کہ تیسرے حرف کو زبر دیتے ہیں۔ کچھ وہ ہیں جو پہلے حرف کو پیش' عین کو زبر اور ھاء کو زیر دیتے ہیں البتہ ابوموسےٰ مزینی نے عجیب لکھا کہ تاء پر پیش پھر عین پر پیش اور ھاء پر شدّ پڑھی جاتی ہے۔ اسماعیلی کی روایت میں دعھن ہے' اسے تُعَاھِن بھی پڑھتے ہیں۔ مساجد کے بیان میں اسدی سے گذرا کہ یہ تعھن اس کنوئیں کے بعد تھا جو مکہ کے راستے میں تھا اور مکہ کی طرف تین میل کے فاصلے پر تھا۔ وہ کہتے ہیں کہ یہ خراب پانی کا کنواں تھا۔ اس کے قریب ایک عورت رہتی تھی جسے اُمِ عقی کہتے تھے۔ کہتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ اس کے ہاں سے گذرے اور اس سے پانی مانگا لیکن اس نے انکار کردیا' آپ نے اس کے خلاف دعا فرمائی چنانچہ پتھر بن گئی۔ کچھ کہتے ہیں کہ اسے اِمّ حبیب راعیہ کہتے تھے' اس کے نام اور خود اس کے بارے خبروں میں اِختلاف ہے' انتہی۔

سہیلی کہتے ہیں کہ تعہن میں ایک پتھر تھا جسے اُم عقی کہتے تھے۔ کہتے ہیں کہ ایک عورت تعہن میں رہتی تھی جسے ام عقی کہتے تھے۔ رسول اللہ ﷺ سفرِ ہجرت میں اس کے ہاں سے گذرے اور پانی مانگا لیکن اس نے انکار کر دیا۔

عیاض کہتے ہیں کہ تعہن پانی کا چشمہ تھا جس کی وجہ سے اس جگہ کا نام تعہن پڑ گیا' یہ سقیا سے تین میل کے فاصلے پر تھا' علامہ مجد کہتے ہیں کہ یہ قاحہ اور سقیا کے درمیان تھا' یہ پہلی روایت کے خلاف ہے کیونکہ قاحہ' سقیا سے ایک میل پہلے تھا جبکہ تعہن سقیا سے تین میل کے فاصلے پر تھا لہٰذا یہ قاحہ اور سقیا کے درمیان کیسے ہو سکتا ہے لیکن حدیث ابو قتادہ میں ہے کہ حجۃ الوداع کے موقع پر حضور ﷺ کے بارے میں ابو ذر غفاری سے سوال کیا گیا تھا' آپ نے فرمایا کہ میں نے آپ کو تعہن میں چھوڑا ہے' وہ سقیا میں قیلولہ فرما رہے ہیں' یہ واقعہ قاحہ میں حضرت ابو قتادہ کے جنگلی گدھے کو شکار کرنے کے بعد ہوا تھا کیونکہ انہوں نے احرام نہ باندھا تھا۔

حضرت ابو ذر کا کہنا: ''وھو قائل السقیا'' تو اگر یہ لفظِ قائل قیلولہ سے لیا گیا ہے تو اس کا مطلب یہ تھا کہ انہوں نے آپ کو تعہن میں چھوڑا تھا' آپ کا ارادہ تھا کہ سقیا میں قیلولہ فرمائیں چنانچہ تعہن' قاحہ اور سقیا کے درمیان تھا جیسے مجد نے کہا اور قائل کا معنٰی قول لیا جائے تو بھی یہی معنٰی ہے کہ سقیا کا ارادہ کیا' حالانکہ میں نے ایسے شخص سے پوچھا جو ان مقامات کو جانتا تھا تو اس نے کہا کہ آج کل یہ قاحہ کے نام سے مشہور ہے جو مدینہ سے ملتا تھا' پھر سقیا مکہ کی طرف تھا اور تعہن اس کے بعد تھا' پھر میں نے کئی اور لوگوں سے بھی پوچھا تو سب نے یہی بتایا حالانکہ یہ ظاہر حدیث کے خلاف ہے ہاں یہ روایت کیا گیا ہے کہ یہ لفظ قابل السقیا ہے۔

## تَمَنِّی

یہ وہ زمین تھی جس میں ہرشی کے اترنے والا اس وقت داخل ہوتا تھا جب وہ مدینہ کو جا رہا ہوتا تھا' وہاں پر سفید پہاڑ موجود تھے۔

## تُنَاضِب

دوداء کی ایک گھاٹی تھی اور یہ وہ وادی تھی جو عقیق میں گرتی تھی' رہی تَنَاضُب تو حدیث عمر میں آنے والی یہ دوسری جگہ تھی' وہ کہتے ہیں: جب میں نے مدینہ کی طرف ہجرت کا ارادہ کیا تو میرے ساتھ عیاش بن ابی ربیعہ اور ہشام بن عاص بھی تھے۔ ہم ایک دوسرے سے الگ ہو گئے' تناضب' سرف کے اوپر والی جانب بنوغفار کا تالاب تھا۔ ہم نے کہا تھا کہ جو یہاں صبح تک نہیں پہنچے گا وہ قید ہو چکا ہو گا لہٰذا وہ دونوں چلے گئے' میں اور عیاش صبح تناصب کے قریب پہنچ گئے' لیکن ھشام قید ہو گیا اور سخت آزمائش میں پڑ گیا اور ہم مدینہ کو واپس آ گئے۔

## تُهْمَل

یہ مدینہ کے قریب ایک جگہ تھی۔ اسے تُهْمَل بھی پڑھتے ہیں۔

### تَیْدُدُ

یہ لفظ مدینہ کے ناموں میں آ چکا ہے۔ یہ اجرد کی وادیوں میں سے ایک اور جگہ کا نام بھی تھا جو وادئ حاضر سے ملتی تھی جہاں چھوٹے چھوٹے چشمے تھے، ان میں سے بہتر کا نام اذینہ تھا، ایک اور چشمہ تھا جسے طلیل کہتے تھے اور تیدد کے تمام چشمے اسنان الجبل میں گرتے تھے۔

### تَیْس

مینڈھے کے معنیٰ میں ہے۔ یہ بنو ساعدہ میں سے بنو عنان کا قلعہ تھا جو ان کے گھروں میں تھا۔

### تَیْم

ابن نجار اور ان کے پیروکاروں نے اسے ثیست سے تعبیر کیا ہے، یہ مدینہ کی شرقی جانب ایک پہاڑ تھا جیسے حدودِ حرم میں لکھا جا چکا ہے۔

### تَیْماء

یہ مدینہ سے آٹھ دن کی مسافت پر ایک شہر تھا جو مدینہ اور شام کے درمیان تھا اور تبوک کے بیان میں گذر چکا ہے کہ یہ تیماء مدینہ کے ماتحت تھا۔

## حَرْفُ الثَّاء

### ثَاجَّہ

یہ ثنج نامی تھا جو حرض کے مقام پر تھا، حراض ایک اور جگہ تھی۔

### ثَافِل

یہ ثافل اصغر اور ثافل اکبر نامی دو پہاڑ تھے جو غیقہ کے بائیں کنارے پر تھے اور شام سے مکہ جانے والوں کے بائیں طرف آتے تھے جبکہ مدینہ سے جانے والے کی دائیں طرف تھے، دونوں کے درمیان پہاڑی تھی، یہ ضمرہ کے پہاڑ تھے جو اصحاب غلال و بیار کہلاتے تھے، ان دونوں اور رضویٰ و غرور کے درمیان دو راتوں کا سفری فاصلہ تھا۔

علامہ اسدی کہتے ہیں کہ وہ پہاڑ جو دائیں طرف قشیری چشمے کے بالمقابل تھا، اسے ثافل کہتے تھے۔ یہ عرج کے قریب دو میل کے فاصلے پر چشمہ کے ساتھ اس راستے کی طرف مڑتا تھا جو اثایہ کے بالمقابل تھا۔

## ثِبار

یہ کِتَاب کے وزن پر ہے اور خیبر سے چھ میل کے فاصلے پر ایک مقام تھا۔ یہیں اسیر بن رزام یہودی کو عبد اللہ بن انیس نے قتل کیا تھا۔

## ثُجل

یہ عالیہ کی طرف ایک جگہ تھی۔ اس کا ذکر لفظ تعانیق میں گذر چکا ہے۔

## ثِرا

یہ رویثہ اور صفراء کے درمیان ایک جگہ تھی جو وادیٔ جی کی نچلی طرف تھی۔

## ثُریّا

آسمانی ستارے کا نام ہے' یہ ضریہ کی چراگاہ میں ضباب کا چشمہ تھا' یونہی شعبی پہاڑ میں بنومحارب کا چشمہ تھا۔

## ثُعال

غُراب کے وزن پر ہے' روحاء اور رویثہ کے درمیان ایک نالی تھی۔

## ثُغرہ

مدینہ کے ماتحت ایک جانب تھی۔

## ثُمام

یہ ثمامہ بھی کہلاتی تھی' یہ لفظ ثمام کا واحد ہے' یہ ایک جڑی بوٹی ہوتی ہے۔ یہ صخیرات میں ایک مشہور جگہ تھی۔ ابن اسحاق حضور ﷺ کے سفر بدر کے بارے میں لکھتے ہیں کہ آپ تربان سے گذرے' پھر ملل پر' پھر مرتین سے عمیس الحمائم پر' پھر صُخیرات الیمام پر اور پھر سیالہ کے مقام سے گذرے۔

## ثَمغ

خیبر میں یہ حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی جائیداد تھی۔ دار قطنی میں ہے کہ حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو خیبر میں زمین ملی تھی جسے ثمغ کہتے تھے' انہوں نے اس بارے میں حضور ﷺ سے پوچھا تو آپ نے فرمایا: اصل زمین اپنے پاس رکھو اور اس کا پھل تقسیم کر دیا کرو۔

بخاری شریف میں ہے کہ حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ اپنے جس مال کو تقسیم کرتے تھے' اسے ثمغ کہتے تھے' یہ کھو، کے درخت تھے لیکن یہودیوں کے گھروں کے بیان میں گذرا کہ بنومزانہ بنو حارثہ کی شامی جانب تھے' وہاں ان کے

قلعوں میں سے ایک قلعہ تھا جسے شعبان کہتے تھے جو ثمغ میں تھا اور حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا مالِ صدقہ تھا۔ ابن شبہ کی روایت ہے کہ حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو بنو حارثہ کے یہودیوں سے زمین ملی جسے ثمغ کہتے تھے۔ علامہ واقدی نے خندق پر واقعۂ حرّہ کے وقت اہلِ مدینہ کی صف بندی کا ذکر کیا' پھر جنگ کی دعوت کا ذکر کیا اور کہا کہ ابو الحمراء کا ٹیلہ ثمغ کی بستی تھی۔

ابوبکر بکری کہتے ہیں کہ ثمغ مدینہ کی طرف حضرت عمر کی زمین تھی۔ ابن شبہ نے ثمغ کو مدینہ میں حضرت عمر کے صدقات میں شمار کیا ہے پھر اس کے اور آپ کے خیبر والی زمین میں غیریّت بتائی ہے (کہ یہ دونوں الگ الگ تھیں)۔

حضرت عمرو بن سعید بن قتادہ کہتے ہیں کہ ہم نے اسلام میں سب سے پہلی زمین کے بارے میں پوچھا کہ کسے ملی تھی تو ایک شخص نے کہا کہ یہ رسول اللہ ﷺ کا صدقہ تھا۔ یہ انصار کا قول لیکن مہاجرین نے کہا کہ حضرت عمر نے لی تھی اور وجہ یہ تھی کہ رسول اللہ ﷺ اوّلاً مدینہ شریف میں تشریف لائے تو یہاں زہرہ میں اہل رانح وحسیکہ کی وسیع زمین دیکھی' یہ لوگ حضور ﷺ کی آمد سے پہلے جلا وطن کر دیئے گئے تھے' انہوں نے راح کے مقام پر وسیع زمین چھوڑی تھی' اس میں وہ وادی تھی جس میں پانی نہ آتا تھا' اسے حشاشین کہتے تھے۔ اس میں سے حضرت عمر کو ثمغ والی جگہ ملی' حضرت عمر نے اسے یہودیوں سے خریدا تھا' یہ جگہ بہت عمدہ تھی' انہوں نے رسول اللہ ﷺ سے اس بارے میں بات کی کہ میرے پاس مال ہے جسے میں پسند کرتا ہوں۔ اس پر آپ نے فرمایا تھا کہ اصل زمین اپنے پاس محفوظ رکھو اور اس کا پھل تقسیم کر دیا کرو۔

اس سے پتہ چلتا ہے کہ یہ جگہ مدینہ میں تھی اور اس کی شامی جانب تھی اور وہ جو دارقطنی میں آتا ہے اس میں راوی نے تبدیلی کر دی ہے۔

حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کہتے ہیں کہ ثمغ' اسلام میں سب سے پہلی وہ جگہ تھی جو مالِ صدقہ بنی۔

ابن کعب کہتے ہیں کہ سب سے پہلا مال جس پر صدقہ کا لفظ بولا گیا' وہ رسول اللہ ﷺ کا وقف مال تھا۔ حضرت مسور کہتے ہیں' میں نے کہا: لوگ تو کہتے ہیں یہ صدقۂ عمر تھا۔ اس پر انہوں نے کہا کہ رسول اللہ ﷺ نے اس مال پر قبضہ فرمایا جو آپ کے لئے مخیریق نے بطور وصیت دیا تھا' یہ ہجرت کا بائیسواں مہینہ تھا چنانچہ آپ نے اسے لوگوں میں تقسیم فرمایا' حضرت عمر نے تو ثمغ والا مال تقسیم کیا تھا اور یہ اس وقت' جب آپ خیبر سے ہجرت کے ساتویں سال واپس آئے تھے۔

## ثنیّة البول

یہ پہاڑی' ذی خشب اور مدینہ کے درمیان تھی۔

## ثِنیّة الحوض

طبرانی کے مطابق حضرت سلمہ بن اکوع رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں کہ میں رسول اللہ ﷺ کے ہمراہ عقیق سے

واپس آیا اور جب ہم اس پہاڑی کے قریب پہنچے جو عقیق میں ثنیۃ الحوض کہلاتی تھی تو آپ نے ہاتھ سے مشرق کی طرف اشارہ فرمایا۔

گویا کہ یہ پہاڑی حوضِ مروان کی طرف منسوب تھی جس کا ذکر عقیق میں قصر ابو ہاشم بن مغیرہ میں گذرا، لیکن میرے خیال میں یہ مدرّج کی پہاڑی تھی۔

## ثَنِیّۃ الشَّرِید

چوتھی فصل میں اس کا ذکر ہو چکا ہے۔

## ثَنیّۃ العایر

اسے غائر بھی پڑھتے ہیں لیکن عین کے ساتھ زیادہ مشہور ہے، یہ وادی رکوبہ کے دائیں طرف تھی۔ ہجرت کے وقت حضور ﷺ اس میں سے گذرے تھے۔

## ثَنیّۃ عَثْعَث

یہ ایک پہاڑ کی طرف منسوب تھی جسے سلیع کہتے تھے جیسے عثعث میں بتایا جائے گا۔ ابن شبہ کے کلام سے پتہ چلتا ہے کہ یہ وہ پہاڑی تھی جو چھوٹے سے اس پہاڑ کے قریب تھی جس پر امیرِ مدینہ کا قلعہ تھا، اسی چھوٹی پہاڑی کو سلیع کہتے تھے۔

## ثَنیّۃ مِدْران

اس کا ذکر مساجدِ تبوک میں آ چکا ہے۔

## ثَنیّۃُ الْمِرّۃ

یہ رابغ میں کنوئیں کے قریب تھی جسے احیاء کہا جاتا تھا۔ اسی مقام پر ابو عبیدہ بن حارث مشرکین کے مقابلے میں چھوٹا سا لشکر لے کر آئے تھے۔ اس کا ذکر عبیدہ بن حارث کے لشکر میں بھی آیا ہے۔ رہا لفظِ ثنیۃ المرار تو اس کی میم پر پیش یا زیر ہوتی ہے جیسے شک کی بناء پر اسے مسلم نے ذکر کیا ہے، کچھ نے میم پر زبر پڑھی ہے۔ عیاض کہتے ہیں، میرے خیال میں یہ اُحد کی جانب تھی۔

میں کہتا ہوں، درست وہ ہے جو نووی نے ذکر کیا ہے کہ یہ حدیبیہ کے قریب تھی۔

## ثَنیّۃ الوَداع

اس گھاٹی کا ذکر وہاں آیا ہے جہاں مدینہ کے مکانوں اور وباء سے ان کی حفاظت کا ذکر ہے۔ حضرت جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں کہ جو بھی مدینہ میں داخل ہوتا تھا، اسی گھاٹی سے گذرتا تھا پھر اگر وہ یہاں تعشیر نہ کرتا تو نکلنے سے

پہلے مر جاتا اور جب وہ اس گھاٹی پر چلا جاتا تو کہا جاتا کہ الوداع ہو گیا ہے لہٰذا اسے ثنیۃ الوداع کہا جاتا تھا۔ اسی دوران عروہ بن ورد آیا، اس نے تعشیر (دس مرتبہ وہاں آ کر کتے کی طرح آواز نکالنا) نہ کی، پھر مدینہ میں داخل ہوا اور یہودیوں سے کہا کہ یہ تعشیر کیوں کرتے ہو؟ انہوں نے کہا کہ اگر باہر سے آنے والا یہاں تعشیر نہیں کرتا تو مر جاتا ہے اور اگر ثنیۃ الوداع کے علاوہ کسی اور راستے سے آتا ہے تو کمزور ہو جاتا ہے۔ اور مر جاتا ہے پھر جب عروہ نے تعشیر نہ کی تو اور لوگوں نے بھی اسے چھوڑ دیا اور ہر طرف سے آنے لگے۔

ابن شبہ کہتے ہیں کہ اسے ثنیۃ الوداع کہنے کی وجہ یہ تھی کہ رسول اللہ ﷺ خیبر سے تشریف لائے تو بہت سے مسلمان آپ کے ہمراہ تھے، انہوں نے نکاحِ متعہ کر رکھا تھا۔ آپ جب مدینہ میں داخل ہو گئے تو فرمایا کہ متعہ والی عورتوں کو چھوڑ دو چنانچہ انہوں نے چھوڑ دیں تو اسے ثنیۃ الوداع کہا جانے لگا۔ (متعہ کہتے ہیں رقم طے کر کے کسی عورت سے طے شدہ دنوں کے لئے ہم بستری کرنا، اب یہ حرام ہے۔ ۱۲ چشتی)

اوسط میں ہے کہ انہوں نے کہا: ہم رسول اللہ ﷺ کے ہمراہ نکلے تو ہمارے ساتھ وہ عورتیں تھیں جن سے ہم متعہ کئے ہوئے تھے۔ ہم ثنیۃ الرکاب میں پہنچے تو عرض کی یا رسول اللہ! یہ وہ عورتیں ہیں جن سے ہم نے متعہ کر رکھا ہے۔ آپ نے فرمایا: یہ قیامت تک کے لئے حرام کر دی گئی ہیں چنانچہ ہم نے اسی وقت انہیں چھوڑ دیا، اسی لئے اسے ثنیۃ الوداع کہا گیا حالانکہ پہلے اسے ثنیۃ الرکاب کہتے تھے۔

بخاری شریف میں ان الفاظ سے ہے: ہم رسول اللہ ﷺ کے ہمراہ غزوۂ تبوک کے لئے روانہ ہوئے اور جب عقبہ کے قریب پہنچے تو وہ عورتیں آئیں جن سے ہم نے متعہ کیا تھا، وہ ہماری سواریوں کے گرد گھومنے لگیں، اتنے میں رسول اللہ ﷺ تشریف لائے، ہم نے آپ کو بتایا تو آپ غصے میں آئے اور حمد و صلوٰۃ کے بعد خطبہ دیتے ہوئے ہمیں متعہ سے منع فرمایا چنانچہ ہم نے انہیں اسی دن چھوڑ دیا۔ اسی وجہ سے اس گھاٹی کو ثنیۃ الوداع کہا جانے لگا۔

ابو یعلیٰ و ابن حبان کے مطابق حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے بتایا کہ ہم رسول اللہ ﷺ کے ہمراہ غزوۂ تبوک کو چلے اور ثنیۃ الوداع کے مقام پر اُترے۔ رسول اللہ ﷺ نے چراغ دیکھے اور عورتوں کو متعہ کی وجہ سے روتے دیکھا چنانچہ فرمایا کہ یہ کام حرام ہے یا فرمایا کہ ایسا متعہ، نکاح، طلاق، عدت گذارنا اور وراثت کا سلسلہ حرام ہے۔

ابن اسحاق غزوۂ تبوک کے بارے میں بتاتے ہیں کہ جب نبی کریم ﷺ چل پڑے تو اپنا لشکر ثنیۃ الوداع پر لا کھڑا کیا، ادھر عبد اللہ بن اُبی نے اس کی نچلی طرف ذباب کی جانب اپنا لشکر جمع کیا۔

ابن سعد دمشق کے قریب ہونے والی جنگِ موتہ کے لشکر کے بارے میں کہا تھا: رسول اللہ ﷺ ساتھیوں کو لے کر ثنیۃ الوداع پر پہنچے، وہاں ٹھہرے، انہیں الوداع کیا اور جرف میں لشکر انداز ہوئے۔

بخاری شریف میں حضرت سائب بن یزید کی روایت ہے، کہتے ہیں: مجھے یاد ہے کہ جب رسول اللہ ﷺ غزوۂ تبوک سے واپس تشریف لائے تو میں بچوں کے ہمراہ آپ سے ملاقات کے لئے ثنیۃ الوداع پہنچا۔

یہ سب روایات بتاتی ہیں کہ یہ ثنیۃ الوداع ان دنوں مدینہ کی شامی جانب مسجد رایہ اور مشہدِ نفس زکیہ کے درمیان مشہور تھی۔ یہیں سے لوگ گذرتے تھے یہ سلع کے قریب تھی۔ یہی بازار مدینہ تھا۔

اس گھر میں جسے ابن ہشام نے بازار مدینہ میں بنایا تھا' اس بات کی شہادت ملتی ہے اور ابن مکدم جب شام سے آیا اور ثنیۃ الوداع پر پہنچا تو چلایا کہ احول مر گیا ہے' لوگوں نے اس سے بازار والے گھر کے بارے میں پوچھا تو اس نے کہا کہ اسے گرا دو چنانچہ لوگوں نے اسے گرا دیا۔

غزوۃ العالیہ میں روایت اسحاق اسی کی وضاحت کرتی ہے' وہ کہتے ہیں کہ سب سے پہلے جس نے نذر مانی وہ سلمہ تھا' وہ چلے' قوس ساتھ تھی' وہ غابہ کی طرف روانہ تھا' جب ثنیۃ الوداع پر پہنچ تو پہاڑ کی طرف دیکھا اور پھر سلعہ پر چڑھ کر چلایا کہ واصباحاہ! انتہیٰ۔

بیہقی کہتے ہیں کہ ابوقتادہ نے گھوڑے پر زین ڈالی اور پھر زوراء پر پہنچا۔ اسے ایک آدمی ملا اور کہنے لگا اے ابو قتادہ! اپنا گھوڑا تیار کرو' اونٹنیاں چرا لی گئی ہیں' رسول اللہ ﷺ اور آپ کے صحابہ انہیں تلاش کرنے نکلے ہیں۔ اس نے کہا کدھر گئے ہیں؟ اس نے ثنیۃ الوداع کی طرف اشارہ کیا۔ اچانک دیکھا تو نبی کریم ﷺ اپنے کچھ صحابہ کو لئے گھروں کے پاس بیٹھے تھے۔

مقامِ زوراء اس گھاٹی سے قبلہ کی طرف تھا جبکہ ذباب اس کی شامی جانب تھا۔

حافظ ابن حجر نے حدیثِ ہجرت میں ذکر کیا ہے: حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے بتایا کہ نبی کریم ﷺ جب مدینہ میں داخل ہو رہے تھے تو بچیاں کہہ رہی تھیں:

> ''ہمارے ہاں چودھویں کے چاند آ رہے ہیں جو ثنیۃ الوداع کی طرف سے تشریف لائے ہیں تو جب تک کوئی اللہ تعالیٰ کی طرف بلانے والا موجود ہے ہم پر اس بات کا شکر کرنا لازم ہو گیا ہے۔''

راوی کہتے ہیں' شاید یہ واقعہ اس وقت ہوا جب آپ غزوۂ تبوک سے واپس تشریف لائے تھے۔

میں کہتا ہوں' یہ اس لئے کہ ثنیۃ الوداع مکہ کی جانب نہ تھی' علاوہ ازیں میں یہ کہتا ہوں کہ اس بات میں بھی کوئی رکاوٹ نہیں کہ یہ واقعہ ہجرت کے موقع پر ہوا ہو' جب آپ مسجد قباء سے تشریف لائے تھے کیونکہ اس وقت آپ اپنی اونٹنی پر سوار تھے' اس کی لگام ڈھیلی کر دی تھی اور فرمایا تھا کہ اسے جانے دو کیونکہ یہ حکم الٰہی پر چل رہی ہے۔ پھر آپ انصار کے گھروں کی طرف گذرے اور چلتے چلتے بنو ساعدہ کے پاس پہنچے' ان کے گھر مدینہ کی شامی جانب ثنیۃ الوداع کے قریب تھے لہٰذا آپ اسی راستے سے مدینہ میں تشریف لائے اور اپنی جگہ پر پہنچے۔ پھر بدر سے واپسی پر آپ ثنیۃ الوداع کی طرف پہنچے۔

علامہ بیہقی نے دلائل میں حضور ﷺ کے غزوۂ تبوک سے واپسی کی خبر دی ہے کہ عورتیں' بچے اور بچیاں طَلَعَ الْبَدْرُ عَلَیْنَا الخ پڑھ رہے تھے۔ پھر کہا کہ علماءِ مدینہ' مکہ سے آپ کی مدینہ میں تشریف آوری کے موقع پر بھی یہی کچھ

بیان کرتے ہیں‘ ہم نے وہاں اسے ذکر کر دیا ہے البتہ آپ مدینہ میں ثنیۃ الوداع کی طرف سے اس وقت تشریف لائے جب تبوک سے واپسی ہوئی‘ انتہٰی۔

عیاض کہتے ہیں کہ ثنیۃ الوداع مدینہ میں ہے اور مکہ کے راستے پر ہے۔ یہ نام رکھنے کی وجہ یہ تھی یہاں پہنچ کر وہ مدینے سے جانے والے کو الوداع کہتے تھے۔

کچھ حضرات کہتے ہیں وجہ یہ تھی کہ حضور ﷺ نے مدینہ میں رہنے والے کچھ لوگوں کو یہاں سے جاتے وقت الوداع کیا تھا۔ کچھ کہتے ہیں کہ آپؐ نے یہاں اپنے کچھ امیرانِ لشکر کو الوداع فرمایا تھا۔ کچھ کہتے ہیں کہ وداع‘ مکہ میں ایک وادی تھی جیسے مظفر نے اپنی کتاب میں کہا۔

یہ بھی لکھا ملتا ہے کہ اہلِ مکہ کی لونڈیوں نے یہ اشعار فتح مکہ کے موقع پر رسول اللہ ﷺ سے ملاقات کے موقع پر پڑھے تھے نہ کہ اس وقت جب آپ مدینہ میں داخل ہوئے تھے لیکن پہلی روایت زیادہ صحیح ہے کیونکہ انصار نے حضور ﷺ کے مدینہ تشریف لانے پر یہ ذکر کیا تھا چنانچہ معلوم ہو گیا کہ ثنیۃ کا نام ثنیۃ الوداع قدیم تھا۔

ابن حجر نے حضرت سائب بن یزید کا ذکر کرتے ہوئے بتایا ہے کہ داؤدی نے اس بات کا انکار کیا ہے‘ ابن قیم نے بھی ان کی پیروی کی ہے‘ انہوں نے کہا ہے کہ ثنیۃ الوداع مکہ کی جانب تھی‘ تبوک کی طرف نہ تھی۔ تبوک و مکہ کی جہت میں مشرق و مغرب جیسا فرق ہے‘ ہاں یہ ممکن ہے کہ وہاں کوئی اور ثنیۃ ہو۔ ابن حجر اس کے بعد لکھتے ہیں: اس میں کوئی رکاوٹ نہیں کہ ثنیۃ مکہ کی طرف ہو اور شام کی طرف جانے والا اسی ثنیۃ سے جاتا ہو۔

علامہ داؤدی نے جہاں ثنیۃ کے بارے میں لکھا ہے‘ ان کا مقصد یہ ہے کہ اگر یہ وہ جگہ تھی کہ اس سے نکلنے والا شام کی طرف نہیں جاتا تھا تو اس کا جواب کیسے دیا جائے گا؟ عنقریب مدرج میں آ رہا ہے کہ یہ وہی ثنیۃ جو عقیق اور مدینہ سے دکھائی دیتی تھی اور یہ ثنیۃ الوداع تھی یہ اس شخص کے نزدیک ہے جو اس طرف گیا ہے کہ وہ مکہ کی جانب تھی۔ یہاں انہوں نے کہا کہ یہ وہی ثنیۃ تھی جو مدینہ سے دکھائی دیتی تھی اور اس سے مکہ کو جانے والا گزرتا تھا‘ یہ بھی کہتے ہیں کہ جو شام کو جانے کا ارادہ کرتا تھا۔

ثنیۃ الوداع کے نام رکھنے میں اختلاف ہے چنانچہ کہتے ہیں: یہ نام اس لئے رکھا گیا کیونکہ یہ مسافروں کے مدینہ سے مکہ جانے والوں کے لئے مقام الوداع تھا‘ یہ بھی کہتے ہیں کہ نبی کریم ﷺ نے آخری مرتبہ مدینہ سے نکلتے وقت حاکمِ مدینہ کو مقرر کرتے وقت کسی کو یہاں الوداع فرمایا تھا‘ یہ بھی کہتے ہیں کہ کسی لشکر کو یہاں الوداع فرمایا تھا۔ یہ بھی کہتے ہیں کہ الوداعِ مکہ میں ایک وادی کا نام تھا جبکہ صحیح یہ ہے کہ یہ دورِ جاہلیت کا قدیم نام ہے‘ یہ نام مسافروں کو یہاں الوداع کہنے سے پڑ گیا تھا اور یونہی اہلِ سیرت و تاریخ اور اصحابِ مسالک کہتے ہیں کہ یہ مکہ کی جانب تھی تاہم آج کل اہلِ مدینہ اسے شام کی طرف شمار کرتے ہیں‘ شاید ان لوگوں نے ابن قیم کے اس قول پر بھروسہ کر رکھا ہے جو انہوں نے اپنی ھدی میں کہا ہے کہ: شام کی جانب ثنیات الوداع ہیں اور مکہ سے آنے والا اس سے نہیں گزرتا۔

دونوں روایتوں کو جمع کرنے کی صورت یہ ہے کہ دونوں گھاٹیوں ہی کو ثنیۃ الوداع کہہ دیں گے اور ظاہر یہ ہے کہ جو لوگ ثنیۃ کو مکہ کی جانب قرار دیتے ہیں، ان کے پاس دلیل عورتوں کا وہ قول ہے جو بتا دیا گیا (طلع البدر) اور انہوں نے یہ اس وقت گایا تھا جب آپ ہجرت کر کے تشریف لائے تھے حالانکہ یہ لوگ اس وجہ سے غافل ہیں جو ہم نے بیان کی ہے، اور دراصل یہ ان لوگوں کے لئے دلیل بن جاتی ہے جو ثنیہ کو شام کی طرف قرار دیتے ہیں۔ میں کئی دفتر چھان مارے ہیں کہ اسے مکہ کی طرف ثابت کر دیں لیکن مجھے کہیں سے یہ ثبوت نہیں مل سکا کہ یہ ثنیہ مکہ کی طرف تھی اور جو کچھ علامہ مجد نے نقل کیا ہے وہ ابن قیم کی کتاب ''ھدی'' میں موجود ہے کیونکہ انہوں نے تبوک سے آپ کی واپسی کے بارے میں لکھا ہے: جب رسول اللہ ﷺ مدینہ کے قریب تشریف لے آئے تو لوگ آپ سے ملاقات کے لئے نکل کھڑے ہوئے، عورتیں، لڑکے اور لڑکیاں نکلیں جو یوں پڑھ رہی تھیں:

طَلَعَ الْبَدْرُ عَلَيْنَا مِنْ ثَنِيَّاتِ الْوَدَاع
وَجَبَ الشُّكْرُ عَلَيْنَا مَا دَعٰى لِلّٰهِ دَاع

کچھ راویوں کو وہم ہو گیا اور انہوں نے کہا کہ: یہ اشعار اس وقت پڑھے گئے جب آپ مکہ سے مدینہ میں تشریف لائے تھے اور یہ وہم بالکل واضح ہے کیونکہ ثنیات الوداع شام ہی کی طرف تھیں، انہیں وہ لوگ نہیں دیکھ سکتے تھے جو مکہ سے مدینہ کو آئیں، اس ثنیہ سے تبھی گذر سکتے تھے جب وہ شام کو متوجہ ہوں اور یہ بات حافظ ابن حجر کی نقل کے خلاف جاتی ہے اور اگر ان دونوں روایتوں کا جمع ہونا تسلیم کر لیا جائے جسے علامہ مجد نے بیان کیا ہے کہ دونوں ہی ثنیات کہلاتی تھیں تو ان گذشتہ تمام خبروں سے مراد وہ جگہ ہو گی جس کا بیان مدینہ کی شامی جانب گذرا۔

## ثَوْر

یہ بمعنٰی بیل ہے جو گائے کا مذکر ہوتا ہے۔ اس کا بیان حدودِ حرم میں آ چکا ہے۔

## ثَیب

اس کا ذکر بھی حدودِ حرم میں آ چکا ہے۔

# حَرْفُ الْجِيْم

## الجّار

یہ وہ بستی تھی جہاں بہت سے لوگ رہتے تھے اور جہاں کافی مکانات تھے، یہ ساحلِ سمندر پر واقع تھا جہاں کشتیاں آتی تھیں۔

علامہ یاقوت کہتے ہیں کہ یہ یمن کے ساحلِ سمندر پر ایک شہر تھا اور مدینہ کا سرحدی شہر تھا، اس کے اور مدینہ

کے درمیان دن رات کے سفر کی مسافت کا فاصلہ تھا۔ یہاں مروان بن حکم کا غلام عبد الملک جاری رہتا تھا اور عنقریب علامہ مجد سے آ رہا ہے کہ سریرٗ اس جار کے قریب تھا' یہ سریرٗ مصر اور حبشہ کی طرف نے مدینہ کی طرف آنے والے کشتی سواروں کی بندرگاہ تھی۔ اس کے بعد علامہ مجد کہتے ہیں کہ جار اور مدینہ کے درمیان ایک دن رات کے سفر کا فاصلہ تھا' اس کا حاصل یہ ہے کہ یہ بندرگاہ سریر تھی' جار نہ تھی اور پھر آگے آ رہا ہے کہ جار مدینہ کے قریب سمندر پر ایک شہر تھا۔

## جَاعِس

یہ بنوحرام کے گھروں میں ایک قلعہ تھا جو مساجد فتح کے مغرب میں تھا۔

## جَبَار

سرزمینِ غطفان سے حباب کی طرف ایک جگہ تھی۔

## جَبَّانَه

یہ ندمانہ کے وزن پر ہے' اصل میں قبرستان کو کہتے ہیں' یہ مدینہ کی شامی جانب میں ایک جگہ تھی' آگے ذباب میں آ رہا ہے کہ بکری کے مطابق یہ مقام جبانہ میں تھا۔ اس کا ذکر قبائل کے گھروں کے بیان میں آ چکا ہے یعنی بنو الدیل' بنو ذکوان اور بنو مالک بن حمار کے گھروں میں' پھر اس کا ذکر وہاں آیا ہے جہاں یہ بتایا گیا ہے کہ حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے مسجد کی شامی جانب اضافہ فرمایا تھا' آپ نے فرمایا تھا: اگر ہم اس میں اضافہ کرتے ہوئے جبانہ تک بھی لے جائیں تو یہ مسجد رسول اللہ ﷺ ہی ہو گی۔

## جَبَل بنی عُبَید

یہ مساجدِ فتح کی مغربی جانب ان کے گھروں کے قریب پہاڑ تھا۔

## جَبَل جُهَینه

جہینہ کے گھروں میں اس کا ذکر آ چکا ہے۔

## جَبُوب

سخت قسم کی زمین کو کہتے ہیں اور جبوب المصلّٰی مدینہ میں بھی۔

## جُشا

اصل میں سخت پتھر کو کہتے ہیں (جس میں نرمی نہ ہو) یہ فدک اور خیبر کے درمیان ایک جگہ تھی۔

## جَشُجَاثَه

مساجد مدینہ کا بیان کرتے ہوئے آخر میں اس کا بیان آچکا اور یہ بھی بتایا جا چکا کہ عقیق کا سیلاب اسی میں گرتا تھا پھر حمراء الاسد میں گرتا تھا۔ یہ فید کی چراگاہ میں ایک چشمہ (یا کنواں) تھا پھر انہوں نے کہا کہ ضریہّ کی چراگاہ کے قریب تھا پھر وہ کہتے ہیں کہ یہ مدینہ کے جنگلوں میں سے ایک جنگل تھا۔

## جَحَّاف

عالیہ میں جائیداد تھی جو سمیحہ کی جانب تھی' قدیم دور میں اسے مالِ جحاف کہا جاتا تھا۔ یہ وہاں پر رہنے والے ایک یہودی کا قلعہ تھا۔

## جُحْفَه

حج کے میقاتوں میں سے ایک میقات ہے' یہ ایک بڑا شہر تھا جو مدینہ سے تین دن کی مسافت سے زیادہ فاصلے پر تھا جبکہ مکہ سے ساڑھے چار دن کی مسافت پر تھا۔ پہلے اسے مہیعہ کہتے تھے۔

## جَداجد

یہ لفظ جدجد کی جمع ہے' ہموار زمین کو کہتے ہیں۔ سفرِ ہجرت میں اس کا ذکر یوں آتا ہے: آپ بطنِ کشب میں چلے' پھر جداجد پر اور پھر اجرد پر۔ علامہ مجد کہتے ہیں: لگتا ہے یہ کنوئیں تھے کیونکہ حدیث میں ہے: "ہم بئر جدجد پر پہنچے"۔ ابو عبید کہتے ہیں کہ درست لفظ "بئرِ جد" ہے اور اسے بئر جدجد بھی کہتے ہیں۔

## جُدّالاَثافي

اثافی' اثفیہ کی جمع ہے' یہ وہ پتھر ہوتا ہے جس پر ہنڈیا رکھی جاتی ہے اور یہ عقیق میں ایک جگہ تھی۔

## جُدّالهَوالي

یہ بھی عقیق میں ایک جگہ تھی۔ عقیق کی وادیوں میں گذر چکا ہے:

جد الموالی پھر جد الاثافی اور پھر ذو اثیفیہّ.

## ذُوالجدُر

جِدَار کو جِدر بھی پڑھ لیتے ہیں۔ یہ قباء کی طرف مدینہ سے چھ میل کے فاصلے پر ایک چراگاہ تھی' یہیں وہ اونٹنیاں تھیں جنہیں لوٹ لیا گیا تھا۔ بطحان کا سیلاب ذی الجدار سے شروع ہوتا تھا جیسے ابن شیبہ کی طرف سے بتایا جا چکا ہے۔ یہ ایک پہاڑ تھا۔

## جُذْمَان

یہ لفظ عثمان کے وزن پر ہے۔ یہ وہ جگہ تھی جہاں مدینہ کے قلعوں میں سے ایک قلعہ تھا۔ ایک زمین کا ٹکڑا جہاں غزوہ کے وقت تبع نے کھجور کے درخت اُگائے تھے۔ جَذْمْ ٹکڑے کو کہتے ہیں۔ پہلے گذر چکا ہے کہ تُبّع نے احیحہ بن جلاح جحجی کے باغ کو اس وقت جلانے کا حکم دیا تھا جب وہ قلعہ میں محفوظ ہو گیا تھا۔ احیحہ اوس میں سے تھا۔

## جَرَادِیح

یہ سیاہ پہاڑیاں تھیں جو سویقہ اور مثعر کے درمیان تھیں۔

## جُرُف

یہ حرکات مجد نے یاقوت کی پیروی میں بتائی ہیں لیکن ابوبکر الحازی اور ابوعبید بکری نے اسے جیم اور راء پر پیش سے پڑھا ہے۔ یہ مدینہ میں ایک جگہ تھی۔ یہاں قبیلۂ جرف کی اراضی تھی اور یہیں حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی زمین تھی اور شام کی جانب یہ مدینہ سے تین میل کے فاصلے پر تھی۔

طبقات ابن سعد میں ہے کہ حضرت مقداد رضی اللہ تعالیٰ عنہ جُرُف میں فوت ہوئے تھے، یہ مدینہ سے تین میل کے فاصلے پر تھی، انہیں لوگوں کی گردنوں پر اُٹھوا کر بقیع میں دفن کیا گیا اور عقیق کی حد بندی بیان کرتے ہوئے آ چکا ہے کہ جُرُف، مجّہ شام (راستہ کا درمیان) سے قصاصین تک کے درمیان تھا۔ پہلے گذر چکا ہے کہ کھلا میدانی حصہ جس میں بئر رومہ تھا، وہ جرف میں مل کر وسیع ہو جاتا تھا۔ جرف کو اس لئے جرف کہتے ہیں کہ جب تبّع قناۃ میں اپنے گھر سے نکلا تو اس نے ادھر دیکھ کر کہا تھا کہ یہ زمین کا ''جرف'' ہے۔ اس سے پہلے اس جگہ کو ''عرض'' کہا جاتا تھا۔

ابن زبالہ نے روایت کی ہے کہ تبّع نے ایک جاسوس بھیجا تھا کہ مدینہ کی زرعی زمین کو دیکھے، وہ دیکھ آیا اور کہا کہ میں دیکھ آیا ہوں: رہی وادی قناۃ تو وہاں دانہ ہے، بھوسا نہیں ہے، جرار میں نہ تو دانہ ہے، نہ ہی بھوسا اور رہا جرف تو وہاں دانہ بھی ہے اور بھوسا بھی اور عنقریب حرف زاء میں ''زین'' کا لفظ آ رہا ہے جو جرف میں زرعی زمین تھی جہاں حضور ﷺ نے کاشت فرمائی تھی۔

طبقات ابنِ سعد میں ہے کہ حضرت ابوبکر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے حضرت زبیر کو جرف کا مالک بنا دیا تھا۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ حضرت عثمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ایک خلیج بنائی اور اسے جرف کے ایک شہر میں داخل کر دیا اور یہ جگہ اپنی بیٹی نائلہ بنت فرافصہ کو دیدی۔ یہاں آپ نے تین ہزار عجمی قیدی رکھے تھے پھر یہ بھی ذکر کیا کہ جرف کے اموال ہی میں سے بئر جشم اور بئر جمل بھی تھے۔

## جرّ ھشام

یہ ھشام بن اسماعیل کے ہاں پانی پینے کا مقام تھا۔ اس کا ذکر عقیق کے مقام پر ابو ہاشم کے محل کے بیان میں گذر چکا ہے۔

## جَزُل

لغت میں خشک لکڑی کو کہتے ہیں۔ اس کی طرف وہ وادی منسوب تھی جو ذی المروہ میں اِضم سے جا ملتی تھی اور اسی کی طرف سقیا کی نسبت تھی (سقیا الجزل) اور نہیں پر طویس نامی مَخنّث (نہ مرد نہ عورت) گویّا کی قبر تھی۔

## جَزِیرَۃُ الُعَرب

مدینہ کے ناموں میں اس کا ذکر گذر چکا ہے۔ علامہ اعرابی کہتے ہیں کہ یہ ابو موسےٰ کا کنواں تھا جو بصرہ سے حفر موت تک عذیب کی طرف پانچ دن کے سفر پر تھا اور پھر جدّہ سے ساحلِ یمن تک شام کی طرف پھیل گیا تھا۔ علامہ اصمعی کہتے ہیں کہ یہ طول میں عذیب سے عدن تک پھیلا ہوا تھا اور چوڑائی میں ایلہ سے جدّہ تک تھا۔

اس جزیرہ میں چار مقام شامل ہیں: یمن، نجد، حجاز اور غور جسے تہامہ کہتے تھے۔ کہتے ہیں کہ اسے جزیرہ کہنے کی وجہ یہ ہے کہ ہر طرف سے اسے سمندر نے گھیر رکھا ہے یعنی بحرِ حبشہ، بحرِ فارس، دجلہ اور فرات پھر یہ بھی کہتے ہیں کہ ہر وہ شہر جو روم اور فارس کی ملکیت میں نہ رہا ہو اسے جزیرہ کہتے ہیں۔

## جسر بطحان

بنو قینقاع کا بازار اسی کے قریب تھا پھر بطحان کے بیان میں گذر چکا ہے کہ یہاں جب بھی سیلاب آتا تو بنو خطمہ اور اعرس کے میدان میں پھیل جاتا پھر وہاں سے چل کر جَسر میں آ جاتا اور پھر وادیٔ بطحان میں داخل ہو جاتا تھا چنانچہ یہ جَسرِ بطحان کی بالائی جانب زقاق بیض کی طرف تھا۔

## جفَاف

یہ عالیہ میں مشہور مقام تھا جہاں خوبصورت باغ تھے۔

## جفر

بکری کا چار ماہ کا بچہ نیز اس کنوئیں کو کہتے ہیں جب اسے لپیٹا نہ جائے یا اس کا کچھ حصہ لپیٹا جائے۔ یہ صریّہ کی جانب ایک چشمے کا نام تھا اور پھر فرش ملل کے قریب کنواں تھا جو آج کل جفر کے نام سے مشہور ہے اور آگے دور معلّٰی کے ذکر میں ھجری نے جس کا ذکر کیا ہے اس سے یہی مراد ہے چنانچہ وہ لکھتے ہیں: معلّٰی الحرومہ میں کنواں تھا جسے جفر الرغباء کہتے تھے، یہ طلق بن اسعد کا تھا اور پھر عبد اللہ بن حسن کا ہو گیا۔

## اَلُجَلسی

نجد کی زمین تھی اور جلسی، ارض قبلیہ میں سے وہ زمین ہوتی ہے جو بلندی میں ہو جبکہ غوری، پست کو کہتے ہیں۔

## جُلَیّہ

یہ جَلِیؓ کی تصغیر ہے جس کا معنٰی واضح ہوتا ہے۔ ھاء تانیث کی ہے۔ یہ وادیٔ قرٰی کے قریب ایک جگہ تھی۔

## جَماوات

جماء کی جمع ہے، یہ تین مقام تھے، چوتھی فصل میں اس کا ذکر آ چکا ہے لیکن مجد نے ایک ہی بتایا ہے چنانچہ وہ کہتے ہیں کہ جماء مدینہ میں ایک پہاڑ تھا جو عقیق سے جرف کو جاتے ہوئے ایک طرف تین میل کے فاصلے پر پھیلا ہوا تھا۔ زمخشری کہتے ہیں کہ جمّاء مدینہ میں ایک چھوٹا سا پہاڑ تھا، اسے جُبَیل کہنے کی وجہ یہ تھی کہ وہاں دو پہاڑ تھے جن میں سے یہ چھوٹا تھا تو گویا یہ ابھرا ہوا تھا۔

ابوالحسن مہلبی کہتے ہیں کہ یہ دو جماء تھے اور یہ راستے کی دائیں طرف زمین پر پھیلے ہوئے تھے۔ پھر مجد نے وہی گنتی بتائی جو ہم نے لکھی ہے۔ اس جماء کا ذکر حضرت سعید بن عاص کے محل کے ذکر میں آ چکا ہے۔

## جُمُدان

یہ بنو اسلم کے گھروں میں سے تھا جو قدید اور عسفان کے درمیان تھا، پھر ابوبکر بن موسےٰ کہتے ہیں کہ یہ ینبع اور عیص کے درمیان ایک پہاڑ تھا جو مدینہ سے ایک رات کی مسافت پر تھا اور یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ ثنیۂ عرال اور اَمج کے درمیان ایک وادی تھی۔

علامہ اسدی کہتے ہیں کہ امج کی پچھلی طرف ایک میل کے فاصلے پر وادیٔ ازرق تھی، اس وادی میں ایک چشمہ تھا پھر چشمے اور وادی کے درمیان ایک پہاڑ تھا جسے جمدان کہتے تھے، یہ راستے کی دائیں طرف تھا، حدیث پاک میں ہے کہ رسول اللہ ﷺ جمدانؓ کے قریب سے گذرے تو فرمایا، "چلتے جاؤ، یہ جمدان ہے، آگے جانے والے سابق اور پہلے شمار ہوں گے۔"

علامہ ازھری کہتے ہیں: حضور ﷺ مکہ کے راستے میں ایک پہاڑ سے گذرے جسے بجدان کہتے تھے۔ ان کے نزدیک یہ لفظ باء کے ساتھ ہے لیکن دوسروں کے ہاں جمدان ہے جو جمد کا تثنیہ ہے اور گویا جب نبی کریم ﷺ نے اسے دیکھا تو آپ کو زید بن عمر وعدوی یا ورقہ بن نوفل کا یہ شعر یاد آ گیا تھا:

> "عرش کا مالک پاک ہے اور یہ پاکیزگی ہمیشہ سے اس کی صفت ہے، ہم سے پہلے جُودی اور جمد اللہ کی پاکیزگی بیان کر چکے ہیں۔"

چنانچہ آپ نے اپنے ان ساتھیوں کو جمد کی تسبیح کی بناء پر یاد کیا جو اس نے دورِ جاہلیت میں کی تھی حالانکہ وہ ایک پتھر تھا کیونکہ وہ نجد کی طرف بنو نصر کا تھا، اسی لئے آپ نے دورِ جاہلیت کو یاد کیا جبکہ اللہ کا ذکر آگے بڑھنے کا ذریعہ ہوتا ہے۔ یہ بھی احتمال ہے کہ جب ذکر الٰہی وادی میں اُوپر چڑھتے اور اُترتے وقت مطلوب ہوتا ہے تو آپ نے جمدان کے دیکھنے کو دو امور میں سے ایک کے ساتھ ملا دیا اور انہیں یاد کیا کہ یہ جُمدان ہے جس کی چوٹی پر تم چڑھے ہو یا اس کی وادی میں اُترے ہو تو اللہ کا ذکر کرو، یا پھر یہ آگے بڑھنے کا سبب ہے اور یہ احتمال بھی ہے کہ حضورﷺ نے اسے دیکھ کر حضرت موسےٰ علیہ السلام کا تلبیہ (لبیک کہنا) یاد کیا ہو کیونکہ بخاری شریف میں ہے کہ نبی کریمﷺ وادیٔ ازرق سے گذرے تو فرمایا: یوں سمجھو جیسے میں موسیٰ علیہ السلام کو ثنیہ سے اترتے دیکھ رہا ہوں، وہ ذکر کر رہے ہیں اور یہ جمدان وادیٔ ازرق ہی میں تھا لہٰذا جو کچھ علامہ یاقوت کو اشکال ہوا تھا وہ واضح ہو گیا کیونکہ انہوں نے کہا تھا: میں نہیں جانتا کہ مفردین کے آگے جانے اور جمدان کو دیکھنے کو کونسی چیز جمع کرتی ہے حالانکہ یہ معلوم ہے کہ ذکر کرنے والا ہی آگے ہوتا ہے۔ اس بارے میں میں نے کسی کو کچھ بتاتے نہیں دیکھا۔

## جُمُوح

یہ قباء اور مران کے درمیان بصرہ کے راستے کی طرف تھی اور ابو عبیدہ نے جموح اور عرفہ کا ذکر کیا جو مکہ میں ہے اور پھر کہا ''اور جموح جو قباء کے نزدیک تھی۔'' انتہٰی۔ اس سے مراد مدینہ کا مقامِ قباء نہیں جیسے عنقریب اس کی طرف اشارہ آ رہا ہے۔

علامہ مجد کہتے ہیں کہ جموح بھی بنو سلیم کی زمین تھی، یہاں حضورﷺ ایک غزوہ کے لئے تشریف لائے تھے، آپ نے زید بن حارثہ کو بنو سلیم کی طرف بھیجا، وہ جموح پہنچے۔

میں کہتا ہوں کہ اس سے مراد وہی جموح ہے جس کا ذکر پہلے ہوا ہے۔

## جَمَّہ

علامہ کمال دمیری کہتے ہیں کہ یہ خیبر کی ایک وادی میں چشمہ تھا، حضورﷺ نے اس کا نام قسمۃ الملائکہ رکھا تھا، اس کا دو تہائی پانی فلج (چھوٹی نہر) میں جاتا تھا اور دوسرا تہائی دوسرے فلج میں جاتا تھا جبکہ راستہ ایک ہی تھا۔

## جَنَاب

یہ خیبر کی ایک جانب جگہ تھی۔ کچھ کہتے ہیں کہ بنو مازن کے گھروں میں سے ایک گھر تھا۔ علامہ نصر کہتے ہیں کہ جناب بنو فزارہ کے گھروں میں سے تھا جو مدینہ اور فید کے درمیان تھا اور طبقات ابن سعد میں ہے کہ جناب عذرہ اور بلی کے درمیان جگہ تھی۔

## جَنَفَاء (یا جنفا)

جیم پر پیش بھی پڑھی جاتی ہے۔ ابن سعد کہتے ہیں کہ یہاں ابو الشموس بلوی صحابی آیا کرتے تھے۔ ابنِ شہاب کہتے ہیں کہ بنوفزارہ ان لوگوں میں تھے جو اہلِ خیبر کے پاس ان کی امداد کو آئے، حضور ﷺ نے انہیں پیغام بھیجا کہ ان کی امداد نہ کریں اور ان میں سے نکل جائیں، اس پر انہیں خیبر میں سے اتنا مال ملے گا لیکن انہوں نے انکار کر دیا اور جب اللہ تعالیٰ نے خیبر میں فتح دیدی تو کہنے لگے کہ ہمیں وہ حصہ دیجئے جس کا آپ نے وعدہ کیا تھا۔ اس پر رسول اللہ ﷺ نے فرمایا کہ تمہارا حصہ خیبر کے پہاڑوں میں سے ایک پہاڑ ذو الرقیبہ میں ہے، وہ کہنے لگے کہ ہم آپ سے لڑیں گے۔ آپ نے فرمایا کہ تم سے جنفاء میں جنگ کا اعلان کرتا ہوں چنانچہ وہ وہاں سے بھاگ کھڑے ہوئے۔

یہ بھی لکھا ملتا ہے کہ جنفاء بنوفزارہ کا ایک کنواں تھا اور پھر یہ خیبر اور فید کے درمیان ایک جگہ تھی۔

علامہ یاقوت کہتے ہیں کہ یہ وہی تھی جس کا ذکر غزوۂ خیبر میں آتا ہے پھر ضلع الجفاء ربذہ اور ضریہ کے درمیان ایک جگہ تھی اور اس راستے پر تھی جو مدینہ کو جاتا تھا۔

## جُنَیْنَہ

یہ لفظ جَنّۃ بمعنیٰ باغ کا اسمِ تصغیر ہے، اس کا ذکر عقیق کی وادیوں میں آ چکا ہے پھر یہ ایک چشمہ بھی تھا جس کا پانی اِضم میں گرتا تھا اور یہ وادیٔ عقیق کے قریب تھی۔

## جوَاء

ضریہ کی چراگاہ میں ایک کنواں تھا۔

## جَوَانِیَّہ

ایک جگہ کا نام تھا اور یہ بھی کہتے ہیں کہ مدینہ کے نزدیک ایک بستی تھی، بنو الجوانی اسی کی طرف منسوب تھے۔ عیاض کے مطابق علامہ بکری کہتے ہیں کہ گویا یہ لوگ جوان کی طرف منسوب تھے۔ یہ زمین فُرع کی طرف سے مدینہ میں داخل تھی۔ انتہی۔ لیکن نووی کا صحیح قول یہ ہے کہ یہ احد کے قریب ایک جگہ تھی اور مدینہ کی شامی جانب تھی کیونکہ اس کا ذکر مدینہ کے یہودیوں کے گھروں میں ملتا ہے اور پہلے آ چکا ہے کہ ان کے یہاں صرار اور ریان نامی دو قلعے تھے، یہ دونوں بنو حارثہ کے ہو گئے تھے اور ان کا ذکر ان کے گھروں میں ملتا ہے لہٰذا جوانیہ وہاں شام کی جانب والے حرۂ شرقیہ میں تھا۔ حدیثِ معاویہ بن حکم سلمی میں ابو داؤد لکھتے ہیں کہ ایک لونڈی نے مجھ سے کہا جو اُحد اور جوانیہ کی جانب کچھ بکریاں چراتی تھی۔ الحدیث۔

### جُبَار

کِتاب کے وزن پر ہے۔ یہ خیبر کی سرزمین میں ایک جگہ تھی۔

### ذاتُ الجیش

اسے اولات الجیش بھی کہتے ہیں‘ اس کا ذکر حرم کے بیان میں آ چکا ہے‘ یہ ذوالحلیفہ سے چھ میل کے فاصلے پر تھی جبکہ ابن وھب کہتے ہیں کہ یہ عقیق سے چھ میل کے فاصلے پر تھی۔ لگتا ہے انہوں نے یہ پیمائش ذوالحلیفہ کی جانب سے لی تھی‘ ابن وضاح کا قول بھی اس کے قریب ہی ہے‘ وہ کہتے ہیں کہ یہ عقیق سے سات میل کے فاصلے پر تھی۔ ابن قاسم کہتے ہیں کہ اس کے اور وادیٔ عقیق کے درمیان دس میل کا فاصلہ تھا۔ ثعلبی بارہ میل کا بتاتے ہیں اور یہ بھی کہا گیا ہے کہ ان دونوں کے درمیان دو میل کا فاصلہ تھا۔ کہتے ہیں کہ نزار بن معد اور ن کے بیٹے ربیعہ کی قبریں ذات الجیش میں تھیں۔ یہ رسول اللہ ﷺ کی ایک منزل تھی جب آپ بدر کو تشریف لے گئے تھے‘ یونہی غزوہ بنو المصطلق کو جاتے ہوئے بھی یہاں ٹھہرے تھے‘ یہیں آیتِ تیمّم اُتری تھی اور یہ مکہ کی طرف جانے کا راستہ تھا۔

### ذُوالجیفَه

یہ مدینہ اور تبوک کے درمیان ایک جگہ تھی۔

### جِیّ

اس کا ذکر مکہ کے راستے پر مسجدوں میں آ گیا ہے۔ علامہ اسدی لکھتے ہیں کہ یہاں کئی گھر تھے اور میٹھے پانی کے دو کنوئیں تھے۔ انتہی۔ یہ اس پہاڑ کے دامن میں تھی جو وہاں سوئے لوگوں کو بہا لے گیا تھا۔ ورقان یہیں تک تھا۔

## حَرفُ الحَاء

### حاجِر

یہ نقا کی غربی جانب ایک جگہ تھی جو حرہ وَبُرہ تک چلی جاتی تھی اور جو وادیٔ عقیق میں تھی‘ مدح اور اس کے اردگرد والی جگہ اسی میں شامل تھی‘ یہی حاجر ہے جس کا ذکر شعروں میں ملتا ہے وہ نہیں جو بیداء میں حاجر الثنیا مکہ کے راستے میں مشہور جگہ تھی۔

### حَاطِب

مدینہ اور خیبر کے درمیان ایک راستہ تھا۔ مرحب کے ذکر میں اس کی حدیث آ رہی ہے۔

## حَالة

یہ لفظ حال کا واحد ہے۔ حرۃ الرجلاء کے نزدیک ایک جگہ کا نام ہے۔

## حائط بني المَدَاش

یہ وادئ قری میں ایک جگہ تھی' حضورﷺ نے یہ جگہ بنوالمداش کو دے دی تھی لہٰذا یہ انہی سے منسوب ہوگئی۔

## حِبْرَه

مدینہ میں ایک قلعہ کا نام تھا۔ ابن زبالہ کہتے ہیں کہ بنوقینقاع کے حشاشین کے نزدیک دو قلعے تھے' یہ اس جائیداد کے قریب تھے جسے خیبر کہتے تھے۔

## حُبُس

یہ بنومرہ کا پہاڑ تھا۔ یہ زمخشری کا قول ہے جبکہ دوسرے کہتے ہیں کہ یہ حرۂ بنوسلیم اور سوارقیہ کے درمیان ایک جگہ تھی' حدیث پاک میں ہے کہ ''حبس سیل سے آگ نکلے گی۔'' علامہ نصر لکھتے ہیں کہ حبس سیل بنوسلیم کا ایک حرہ تھا۔ یہ دو حرے تھے جن کے درمیان خالی جگہ تھی' دونوں کے درمیان ایک میل سے کم کا فاصلہ تھا اور اصمعی کہتے ہیں کہ حبس ''ثلما'' پر اُبھرا ہوا پہاڑ ہے' اگر اُلٹ جائے تو ان پر گر پڑے' یہ لوگ بنوقرہ تھے اور آج کل اس بند کو حبس کہتے ہیں جو آگ نے باندھ دیا تھا۔

## حُبَيْش

بنوعبید کے گھروں میں ان کا ایک قلعہ تھا جو مسجد فتح کی جانب غرب میں تھا اور بنوعبید کے پہاڑ کے قریب تھا۔

## حُتّ

جہینہ میں سے بنوعرک کے قبلہ والے پہاڑوں میں سے ایک پہاڑ۔

## حثاث

مدینہ کی وادیوں میں سے تھی۔

## حِجَاز

یہ مکہ' مدینہ اور یمامہ کے اردگرد کے علاقے پر بولا جاتا ہے۔ علامہ عیاض کہتے ہیں کہ یہ نجد اور سَراۃ کا درمیانی علاقہ ہے۔ علامہ اصمعی کہتے ہیں: اسے حجاز کہنے کی وجہ یہ ہے کہ یہ پانچ حروں میں گھرا ہوا ہے۔

میں کہتا ہوں کہ جزیرۃ العرب کی پہلی تقسیم میں سے جو حصہ بطن رمہ سے ابھرا ہوا ہے وہ ذاتِ عرق تک نجد

کہلاتا ہے اور جو حرّہ سوران، حرّہ لیلی، حرہ واقم، حرّہ نار اور بنو سلیم کے عام گھروں سے مدینہ تک ہے تو وہ حصہ سارے کا سارا حجاز کہلاتا ہے اور جو ذاتِ عِرق سے سمندر تک ہے، وہ تہامہ کی ہموار زمین ہے اور پھر حجاز کی طرف سے تہامہ والی جانب، مدارج العرج کہلاتی ہے تو گویا یہ پانچواں حرّہ بنو سلیم ہے، اسی وجہ سے مدینہ، حجاز کہلاتا ہے نہ کہ مکہ چنانچہ اس کے بعد وہ کہتے ہیں کہ حجاز کے بارہ حصے ہیں: مدینہ، خیبر، فدک، مروہ، دار بلی، دار اشجع، دارِ مزینہ، دارِ جہینہ، ھوازن کے لوگ، سلیم کا بڑا حصہ، ھلال کا حصہ اور حرّہ لیلیٰ کا بالائی حصہ اور پھر تیسری حد جو تہامہ سے ملتی ہے وہ بذر، سقیا، رھاط اور عکاظ تھی اور چوتھی حد، شانہ اور ودّان تھی پھر بطن نجد پہلے حصے سے مل جاتا ہے۔ ایک اور مقام پر وہ لکھتے ہیں کہ حجاز، صنعا کی سرحد تک ہے اور غیلاء و تبالہ، شام کی سرحد تک ہے۔ اسے حجاز اس لئے کہتے ہیں کہ یہ تہامہ اور نجد کے درمیان گھرا ہوا ہے چنانچہ مکہ تو تہامی کہلاتا ہے جبکہ مدینہ حجاز یہ ہے۔

پھر وہ کہتے ہیں: عمارہ نے کہا: جو حرّہ بنو سلیم اور حرّہ لیلیٰ تک جاتا ہے وہ سرحد ہے اور آگے سمندر ہے اور جو ذاتِ عِرق سے مغرب میں ہے وہ حجاز ہے جسے تہامہ کاٹتا ہے اور یہ سیاہ پتھر ہیں جو نجد اور تہامہ میں گھرے ہوئے ہیں اور پھر جو ذاتِ عِرق سے سامنے کی طرف ہے وہ نجد ہے جسے عراق کاٹتا ہے۔

اصمعی کہتے ہیں: اسے حجاز کہنے کی وجہ یہ ہے کہ یہ پہاڑوں میں گھرا ہے۔

دمیری کہتے ہیں کہ حجاز کو حجاز کہنے کی وجہ یہ ہے کہ یہ تہامہ و نجد میں گھرا ہوا ہے۔ یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ پانچ حرّوں میں گھرا ہے جو یہ ہیں: حرہ واقم، حرّہ راجل، حرّہ لیلی، حرّہ بنو سلیم، حرّۃ النار اور حرّہ وبرہ۔ انتھی۔

ابو المنذر کہتے ہیں کہ حجاز، طی کے دونوں پہاڑوں کے درمیان عراق کے راستے تک ہے، اسے حجاز کہنے کی وجہ یہ ہے کہ یہ تہامہ اور نجد کے درمیان گھرا ہے۔

کچھ کہتے ہیں کہ سراۃ نامی پہاڑ عرب کا سب سے بڑا ہے جو اسے گھیرے ہوئے ہے اور یہ تہامہ و نجد کے درمیان ایک حد ہے اور یہ اس لئے کہ یہ یمن کے اندر سے سامنے آتا ہے اور شام کے کنارے تک پہنچتا ہے چنانچہ عربی لوگ اسے حجاز کہتے ہیں۔

کچھ لوگوں نے جزیرۃ العرب کو پانچ حصوں میں تقسیم کیا ہے: تہامہ، حجاز، نجد، عروض اور یمن۔ عرّام کہتے ہیں کہ حجاز، معدنِ بصرہ سے جنیہ تک کو کہتے ہیں چنانچہ آدھا مدینہ حجازی کہلاتا ہے اور آدھا تہامی، پھر حجازی شہروں میں سے بطنِ نخل اور نجد ہیں۔

ابن شبہ کہتے ہیں کہ مدینہ حجازی کہلاتا ہے۔ علامہ حرقی کہتے ہیں کہ تبوک اور فلسطین حجاز میں شامل ہیں جبکہ مدینہ میں آگ ظاہر ہونے کے بیان میں بتا دیا گیا ہے کہ امام شافعی فرماتے ہیں کہ مکہ اور مدینہ یمانی شہر پھر یہ حدیث بھی موجود ہے کہ شام، یمن میں شامل ہے اور امام نووی کہتے ہیں کہ مدینہ نہ تو شامی ہے اور نہ ہی یمانی بلکہ حجازی کہلاتا ہے پھر ''العروض'' میں مدینہ کے ناموں کے ذکر میں اسے نجدی لکھا ہے اور ایسے ہوتا رہتا ہے کہ کچھ نام ایک دوسرے پر بول

دیا کرتے ہیں، شاعر لوگ اکثر حجاز کا لفظ استعمال کیا کرتے ہیں چنانچہ اشجع بن عمرو اسلمی کہتے ہیں:

> ''حجاز میں ہر طرف ھوٰی (خواہشات و عشق) کا دور دورہ ہے، یہ مجھے اس وقت بیدار کرتا ہے
> جب آنکھیں بہتی ہیں۔''

ایک اعرابی کہتا ہے:

> ''میرے لئے یہی غم کیا کم ہے کہ میں بغداد میں رہتا ہوں اور میرا دل حجاز کے اطراف میں لگا ہوا۔''

## حِجْر

مدینہ میں رہنے والے عام لوگ حاء پر زبر پڑھتے ہیں لیکن درست زیر دینا ہی ہے چنانچہ علّامہ مُحرام مدینہ کے اردگرد کا ذکر کرتے اور اَرْحَضِیّہ کا نام لیتے ہوئے کہتے ہیں: اَرحضیّہ کے بالمقابل ایک بستی ہے جسے حجر کہتے ہیں، وہاں خاص طور پر بنو سلیم کے کنوئیں اور چشمے موجود ہیں، پھر اس کے مقابل ایک پہاڑ ہے جسے قبّۃ الحجر کہتے ہیں۔ علامہ مجد اپنے گمان میں کہتے ہیں کہ عوام وہ بستی مراد لے رہے ہیں جو فُرع کے نزدیک حِجر کے نام سے مشہور ہے۔

آج کل ا[illegible]میہ کے قریب ایک جگہ ہے جسے حِجریّہ کہتے ہیں، وہاں کنوئیں اور کھیتیاں موجود ہیں، عوام اپنی کلام میں اسی کا ذکر کر رہے ہیں۔ یونہی یاقوت کی بھی یہی مرادِ ہے کیونکہ وہ کہتے ہیں: حِجر زیر سے ہے اور اس پر زبر بھی پڑھتے ہیں، یہ بنو سلیم کے گھروں کی ایک بستی ہے جو قلّہ اور ذی رولان کے قریب ہے۔

پھر حِجر نامی ایک اور بستی بھی ہے جو وادی قرٰی سے ایک دن کے سفر پر ہے، یہ بستی پہاڑوں کے درمیان ہے، ثمود کے گھر یہیں تھے، ان کے گھر بہت سے پہاڑوں میں تھے جنہیں اثالث کہتے تھے اور وہاں ثمود کا کنواں بھی تھا۔

## حُدَیْلَہ

جھینہ کے وزن پر ہے۔ جب بنو حدیلہ کے گھر کہتے ہیں تو یہی مراد ہوتا ہے، یہ بنو نجار سے تھے، وہیں عبد الملک بن مروان کا گھر تھا۔

## حُراض

مقامِ اشعر کی وادیوں میں سے ایک وادی تھی جو حورہ کی شامی جانب تھی، وہاں صرف سیلاب کا پانی ہوتا تھا جسے ثاجِیہ کہتے تھے۔

## حَربی

اس مقام کا نام تھا جو مسجد قبلتین سے مذاذ تک کے درمیان تھی، حضور ﷺ نے اس کا نام تبدل فرما کر ''صلحه'' رکھ دیا جیسے صـــاد کے حروف میں آ رہا ہے۔ یہاں مجد نے یہی کہا ہے لیکن اپنی قاموس میں اس کی مخالفت کرتے ہوئے اسے خاء کے حروف میں لکھا ہے اور پھر بتایا کہ آپ نے اس کا نام صالحه رکھا تھا۔

## حُرُض

اُحد کے قریب ایک وادی تھی۔ راء پر زبر بھی پڑھتے ہیں لیکن پہلی روایت زیادہ صحیح ہے کیونکہ لغت میں اس کا معنٰی اُشنان موجود ہے، یہاں جڑی بوٹیاں بکثرت ہوتی تھیں۔ اسی وجہ سے اسے ذو حرض کہتے ہیں۔

ابن السکیت کہتے ہیں کہ حـــرض یہاں پر قناۃ کی وادیوں میں سے ایک وادی تھی جو مدینہ سے دو میل کے فاصلے پر تھی یعنی وہی جس کا ذکر پہلے گذرا ہے، وہ کہتے ہیں کہ ذو حرض، معدنِ بصرہ سے پانچ میل کے فاصلے پر تھی یہ بنو عبداللہ بن غطفان کی تھی۔

## حَرّۃُ اَشجع

اس کا ذکر حرّۃ النار میں آ رہا ہے۔

## حرّہ حقل

وادیٔ آرہ میں تھی۔

## حرّۃ الحوض

مدینہ اور عقیق کے درمیان تھی۔ اسے حرّۃ حوض زیاد بن ابی سفیان کہتے ہیں۔

## حرّۃ راجل

یہ بنو عبس کے شہروں میں تھا۔

## حرّۃ الرجلی

یہ بنو قین کے گھروں میں مدینہ اور شام کے درمیاں تھا۔ یہ نام رکھنے کی وجہ یہ تھی کہ یہاں پیدل چلنا مشکل ہوتا۔ صحاح کی احادیث میں ہے: حرۃ رجلی ہموار زمین تھی جہاں پتھر بہت تھے جن میں چلنا مشکل تھا۔

قاموس میں ہے کہ حـرۃ رجلی سکریٰ کے وزن پر ہے، اسے سکراء بھی پڑھتے ہیں، یہ ایک سخت زمین تھی جس میں چلنا دشوار تھا یا یہ معنٰی ہے کہ وہاں پتھر بہت ـــ

ابن شبہ نے صدقاتِ علی میں لکھا ہے کہ: ان کی حرۃ الرجلیٰ میں شعبِ زید کی جانب ایک وادی تھی جسے اَحمر کہتے تھے' اس کا آدھا حصہ صدقہ میں شامل تھا اور آدھا آل مناع و بنو عدی کے قبضے میں تھا' حضرت علی نے انہیں بطور عطیہ دیا تھا پھر ان کے ہاں حرۃ الرجلیٰ میں بھی ایک وادی تھی جسے بیضاء کہا جاتا تھا' اس میں زرعی اور بنجر زمین تھی' وہ زمین بھی صدقہ ہی میں شامل تھی۔

پھر کہتے ہیں کہ ان کے پاس حرۃ الرجلیٰ کی اوپر والی جانب فدک کی طرف اراضی تھی جسے قُصَیْبَہ کہتے تھے اور روضۃ الاجداد میں آگے آ رہا ہے کہ وادی قصیبہ' خیبر کی جانب اور وادیٔ عصر کی شرقی جانب تھی۔

## حَرَّۃ رُمَاح

یہ دھناء کے مقام پر تھی۔

## حرّہ زُہْرہ

یہ حرۂ واقم کے پاس تھی۔

## حرّہ بنی سُلَیم

یہ نقیع کی ہموار زمین یعنی چراگاہ میں شرقی جانب تھی' وہاں باغ اور کھلی جگہ تھی' یہ وادی بقیع کے کھلے میدان میں گرتی تھی۔

## حرّۃ شوران

اس کا ذکر حرفِ شین میں آ رہا ہے۔ یہ وادیٔ مہزور کی ابتداء میں تھی۔

## حرّۃ عباد

مدینہ کے قریب پتھریلی زمین تھی۔

## حرّۃ بنی العُضَیْدِیّہ

وادیٔ بطحان کی غربی جانب تھی۔

## حرّۃ قباء

مدینہ کی ایک جانب تھی۔ حدیث میں اس کا ذکر موجود ہے۔

## حرّۃ لیلی

نام مرّہ بن عوف بن سعد تھا اور غطفان سے تعلق تھا۔ شامی حاجی مدینہ کو جاتے وقت یہاں سے گذرتے۔ کچھ

کہتے ہیں کہ یہ مدینہ کی جانب سے وادیٔ قریٰ کی پچھلی جانب تھی، وہاں کھجور کا باغ اور چشمے تھے۔ کچھ کہتے ہیں کہ یہ پتھریلی زمین بنوکلاب کے شہروں میں تھی۔

## حرّۃ مِعْصَم

یہ بالائی پتھریلی جگہ تھی، ذوالجدر یہیں تھی، بطحان کا سیلاب یہیں سے شروع ہوتا۔

## حرّۃ میطان

بنوقریظہ کی شرقی جانب پہاڑ تھا۔

## حرّۃ النّار

نار سے مراد یہی جلانے والی آگ ہے۔ یہ حرہ لیلیٰ کے قریب تھی۔ یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ حرۂ بنوسلیم تھی۔ کچھ کہتے ہیں کہ بنوجذام کے گھروں میں تھی اور عذرا کے قریب تھی۔

قاموس میں ہے کہ یہ خیبر کے قریب تھی۔ نصر کہتے ہیں کہ حرۃ النار، وادیٔ قریٰ اور تیماء کے درمیان تھی جہاں معدنیات تھیں۔

اصمعی نے وادیوں کی حد بندی بتاتے ہوئے **حرہ فدك** کا ذکر کیا ہے اور کہا ہے کہ حرۃ النار، فدک ہی ہے اور فدک ایک بستی تھی جہاں کھجور کے درخت اور ویران زمین تھی جس سے پتہ چلتا ہے کہ یہ فدک میں تھی اور یہ وہی بستی ہے جہاں سے آگ نکلی تھی جسے حضرت خالد بن سنان نے اپنی قوم سے ہٹایا تھا اور حجاز کی آگ کے بیان میں گذر چکا ہے کہ ان کی قوم پر حرۃ النار سے آگ آئی تھی جو خیبر کی طرف سے چلی تھی، وہ دونوں طرف سے چلی آئی تھی۔ ایک روایت میں ہے کہ حرۂ اشجع میں پہاڑ سے آگ نکلے گی۔ ایک اور روایت میں ہے کہ ان لوگوں نے ایمان کی خاطر دعا مانگی تھی کہ حرہ سے آگ نکلے، انہوں نے دعا فرمائی تو آگ آ گئی۔ راوی کہتے ہیں کہ ربذہ کے دونوں طرف اس آگ کی روشنی میں ہم اونٹ چراتے تھے۔ ایک اور روایت میں ہے کہ نار الحدیان حرۃ النار سے نکلی تھی چنانچہ گیارہ راتوں تک اس کی روشنی میں اونٹ چرتے رہے۔

حدیثِ پاک میں ہے کہ حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس ایک آدمی آیا تو آپ نے پوچھا: تمہارا نام کیا ہے؟ اس نے کہا: **جَمْرہ**۔ آپ نے پوچھا: کس کے فرزند ہو؟ اس نے کہا: ابن شہاب ہوں۔ آپ نے پوچھا کن میں سے ہو؟ اس نے کہا کہ ''**حَرقہ**'' سے۔ آپ نے پوچھا: کہاں رہتے ہو؟ اس نے کہا: **حَرّۃ النار** میں۔ آپ نے پوچھا: وہ کس طرح بھڑکتی ہے؟ اس نے کہا: شعلے نکلتے ہیں۔ آپ نے کہا: اپنے قبیلہ کو سنبھالو، کہیں جل نہ جائیں۔ ایک روایت میں ہے کہ: ''وہ جل گئے ہیں'' چنانچہ کہتے ہیں کہ وہ اپنے گھر آیا تو دیکھا کہ آگ نے انہیں گھیر رکھا تھا۔

## حرّۃ واقم

مدینہ کے مشرق میں پتھریلی زمین تھی۔ اس کا نام عمالقہ میں سے ایک شخص کے نام پر رکھا گیا جو وہاں رہتا تھا۔ ابن زبالہ نے واقم کا ذکر کرنے کے بعد لکھا کہ یہ بنو عبد الاشہل کا قلعہ تھا' اسی کے نام پر اس جانب کا نام واقم رکھ دیا گیا۔ اسے حرۂ بنو قریظہ بھی کہتے ہیں کیونکہ وہ لوگ اس کے قبلہ کی طرف رہتے تھے۔ اسے حرۂ زھرہ کہتے تھے۔ اسی حرّہ میں قتل و غارت ہوئی تھی (جو یزید نے کرائی تھی)۔

ایک حدیث گذر چکی ہے کہ ''حرۂ زھرہ میں میری اُمت کے بہترین لوگ قتل ہوں گے۔''

کتاب الحرۃ میں حضرت عبد اللہ بن سلام رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے بارے میں آتا ہے کہ وہ دور معاویہ میں حرۂ زھرہ میں ٹھہرے ہوئے تھے' اس دوران کہا: یہاں کے بارے یہوذا کی کتاب میں ایک ٹھوس واقعہ کا ذکر ہے کہ یہاں جنگ ہوگی' یہاں ایسے لوگ قتل ہوں گے جو قیامت کے دن تلواریں گردنوں پر تانے کھڑے ہوں گے۔ پھر رحمٰن کے پاس آئیں گے' اس کے سامنے کھڑے ہو کر عرض کریں گے کہ اے اللہ! ہم یہاں تیرے نام پر قتل ہوئے تھے۔

ابن زبالہ کی روایت ہے کہ حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے دور میں بارش ہوئی تو آپ نے اپنے ساتھیوں سے فرمایا: کیا اس بارے میں کسی کے پاس کوئی حدیث ہے؟ جو ہمارے لئے باعث برکت ہو اور ہمیں سیراب کر دے اور اگر ادھر سے کوئی سوار آئے تو ہم اس کے ہاتھ چومیں؟ وہ وہاں سے نکلے اور حرۂ واقم پہنچے' وہاں پانی بہہ رہا تھا' انہوں نے اس سے پانی پیا اور وضو کیا۔ اس پر حضرت کعب نے کہا: اے امیر المؤمنین! بخدا ایک دن اس وادی میں لوگوں کا خون بہے گا جیسے یہ پانی بہہ رہا ہے۔ اس پر حضرت عمر نے کہا: اب ان باتوں کو چھوڑیئے' اتنے میں ابن زبیر ان کے قریب ہوئے اور پوچھا اے ابو اسحاق! ایسا کب ہوگا؟ انہوں نے کہا: اے عُبیس! یہ واقعہ چند قدموں یا ہاتھوں پر ہے۔

اس موقع کے لئے عبد الرحمٰن نے کہا تھا (ان کے والد سعید ان دس میں سے تھے جنہیں جنت کی بشارت دی گئی) یہ عبد الرحمٰن واقعۂ حرّہ میں موجود تھے (چنانچہ کہتے ہیں):

''اگر تم حرۂ واقم میں ہم سے لڑو گے تو ہم اسلام کے نام پر پہلے قتل ہوں گے۔''

## حرّۂ بنی بَیاضہ

رہا غربی حرّہ تو اسے حرّہ بنی بیاضہ کہتے تھے۔ یہیں حضرت ماعز رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو سنگسار کیا گیا تھا۔

## حرّۃ الوَبَرَہ

کچھ نے باء پر جزم پڑھنا جائز بتایا ہے۔ یہ جگہ مدینہ سے تین میل کے فاصلے پر تھی۔ حدیثِ اُھبان میں اس کا ذکر موجود ہے۔ وبرہ کے بیان میں حدیثِ اھبان کا ذکر آ رہا ہے' مجد نے وہاں بتایا ہے کہ مدینہ سے دور تھی۔ یہاں قابلِ اعتماد بات وہ ہے جسے عقیق میں عروہ کے محل میں ذکر کیا گیا ہے کہ اس مقام کو ''خیف حرۃ الوبرہ'' کہتے تھے اور علامہ

ھجری کہتے ہیں کہ عروہ کی زرعی زمین اور ان کا محل حرۃ الوبرہ میں تھا اور حاجر کے بیان میں گذر چکا ہے کہ یہ نقا کے غرب میں حرۃ الوبر کی انتہاء میں تھی تو یہ وادیٔ عقیق کی بالائی جانب ہوئی، اسی لئے حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی حدیث مسلم میں ہے، فرماتی ہیں: رسول اللہ ﷺ بدر کی طرف نکلے، جب حرۃ الوبرہ پہنچے تو ایک آدمی ملا جس کی بہادری کا چرچا تھا، اسے دیکھ کر رسول اللہ ﷺ کے صحابہ خوش ہوئے۔ آپ نے دیکھا تو اس نے عرض کی، یا رسول اللہ! میں آپ کی فرمانبرداری کی خاطر حاضر ہوا ہوں اور میں چاہتا ہوں کہ آپ کے نام پر شہید ہو جاؤں۔ آپ نے فرمایا: تم اللہ اور اس کے رسول پر ایمان رکھتے ہو؟ اس نے عرض کی، نہیں۔ آپ نے فرمایا: چلے جاؤ کیونکہ مجھے ایک مشرک کی امداد کی ضرورت نہیں۔

حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا فرماتی ہیں کہ آپ وہاں سے چلے۔ جب شجرہ یعنی ذوالحلیفہ پہنچے تو ایک اور آدمی ملا، اس نے بھی وہی کچھ کہا جو پہلے نے کہا تھا۔ اس پر نبی کریم ﷺ نے وہی کچھ فرمایا جو پہلے سے فرمایا تھا، اس نے بھی کہا، نہیں۔ اس پر فرمایا: چلے جاؤ کیونکہ مجھے مشرک کے تعاون کی ضرورت نہیں۔ پھر آپ واپس ہوئے تو اسے بیداء میں دیکھا اور وہی کچھ فرمایا جو پہلے فرما چکے تھے، اس نے عرض کی، ہاں ایمان لاتا ہوں۔ اس پر آپ نے فرمایا کہ ہمارے ساتھ آ جاؤ۔

## حَزُرَہ

اشعر کی وادیوں میں سے ایک وادی تھی جو قفارہ میں گرتی تھی، وہاں بنو عبداللہ بن حصین اسلمی رہتے تھے، وہیں ملیحہ تھی جس کی نچلی جانب چشمہ تھا جسے سویقہ کہتے تھے۔

## حَزُمُ بَنِی عَوال

یہ ''طرف'' کے قریب تھی، یہاں ایک کنواں بئرِ اَلیَّہ تھا۔

## حزن

مدینہ اور خیبر کے درمیان ایک راستے کا نام تھا۔ حضور ﷺ اس راستے میں چلنے سے رُک گئے تھے اور مرحب میں چلے تھے۔ بنو یربوع کا حزن عرب کی بہترین چراگاہ تھی، اس میں باغ اور میدان تھے۔

## حَسُنٰی

ینبع کے قریب ایک پہاڑ تھا اور حسنٰی نام ہی کا ایک صحراء تھا جو عذیبہ اور جار کے درمیان تھا۔ میں بتاتا ہوں کہ حسنٰی، حضور ﷺ کے صدقات میں شامل تھی لیکن مراغی نے اسے حُسُنٰی پڑھا ہے۔

## حُسَیْکَه

یہ حَسْکَۃٌ کا اسمِ تصغیر ہے۔ ذباب کی جانب ایک جگہ تھی۔ وہاں یہودیوں کے کچھ لوگ رہتے تھے' ابوالفتح اسکندری کہتے ہیں کہ یہ مساجدِ فتح اور ذباب کے درمیان ایک جگہ تھی۔ اس کا ذکر کعب بن مالک کے شعروں میں ملتا ہے۔ ابن شبہ بتاتے ہیں' محمد بن یحییٰ نے کہا کہ میں نے عبدالعزیز بن عمران سے پوچھا کہ حسیکہ کہاں ہے؟ انہوں نے کہا: یہ ابن ماقیہ کی زمین کی طرف ہے' ابن ابوعمرو رابض کے محل کی طرف' پھر ابن شمعل کے محل کی جانب سارے جرف کے قریب واقع ہے۔

## حَشَا

لغت میں ان انتڑیوں کو کہتے ہیں جن کے گرد پسلیاں ہوتی ہیں۔ یہ آرہ کی دائیں جانب ایک جگہ تھی اور ابوالفتح سکندری کہتے ہیں کہ یہ حجاز میں ایک وادی تھی پھر ابواء میں ایک پہاڑ بھی ہے۔

## حِشان

لفظِ حَشّ کی جمع ہے' باغ کو کہتے ہیں۔ یہ شہداء اُحد کی طرف جانے والے راستے کی دائیں طرف یہودیوں کا ایک قلعہ تھا اور اسی میں سے حَشّاشین (جمع) بنو قینقاع کے گھروں میں جگہ تھی۔

## حَشّ طلحه

یہ ابن ابوطلحہ انصاری تھے۔ اس حَشّ کا ذکر مسجد نبوی کی شامی جانب' مسجد کو گھیرنے والے گھروں کے بیان میں گذر چکا ہے اور اس بلاط میں بھی آیا ہے جو مسجد کی شامی جانب تھا جس سے پتہ چلتا ہے کہ یہ ان گھروں کی جگہ تھا جو مسجد کی شامی جانب تھے جو مشرق سے ملتا تھا (یعنی شمال مشرق میں) یہ جگہ حضرت عبدالرحمٰن کی تھی۔ اس کا ذکر چوتھے باب کی تینتیسویں فصل کے شروع میں آ چکا ہے۔

## حصن (خَلّ)

یہ قصرِ خل کہلاتا تھا۔

## حِضُوَه

مدینہ کے قریب ایک جگہ تھی۔ کہتے ہیں کہ یہ وہاں سے تین کی مسافت پر تھی۔ پہلے اس کا نام "عِفُوہ" تھا پھر رسول اللہ ﷺ نے اس کا نام حِضوہ رکھا۔

حدیث پاک میں ہے کہ اہل حضوہ نے حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خدمت میں شکایت کی کہ ان کے ہاں وباء آ چکی ہے۔ آپ نے فرمایا تھا: کاش تم اسے چھوڑ دو۔ انہوں نے کہا کہ ہم آباء واجداد سے یہاں رہتے ہیں اور یہ

ہمارا وطن ہے۔ آپ نے حارث بن کلدہ سے فرمایا کہ اس بارے میں کوئی روایت ہے تو بتاؤ۔ انہوں نے کہا اس جگہ درخت اور مچھر رہتے ہیں، یہ وباء کا گھر ہے، ان لوگوں کو یہاں سے نکل کر میٹھے پانی والی زمین مُرتَبع النجم میں چلا جانا چاہئے، وہاں یہ لوگ پیاز اور گندنا کھائیں، گھی پئیں، خوشبو لگائیں، ننگے پاؤں نہ چلیں اور دن کو نہ سوئیں۔ اگر انہوں نے اس پر عمل کر لیا تو مجھے اُمید ہے کہ یہ تندرست ہو جائیں گے چنانچہ حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے انہیں اس پر عمل کرنے کا حکم دیا۔

## حُضَیر

امیر کے وزن پر ہے۔ یہ کھلا میدان تھا جس میں کنوئیں اور زرعی زمین تھی، یہاں وادیٔ نقیع ختم ہوتی اور عقیق شروع ہوتی تھی۔

## حَفُیاء

مدینہ منورہ کے قریب ایک جگہ تھی، یہاں سے کمزور گھوڑے ثنیۃ الوداع کی طرف لیجائے جاتے تھے۔ کچھ لوگوں نے اسے حُفْی! پڑھا ہے اور یہ غلطی ہے۔ کچھ نے اسے حُیَفاء پڑھا ہے۔ امام بخاری کے مطابق سفیان نے کہا کہ حفیاء سے ثنیہ تک کا فاصلہ پانچ یا چھ میل تھا۔ ابن عقبہ نے کہا کہ چھ یا سات میل تھا۔ علامہ مجد نے کہا غالب خیال یہ ہے کہ باڑے کے قریب تھی۔

میں کہتا ہوں کہ یہ اونٹوں کے بیٹھنے کی جگہ سے شامی جانب چشمے کی تنگ جگہ پر تھا کیونکہ علامہ ھجری نے زغابہ میں سیلابی پانی جمع ہونے کی جگہ کا ذکر کر کے کہا ہے: پھر سیلاب مدینہ کی نچلی جانب غابہ میں عین الصور بن کے مقام پر جاتا، وہاں حفیاء والی جگہ تھی جو حضرت حسن بن زید بن علی کا صدقہ تھی۔

زبیر کی عبارت یہ ہے: سیلاب ابو زیاد کے چشمے کی طرف جاتا اور غابہ میں صورین پر پہنچتا چنانچہ جس حفیاء کا ذکر ھجری نے کیا وہ غابہ کے نزدیک حیفاء میں تھا چنانچہ اسی وجہ سے حدیث میں یوں آیا کہ غابہ سے فلاں مقام تک۔

## حُفَیر

امیر کے وزن پر ہے، مکہ اور مدینہ کے درمیان جگہ تھی اور ''حفر'' اس کے پہلو میں ایک اور جگہ تھی۔ یاقوت کہتے ہیں کہ حَفَر، وادیٔ مہزول کے کنوؤں میں سے تھا۔ انتہٰی لیکن آج کل آلِ زبان میں سے اشراف کی جگہ کو کہتے ہیں، وہاں کنوئیں اور زرعی زمین موجود ہے، یہ وہ حفر نہیں جس کا ذکر جزیرۃ العرب کی حدود میں آتا ہے کیونکہ اسے حَفَرُ کہتے تھے اور یہ بصرہ کے قریب تھا اور حُفَیر اسمِ تصغیر ہے، یہ ذوالحلیفہ اور ملل کے درمیان ٹھہرنے کی ایک جگہ تھی جہاں سے حاجی گذرتے تھے۔

میں کہتا ہوں کہ یہی وہ جگہ تھی جسے حفیرہ کہتے تھے اور جس کا بیان حدودِ حرم میں گزرا۔

## حَقْل

آرہ اس کی طرف منسوب کر کے اسے آرۃ حقل کہتے تھے۔

## حَلاء ۃ

اس کا واحد حلاۃ ہے۔ علامہ عرام کہتے ہیں: اس کے بالمقابل ایک پہاڑ ہے جسے سن کہتے ہیں اور پھر کچھ بڑے اُٹھے ہوئے پہاڑ ہیں جنہیں حلاء ۃ کہتے ہیں جہاں کوئی چیز نہیں اُگتی' نہ ہی ان سے کوئی فائدہ ہوتا ہے ہاں اسے کاٹ کر چکیاں بنائی جاتی ہیں اور مدینہ میں عمارت بنائی جاتی ہیں۔

## حِلائیُ صعب

یہ دو وادیاں یا پہاڑ ہیں جو مدینہ سے تقریباً سات میل کے فاصلے پر ہیں اور پہلے آ چکا ہے کہ بطحان کا سیلاب حلائی صعب سے آتا تھا اور ظاہر یہ ہے کہ یہ پہلے ذکر کردہ حلاء ۃ سے ہیں کیونکہ ان کی جانب اور مسافت ایک جیسی ہے۔

## حَلائق

یہ حلیقہ کی جمع لگتی ہے۔ ابن اسحاق کہتے ہیں: پھر رسول اللہ ﷺ بطحاءِ ابن ازھر سے چلے اور حلائق کی بائیں جانب اُترے۔ کچھ حضرات نے اسے خلائق لکھا ہے۔ میرے نزدیک بھی یہی صحیح ہے کیونکہ آگے اس کا ذکر خلائق کے لفظ میں کر رہا ہوں۔

## حِلّیت

سِکّین کے وزن پر ہے۔ چراگاہِ فید میں اس کا ذکر ہو چکا۔

## حُلَیف

لفظ حلف کا اسمِ تصغیر ہے' یہ نجد میں ایک جگہ تھی۔ بنو کلاب کا تصدیق کرنے والا مدینہ سے نکلے گا تو یہیں ٹھہرے گا۔

## حُلَیفَہ

جُھَینہ کے وزن پر ہے اور حَلَفَۃ کی تصغیر ہے جو حلفاء کا واحد ہے۔ یہ ایک مشہور بوٹی ہوتی ہے' علامہ مجد کہتے ہیں: یہ ایک بستی تھی؛ اس کے اور مدینہ کے درمیان چھ میل کا فاصلہ تھا' یہی ذوالحلیفہ ہے جو اہلِ مدینہ کا میقات ہے' یہ بنو جشم کا [illegible] تھا' [illegible] کے اور بنو خفاجہ کے درمیان عقیل رہتے تھے۔ انتہی۔

باب کی ابتداء میں حدودِ عقیق کے بیان میں علامہ عیاض کی روایت گذری ہے کہ وادیٔ ذوالحلیفہ عقیق میں سے تھی اور عقیق مزینہ کے شہروں میں سے تھا اور یہ مشہور ہے لیکن یہاں جو انہوں نے ذکر کیا ہے کہ ذوالحلیفہ کی نسبت بنو جشم کی طرف ہے تو یہ بات مشہور نہیں، شائد انہیں اس حلیفہ کا شبہ پڑا ہے جو تہامہ میں سے تھا کیونکہ جو انہوں نے مسافت بتائی ہے وہ اسی کے مطابق ہے جسے غزالی کی طرح نووی نے صحیح قرار دیا ہے کہ یہ چھ میل کے فاصلے پر ہے، امام شافعی کا المعرفة میں یہ قول اس کی دلیل بنتا ہے: حضرت سعید بن زید اور حضرت ابوھریرہ شجرہ میں رہتے تھے جو چھ میل سے کم فاصلے پر تھا، وہ جمعہ پڑھنے آیا کرتے اور شجرہ کو چھوڑ آتے، شجرہ سے مراد ذوالحلیفہ ہے کیونکہ یہ بتایا جا چکا ہے کہ مسجد شجرہ وہیں تھی اور اسی مقام پر مسجد معرس بھی تھی۔ چنانچہ سنن ابوداؤد میں ہے کہ معرس، مدینہ سے چھ میل کے فاصلے پر تھی جبکہ پہلے بتایا جا چکا ہے کہ معرس بیداء کے قریب تھی چنانچہ وہ حلیفہ کے آخر میں تھی لہٰذا یہ اس کے خلاف نہیں جو شافعی نے کہا ہے، یہی معنٰی اس سے بھی لیا جائے گا جو احمد، طبرانی اور بزاز نے کہا ہے، ابو اروی کہتے ہیں: میں نمازِ عصر مدینہ میں رسول اللہ ﷺ کے ہاں پڑھا کرتا اور پھر ذوالحلیفہ آ جاتا، ابھی سورج غروب نہ ہوا کرتا، ذوالحلیفہ دو فرسخ کے فاصلہ پر تھا۔

ابنِ صلاح کی طرح علامہ رافعی کہتے ہیں کہ ذوالحلیفہ مدینہ سے ایک میل کے فاصلہ پر تھا حالانکہ اسے ردّ کیا جا چکا ہے کیونکہ مشاہدہ اس کا انکار کرتا ہے، شائد انہوں نے یہ مسافت عقیق کے محلات سے لی ہو گی کیونکہ وہ عمارتیں مدینہ سے ملحق تھیں۔ علامہ اسنوی لکھتے ہیں کہ درست بات، مشہور اور مشاہدہ میں آنے والی یہ ہے کہ وہ ایک فرسخ کے فاصلے پر تھا جو تین میل یا کچھ زائد بنتی ہے۔ انتہٰی۔

ابن حزم نے ذکر کیا ہے کہ یہ مدینہ سے چار میل کے فاصلے پر تھا اور خود میں نے اسے مسجد نبوی کے مشہور دروازے باب السلام سے ذوالحلیفہ میں مسجد الشجرہ تک پیائش کی ہے تو یہ دستی ذراع سے انیس ہزار سات سو ساڑھے بتیس ہاتھ تھی، یہ پیائش سو ہاتھ کم پانچ میل اور دو تہائی میل بنتی ہے، یہ مسجد اس مقام کی ابتداء میں نہ تھی کیونکہ ابو عبد اللہ اسدی (جو قدیم شخص تھے) کہتے ہیں کہ: مدینہ سے ذوالحلیفہ کا سفر (اسے شجرہ کہتے ہیں اور یہیں سے اہلِ مدینہ احرام باندھتے ہیں) ساڑھے پانچ میل تھا اور اس میل پر لکھا ہوا ہے جو اس کے پیچھے دو نشانوں کے قریب تھا: چھ میل، اور اسی میل سے حضور ﷺ نے تلبیہ پڑھنا شروع فرمایا تھا چنانچہ وہ میل مسجد کے قریب تھا کیونکہ وہ حضور ﷺ کے تلبیہ پڑھنے کا مقام تھا اور ذوالحلیفہ سے نصف میل پہلے تھا۔

یہ جو انہوں نے کہا ہے ''دو نشانوں کے قریب'' تو اس میں احتمال یہ ہے کہ انہوں نے ذوالحلیفہ میں داخلے کی علامتیں مراد لی ہوں گی کیونکہ وہ علامات کی تعداد یوں بتاتے ہیں: ''ذوالحلیفہ میں داخلے کی دو علامات تھیں۔'' اس سے حلیفہ کی انتہاء کا پتہ چلتا ہے لیکن جیسے انہوں نے بیداء میں ذکر کیا ہے، ذوالحلیفہ سے نکلنے کی جگہ پر دو اور علامات تھیں اور بیداء حلیفہ کی علامتوں کی بالائی جانب تھا اور یہ اس وقت جب تم وادی پر چڑھو اور احتمال یہ ہے کہ انہوں نے ''قریب

من العلمین ‘‘ سے مراد حلیفہ سے نکلنے کی دو علامتیں مراد لی ہیں جس سے پتہ چلتا ہے کہ یہ مسجد حلیفہ کے آخر کے قریب تھی اور یہ ظاہر ہے کیونکہ بیداء وہی جگہ ہے جو ذوالحلیفہ سے اوپر والی جانب میں تھی اور یہ اس مسجد سے اتنی دور تھی جتنا تیر پھینکنے کی مسافت ہوتی ہے لیکن آج کل یہ علامات موجود نہیں ہیں۔

علامہ عز بن جماعہ کہتے ہیں کہ ذوالحلیفہ میں وہ کنواں تھا جسے عام لوگ بئرِ علی کہتے ہیں اور اسے حضرت علی بن ابو طالب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی طرف منسوب کرتے ہیں کیونکہ ان کا خیال ہے کہ آپ نے وہاں جن کو قتل کیا تھا حالانکہ یہ بات غلط ہے اور اہلِ علم اس بات کو نہیں مانتے اور وہاں پتھر وغیرہ نہیں پھینکا جاتا جیسے جاہل کیا کرتے ہیں۔

پھر مسجد ذوالحلیفہ میں بیان ہو چکا کہ ان لوگوں نے کنوؤں میں اُترنے کے لئے سیڑھیاں بنا رکھی تھیں اور پھر چوتھی فصل کے آخر میں بتایا جا چکا ہے کہ ذوالحلیفہ کی اُوپر والی جانب عقیق سے اُوپر ایک جگہ تھی جسے حلیفہ عُلیا کہتے تھے تو معلوم ہوا کہ احرام باندھنے والے' حلیفہ سُفلیٰ سے احرام باندھتے تھے حالانکہ ان کے علاوہ یہ بات کسی نے نہیں لکھی' شائد یہ مقام خلیقہ تھا جیسے آگے آ رہا ہے۔

رہا ذوالحلیفہ تو یہ بھی وادیٔ عقیق میں شمار ہوتا تھا' اسی لئے حضرت امام ابو حنیفہ نے اپنی جامع المسانید میں حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی ہے' فرماتے ہیں: ایک آدمی کھڑا ہوا اور عرض کی یا رسول اللہ! تلبیہ کس مقام سے شروع ہوتا ہے؟ آپ نے فرمایا: اھلِ مدینہ عقیق سے شروع کریں' اہلِ شام جحفہ سے اور اہلِ نجد قرن سے چنانچہ آپ نے ذوالحلیفہ کو عقیق کا نام دیا۔

پھر ذوالحلیفہ نامی جگہ حادہ اور ذات عرق کے درمیان بھی ہے' اسی بارے میں حضرت رافع بن خدیج رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی حدیث ہے' فرمایا: ہم تہامہ کے مقام ذوالحلیفہ میں حضور ﷺ کے ہمراہ تھے تو ہماری بکریاں چوری ہو گئیں۔

پھر مساجدِ تبوک میں گذر چکا ہے کہ ذوالحلیفہ مدینہ اور تبوک کے درمیان بھی ایک جگہ تھی۔

## حماتان

بلیدہ کے قریب ایک جگہ تھی جس میں حرم کی اس کی طرف نسبت ہے (حرم الحماتین) اور اس کی دلیل بلدہ اور بلیدہ کے لفظوں کے بیان میں گذر چکی۔

## حُمَام

ذات الحمام مکہ اور مدینہ کے درمیان ایک جگہ ہے اور عمیس الحمام' فرش اور ملل کے درمیان ایک جگہ تھی جیسے حرف عین میں اس کا ذکر آ رہا ہے۔

## ذات الحُمَّاط

یہ لفظ عقیق کی وادیوں اور مسجدوں کے ذکر میں آ چکا ہے۔ مرابد کے ذکر میں اس کی دلیل موجود ہے۔ حاء پر پیش

اور میم پر شد ہے، یہ ایک باغ تھا جس کا ذکر بنو بیاضہ کے گھروں میں آ چکا۔

## حُمت

ورقان نامی پہاڑ کا نام ہے جیسے آگے حدیث میں آ رہا ہے۔ علامہ عرام کہتے ہیں کہ قدس ابیض اور قدسِ اسود کے درمیان ایک گھاٹی تھی جسے حُمت کہتے تھے۔ لفظ ریم میں اس کا ذکر آ رہا ہے۔ حمت اور صوری، ابن زبیر کی رہائش گاہ کے شروع میں تھے۔

## حمراء الاسد

اسد بمعنی شیر ہے۔ یہ مدینہ سے آٹھ میل کے فاصلے پر ایک جگہ تھی۔ حضور ﷺ جب اُحد سے واپسی پر مشرکین کو تلاش کر رہے تھے تو تین دن تک یہاں قیام فرمایا۔ مسلمان روزانہ یہاں پانچ سو مرتبہ آگ جلاتے تا کہ دور سے دیکھا جا سکے۔ عقیق کے بیان میں گذر چکا کہ حمراء الاسد، ثنیۃ الشرید کے اوپر تھی۔

علامہ ھجری کہتے ہیں کہ یہاں بہت سے قریشیوں کے گھر تھے۔ یہ مکان عقیق سے یوں دکھائی دیتے تھے جیسے مکہ کا راستہ یعنی اس کی بائیں طرف۔ ھجری کہتے ہیں کہ حمراء الایسر کے کنارے پر منشد اور دائیں طرف مشرق میں خاخ کا مقام تھا۔

میں کہتا ہوں کہ ذوالحلیفہ سے بائیں طرف اوپر ایک پہاڑ تھا جو حمراءِ نملہ کے نام سے مشہور تھا، ظاہر یہ ہے کہ یہ منشد تھا، حمراء نہ تھا نیز حمراء کئی اور جگہوں کے نام بھی تھے جن میں سے ایک صفراء سے ذرا پہلے ایک جگہ تھی جہاں کھجور کے بہت سے درخت تھے۔

## حُمَیراء

حمراء کا اسمِ تصغیر ہے۔ یہ مدینہ کے قریب کھجوروں والی ایک جگہ تھی اور شاید یہ وہی حمراء تھی جو صفراء کے قریب تھی لیکن اسے تصغیر بنا کر پڑھا ہے۔

## حِمیٰ

چھٹی اور ساتویں فصل میں اس کی تفصیل گذر چکی ہے۔

## حمیّہ

صاحب ”المسالک والممالک“ نے اسے مدینہ کی ذیلی آبادی اور صوبہ شمار کیا ہے۔

## حَنَان

اس کا لغوی معنیٰ رحمت ہوتا ہے، یہ بڑی چوٹی کا نام ہے جو پہاڑ جیسی ہوتی ہے۔ علامہ نصر کہتے ہیں کہ حَنَّان

بدر کے قریب ایک ریتلی جگہ تھی، وہ پہاڑ کی طرح ریت کا بڑا ٹیلہ تھی۔

ابن اسحاق حضور ﷺ کے ذفران کی طرف چلنے کے بعد بدر کو جانے کا ذکر کرتے ہوئے لکھتے ہیں کہ "پھر آپ وہاں سے چلے تو ان گھاٹیوں تک پہنچے جنہیں اصافر کہتے تھے پھر ایک شہر کی طرف اُترے جسے دبہ کہتے تھے اور حنان کو دائیں طرف چھوڑا۔ وہ ریت کا عظیم ٹیلا تھا۔ انتہٰی۔

میں کہتا ہوں کہ "ابرق الحنان" اسی کو کہتے تھے۔ یہ بنوفزارہ کا رہائشی مقام تھا، کثیر لکھتے ہیں:

"ابرق الحنان میں یہ گھر کس کے ہیں؟"

تاہم یاقوت لکھتے ہیں کہ یہ وہ حنان نہیں جس کا ذکر پہلے آ چکا۔

## حُنْذ

یہ اُحیحہ بن جلاح کی بستی تھی اور مدینہ کے ماتحت تھی جس میں کھجوروں کے درخت تھے۔

## حَوُرتان

یہ یمنی اور شامی دو وادیاں تھیں، آج کل انہیں حَورُہ اور حُویَرہ کہا جاتا ہے، یہ اشعر کی وادیاں تھیں۔ علامہ ھجری لکھتے ہیں کہ یہ دونوں وادیاں بنوکلب اور بنوذھل کی تھیں جن کا تعلق عوف اور پھر جہینہ سے تھا۔ چنانچہ وہ لکھتے ہیں کہ حورہ یمانیہ میں ایک وادی تھی جسے ذوالھدی کہتے تھے کیونکہ شداد بن امیہ ذھلی حضور ﷺ کے پاس شہد نچوڑ لایا، آپ نے پوچھا، کہاں سے نچوڑ لائے ہو؟ تو اس نے عرض کی: وادیٔ ذوالضلالہ سے، آپ نے فرمایا: یوں نہ کہو، یہ تو ذوالھدی ہے، انتہٰی۔ آگے خضرہ کے لفظ میں ابوداؤد سے اس کی دلیل آ رہی ہے۔

حورۂ یمانیہ مشہور تھی جبکہ وادی مشہور نہ تھی، مدینہ میں فغرہ سے لائی جانے والی گندم اور شہد اسی مقام سے لائے جاتے تھے، وہیں ایک جگہ تھی جسے مخاضہ کہتے تھے، اسی مقام سے پھلکوی لائی جاتی تھی جسے ذوالشب کہتے تھے۔

حورة الشامیہ بنودینار کی تھی جو کلب بن کبیر جہنی کے غلام تھے، یہ عبدالملک بن مروانی کا طبیب تھا، اسی کی اولاد سے عرارہ درزی تھا جو مدینہ میں رہتا تھا۔ عبدالملک نے حورہ شامیہ میں گھر بنا رکھے تھے جسے ذوالحماط کہتے تھے۔

## حوضی

تبوک کی مسجدوں میں اس کا ذکر آیا ہے۔

## حوض عمرو

یہ مدینہ میں تھا جو عمرو بن زبیر بن عوام سے منسوب تھا۔

## حوض مروان

اس کا ذکر بئرِ مغیرہ کے ساتھ گذر چکا جو ابو ہاشم مغیرہ بن ابو العاص کے محل کے ساتھ عقیق میں تھا۔

## حوض ابن ھاشم

یہ حرۂ غربیہ میں تھا‘ اس کا ذکر بئر اھاب اور بئرِ فاطمہ کے بیان میں آ چکا ہے۔

## حیفاء

حفیاء بھی اسی کو کہتے ہیں۔

# حرف الخاء

## خاخ

اسے روضۃ خاخ کہتے ہیں۔ علامہ ھجری کہتے ہیں کہ داہنی طرف والے حمراء الاسد کے کونے میں خاخ ہے‘ یہ ایک شہر تھا جہاں محمد بن جعفر بن محمد اور علی بن موسیٰ رضا وغیرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم کے گھر تھے پھر حضرت محمد بن جعفر اور علی بن موسےٰ کے کنوئیں تھے اور ان دونوں کی زرعی زمین تھی جسے حضر کہتے تھے۔ خاخ کا ذکر عقیق کی وادیوں میں آ چکا ہے‘ اسی لئے ابن الفقیہ نے انہیں ان کی حدود میں ذکر کیا ہے اور کہا ہے کہ یہ شوظا اور ناصفہ کے درمیان میں تھیں۔

واقدی لکھتے ہیں کہ روضۂ خاخ ذوالحلیفہ کے قریب تھا یعنی مدینہ سے بارہ میل کے فاصلہ پر چنانچہ حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی روایت شدہ حدیث میں ہے: رسول اللہ ﷺ نے مجھے‘ حضرت زبیر اور حضرت مقداد رضی اللہ تعالیٰ عنہم کو بھیجا اور فرمایا چلتے جاؤ اور روضہ خاخ پر پہنچو‘ وہاں ایک خاتون ہوں گی جس کے پاس ایک خط ہوگا۔ الحدیث۔

کچھ حضرات نے اسے حاطب بن عبد الرحمٰن سے روایت کیا ہے اور اس میں بتایا ہے کہ یہ مکان مدینہ سے تقریباً بارہ میل کے فاصلے پر تھا اور خاخ عبد اللہ بن ابی احمد کے خلیفہ کے پاس ہوگا‘ ابن اسحاق کی روایت میں ہے کہ اسے ابن ابی احمد کے کنوئیں کے قریب پا لینا۔ شاعروں نے خاخ کا ذکر اپنے اشعار میں بہت کیا ہے چنانچہ احوص کہتے ہیں:

> ’’خاخ میں تمہاری گذری راتیں پھر نہ آئیں گی جیسے تم جانتے ہی ہو اور نہ ذی سلم کے دن آئیں گے۔‘‘

یہ شعر معبد نے گنگنائے اور یہ مشہور ہو گئے‘ اس نے حضرت سکینہ بنت حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے لئے گائے تھے‘ کچھ کہتے ہیں کہ عائشہ بنت سعد بن ابو وقاص کے لئے پڑھے تھے تو انہوں نے کہا: خاخ کے بارے میں بہت سے

شعروں نے شعر کہے ہیں، میں بھی اسے دیکھنا چاہوں گی چنانچہ اپنے غلام فند کو بلا لیا' اس نے انہیں خچر پر بٹھا لیا' انہوں نے اسے ریشم کے کپڑے پہنا دیئے اور کہا: بخدا میں اس وقت ارادہ نہ کروں گی جب تک اسے نہ لایا جائے جو اس کی ہجو کرے۔ انہوں نے شاعر کو یاد کرنا شروع کیا' اسی دوران فند نے کہا کہ بخدا میں اس کی ہجو کروں گا' انہوں نے کہا پھر کرو چنانچہ اس نے کہا خاخ خاخ خاخ اخ' پھر اس پر تھوک دیا چنانچہ وہ کہنے لگیں' بخدا تم نے اس کی خوب ہجو کی ہے لہٰذا یہ خچر بھی تمہارا اور لباس بھی تمہارا ہو گیا۔

## خاص

خیبر میں ایک وادی تھی۔

## خُبأ

مدینہ میں قباء کی جانب ایک وادی تھی یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ ٹیلے کی طرف تھی۔ اسی نام کی ایک اور جگہ نجد میں بھی تھی۔

## خَبَار

سَحَاب (بادل) کے وزن پر ہے۔ اس کا ذکر مساجدِ مدینہ میں مسجد فیفاء الخبار میں گذر چکا' اسے فیف الخبار بھی کہا جاتا تھا۔

محاورہ ہے من تجنّب الخبار امن من العثار۔ فیفاء یا فیفاء الخبار مدینہ میں عقیق کے ارد گرد ایک جگہ کو کہتے ہیں۔

ابن شہاب کہتے ہیں: رسول اللہ ﷺ کے پاس کچھ لوگ آئے جن کا عرینہ سے تعلق تھا' آپ نے انہیں بٹھایا' انہوں نے کہا کہ ہمیں مدینہ سے جانے دیں' آپ نے چراگاہ کی پچھلی طرف کتف الخبار کی طرف نکال دیا۔

ابن اسحاق کہتے ہیں کہ جمادی الاولیٰ میں رسول اللہ ﷺ نے قریش سے غزوہ کرنے کو بنو دینار کے ایک راستہ پر سفر کیا' پھر فیفاء الخبار پر چلے۔

حارثی کہتے ہیں کہ ابن الفرات کے مطابق یہ لفظ خَبّار ہے لیکن مشہور اور درست پہلا ہے۔

## خُبان

یہ عثمان کے وزن پر ہے' معدن نقرہ (چاندی کی کان) اور فدک کے درمیان ایک پہاڑ ہے۔

## خبراء العِذق

مقامِ صمان کی جانب ایک میدان تھا۔ قاموس میں ہے کہ صمان کی جانب ایک جگہ تھی جہاں پانی اور بہت سے

بیری کے درخت تھے۔

## خبراء صائف

یہ مکہ اور مدینہ کے درمیان ایک جگہ تھی۔

## خبزہ

خبز بمعنی روٹی' اس کا واحد ہے یہ ینبع کے زیر عمل ایک قلعہ تھا۔

## خَرّار

مدینہ میں ایک وادی کا نام تھا۔ کچھ کہتے ہیں کہ ایک کنواں تھا' کچھ کے نزدیک خیبر میں ایک جگہ کا نام تھا' یہ بھی کہتے ہیں کہ حجاز میں ایک جگہ کا نام تھا' کچھ جحفہ میں بتاتے ہیں پھر مثعر کی شامی جانب ایک کنوئیں کو بھی خرار کہتے تھے اور سفرِ ہجرت میں خرار سے مراد بظاہر جحفہ تھا۔

ابن اسحاق کہتے ہیں کہ ۱ھ یا ۲ھ کو رسول اللہ ﷺ نے حضرت سعد بن ابو وقاص کو آٹھ مہاجر افراد کے ہمراہ بھیجا' وہ چلے اور حجاز میں خرار کے مقام پر پہنچے' وہاں سے واپس آ گئے' جنگ نہ ہو سکی۔

## خُربیٰ

حُبلیٰ کے وزن پر ہے' یہ مسجد قبلتین سے مذاذ تک کے درمیان بنوسلمہ کی رہائش گاہ تھی' حضور ﷺ نے اس کا نام بدل کر صَالِحہ رکھ دیا۔

## خُرْمَاء

لفظِ اَخرم کا مؤنث ہے جس کا معنی پھٹے ہونٹوں والا شخص ہوتا ہے' یہ وادیٔ صفراء میں ایک چشمہ تھا۔

## خَرِیْق

اَمِیر کے وزن پر ہے' یہ ینبع سے متصل' جار کے نزدیک ایک وادی تھی۔

## خُرَیْم

زُبَیر کے وزن پر ہے' مدینہ اور اور جار کے درمیان دو پہاڑوں میں ایک گھاٹی تھی' کچھ مدینہ اور روحاء کے درمیان بتاتے ہیں' رسول اللہ ﷺ بدر سے واپس تشریف لائے تو اس راستے سے گذرے تھے چنانچہ شاعر کثیر کہتے ہیں:

''وہ جلدی سے بین میں جمع ہوئیں اور مجھے فیفا خُرَیم میں حیران کھڑا چھوڑ دیا۔''

## خُزَیمِیّہ

اجفر اور ثعلبیہ کے درمیان عراقی حاجیوں کے ٹھہرنے کی جگہ تھی۔

## خَشَاش

سَحاب کے وزن پر ہے' خشاشان دو تھے' یہ عمق کے قریب فُرع میں دو پہاڑ تھے۔ عمق میں اس کا ذکر آ رہا ہے۔

## خُشُب

مدینہ سے ایک رات کی مسافت پر ایک وادی تھی' اس کا ذکر حدیث اور جنگوں میں آتا ہے۔ اسے ذوخشب کہتے ہیں جس کا ذکر اضم میں گرنے والی وادیوں میں کیا جا چکا ہے اور مساجدِ تبوک میں بھی آیا ہے' یہاں مروان بن حکم کا محل تھا' علاوہ ازیں کئی اور گھر بھی تھے' یہیں بنو امیہ اس وقت اُترے تھے جب انہیں واقعۂ حرہ سے کچھ دیر پہلے شام کی طرف نکال دیا گیا تھا چنانچہ وہ جنگ میں شریک ہوئے پھر عبد اللہ بن حنظلہ نے ان کو پیغام بھیجا اور بری طرح یہاں سے نکال دیے گئے' ایک شاعر لکھتا ہے:

"ذوخشب میں میری آنکھوں نے سونے سے انکار کر دیا' اسے گھروں اور خیموں نے رُلا دیا۔"

## خشرمہ

ینبع کے قریب ایک وادی تھی جو سمندر میں جا گرتی تھی۔

## خُشَیْن

لفظ خُشُن کی تصغیر ہے' ایک پہاڑ تھا۔ ابن اسحاق کہتے ہیں کہ زید بن حارثہ سرزمین خشین کے مقام جذام میں غزوہ کے لئے گئے۔ کہاوت مشہور ہے کہ "خشین' خشن ہی سے لیا گیا ہے۔" یہ دو پہاڑ تھے جن میں سے ایک' دوسرے سے چھوٹا تھا۔

## خَصِیّ

یہ فعیل کے وزن پر ہے' جب کسی کا خصیہ نکال لیتے ہیں تو کہا جاتا ہے خصاہ یعنی اس نے خصیہ نکال لیا۔ مسجد قباء کی شرقی جانب ایک قلعہ تھا جو بئر الخصی کے کنارے پر تھا' یہ بنو سلم کا تھا اور خصی بھی بنو حارثہ کے گھروں میں ایک قلعہ تھا۔

## خَضِرَہ

آرہ کے مقام پر ایک بستی تھی اور پھر نجد میں محارب کی زمین کو بھی کہتے تھے‘ کچھ تہامہ میں بتاتے ہیں۔ ابن سعد کہتے ہیں کہ خضرہ کی طرف حضرت ابو قتادہ چھوٹا لشکر لے کر گئے تھے‘ یہ نجد میں محارب کی جگہ تھی۔ ابوداؤد کہتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے عفرہ نامی زمین کا نام تبدیل کیا اور خضرہ رکھ دیا پھر شعب الضلالہ کا نام شعب الھدیٰ رکھا تھا پھر بنو زنیہ میں تبدیلی کر کے بنو الرشدہ فرمایا۔

علامہ خطابی کہتے ہیں کہ عَفرۃ‘ سوراخ کو کہتے ہیں اور اس زمین کو بھی کہتے ہیں جہاں کچھ پیدا نہ ہو سکے چنانچہ آپ نے تفاؤل کے لئے اسے خُضْرہ فرمایا تا کہ سرسبز ہو جائے۔

## خطمی

تبوک کی مسجدوں میں اس کا ذکر آ چکا ہے۔

## خُفَیْنَن

یہ ایک وادی تھی‘ یہ بھی کہتے ہیں کہ بستی تھی جو ینبع اور مدینہ کے درمیان تھی۔ یہ بھی کہتے ہیں کہ اس کی دو شاخیں تھیں‘ ایک تو ینبع میں گرتی تھی اور دوسری خشرمہ میں۔

## خَفِیَّہ

مدینہ میں عقیق کے ایک جگہ کا نام تھا۔

## اَلْخَلائق

مدینہ کے اردگرد ایک زمین تھی جو عبداللہ بن احمد بن جحش کی ملکیت میں تھی‘ یہ لفظ خَلِیقہ کی جمع ہے‘ علامہ ھجری کہتے ہیں کہ عقیق کا سیلاب نقیع سے نکلتا تو آگے وادیٔ ریم آ جاتی اور جب یہ دونوں اکٹھی ہو جاتیں تو مل کر عبداللہ بن ابو احمد بن جحش کی وادیٔ خلیقہ میں جا گرتیں‘ یہاں محلات بھی تھے اور زرعی زمین بھی‘ پھر آل زبیر اور آل ابو احمد کے کھجور کے باغ تھے۔ انتہٰی۔

آگے مجد کی روایت سے آ رہا ہے کہ یہ مدینہ سے بارہ میل کے فاصلے پر تھی۔ مطری سے گذر چکا ہے کہ نقیع کا سیلاب اوپر والی جانب بئر علی سے ملتا جسے خلیقہ کہتے تھے۔

میں کہتا ہوں کہ آج کل یہ درب المشیان کے نام سے مشہور ہے‘ یہی جگہ خلیقۃ عبداللہ کہلاتی تھی۔

ابن ھشام کی تہذیب میں ابن اسحاق کی روایت سے غزوۃ العشیرہ میں آتا ہے کہ رسول اللہ ﷺ بنو دینار کے پہاڑی راستے سے گذرے تھے‘ پھر فیفاء الخبار پر چلے اور ابن ازھر کے بطحاء میں ایک درخت کے نیچے ٹھہرے پھر وہاں

سے چلے اور بائیں طرف خلائق میں ٹھہرے، پھر ایک راستے پر چلے جو شعبۂ عبد اللہ کے نام سے مشہور تھا۔ پھر پانی سے گذرے اور لیل میں پہنچے، وہاں سیلابوں کے جمع ہونے کی جگہ مجتمع الصبوعہ پہنچے، پھر راہ فرش پر چلے اور صخیرات الیمام کے راستے میں پہنچے اور پھر ایک طرف مڑ گئے۔

### خلائق

خلائق اور الخلائق بھی، ذروۂ صمان میں جنگل تھا۔

### خُلَائل

مدینہ میں ایک جگہ تھی۔

### خَلُص

اس کا ذکر ''آرہ'' میں آچکا، جہاں بتایا گیا ہے کہ وہاں یہ ایک وادی تھی جس میں بستیاں تھیں پھر حکیم بن خزام کہتے ہیں کہ میں نے یومِ بدر پر دیکھا کہ وادیٔ خلص میں آسمان سے ایک غول اترا جس نے آسمان کو گھیر لیا، یکا یک دیکھا تو وادی میں بے شمار کیڑیاں چل رہی تھیں، میرے دل میں آیا کہ یہ آسمان سے حضور ﷺ کی تائید کے لئے اُتری ہیں چنانچہ کفار کو شکست ہوئی۔ یہ فرشتے تھے۔

### خل

مرجح کے قریب مکہ اور مدینہ کے درمیان ایک جگہ تھی اور وہ خل جس کی طرف قصر منسوب ہے، اس کے بارے میں آرہا ہے کہ وہ حرہ کے نزدیک اس میں راستہ تھا۔

### خَلِیقَہ

سَکِینہ کے وزن پر ہے، اس کا ذکر خلائق میں آچکا ہے۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ یہ مدینہ سے بارہ میل کے فاصلے پر ایک منزل تھی جو مدینہ اور دیار سلیم کے درمیان تھی۔

### خُمّ

یہ ایک بہادر شخص کا نام تھا جس سے وہ کنواں منسوب تھا جو جحفہ کے قریب تھا یا یہ وہاں ایک وادی تھی۔ علامہ نووی کہتے ہیں کہ ایک جھنڈ کا نام تھا جو جحفہ سے تین میل کے فاصلے پر تھا، وہاں ایک مشہور کنواں تھا جو اسی جھاڑی کی طرف منسوب تھا۔

حافظ منذری لکھتے ہیں کہ اس مقام پر کوئی پیدا ہونے والا بچہ سالِ شعور تک پہنچ کر زندہ نہ رہتا تھا، ہاں یہاں سے چلا جاتا تو بچ جاتا کیونکہ یہاں وباء اور بخار کی بہتات تھی، رسول اللہ ﷺ نے دعاء فرمائی تھی کہ مدینہ سے بخار نکل کر

یہاں چلا آئے۔ علامہ اسدی سے بیان کیا جا چکا کہ جحفہ سے تین میل کے فاصلے پر یہاں مذکور مسجد کے بالمقابل ایک کھلا راستہ تھا' اس کے ساتھ ہی عیضہ تھا' یہ خم میں کنواں تھا' یہ جحفہ سے چار میل کے فاصلے پر تھا اور وہ چشمہ جس کی طرف انہوں نے اشارہ کیا' خم کا چشمہ تھا جس کا پانی پینے سے گریز کرتے تھے چنانچہ کہا جاتا تھا کہ جو بھی اس سے پانی پیتا' اسے بخار ہو جاتا۔

عرام کہتے ہیں کہ جحفہ کے قریب ایک میل کے فاصلے پر خم کا کنواں تھا اور یہ وادی سمندر میں جا گرتی تھی۔ یہ کنواں سورج کے طلوع ہونے کی جگہ پر تھا' یہاں بارش کا پانی ختم نہ ہوتا تھا' وہاں خزاعہ اور کنانہ کے کچھ لوگ رہتے تھے۔

## خندق

علامہ مطری کہتے ہیں کہ حضور ﷺ نے وادیٔ بطحان کی بالائی جانب وادی کی مغربی جہت میں حرہ کو شامل کر کے مصلائے عید کی مغربی جانب مسجد فتح تک اور پھر دو چھوٹے مغربی پہاڑوں تک خندق کھدوائی' مسلمانوں نے اپنی پیٹھیں سلع پہاڑ کی طرف کی تھیں' حضور ﷺ نے اپنا خیمہ سلع کی غربی جانب لگوایا جہاں آج کل مسجد فتح موجود ہے' یہ خندق ان کے اور مشرکین کے درمیان تھی' آپ اسے کھدوا کر چھ دن بعد فارغ ہوئے تھے' اس کام میں تمام مسلمان شریک ہوئے تھے' ان دنوں وہ تین ہزار تھے۔ یہ خندق آج بھی موجود ہے' اس میں سے ایک نالی قباء میں چشمے کی طرف آتی تھی۔ اس خندق میں کھجور کے درخت بھی تھے' اس کا اکثر حصہ گر چکا ہے اور دیواریں بھی گر چکی ہیں۔ انتہٰی۔

اسی خندق کے بارے میں طبرانی کی روایت ہے' حضرت عمرو بن عوف مزنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ اس خندق کی کھدائی کے لئے ہر دس افراد کے لئے چالیس چالیس ہاتھ پر نشان لگائے تھے' حضرت سلمان فارسی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے بارے میں مہاجرین و انصار میں جھگڑا ہوا تھا' وہ ایک طاقتور آدمی تھے' مہاجرین نے کہا کہ سلمان ہمارے ساتھ ہوں گے لیکن انصار نے کہا کہ ہمارے ساتھ ہیں' اس پر حضور ﷺ نے فرمایا کہ سلمان ہم سے ہیں اور میرے اہلِ بیت میں شامل ہیں۔

علامہ بیہقی نے دلائل النبوۃ میں حضرت عمرو بن عوف رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی روایت لکھی ہے کہ: رسول اللہ ﷺ نے احزاب کے سال اجمِ سمر سے جو بنو حارثہ کی طرف تھی' نشانِ خندق لگایا اور مداد تک جا پہنچے پھر چالیس چالیس ہاتھ بھر جگہ ہر دس دس آدمیوں کو دیدی (کہ کھود سکیں)۔ پھر بیہقی نے اس کے بعد حضرت سلمان کے بارے میں جھگڑے کا ذکر کیا۔

ابن سعد لکھتے ہیں کہ جب رسول اللہ ﷺ نے خندق کھودنے کا حکم دیا تو اس کی ہر جانب قوم کو لگایا تھا' مہاجرین کے پاس راتج سے ذباب تک کا حصہ تھا اور انصار' ذباب سے جبل بنو عبید تک کھود رہے تھے' مدینہ قلعہ کی طرح محفوظ ہو گیا۔ بنو دینار نے خربی سے دار ابن ابی الجنوب تک کھودنا تھی' اور ان کی طرف سے بنو عبد الاشہل نے راتج سے

پچھلی طرف کھودنا تھی، یہ بنو حارثہ والی جانب تھی، وہ کہتے ہیں کہ یہ خندق مسجد کے اوپر کی طرف سے بنائی گئی، لوگ اسے کھود کر چھ دنوں میں فارغ ہوئے۔

علامہ واقدی نے کتاب الحرہ میں وضاحت کی ہے چنانچہ نقل کیا ہے کہ جب یزید کا لشکر قریب ہوا تو اہلِ مدینہ نے خندق کے بارے میں باہم مشورہ کیا اور کئی دن تک اختلاف رہے اور پھر رسول اللہ ﷺ کی خندق کا پختہ ارادہ کیا اور مدینہ کے ہر طرف مضبوط تعمیر کر دی۔

حنظلہ بن قیس زرقی لکھتے ہیں کہ ہم نے خندق میں (سالِ حرہ میں) پندرہ دن تک کام کیا، قریش کے پاس راتج سے مسجد احزاب تک کا حصہ تھا اور انصار کے پاس مسجد احزاب سے بنو سلمہ تک کا حصہ تھا جبکہ غلاموں کے پاس راتج سے بنو عبد الاشہل تک کا حصہ تھا۔

اس سے واضح ہوا کہ یہ خندق مدینہ کے شامی جانب حرۂ شرقیہ سے حرۂ غربیہ تک تھی اور یہ جو انہوں نے ابن سعد کا قول نقل کیا ہے کہ: بنو دینار نے خربیٰ کے نزدیک سے کھدائی شروع کی (اس سے مراد بنو سلمہ کے گھر تھے) اور دار ابن ابی الجنوب تک لے گئے، اس سے مراد وہ گھر ہے جو مصلّے کے نزدیک بطحان کے غرب میں تھا، چنانچہ یہ خندق وہ پہلی نہ تھی۔

ابن اسحاق کہتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ کو خندق کھودنے کا مشورہ حضرت سلمان فارسی نے دیا تھا، یہ پہلا موقع تھا کہ وہ رسول اللہ ﷺ کے ہمراہ شریک ہوئے تھے، وہ ان دنوں آزاد ہو چکے تھے چنانچہ عرض کی، یا رسول اللہ! ہم جب فارس (ایران) میں تھے تو اپنے گرد خندق کھودی تھی چنانچہ حضور ﷺ نے مسلمانوں کو ساتھ لے کر مضبوط خندق کھدوالی جبکہ مدینہ کی ایک جانب کھلا رکھی، باقی ہر طرف سے اسے مضبوط کر دیا۔ کھجوریں اس قدر تھیں کہ دشمن اندر نہیں آ سکتا تھا، انتہی چنانچہ یہی وہ جانب تھی جس کا بیان گذر چکا۔

تفسیر ثعلبی میں حضرت عبد اللہ بن عمرو بن عوف رضی اللہ تعالیٰ عنہ بتاتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے سالِ احزاب میں خندق کھودنے کے لئے نشان لگائے اور پھر ہر چالیس ہاتھ زمین کھودنے کے لئے دس آدمی مقرر فرمائے، انہوں نے اس کام کے لئے بنو قریظہ سے بیلچے اور ہتھوڑے وغیرہ کرایہ پر لئے پھر رسول اللہ ﷺ نے مسلمانوں میں شوق پیدا کرنے کے لئے خود کام کیا، بسا اوقات کھودتے کھودتے آپ تھک جاتے چنانچہ بیٹھ جاتے اور آرام فرماتے حالانکہ صحابہ کرام عرض کرتے، یا رسول اللہ! اس کام کے لئے ہم کافی ہیں لیکن آپ فرماتے، میں چاہتا ہوں کہ ثواب میں تمہارے ساتھ شامل رہوں اور اجر حاصل کروں۔

اس کے بعد حضرت عبد اللہ نے حضرت سلمان فارسی کے بارے میں جھگڑے کا ذکر کیا پھر فرمایا کہ میں، سلمان، حذیفہ اور نعمان بن مقرن مزنی انصار کے چھ آدمیوں کے ساتھ تھے جنہیں چالیس ہاتھ جگہ میں خندق کھودنا تھی، چنانچہ ہم کھودتے رہے اور جب ہم ذوباب کے نچلے حصے پر پہنچے تو اللہ کے حکم سے خندق کے نیچے ایک ایسا پتھر نکلا جس سے

ہمارے ہتھوڑے ٹوٹ گئے‘ ہمیں سخت مشکل پیش آئی۔ ہم نے کہا: اے سلمان! اوپر چڑھ کر رسول اللہ ﷺ کو اس پتھر کے بارے میں بتاؤ پھر یا تو ہم اس جگہ کو چھوڑ دیں یا پھر آپ کوئی اور ارشاد فرما دیں کیونکہ ہم نہیں چاہتے کہ آپ کے لگے نشان سے اِدھر اُدھر ہوں۔

حضرت سلمان اُوپر چڑھے اور رسول اللہ ﷺ کی خدمت میں حاضر ہوئے۔ آپ ترکی خیمے کے نیچے بیٹھے تھے چنانچہ حضرت سلمان کو لے کر نیچے اُترے‘ حضرت سلمان کے ہاتھ سے کدال لیا اور اس پتھر پر مار کر اسے توڑ دیا‘ اس سے چمک نکلی جس نے مدینہ کے اردگرد کو روشن کر دیا‘ روشنی یوں معلوم ہوئی کہ گویا اندھیرے گھر میں چراغ موجود ہو‘ حضور ﷺ نے اللہ اکبر کا نعرہ لگا کر اس پر دوبارہ ضرب لگائی پھر تیسری ضرب سے اسے توڑ کر رکھ دیا چنانچہ اس سے پھر روشنی نکلی۔

اسی دوران حضرت سلمان نے عرض کی یا رسول اللہ! میرے ماں باپ آپ پر قربان! میں نے وہ کچھ دیکھا ہے جو آج تک نہیں دیکھا تھا۔ رسول اللہ ﷺ لوگوں کی طرف متوجہ ہوئے اور فرمایا: تم سن رہے ہو‘ سلمان کیا کہہ رہے ہیں؟ انہوں نے عرض کی‘ ہاں یا رسول اللہ! آپ نے فرمایا: میں نے جب پہلی ضرب لگائی تو تم نے وہ روشنی دیکھی‘ جس کی وجہ سے میں نے حیرہ اور مدائنِ کسریٰ کے محل دیکھے‘ وہ ایسے صاف نظر آئے جیسے کتوں کے دانت ہوتے ہیں‘ اسی دوران جبریل نے مجھے بتایا کہ میری اُمت یہاں تک کا علاقہ فتح کرے گی پھر میں نے دوسری ضرب لگائی تو جو روشنی تم نے دیکھی‘ اس سے مجھے روم کے سرخ محل دکھائی دیئے جیسے کتے کے صاف دانت ہوتے ہیں چنانچہ جبریل نے بتایا کہ میری اُمت یہ علاقہ فتح کرے گی پھر میں نے تیسری ضرب لگائی تو جو روشنی تمہیں دکھائی دی اس میں مجھے صنعاء کے محل صاف دکھائی دیئے‘ اس پر جبریل نے مجھے بتایا کہ میری اُمت یہ علاقہ بھی فتح کرے گی چنانچہ خوشیاں مناؤ‘ مسلمان خوش ہوئے اور کہنے لگے‘ اس اللہ کا شکر ہے جس کا وعدہ سچا ہے‘ اس نے محاصرہ کے بعد ہم سے امداد کا وعدہ فرمایا ہے۔

منافق بولے: تم اس بات سے تعجب نہیں کرتے ہو کہ یہ تمہیں اُمیدیں دلا رہے ہیں اور جھوٹے وعدے کرتے ہیں پھر تمہیں بتا رہے ہیں کہ انہوں نے یثرب سے حیرہ اور مدائن کسریٰ کے محل دیکھے ہیں‘ یہ بھی بتایا کہ تم اسے فتح کرو گے حالانکہ تم تو خندق کھودتے ہوئے گھبرا رہے ہو‘ تمہیں جنگ کی تو ہمت ہی نہیں۔ اس پر یہ آیت اُتری:

وَ اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗٓ اِلَّا غُرُوْرًا۝

(سورۂ احزاب‘ ۱۲)

”اور جب کہنے لگے منافق اور جن کے دلوں میں روگ تھا‘ ہمیں اللہ و رسول نے وعدہ نہ دیا تھا مگر فریب کا۔“

پھر اسی واقعہ میں اللہ تعالیٰ نے فرمایا:

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ۝ (سورۂ آل عمران‘ ۲۶)

''یوں عرض کر' اے اللہ! ملک کے مالک۔''

انہوں نے ذوباب کا لفظ ذکر کیا ہے' اگر یہ روایت صحیح ہے تو یہ بھی ذباب کا نام ہوگا کیونکہ خندق میں خیمہ نہیں لگا تھا' مجھے مدینہ کی کسی جگہ کا نام ذوباب دیکھنے کو نہیں ملا۔

علامہ واقدی نے اپنی سیرت میں لکھا ہے کہ حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ خندق کے دن کدال مارتے تھے' اسی دوران ان کے سامنے ایک سخت پتھر آ گیا' حضور ﷺ اس وقت جبلِ بنوعبید پر تھے' کدال آپ نے پکڑ لیا' آپ نے ضرب لگائی تو اس سے نکلنے والی چمک یمن تک گئی' دوسری ضرب لگائی تو روشنی شام تک گئی' پھر تیسری ضرب پر روشنی مشرق تک گئی اور اس تیسری ضرب میں پتھر ٹوٹ گیا۔ حضرت عمر کہتے ہیں' مجھے اس ذات کی قسم جس نے آپ کو سچا نبی بنا کر بھیجا' پتھر بالکل نرم معلوم ہونے لگا تھا' آپ جب بھی ضرب لگاتے' حضرت سلمان دیکھ رہے ہوتے' ہر ضرب پر چمک دیکھتے چنانچہ بتاتے ہیں کہ میں نے دیکھا جب بھی آپ کدال مارتے تو نیچے سے روشنی نکلتی' حضور ﷺ نے فرمایا: تم دیکھ نہیں رہے ہو؟ آپ نے کہا: ہاں دیکھ رہا ہوں۔ حضور ﷺ نے فرمایا کہ پہلی ضرب میں میں نے یمن کے محل دیکھے' دوسری میں شام کے محل دیکھے اور تیسری ضرب میں میں نے مدائن میں کسریٰ کا محل دیکھا۔ حضور ﷺ حضرت سلمان کو سب کچھ بتا رہے تھے تو انہوں نے عرض کی' یا رسول اللہ آپ سچ فرما رہے ہیں بالکل ایسے ہی ہے' میں گواہی دیتا ہوں کہ آپ اللہ کے رسول ہیں۔ اس پر آپ نے فرمایا: اے سلمان! یہ وہ علاقے ہیں جنہیں تم میرے بعد فتح کر لو گے' شام فتح ہوگا اور ہرقل دور اپنے ملک میں سے بھاگ جائے گا' تمہیں شام پر غلبہ ملے گا' کوئی مقابلہ میں نہ آ سکے گا پھر تم یمن فتح کرو گے اور یہ مشرقی علاقہ بھی فتح کرو گے' کسریٰ (شاہِ ایران) قتل ہو جائے گا' اس کے بعد کوئی کسریٰ نہ ہوگا۔ حضرت سلمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ بتاتے تھے کہ یہ سب کچھ میں نے یونہی دیکھا۔

پہلے جو گزرا ہے کہ خندق سے چھ دن بعد فارغ ہوئے تھے تو یہ مشہور ہے لیکن حافظ ابن حجر کہتے ہیں: مغازی ابن عقبہ میں ہے کہ وہ لوگ کام میں لگے رہے اور بیس راتوں تک کام جاری رہا۔ علامہ واقدی چوبیس راتیں بتاتے ہیں' علامہ نووی کی ''روضہ'' میں پندرہ دنوں کا ذکر ہے' ابن قیم کی الھدیٰ میں ہے کہ یہ کام ایک ماہ تک جاری رہا۔ انتہیٰ۔

جو کچھ انہوں نے الھدیٰ میں لکھا ہے کہ: مشرکین نے ایک ماہ تک محاصرہ جاری رکھا تو یہ مدت محاصرے کی ہے لیکن ابن سیّد الناس نے ابن سعد کے حوالے سے بتایا ہے کہ خندق میں چھ دن تک کام ہوا۔ کچھ دس سے زیادہ دن بتاتے ہیں اور چوبیس دن بھی بتائے گئے ہیں۔

## خُوَیْفَہ

صاحب المسالک والممالک نے اسے مدینہ میں شامل کیا ہے۔

## خیبر

یہ اس علاقے کا نام ہے جہاں بہت سے قلعے تھے، زرعی زمینیں تھیں اور کھجوروں کے باغ تھے۔ یہودیوں کی بولی میں خیبر قلعہ کو کہتے ہیں، اسی لئے اسے خیابر بھی کہا گیا ہے کیونکہ وہاں قلعے بہت تھے۔

ابو القاسم زجاجی کہتے ہیں کہ خیبر کا نام یثرب کے بھائی قانئہ بن مہلیل بن ارم بن عبیل کے نام پر رکھا گیا، یہ عبیل، حضرت عاد کا بھائی تھا جبکہ ربذہ، زرود اور سفرہ کا چچا تھا، یہی سب سے پہلے یہاں ٹھہرا تھا۔ یہ خیبر مدینہ سے تین دن کے سفر کی مسافت پر ہے اور شام کی بائیں طرف تھا، حضور ﷺ یہاں ایک ماہ تک ٹھہرے اور ایک ایک قلعہ کر کے اسے فتح کیا، سب سے پہلے قلعۂ ناعم فتح کیا پھر عموص کو فتح کیا، یہ ابن ابی الحقیق کا قلعہ تھا یہیں کے قیدیوں میں سے آپ نے حضرت صفیہ کو حاصل کیا، پھر قلعے فتح کرتے رہے اور مال حاصل کرتے رہے اور یوں وطیح وسلالم تک پہنچ گئے، یہ فتح کیا جانے والا آخری قلعہ تھا، دس دن سے زیادہ تک اس کا محاصرہ رہا اور جب انہیں یقین ہو گیا کہ وہ ہلاک ہو جائیں گے تو انہوں نے صلح کر لی۔ انہوں نے عہد کیا کہ صفراء، بیضاء (سونا چاندی اوز دیگر سامان چھوڑ جائیں گے، صرف وہی لیں گے جو ان کے جسم پر ہو گا اور پھر کچھ چھپائیں گے بھی نہیں اور شرط یہ کی کہ اگر وہ ایسا کریں تو ان کا ذمہ نہ ہو گا چنانچہ وہ مسک میں چلے گئے، یہاں حُیَیّ بن اخطب تھا۔ حضور ﷺ نے فرمایا کہ ہم مسک فتح کریں گے چنانچہ ابن ابی الحقیق قتل ہو گیا، اس کی عورتیں اور اولاد قید ہو گئی۔ آپ نے ارادہ فرمایا کہ انہیں خیبر سے جلا وطن کر دیں، اس پر انہوں نے کہا کہ ہمیں یہیں رہنے دیں اور کام کرنے دیں کیونکہ ہماری زمین ہے چنانچہ آپ نے انہیں وہیں رہنے دیا اور طے فرمایا کہ کھجوروں اور گندم وغیرہ کا آدھا حصہ دیا کریں گے پھر فرمایا کہ ہم جب تک چاہیں گے یا اللہ چاہے گا، تمہیں یہاں رہنے دیں گے چنانچہ وہ وہیں رہے اور آخر حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے انہیں وہاں سے نکال دیا۔

ابن شبہ، حسیل بن خارجہ سے روایت کرتے ہیں، انہوں نے بتایا کہ اھل وطیح اور سلالم نے ان دونوں علاقوں پر نبی کریم ﷺ سے صلح کر لی چنانچہ یہ حضور ﷺ کی ملکیت میں آ گئے جسے آپ نے بطورِ ترکہ چھوڑا اور کثیبہ خمس میں سائل کیا گیا، یہ وطیح اور سلالم سے ملتا تھا۔ چنانچہ خیبر حضور ﷺ کے صدقات میں شمار ہوا۔

اس سے پتہ چلتا ہے کہ خیبر کا کچھ حصہ تو جنگ سے فتح ہوا اور باقی صلح سے اور یہی وہ بات ہے جسے ابن وھب نے ابن شہاب سے روایت کیا ہے، وہ کہتے ہیں: خیبر کا کچھ حصہ جنگ سے فتح ہوا اور کچھ صلح سے جبکہ کثیبہ کا اکثر حصہ جنگ سے فتح ہوا اور اسی میں صلح بھی ہوئی۔ میں نے مالک سے پوچھا: یہ کثیبہ کیا ہے؟ تو انہوں نے کہا کہ یہ خیبر کی زمین ہے۔ یہ چار ہزار کھجور کے درخت تھے۔

میں کہتا ہوں، مراد یہ ہے کہ کثیبہ خیبر کا ایک حصہ تھا نہ کہ پورا خیبر، خیبر کی سر زمین میں کھجور کثرت سے ہوتی تھی۔ اس میں چراگاہیں بھی بہت تھیں، یہاں ایک اعرابی اپنے اہل وعیال لے کر آیا تھا، اسے بخار آیا تو وہ مر گیا لیکن اس

کی اولاد وہیں رہی۔

## خُیُط

یہ خُیُوط کا واحد ہے۔ یہ بنوسواط کا قلعہ تھا، مسجد قبلتین کی شرقی جانب حرہ کی بالائی جانب تھا۔

## خَیُل

یہی وہی لفظ خیل (گھوڑا) ہے جس پر سواری کی جاتی ہے، اسی کی طرف بقیع منسوب تھا جس کا ذکر بازار مدینہ کے بیان میں گذرا اور یہ زید بن ثابت کے گھر کے پاس تھا۔ خیل ایک پہاڑ کا نام بھی تھا جو مجب اور صرار کے درمیان تھا، مغازی (جنگوں) میں اس کا ذکر ملتا ہے اور روضۃ الخیل نجد کی سرزمین میں ہے۔

# حَرْفُ الدَّال

## دار القضاء

اس کا ذکر وہاں گذر چکا ہے جہاں مسجد نبوی کے دروازوں کے زیادہ کرنے کا بیان ہوا۔

## دَارُ ابن مکمل

اس کا ذکر ان گھروں کے بیان میں گزرا جو مسجد نبوی کے اردگرد تھے۔

## دَارُ النابغه

اس کا ذکر دار النابغہ کی مسجد کے بیان میں گزرا۔

## دار نَخُلَه

یہ لفظ نخل کے واحد کی طرف منسوب ہے، بازارِ مدینہ کے بیان میں اس کا ذکر موجود ہے۔

## دَبَّه

مضیق صفراء میں ایک جگہ تھی جسے دَبَّۃ الْمُسْتَعْجَلَه کہتے تھے۔ علامہ نصر کہتے ہیں کہ محدثین اسے دَبَۃُ پڑھتے ہیں حالانکہ درست دَبَّـــہ ہی ہے کیونکہ اس کا معنیٰ ریت جمع ہونے کی جگہ ہے۔ یہ بھی ایک جگہ تھی جو اضافر اور بدر کے درمیان تھی، نبی کریم ﷺ بدر کی طرف جاتے ہوئے ذفران سے گذرے تو یہیں سے گذرے تھے۔ قاموس میں ہے کہ: دُبَّہ، بدر کے قریب ایک جگہ تھی۔

## دَرّ

یہ ایک کنواں تھا جو نقیع پر حرہ بنو سلیم کی نچلی طرف تھا۔

## دَرَك

یہ وہ جگہ تھی جہاں اوس اور خزرج کے درمیان دورِ جاہلیت میں جنگ ہوئی تھی۔ یہ دَرُك بھی پڑھا جاتا ہے‘ میرے خیال میں یہ وہی ہے جس کا ذکر بر دُرَیك میں گزرا۔

## دَعان

مدینہ اور ینبع کے درمیان ایک جگہ تھی اور یہی وہ جگہ تھی جسے حضرت معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اپنے اس قول میں مراد لیا تھا: ”رہا دعان تو اس نے مجھے اپنے نفس سے منع کیا۔“ لفظ داس میں اس کا ذکر آ رہا ہے۔

## دَفّ

اس سے مراد وہی ڈھولک ہے جو بجائی جاتی ہے۔ یہ جگہ عسفان کی ایک جانب حدان میں تھی۔

## دِمَاخ

چراگاہِ ضریہ میں بڑے پہاڑ ہیں اور دمغ الدماخ ان سب سے بڑا پہاڑ ہے۔

## دهما مرضوض

بقیع کی چراگاہ کے گرد ایک جگہ تھی جو مزینہ کے قبضے میں تھی۔

## دَهْناء (دَهْنٰی)

مدینہ اور ینبع کے درمیان ایک جگہ تھی۔ یہ دہناء ریت کے سات ٹیلے تھے جو تمیم کے گھروں میں تھے‘ ہر دو ٹیلوں کے درمیان خالی جگہ تھی‘ یہاں پانی کی کمی تھی اور جب یہاں سبزہ ہوتا تو سب عرب یہاں آتے کیونکہ جگہ وسیع تھی‘ درخت بہت تھے۔ یہاں کے رہنے والے بخار کا نام تک نہ جانتے تھے کیونکہ یہاں کی مٹی اور آب و ہوا ستھری تھی۔ یہاں کی وادی منعج میں گرتی اور پھر دومہ میں۔

## دَوْداء

ورقان کے قریب ایک جگہ تھی۔

## ذَوران

خَوران کے وزن پر ہے' یہ قدید کے پہلو میں ایک وادی تھی جو جحفہ سے مل جاتی تھی۔

## دُومَه

بئرِ اریس میں اس کا ذکر گذر چکا۔ آج کل اس نام پر ایک باغ مشہور ہے جو بنو قریظہ کے قریب تھا' اسی کے پہلو میں دُوَیمه تھا۔

## دُومَةُ الُجَندل

ابن درید نے زبر کا انکار کیا ہے' ایک روایت میں یہ لفظ **دوما الجندل** آیا ہے' ابن الفقیہ نے اسے مدینہ کے زیرِ عمل قرار دیا ہے۔ اس کا نام حضرت اسماعیل علیہ السلام کے بیٹے **دوما** کے نام پر پڑا۔ علامہ زجاجی **دومان بن اسماعیل** کہتے ہیں لیکن ابن کلبی یہ نام **دوما بن اسمٰعیل** بتاتے ہیں چنانچہ لکھتے ہیں کہ جب حضرت اسماعیل علیہ السلام کی اولاد تہامہ میں بہت سی ہوگئی تو دوما وہاں سے چل پڑے اور اپنی اس جگہ **دومه** میں آ بسے' وہاں ایک قلعہ بنایا جسے **دوما** کہا جانے لگا اور قلعہ اس کی طرف منسوب ہو گیا۔

ابو عبید کہتے ہیں کہ دومۃ الجندل ایک قلعہ اور بستی تھی جو شام اور مدینہ کے درمیان جبلِ طَی کے قریب تھی۔ وہ کہتے ہیں کہ دومہ وادی القرٰی کی بستیوں میں سے ایک بستی تھی پھر بتایا کہ یہاں ایک مضبوط قلعہ تھا جسے مارد کہتے تھے۔ یہ بادشاہ اکیدر کا قلعہ تھا' حضور علیہ السلام نے تبوک سے اس کی طرف حضرت خالد بن ولید کو بھیجا تھا اور فرمایا تھا کہ عنقریب تم وہاں پہنچو گے تو اکیدر شکار کر رہا ہوگا چنانچہ ایک گائے آئی اس کے اپنے سینگ اس کے قلعے سے رگڑے تو رات کو وہ اسے شکار کرنے نکلا' اسی دوران حضرت خالد بن ولید نے اس پر حملہ کر دیا اور قید کر لیا اور اس کے بھائی حسان کو قتل کر دیا اور جنگ کے نتیجے میں دومہ کو اچانک فتح کر لیا پھر اکیدر کو لے کر حضور علیہ السلام کی خدمت میں پیش کر دیا چنانچہ بجیر طائی نے کہا تھا:

> "بابرکت گائیوں کو ہانکنے والا' میں دیکھ رہا ہوں کہ اللہ تعالیٰ ہر ھادی کو ہدایت دیتا ہے تو کون ہے جو ذو تبوک سے روکے' ہمیں تو جہاد کا حکم ہے۔"

پھر حضور علیہ السلام نے دومۃ الجندل پر اس سے صلح کر لی اور جزیہ کی شرط پر اسے وہاں برقرار رکھا' یہ نصرانی تھا' بعد میں اکیدر نے معاہدہ توڑ دیا تھا' اس پر حضرت عمر نے اسے حیرہ کی طرف جلاوطن کر دیا تھا چنانچہ وہ عین التمر میں جا ٹھہرا اور وہاں گھر بنائے جس کا نام اپنے قلعے کے نام پر دومہ رکھا جو وادی القرٰی میں تھا۔

ابن سعد نے کہا کہ دومۃ الجندل شام کا ایک کنارہ تھا' اس کے اور دمشق کے درمیان پانچ راتوں کے سفر کی مسافت تھی جبکہ اس کے اور مدینہ کے درمیان پندرہ یا سولہ راتوں کے سفر کی مسافت تھی۔ ابن سعد نے بتایا کہ نبی کریم

ﷺ نے اس پر چڑھائی فرمائی اور وہاں قیام فرمایا' جنگ کا موقع نہ بنا چنانچہ کچھ دن وہاں ٹھہرے اور پھر لشکر پھیلا دیا۔

ابن ہشام غزوۂ دومہ کے بارے میں لکھتے ہیں کہ نبی کریم ﷺ غزوہ میں صلح سے پہلے واپس آگئے۔ کہتے ہیں کہ اکیدر اس سے پہلے دومۃ الحیرہ میں رہتا تھا' اپنے ننھیال کو ملنے جایا کرتا' ایک مرتبہ ان کے ساتھ شکار کو نکلا تو شہر تباہ شدہ نظر آیا' اس کی صرف دیواریں بچی تھیں جو پتھروں سے بنی تھیں چنانچہ اس نے اسے دوبارہ بنایا' وہاں زیتون وغیرہ کے درخت لگائے اور نام دومۃ الجندل رکھا تاکہ اس کے اور دومۃ الحیرہ کے درمیان فرق ہو سکے۔ اکیدر وہاں آیا جاتا کرتا تھا۔

کچھ کا خیال ہے کہ دو حکم مقرر کرنے کا معاملہ (دورِ علی و معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما میں) دومۃ الجندل ہی میں گذرا تھا۔ کتاب الخوارج میں عبد الرحمٰن بن ابو لیلیٰ کہتے ہیں کہ میں دومۃ الجندل میں ابو موسیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ساتھ گیا تو انہوں نے بتایا: مجھے رسول اللہ ﷺ نے بتایا کہ بنی اسرائیل میں سے اس مقام پر ظلم میں دو حکم مقرر ہوئے تھے اور عنقریب میری اُمت میں بھی اسی مقام پر حکم مقرر کئے جائیں گے جن سے ظلم ہوگا۔

دن گذرتے گئے' آخر کار جب حضرت ابو موسےٰ اور حضرت عمرو بن عاص کو حکم بنایا گیا تو میں ان سے ملا اور کہا: اے ابو موسےٰ تو نے مجھے حضور ﷺ کی حدیث بتائی تھی تو انہوں نے کہا: اللہ ہی مددگار ہے۔

## دُوَیخِل

بنو عبید کا پہاڑ تھا۔ علامہ مطری کہتے ہیں کہ یہ وادیٔ بطحان اور مساجدِ فتح کے مغرب میں پائے جانے والے دو پہاڑوں میں سے چھوٹا تھا۔

# حَرفُ الذَّال

## ذَات اَجدال

صفراء کی گھاٹی میں ہے۔

## ذات القطب

عقیق کی وادیوں میں سے ایک وادی۔

## ذات النُّصب

یہ وہ جگہ ہے جو حضور ﷺ نے حضرت بلال بن حارث مزنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو دی تھی چنانچہ مؤطا میں ہے کہ حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما "ذات النصب" کی طرف تشریف لے گئے تو نماز کو قصر کر کے پڑھا۔

مالک کہتے ہیں کہ ذات النصب اور مدینہ کے درمیان چار برد (اڑتالیس میل) کا فاصلہ تھا۔

## ذُبَاب

اسے غُراب اور کِتَاب کے وزن پر دونوں طرح پڑھا جاتا ہے۔ علامہ بکری کہتے ہیں کہ ذباب، صحرائے مدینہ میں ایک پہاڑ تھا پھر مساجد کے ذکر میں آچکا ہے کہ یہ وہی پہاڑ ہے جس پر مسجد الرایہ ہے، نیز خندق کے بیان میں گذر چکا ہے کہ اس کا نام ذوباب بھی تھا۔

## ذرع

بنوخطمہ کے کنوئیں کا نام تھا۔

## ذروان

بنو زریق کے گھروں میں، ان گھروں سے پہلے ایک جگہ تھی، جو مسجد کی قبلہ والی جانب تھے، اسی کی طرف اس کنوئیں کی نسبت تھی اسے بئر ذروان کہتے تھے۔

## ذَفْران

مکہ کے راستے میں موجود مسجدوں کے ذکر میں اس کا بیان آچکا ہے۔

## ذوحدہ

علامہ بیضاوی رحمہ اللہ نے فرمانِ الٰہی لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ کی تفسیر میں لکھا ہے: حضرت ابن ابی اور ان کے ساتھی اس وقت ذی حدہ کی طرف نکلے (جو ثنیۃ الوداع کی نچلی طرف تھی) جب وہ حضورﷺ کے ہمراہ تبوک کو چل پڑے تھے۔ ابن اسحاق کہتے ہیں کہ رسول اللہﷺ نے اس دن اپنا لشکر ثنیۃ الوداع پر اتارا، حضرت عبد اللہ بن ابی نے اس کی نچلی طرف ذباب کی جانب اپنا لشکر ''حِدَہ'' میں اتارا۔

بیہقی کی دلائل النبوہ میں ابن اسحاق کہتے ہیں: جب حضورﷺ چل پڑے تو اپنا لشکر ثنیۃ الوداع پر اتارا، آپ کے ہمراہ تیس ہزار لوگ تھے، حضرت عبد اللہ بن ابی نے اس کی نچلی جانب ذی حدہ میں لشکر اتارا۔

## ذَهَبَان

مروہ کی نچلی طرف جُہینہ کا ایک پہاڑ تھا جو اس کے اور سقیاء کے درمیان تھا اور ایک بستی تھی جو حدۃ اور قدید کے درمیان تھی۔

# حَرْفُ الرَّاء

## رائع

عرب لوگ کہتے ہیں فَرَسٌ رائعٌ یعنی تیز گھوڑا اور شَیْءٌ رَائِعٌ یعنی خوبصورت شے' کیونکہ وہ اپنے حسن کی وجہ سے حیران کر دیتی ہے۔ یہ مدینہ کے کھلے میدانوں میں سے ایک میدان تھا' یہ یاقوت نے کہا ہے' مجد نے بھی یونہی لکھا ہے۔ علاّمہ یاقوت کی المشترك میں میں نے اسے رَایِعُ لکھا دیکھا ہے' اس کا ذکر عقیق میں عنبسہ کے گھر کے بیان میں آ چکا ہے۔

## رَابِغ

یہ جحفہ میں ایک وادی ہے۔ اس کا قدیم نام رابوع تھا جیسے عقیق کے کنوؤں میں اس کا ذکر حضرتِ زبیر سے گذرا۔ وہ کہتے ہیں کہ یہاں کا پانی ختم نہ ہوتا تھا' کم ہونے پر بھی تھوڑا سا مل جاتا' یہ عقیق میں موجود کنوئیں کی سب سے نچلی طرف تھا البتہ سیالہ اس سے ذرا آگے تھا۔ انتہٰی' شاید یہی آج کل "حسی" کے نام سے مشہور ہے۔

## رَاتِج

یہ ایک قلعہ تھا اور پھر اس جانب کا نام پڑ گیا' یہ یہودیوں کا تھا پھر بنو جذماء نے لے لیا اور پھر اہلِ راتج کا ہو گیا جو بنو عبد الاشہل کے خلیفے تھے۔

ابن حزم کہتے ہیں کہ اہلِ راتج بنو رغورا ابن جشم کو کہتے ہیں جو عبد الاشہل کے بھائی اور حارث بن خزرج اصغر کی اولاد میں سے تھے۔ ابن حبیب کہتے ہیں کہ شرعیٰ' راتج اور مزاحمؔ مدینہ میں قلعے تھے اور یہ بنو جشم بن حارث بن خزرج اصغر کے تھے پھر مسجد راتج میں آ چکا ہے کہ یہ ذباب کی شرقی جانب شام کی طرف مائل تھا اسی لئے بنو عبد الاشہل نے یہاں سے اپنے حرہ (پتھریلی زمین) کی طرف خندق کھودی تھی' یہ بنو حارثہ کی جانب تھی۔ علامہ مطری نے ہماری موافقت نہیں کی بلکہ کہا ہے کہ: اس پہاڑ کو جو بنو عبید کے پہاڑ کے پہلو میں' بطحان کے مغرب میں تھا' راتج کہتے تھے' کچھ کہتے ہیں کہ یہ مدینہ کے پہاڑوں میں سے تھا یعنی ذباب' سلع' راتج اور جبل بنو عبید۔

## راذان

مدینہ کی ہمسائیگی میں ایک بستی تھی نیز عراق میں اسی نام کی دو بستیاں بھی تھیں جنہیں بالائی اور نچلی طرف والی کہا جاتا تھا۔ علامہ یاقوت کہتے ہیں کہ راذان مدینہ کے گرد تھا اور حدیثِ ابن مسعود میں اس کا ذکر موجود ہے۔

## رامه

یہ عراقی حاجیوں کے راستے میں، اِمرہ سے ایک دن کی مسافت پر ہے، حضرت ابو عَبیدہ نے اس کا نام رامغان رکھا ہے چنانچہ حاجیوں کے راستے میں منزلوں کا ذکر کرتے ہوئے کہتے ہیں: ''رہے رامتان تو یہ عورت کے دو پستانوں کی طرح ذونشان ہوتے ہیں۔'' پھر ''امرۃ'' کا ذکر کیا۔

## رانوناء

عاشوراء کے وزن پر ہے اور اسے رانون بھی کہتے ہیں جیسے پانچویں فصل میں گذرا۔

## راية الاعلٰی

وادیٔ عقیق میں سے ایک وادی۔

## زايَة الغراب

یہ بھی اسی کی وادیوں میں سے ایک وادی تھی۔

## رَبَاب

سَحَاب کے وزن پر، یہ مدینہ کا ایک پہاڑ تھا جو فید کے راستے میں تھا، اس کے بالمقابل ''حَوْلة'' پہاڑ تھا، یہ راستے کی دائیں اور بائیں جانب تھے۔

## رُبا

یہ رُبْوَۃٌ کی جمع ہے، یہ مکہ کے راستے میں اَبواء اور سُقیا کے درمیان تھا۔

## رَبَذَة

ساتویں فصل میں اس کا ذکر ہو چکا ہے۔

## رَبِیُع

یہ ایک وقت ہوتا ہے، یہ مدینہ کے نزدیک ایک جگہ تھی۔ ''یومُ الربیع'' اوس اور خزرج کا ایک خاص دن تھا، قیس بن خطیم نے کہا تھا:

''ہم نے یومِ ربیع پر سواری کی، دشمن جانتا تھا کہ ہم کیسے سوار ہیں۔''

## رِجَام

کِتاب کے وزن پر ہے۔ یہ اھل اُضاخ کے راستے میں ''ضریّہ'' سے تیرہ میل کے فاصلے پر سرخ اور مستطیل پہاڑ تھا' اس کی غربی جانب میٹھے پانی کا چشمہ تھا جسے رجام کہتے تھے' اس کے اور طخفہ کے درمیان پہاڑی گھاٹی کے علاوہ اور کچھ بھی نہ تھا اور اسی کے پاس حضرت ابوبکر کا لشکر بیٹھا تھا جب آپ مرتد ہونے والوں سے جنگ کرنے گئے تھے۔

## رجلاء

حرّۃ الرجلاء میں اس کا ذکر گذر چکا ہے۔

## رَجِیْع

اَمِیر کے وزن پر ہے' یہ خیبر کے نزدیک ایک وادی تھی۔ ابن اسحاق' خیبر کا ذکر کرتے ہوئے لکھتے ہیں: پھر آپ آگے بڑھے اور اس وادی میں اترے جسے رجیع کہتے تھے چنانچہ آپ ان کے اور غطفان کے درمیان اُترے تاکہ ان کے درمیان اس بات میں حیلہ کریں کہ وہ اھلِ خیبر کی امداد کریں چنانچہ وہاں لشکر بٹھایا' وقفے وقفے سے جنگ کرتے' سامان' عورتیں اور زخمی رجیع میں لاتے۔ یہ مکہ اور طائف کے درمیان تھا۔

## رَحَابہ

غَمَامہ کے وزن پر ہے' یہ بنو بیاضہ میں حرہ غربیہ پر ایک جگہ تھی۔

## رَحَبَہ

رَقَبَہ کے وزن پر ہے۔ یہ عذرہ کے شہر تھے جو وادیٔ قریٰ اور سقیا الجزل کے قریب تھے۔ صاحب المسالک و الممالک نے اسے مدینہ کے زیرِ عمل اور اردگرد میں شمار کیا ہے۔

## رَحْرَحان

اس کا ذکر ربذہ کی چراگاہ میں گذر چکا ہے۔

## رُحَضِیّہ

رِنجیّہ کے وزن پر ہے' پہلے ذکر ہو چکا ہے۔ علامہ صغانی کہتے ہیں کہ رُحضیّہ انصار کی ایک بستی تھی اور اس کے بالمقابل ایک اور بستی تھی جسے حجر کہتے تھے۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ یہ انصار اور بنو سلیم کی تھی' وہاں کئی کنوئیں تھے جہاں زرعی زمین اور کھجور کے باغ تھے۔

## رُحُقَان

یہ نازیہ سے مستعجلہ جانے والے کی دائیں طرف ایک وادی تھی، مستعجلہ کی بائیں طرف سے اس کا سیلابی پانی خیف بنو سالم میں میں جاتا تھا لہٰذا ابن اسحاق نے بدر کے سفر رسولِ اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے بیان میں کہا ہے کہ: پھر آپ اس کی ایک جانب چلے یعنی نازیہ کی طرف اور اس وادی کو پار کر گئے جسے رحقان کہتے تھے اور جو نازیہ اور صفراء کی گھاٹی میں تھی یعنی آپ نے اس وادی کو کاٹا جو مستعجلہ سے ملتی تھی۔

## رَدِیهه

عقیق کے سیلابی مقام میں سے ایک وادی تھی۔

## رُحَیب

نُفیر کے وزن پر رحب کا اسمِ تصغیر ہے، یہ ''اَراین'' کے قریب ایک پہاڑ تھا۔

## رُحَیَّه

رحا کا اسمِ تصغیر ہے۔ یہ مدینہ اور جحفہ کے درمیان ایک کنواں تھا۔

## رَسّ

''قبلیہ'' میں ایک وادی تھی۔ کہتے ہیں کہ یہ نجد میں بنو منقذ کا کنواں تھا، ان کا تعلق بنو اسد سے تھا۔ ابن درید کہتے ہیں کہ رس اور رَسیس نجد میں دو وادیاں تھیں یا دو جگہیں تھیں اور وہ رَس جس کا ذکر قرآن میں ہے، یہ وادیٔ آذربیجان سے پہلے ایک وادی تھی، یہ عجیب وادی تھی جس میں ایسا انار تھا کہ اس جیسا کہیں نظر نہ آیا، اس کی کشمش تنوروں میں خشک کی جاتی کیونکہ دھند چھائے رہنے سے وہاں دھوپ نہ ہوتی تھی۔ اس پر ہزار شہر کا گذارہ تھا، اللہ تعالیٰ نے ان کی طرف ایک نبی بھیجا تو انہوں نے انہیں جھٹلا دیا، انہوں نے ان کے لئے تباہی کی دعا کی چنانچہ اللہ تعالیٰ نے ان پر دو پہاڑ گرا دئے اور وہ ان کے نیچے آ گئے۔

## رَشاد

اَجرد کی وادیوں میں سے ایک وادی تھی، اسے غوای کہتے تھے، یہ بنو عنان کی تھی جو جہینہ سے تعلق رکھتے تھے، حضور علیہ السلام صلی اللہ نے اس کا نام رَشاد رکھ دیا، آپ نے فرمایا تھا: تم لوگ بنو رشدان ہو۔

## ذَاتُ الرَّضَم

یہ وادیٔ قری سے چھ میل کے فاصلے پر تھی۔

## رَضمَه

مدینہ کے قریب ایک جگہ تھی۔

## رَضوٰی

سَکرٰی کے وزن پر ہے۔ یہ ینبع کے قریب ایک پہاڑ تھا' اس کی کئی شاخیں اور وادیاں تھیں' یہاں کنوئیں اور درخت تھے' سان بنانے کے لئے یہیں سے پتھر لئے جاتے تھے۔ ابن السکیت لکھتے ہیں: رضوٰی کی پچھلی طرف حجاز ہے اور اس کے اندر غور' یہ جہینہ کا تھا۔ علامہ عرّام کہتے ہیں کہ یہ تہامہ کا پہلا پہاڑ تھا جو ینبع سے ایک دن کے سفر پر اور مدینہ سے سات دن کے سفر پر تھا' اس کی دائیں طرف مکہ کو راستہ جاتا تھا پھر احد پہاڑ کی فضیلت کا بیان کرتے ہوئے پانچویں باب میں گذر چکا ہے کہ رضوٰی اس پہاڑ سے کٹ کر مدینہ میں گرا تھا جس پر اللہ تعالیٰ نے تجلی فرمائی تھی' اللہ کے ڈر سے اس کے چھ ٹکڑے ہو گئے تھے۔

ابو غسان نے لکھا ہے کہ رہا رضوٰی تو یہ ینبع میں ہے جو مدینہ سے چار راتوں کے سفر پر ہے۔ ان دونوں کے درمیان یہی مسافت مشہور ہے۔

وہیں یہ بھی بیان ہوا تھا کہ رضوٰی جنت کے پہاڑوں میں سے ایک ہے۔ ایک روایت میں ہے کہ یہ ان پہاڑوں میں سے ہے جس سے خانہ کعبہ بنا تھا۔ ایک حدیث میں ہے کہ رضوٰی پر اللہ راضی ہے اور قدس کو اللہ پاکیزہ بنائے جبکہ احد وہ پہاڑ ہے جو ہم سے محبت کرتا ہے۔ کیسانیہ فرقہ کے لوگ یہ خیال کرتے ہیں کہ محمد بن حنفیہ رضوٰی میں ٹھہرے ہوئے ہیں' وہیں انہیں روزی ملتی ہے۔

## رَعُل

بنو عبد الاشہل کے گھروں میں ایک قلعہ تھا اور جب بنو حارثہ نے انہیں یہاں سے نکالا تو حضیر بن سماک نے ایک دن کہا تھا: مجھے اُوپر اٹھاؤ تاکہ میں رعل کو دیکھ سکوں' اس پر اساف بن عدی حارثی نے کہا تھا:

> ''تمہیں ننہیال کی بچیوں کی قسم! تم اسے مدت تک اور جب تک کبوتر بولتے ہیں' نہیں دیکھ سکو گے
> کیونکہ رعل کو جب تم نے سلامت رہنے دیا ہے تو واقم کا میدان تم سے حرام ہو گیا۔''

## ذَاتُ الرِّقاع

لفظ رِقعَہ کی جمع ہے۔ علامہ واقدی کہتے ہیں کہ یہ مدینہ سے تین میل کے فاصلے پر کھجور کے باغ کے قریب تھا۔ یہ دورِ جاہلیت کا کنواں تھا' ذات الرقاع کہنے کی وجہ یہ تھی کہ اس زمین میں سفید' سرخ اور سیاہ مکان تھے۔ یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ ایک پہاڑ تھا جس میں سفید' سرخ اور سیاہ رنگ کا پتھر تھا تو گویا یہ پہاڑ کے حصے اور ٹکڑے تھے۔ حافظ ابن حجر

کہتے ہیں کہ غزوہ کو ذات الرقاع ان کھجور کے درختوں کی وجہ سے کہا جاتا تھا کہ ان میں پانی رُکنے کی جگہیں تھیں۔

نخل کی وضاحت میں آ رہا ہے کہ غزوۂ ذات الرقاع یہیں ہوا تھا۔ ابن ہشام وغیرہ کہتے ہیں، اسے ذات الرقاع اس لئے کہتے ہیں کہ انہوں نے جھنڈوں کے ٹکڑے کر دئے تھے۔ علامہ داؤدی کہتے ہیں کہ نمازِ خوف یہاں پڑھی گئی تھی تو چونکہ وہ حصے کرکے پڑھی گئی، اس لئے اسے ذات الرقاع کہتے ہیں۔ ابو موسےٰ اشعری کہتے ہیں، نام رکھنے کی وجہ یہ تھی کہ انہوں نے پاؤں میں کپڑے کے ٹکڑے لپیٹے تھے جیسے صحیح مسلم میں ہے۔ کچھ کہتے ہیں کہ یہ نام ایک درخت کی وجہ سے رکھا گیا تھا جو وہاں موجود تھا، اسے ذات الرقاع کہتے تھے۔ یہ وجہ بھی ہے کہ ان کے گھوڑوں پر سیاہ و سفید رنگ تھا۔

## رُقْعَہ

وادیٔ قریٰ کے قریب ایک جگہ تھی، اس میں نبی کریم ﷺ کی مسجد تھی۔ یہ مجد کا قول ہے جو مطری کے اس قول کے خلاف ہے جس میں انہوں نے مساجدِ تبوک کے ذکر میں کہا ہے کہ یہ لفظ رقعة الثوب (کپڑے کے ٹکڑے) سے لیا گیا ہے۔

## رقمتان

مدینہ کے حرّہ غربیہ میں ایک جگہ تھی، یہ وہاں اونچی دو جگہیں تھیں جن کا رنگ سرخ زردی مائل تھا اور وہ حرّہ (پتھریلی زمین) سیاہ تھا چنانچہ دونوں کا نام رقمتان رکھ دیا گیا۔ کبھی صرف رقمه (واحد) کے معنے میں بھی لے لیتے ہیں چنانچہ علامہ اصمعی کہتے ہیں: رقمتان میں سے ایک مدینہ کے قریب اور دوسرا بصرہ کے قریب تھا۔ علامہ عمرانی کہتے ہیں کہ ان میں سے ایک بصرۃ میں اور دوسرا نجد میں تھا۔

## رَقَم

کبھی اسے رَقُــم بھی پڑھ لیتے ہیں، یہ مدینہ میں ایک جگہ تھی، تیر اس کی طرف منسوب تھے (رقم کے تیر) علامہ نصر کہتے ہیں کہ رقم، غطفان کے گھروں میں پہاڑ تھے جن کے نزدیک چشمہ تھا۔

ابو نعیم نے عامر بن طفیل اور اربد بن صیفی کا وہ واقعہ لکھا ہے جس میں ان دونوں نے مدینہ میں حضور ﷺ کو قتل کرنے کا ارادہ کیا تھا، اربد نے جب اپنا ہاتھ تلوار پر رکھا تو وہ خشک ہو گیا، وہ تلوار نہ تان سکا چنانچہ وہ وہاں سے نکل کھڑے ہوئے، جب حرّہ واقم میں پہنچے تو حضرت سعد بن معاذ اور اسد بن زھیر ان کے پاس آئے اور کہا، اے اللہ کے دشمنو! اوپر دیکھو اللہ تم پر لعنت کرے۔ وہ وہاں سے نکل پڑے، جب مقامِ رقم میں پہنچے تو اللہ تعالیٰ نے اربد پر آسمانی بجلی ڈالی جس نے اسے قتل کر دیا جبکہ عامر وہاں سے نکل گیا، جب وہ حریث کے مقام پر پہنچا تو اللہ تعالیٰ کی طرف سے اس کے جسم پر پھوڑا نکلا پھر ابو نعیم نے اس کی موت کا ذکر کیا۔

## رُقَيْبَہ

رَقَبہ (گردن) کا اسمِ تصغیر ہے۔ علامہ نصر کہتے ہیں کہ یہ لفظ سَفِیْنہ کے وزن پر ہے۔ یہ خیبر میں ایک پہاڑ تھا۔ فتح خیبر میں عینیہ بن حصین کے واقعہ کے اندر اس کا ذکر موجود ہے۔

## رِکابیّہ

رِکاب (اونٹ) کی طرف منسوب ہے' یہ مدینہ سے دس میل کے فاصلے پر ایک جگہ تھی۔

## رَکْنَان

وادیٔ قریٰ کے قریب ایک جگہ تھی۔

## رَکُوبہ

حَلُوبَۃ کے وزن پر ہے۔ یہ عرج کے قریب مکہ اور مدینہ کے درمیان ایک گھاٹی تھی جو مدینہ کی طرف عرج سے تین میل کے فاصلے پر تھی۔

ابن اسحاق سفر ہجرت کا بیان کرتے ہوئے لکھتے ہیں: پھر حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم اور حضرت ابوبکر رضی اللہ عنہ کو دونوں کا راہبر عرج سے لے کر نکلا اور غاير کی گھاٹی کو لے چلا جو رکوبہ کی دائیں جانب تھی۔

علامہ مجد لکھتے ہیں کہ رکوبہ ایک مشکل گھاٹی تھی' اس کے مشکل ہونے کی مثال دی جاتی تھی' حضور ﷺ مدینہ کی طرف ہجرت فرماتے ہوئے اس میں سے گذرے تھے' یہ ورقان پہاڑ اور قدس ابیض کے قریب تھی' تب آپ کے ہمراہ ذوالبجادین تھے۔

یہ رکوبہ' عرج کے پاس تھی' اس میں سے حضور ﷺ گذرے تھے' آپ کو اس طرف لے جانے والے عبد اللہ ذوالبجادین تھے۔ انتہٰی۔

یہ رکوبہ اور غاير کی گھاٹیاں عقبۃ العرج میں تھیں' عقبہ مدارج ہی کو کہتے ہیں جیسے آگے آ رہا ہے۔ حافظ ابن حجر نے عجیب بات کہہ دی' وہ حجاز کی آگ کا بیان کرتے ہوئے لکھتے ہیں کہ: رکوبہ' ایک مشکل قسم کی گھاٹی تھی جو مدینہ سے شام کے راستے میں تھی' حضور ﷺ تبوک جاتے ہوئے یہاں سے گذرے تھے' اسے بکری نے ذکر کیا۔ انتہٰی۔

اگر ابن حجر کی یہ بات درست ہے تو یہ کوئی اور رکوبہ تھی اور آگے عرام سے ورقان کے ذکر میں آ رہا ہے کہ وہ عرج اور رویثہ کے درمیان ایک قبیلے کے سامنے جھکے تھے' اس کے اور قدس ابیض کے درمیان ایک گھاٹی تھی جسے رکوبہ کہتے تھے۔

## الرُّمَّہ

نجد میں ایک کھلا میدان تھا۔ علامہ اصمعی لکھتے ہیں کہ اسے رُمَّۃ اور رُمَّہ پڑھا جاتا ہے' اس کی نچلی طرف اُوپر والی جانب حرۂ فدک سے قصیم تک سات راتوں کا سفر تھا۔ دوسرے حضرات کہتے ہیں کہ یہ رمہ غطفان کے شہروں میں تھا اور فید سے مدینہ جانے والے راستے پر تھا۔

## رُوَاوَہ

زُرَارہ کے وزن پر ہے۔ ابن السکیت کہتے ہیں کہ رواوہ' مبیضی اور ذوالسلاسل' فرع اور مدینہ کے درمیان وادیاں تھیں۔ انتہی۔

علامہ ھجری کا بیان گذر چکا ہے کہ عقیق کا سیلاب غدیر تک جاتا تھا جسے رواۃ کہتے تھے۔ ابوالحسن کہتے ہیں کہ رواۃ' ابن ابی احمد کے خلیقہ (وادی) میں گرتی تھی' ابن شبہ سے گذر چکا ہے کہ عقیق کا سیلابی پانی یلبن میں گرتا تھا پھر وہاں سے رواوتین میں جاتا تھا۔ چنانچہ انہوں نے اسے تثنیہ کا لفظ بنا کر ذکر کیا ہے۔

## رَوْحَاء

علامہ مجد کہتے ہیں کہ یہ مقام فُرع کے ماتحت مدینہ سے چالیس میل کے فاصلے پر تھا جبکہ صحیح مسلم مین یہ فاصلہ چھتیس میل لکھا ہے اور کتاب ابن شبہ مین تیس میل لکھا ہے۔ ابو غسان کہتے ہیں کہ ورقان روحاء میں مدینہ سے چار برد (اڑتالیس میل) کے فاصلے پر تھا۔

ابو عبید بکری لکھتے ہیں کہ مضر بن نزار کی قبر روحاء میں تھی جو مدینہ سے دو راتوں کے سفر پر تھی' روحاء اور مدینہ کے درمیان اکتالیس میل کا فاصلہ تھا۔

علامہ اسدی کہتے ہیں کہ یہ فاصلہ پینتیس یا چھتیس میل کا تھا' ایک اور جگہ بیالیس میل لکھا ہے' پھر لکھا ہے کہ روحاء میں داخل ہونے کے مقام پر دو علامتیں تھیں اور یونہی نکلنے کے مقام پر بھی دو ہی تھیں' انہیں جمع کرنے کی صورت یہ ہے کہ روحاء ایک وادی کا نام تھا اور اسی کے درمیان حاجیوں کی منزل تھی' چنانچہ سب سے کم مسافت پہلے مقام کے ارادے سے لی جائے گی جو مدینہ سے ملتا تھا اور اکثر مسافت آخر میں جبکہ درمیانی' درمیانے مقام میں لی جائے گی۔

ابن الکلبی کہتے کہ جب تُبّع اہلِ مدینہ سے جنگ کے بعد واپس ہوا تو روحاء میں ٹھہرا اور وہاں آرام کیا چنانچہ اسے روحاء کا نام دیا۔ علامہ کثیر سے پوچھا گیا کہ اسے روحاء کیوں کہتے ہیں؟ تو انہوں نے کہا اس لئے کے یہاں آرام ملتا ہے۔

وادئ روحاء کی عظمت کے بیان میں گذر چکا ہے' نبی کریم ﷺ نے فرمایا تھا: یہ جنت کی وادیوں میں سے ایک وادی ہے' یہ الفاظ وادئ روحاء کے بارے میں فرمائے تھے۔ اس کا نام سجاج بھی تھا' پہلے یہ بھی بتایا جا چکا ہے کہ حضرت

موسےٰ بن عمران علیہ السلام ستر ہزار لوگوں کو لے کر روحاء سے گذرے تھے اور پھر یہ بھی بتایا کہ اس وادی میں ستر ہزار نبیوں نے نماز پڑھی تھی۔

ابن اسحاق حضور ﷺ کے بدر کے سفر کے بارے میں لکھتے ہیں کہ: آپ سجسج میں ٹھہرے' یہی بئرِ روحاء کہلاتا تھا۔ علامہ اسدی لکھتے ہیں: روحاء میں حضور ﷺ کے آثار ملتے ہیں' وہاں دو محل ہیں اور بہت سے کنوئیں ہیں جن میں سے ایک کا نام مروان ہے جس کے قریب خلیفہ رشید کے اونٹ بٹھانے کی جگہ تھی' یہیں حضرت عثمان بن عفان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا کنواں تھا' ایک کنواں حضرت عمر بن عبد العزیز کے نام سے مشہور تھا' ایک کنوئیں کا نام واثق تھا' یہ یہاں کے سب کنوؤں سے بُرا تھا۔ اس کی گہرائی ساٹھ ہاتھ تھی۔ آج کل اس جگہ اونٹ بٹھانے کی جگہ ہے جہاں حاجی اونٹ بٹھاتے ہیں' اسے برکۃِ طار کہتے ہیں' شاید حضرت عمر بن عبد العزیز نے اسے نئے سرے سے بنایا تھا اور پھر وقف کر دیا تھا۔

بقیع غرقد کے فضائل میں جو کچھ بیان ہو چکا ہے' اس سے اس کے درمیان ایک قبرستان کا نام رکھا ملتا ہے جس مین حضرت ابراہیم علیہ السلام کا مزار شریف روحاء میں ہونے کا ثبوت موجود ہے۔

## روضة الاَجاوِل

ودّان کے قریب ایک جگہ تھی' یہاں نصیب نامی شاعر کے مکان تھے۔

## رَوضةُ الاَجْدَاد

غطفان کے شہروں میں ایک بستی تھی جو وادئ قصیبہ میں تھی جو خیبر سے پہلے اور وادئ عصیرہ کے مشرق میں تھی۔

ھیثم بن عدی لکھتے ہیں کہ عروہ الصعالیک اور اس کے ساتھی چھپ کر خیبر کی طرف گئے' وہاں جا کر گدھے کی آواز نکالی' ان کا خیال تھا کہ یوں ان سے وباء دور ہو جائے گی لیکن عروہ نے ایسا نہیں کیا تھا۔

ھیثم کہتے ہیں کہ وہ اس میں داخل ہوئے' پھر واپس آ گئے اور جب روضۃ الاجداد میں پہنچے تو عروہ کے علاوہ سب کے سب مر گئے۔

## روضة الأُجَام

اسے روضۃ آجام بھی کہتے تھے' نقیع کی طرف ایک مقام تھا۔ علامہ ھجری نے اسے وادئ عقیق مین گرنے والی وادیوں میں شمار کیا ہے۔ یہ حرّہ میں تھی۔

## روضة خَاخ

خاخ کے بیان میں اس کا ذکر آ چکا ہے۔

## روضة الخُرج

مدینہ کے قریب ایک جگہ تھی۔

## روضة الخُرجَین

یہ لفظ خرج کا تثنیہ ہے جس کا ذکر اوپر آ گیا' شاید یہ وہی ہے۔

## روضة الخَزرُج

یہ وہی لفظ خزرج ہے جو انصار کا ایک قبیلہ تھا۔ یہ مدینہ کے قریب تھا' حفص اموی لکھتے ہیں:

"دھیان کرو' کیا تم ان کی عورتوں کو بارقیہ یا روض الخزرج میں دیکھ رہے ہو؟"

## روضة الحماط

اسی کا نام روضۃ ذات الحماط تھا اور ذات الحماط' عقیق کی ایک وادی تھی۔

## روضة ذی الغُصُن

غصن بمعنی ٹہنی والا لفظ ہے' یہ روضہ (باغ) ذی الغصن کی طرف منسوب ہے' یہ بھی عقیق کی ایک وادی تھی۔

## رَوضةُ الصُّهَا

یہ مدینہ کے شمال میں مدینہ سے تین دنوں کے سفر پر تھی۔ صَہا' صَہوۃ کی جمع ہے' اس نام کے وہاں کئی پہاڑ ہیں' اسی وجہ سے اسے روضۃ الصہاء کہتے تھے۔

## روضة عُرَینه

جُہَینہ کے وزن پر ہے۔ یہ رھضیّہ کی طرف ایک وادی تھی' یہاں گھوڑے چرا کرتے تھے پھر دورِ جاہلیت اور دورِ اسلام میں اس کی نچلی جانب قلھی تھی' یہ بنو جذیمہ بن مالک کا ایک کنواں تھا۔

## روضة العقیق

مدینہ میں عقیق کا ایک مقام تھا۔

## رَوضةُ الفِلاج

فلجه میں اس کا ذکر آ رہا ہے' یہ بھی عقیق کی وادیوں میں سے تھی۔

## رَوْضَةُ مَرَخ

یہ مدینہ میں ایک مقام تھا۔

## روضة نَسر

حرفِ نون میں اس کا ذکر آ رہا ہے۔

## ذو رَوَلان

رھضیّہ کے قریب بنو سلیم کی ایک وادی جہاں قلھی تھی۔

## رُوَیثه

ابن السکیت کہتے ہیں کہ یہ مکہ اور مدینہ کے درمیان ایک گھاٹ تھی اور جب تبّع مدینہ میں لڑائی کے بعد واپس ہوا تھا تو اسی رویثہ میں ٹھہرا تھا۔ وہ آہستہ آہستہ چل رہا تھا لہٰذا اس کا نام رویثہ رکھا کیونکہ عرب رَاثَ کہتے ہیں تو اس کا معنٰی ڈھیل کرنا لیتے ہیں۔ یہ مدینہ سے ایک رات کے سفر پر تھی۔ یہ تو مجد نے کہا ہے لیکن صحیح یہ ہے کہ دو رات کی مسافت پر تھی کیونکہ یہ وادیٔ روحاء کے بعد دس سے کچھ زائد میل پر تھی' اسی لئے اسدی کہتے ہیں کہ یہ مدینہ سے ساٹھ میل کے فاصلے پر تھی۔

## رُهَاط

غُراب کے وزن پر ہے' ینبع کی سرزمین میں ایک جگہ تھی۔ یہاں ھذیل نامی قبیلہ کا بت ''سواع'' رکھا تھا۔ یہ تو ابن کلبی نے لکھا ہے لیکن راشد بن عبد ربہ کہتے ہیں کہ سواع' رہاط کی اونچی جگہ پر تھا' قبیلۂ ذھیل اور سلیم میں سے بنو ظفر اس کی عبادت کرتے تھے۔ اس کے بعد راشدؓ نے سواع میں ہاتف کی آواز کا ذکر کیا ہے جس میں اسؔ نے حضور ﷺ کی نبوت کا اعلان کیا تھا۔ پھر یہ بتایا ہے کہ انہوں نے وہاں دو سانپ دیکھے تھے جو سواع کے اردگرد کو چاٹتے تھے اور جو کچھ لوگ وہاں رکھ جاتے تھے' اسے کھا لیتے تھے اور پھر سواع پر پیشاب کر دیتے تھے چنانچہ یہ شعر پڑھا:

''کیا یہ ربّ ہے' جس کے سر پر دو سانپ پیشاب کرتے ہیں' وہ بھی تو یقیناً ذلیل ہوتا ہے
جس پر لومڑیاں پیشاب کر جائیں۔''

پھر یہ ذکر کیا ہے کہ وہ حضور ﷺ کی خدمت میں پہنچے کہ رہاط سے کچھ جگہ لیں چنانچہ آپؐ نے انہیں اتنی جگہ دی جو گھوڑا دوڑانے اور تین مرتبہ پتھر پھینکنے جتنی تھی پھر آپ نے انہیں پانی کا ایک برتن دیا جس میں تھوک دیا تھا اور فرما دیا تھا کہ اسے اس جگہ پر چھڑک دو اور لوگوں کو یہاں آنے سے نہ روکو' انہوں نے یونہی کیا چنانچہ وہ پانی اُبل پڑا' انہوں نے اسے محفوظ کیا اور وہاں کھجور کے درخت لگا دیئے۔ اس سارے رہاط سے لوگ پانی پیتے اور انہوں نے اس کا نام ''ماء

الرّسول ﷺ‘‘ رکھ دیا۔ اھل رھاط اس پانی سے نہایا کرتے اور شفاء حاصل کیا کرتے۔

علامہ عرام کہتے ہیں کہ یہاں شمنصیر نامی پہاڑ کے گرد ایک بستی تھی جسے رھاط کہتے تھے‘ یہ مکہ کے قریب تھی اور مدینہ کو جانے والے راستے پر تھی‘ اسی کے قریب حدیبیہ تھا۔ یہ بنو سعد اور بنو مسروح کے گھر تھے جن میں حضور ﷺ نے پرورش پائی تھی۔

صاحب المسالک و الممالک علامہ اقشہری سے روایت کرتے ہیں کہ سایہ‘ رھاط اور عران‘ مدینہ کے ماتحت تھے۔

## رَیَّان (سیر ہو جانا)

یہ لفظ عطشان (پیاسا ہونا) کے مقابلے میں بولا جاتا ہے۔ یہ بنو حارثہ کا قلعہ تھا‘ یونہی بنو زریق کا بھی قلعہ تھا۔ اس نام کی وہاں ایک وادی بھی تھی اور بنو عامر کا ایک پہاڑ بھی تھا پھر اسی نام کی معدن بنو سلیم میں ایک جگہ تھی جہاں ایک محل تھا‘ ہارون رشید حج کو جاتا تو یہاں ٹھہرا کرتا تھا۔

## رَیُدان

یہ آل حارثہ بن سہل بن اوس کا مدینہ میں ایک قلعہ تھا۔ اسے یاقوت نے نقل کر کے کہا ہے: میں انصار کی ایسی شاخ کو نہیں جانتا جسے آلِ حارثہ کہا جاتا ہو۔

میں کہتا ہوں‘ وہ جو ابن زبالہ نے ذکر کیا ہے کہ بنو واقف بن امرئ القیس بن مالک بن اوس نے ایک قلعہ بنایا تھا جسے ریدان کہتے تھے‘ اس کا مقام مسجد فضیخ کے قبلہ کی جانب تھا‘ اسی کے بارے میں قیس بن رفاعہ نے کہا تھا:

> ’’ان کے بعد میں مزید زندگی کی اُمید کیونکر رکھوں اور پھر وہ بھی اس وقت جب اھلِ ریدان جا چکے ہیں۔‘‘

## رِئُم

اسے عیاض نے یونہی لکھا ہے لیکن علامہ مجد نے اسے ضعیف کہا ہے‘ وہ لکھتے ہیں: یہ لفظ ساکن ہمزہ سے ہے (رِئْم) یہ مزینہ کی وادی تھی جس میں ورقان آ گرتی تھی۔ پہلے بتایا جا چکا ہے کہ یہ عقیق کی وادیوں میں سے تھی جو اسے ملتی اور پھر ابن ابی احمد کی وادی میں گر جاتی چنانچہ مؤطا میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے ہے کہ وہ سوار ہو کر ریم کو گئے اور اس سفر میں آپ نے نماز قصر پڑھی۔ یحییٰ کہتے ہیں: مالک نے کہا کہ یہ تقریباً چار برد (اڑتالیس میل) کے فاصلے پر تھی۔ علامہ عیاض لکھتے ہیں کہ مصنّفِ عبد الرزاق میں تیس میل کا فاصلہ لکھا ہے لیکن جو کچھ علامہ مجد نے لکھا ہے وہ مالک اور مصنفِ عبد الرزاق کے خلاف ہے۔ پھر طبقات ابن سعد میں ہے کہ حضرت عبد اللہ بن بحینہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ بطن ریم میں اترے تھے جو مدینہ سے تیس میل کے فاصلے پر تھی چنانچہ ان روایات کو جمع کرنا پوشیدہ نہ رہا پھر سفر ہجرت میں

یوں آتا ہے: حضور ﷺ چلے اور بطنِ ریم میں اُترے پھر وہاں سے قباء کو تشریف لے گئے چنانچہ حضرت حسان بن ثابت رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں:

> ”ہم نہ تو ریم میں گئے، نہ حمت میں اور نہ ہی صَوَرای میں، ہم تو جولان کی ایک گھاٹی میں گئے جو وہاں موجود تھی۔“

یہ جولان، دمشق میں ایک بستی تھی۔

## ریمہ

یہ دِیمہ کے وزن پر ہے جو مدینہ کے قریب باغ کی بالائی جانب بنوشیبہ کی وادی تھی۔

## ذوریش

ریش کا لفظ ریش الطائر (پرندے کے پَر) سے لیا گیا ہے۔ اس کا ذکر مدینہ کی وادیوں کے بیان میں گزر چکا ہے۔

# حَرفُ الزّای

## زبالة الزّجّ

یہ جگہ مدینہ کے شمال میں تھی، جو مدینہ اور یثرب کے درمیان تھی، یہاں رہنے والوں کے دو قلعے تھے اور یہ وہی تھے جن کا ذکر ابو الحمراءؔ کے ٹیلے میں گزر چکا ہے پھر عراق کے راستے میں بھی زبالہ نامی ایک جگہ تھی جو مدینہ کے ماتحت نہیں تھی۔

## زُجّ

علامہ مجد نے یونہی لکھا ہے لیکن ابن سیّد الناس نے زُخّ لکھا ہے، یہ ضریّہ وادی کی جانب ایک مقام تھا، رسول اللہ ﷺ نے اصید بن سلمہ بن قرط کو ضحاک الکلابی کے ہمراہ قُرطاء کی طرف بھیجا تھا۔ یہ قرط، قریط اور قریط قبیلے ابوبکر بن کلاب سے تعلق رکھتے تھے، وہ انہیں اسلام کی دعوت دینے گئے تھے، انہوں نے ان سے جنگ کی اور شکست دی چنانچہ اصید اپنے باپ سلمہ سے زجّ میں ملا جو ضریہ کی جانب تھا۔ زجّ نامی جگہ وہ بھی تھی جو رسول اللہ ﷺ نے عداء بن خالد کو دیدی تھی جو بنو ربیعہ بن عامر سے تعلق رکھتے تھے۔

## زَرَاب

یہ کِتَاب کے وزن پر ہے، اسے ذات الزراب بھی کہتے تھے، مساجد تبوک میں اس کا ذکر آچکا ہے۔

## زَرُوْد

یہ ابرق العزاف کے قریب ایک جگہ تھی جیسے صحیح بخاری و مسلم میں عزاف کے بیان سے پتہ چلتا ہے پھر خیبر کے بیان میں جو کچھ بتایا جا چکا ہے اس سے پتہ چلتا ہے کہ یہ اس شخص کا نام تھا جو اولادِ عاد میں سے سب سے پہلے یہاں ٹھہرا تھا۔

## زُرَیق

اسمِ تصغیر ہے۔ اسے بنو زریق کی بستی بھی کہا جاتا تھا اور مسجد بنی زریق بھی، دونوں کا ذکر ہو چکا۔

## زَغَابہ

سَحَابہ کے وزن پر ہے۔ یہ عقیق کے آخر میں، حضرت حمزہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے مزار مبارک کی مغربی جانب وہ جگہ تھی جہاں سیلاب جمع ہوتے تھے، یہ اضم کی بالائی جانب تھی جیسے ھجری وغیرہ سے بیان کیا جا چکا، ابن اسحاق نے لکھا ہے کہ قریش وادیٔ رومہ میں جرف اور زغابہ کے درمیان سیلابوں کے اکٹھا ہونے کی جگہ اُترے تھے۔

ابو عبید بکری نے اسے زُعَابہ لکھا ہے۔ محمد بن جریر کہتے ہیں کہ یہ جرف اور غابہ کے درمیان عمدہ جگہ تھی کیونکہ زعابہ کو کوئی نہیں جانتا۔ یاقوت کہتے ہیں: ایسی بات نہیں کیونکہ حدیثِ پاک میں آتا ہے کہ نبی کریم ﷺ نے فرمایا تھا: کیا تم اس اعرابی سے تعجب نہیں کرتے، اس نے مجھے میری اونٹنی ھدیہ میں دی جسے میں جانتا تھا، یہ مجھ سے یومِ زعابہ پر چلی گئی تھی۔ میں نے اسے چھ بکرات دیں تو یہ ناراض ہو گیا، اور پھر یہ لفظِ زعابہ ایک اور حدیث میں بھی آتا ہے تو غیر معروف کیسے ہوا؟

## زَمْزَم

اس کنوئیں کا نام ہے جو عقیق کی طرف جانے والے کی دائیں طرف آتا تھا، یہ جادہ سے دور تھا جیسے کنوؤں کے بیان میں آ چکا۔ اس کا یہ نام اس لئے پڑا کہ لوگ اس کے پانی کو بڑا متبرک سمجھتے تھے اور دنیا بھر میں لے جاتے تھے۔

## ذُوْر

حجاز میں ایک پہاڑ ہے یا سوارقیہ کے قریب ایک وادی تھی۔ اس کی وضاحت لفظ منور میں آئے گی۔

## زَوْرَاء

اس کا ذکر بلاط اور بازارِ مدینہ میں آ چکا اور ابن شبہ نے حضرت عباس کے گھروں میں بیان کیا کہ: ان میں سے وہ گھر تھا جو زوراء میں تھا، مدینہ کے بازار میں احجارِ زیت کے پاس اور پہلے آ چکا ہے کہ احجارِ زیت حضرت مالک بن سنان کی قبر کے نزدیک تھا کیونکہ ابن زبالہ کی روایت میں ہے کہ انہوں نے انہیں بازار میں دفن کیا چنانچہ انہیں اصحابِ

عباء کی مسجد کے قریب دفن کیا' وہیں احجار زیت والی جگہ تھی' چنانچہ زوراء' مدینہ کے بازار سے وہ جگہ تھی۔ یہ بھی کہتے ہیں کہ زوراء مدینہ کے بازار کا نام تھا۔

صحیح مسلم شریف میں حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی روایت ہے کہ نبی کریم ﷺ اور آپ کے صحابہ کرام زوراء میں تھے اور یہ زوراء مدینہ میں بازار کے اندر تھا۔

بخاری شریف میں ہے کہ حضرت عثمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے (جمعہ میں) تیسری اذان کا اضافہ زوراء میں فرمایا تھا' امام بخاری کہتے ہیں کہ زوراء بازار میں ایک جگہ تھی۔ ایک اور روایت میں ہے کہ یہاں دوسری اذان کا اضافہ فرمایا تھا۔

یہ جو انہوں نے تیسری اذان کہا ہے تو اس کا مطلب اقامت (تکبیر تحریمہ) ہے۔ ابن ماجہ میں ہے: بازار میں ایک گھر میں اذان کا ذکر کیا ہے جسے زوراء کہتے تھے اور دار السوق کی وضاحت سے (جسے ابن ہشام نے لیا تھا) پتہ چلتا ہے کہ بازار میں حضرت عثمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا ایک گھر تھا جسے زوراء کہا جاتا تھا' اسی لئے ابن شبہ نے لکھا ہے کہ: حضرت عثمان نے گھر بنایا تھا جسے زوراء کہا جاتا تھا تو یہ وہی تھا جس میں آپ نے اذان کا اضافہ فرمایا تھا اور گویا کہ بازار میں اسے اسی جگہ کی وجہ سے زوراء کہا گیا (قابلِ زیارت)۔

ابن حجر کہتے ہیں کہ: ابن بطال کو یقین ہے زوراء مسجد کے دروازے کے قریب ایک پتھر تھا' لیکن یہ محل نظر ہے کیونکہ ابن اسحاق کی روایت میں' جو زہری سے ہے' ابن خزیمہ اور ابو داؤد نے لکھا ہے کہ: حضرت عثمان نے تیسری اذان کا اضافہ بازار والے گھر میں کیا جسے زوراء کہتے تھے۔

ابن حجر بھی اس حدیث انس میں بتاتے ہیں' جس میں پانی زیادہ کرنے کا ذکر ہے: یہ جو انہوں نے زوراء کہا ہے تو وہ مدینے میں بازار کے پاس مشہور جگہ تھی۔

داؤدی کا خیال ہے کہ یہ جگہ منارہ کی طرح بلند تھی' شائد یہ مفہوم انہوں نے حضرت عثمان کے اس حکم سے نکالا ہے کہ آپ نے اس جگہ پر چڑھ کر اذان دینے کا حکم دیا تھا اور یہ جگہ' جہاں اذان پڑھی جاتی تھی۔ زوراء میں تھی' خود زوراء نہ تھی۔

عتبیہ کے مضمون سے پتہ چلتا ہے کہ زوراء میں بازار مدینہ کے اندر ایک منارہ تھا اور شاید یہ اسی گھر میں تھا جس پر اذان پڑھی جاتی تھی۔

اس پچھلے بیان سے' جس میں بقیع غرقد کی فضیلت موجود ہے' یہ بات ثابت ہوتی ہے کہ زوراء اس جگہ کا نام بھی تھا جس میں حضرت ابراہیم علیہ السلام دفن ہیں۔

علامہ برہان بن فرحون کہتے ہیں: ابن حبیب نے کہا: نبی کریم ﷺ جب منبر پر چڑھ جاتے تو بیٹھ جاتے' پھر مؤذن اذانیں کہتے' یہ لوگ تین افراد تھے جو مناروں پر یکے بعد دیگرے اذانیں پڑھا کرتے تھے اور جب تیسرا شخص

اذان پڑھ لیتا تو آپ کھڑے ہو کر خطبہ دیتے یہ سلسلہ جاری رہا اور جب حضرت عثمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا دور آیا اور لوگ گھنے ہو گئے تو آپ نے حکم دیا کہ زوال ہونے پر زوراء میں اذان پڑھیں، یہ جگہ بازار میں تھی، اذان کا مقصد یہ ہوتا کہ لوگ صفیں بنا کر بیٹھ جائیں۔ یہ جگہ بقیع کی طرف تھی۔ جب آپ منبر پر بیٹھ جاتے تو اذان کہنے والے منبر پر اذان کہتے۔ پھر ہشام بن عبد الملک نے زوراء میں کہی جانے والی اذان کی جگہ تبدیل کردی اور مسجد نبوی میں شروع کرا دی، یہاں زوال کے بعد منار پر ایک شخص کھڑا ہو کر اذان کہتا تھا اور جب ہشام باہر نکلتا تو سارے موذن اس کے سامنے کھڑے ہو کر اذان کہتے۔

یہ جو انہوں نے کہا ہے: فی ناحیة البقیع ”وہ بقیع کے پہلو میں تھی“ اس میں ”بقیع“ سے مراد بازارِ مدینہ میں بقیع خیلِ ہے، بقیع الغرقد نہیں کیونکہ بازار مدینہ اس کے پہلو میں نہ تھا۔

## زُهرَہ

یہ وہی ثُبرہ والی جگہ ہے، یہ حرہ اور سافلہ کے درمیان ”قف“ کے ساتھ ایک نرم ہموار زمین تھی اور یہ مدینہ کی سب سے بڑی بستی تھی، اس بستی میں تین سو کاریگر تھے۔ ان کے دو قلعے تھے جو ”عرض“ کے راستے پر وہاں آتے تھے یہاں حرہ سے نیچے جاتے تھے، اس حرہ سے حرہ شرقیہ مراد ہے کیونکہ اسے حرہ زہرہ کے نام سے جانا جاتا تھا، اس کا مقصد یہ ہے کہ زہرہ وہ تھا جو عالیہ سے ملتا تھا اور وہ جو اس سے اُترتا، وہ سافلہ ہوتا اور عالیہ کے نزدیک مسجد سے ایک میل تھا جیسے آ رہا ہے اور اس کی ترجیح ان کا یہ قول ہے ”جو قف سے ملتا ہے“ کیونکہ آگے آ رہا ہے کہ وہ حضور ﷺ کے رفاہی مال کے قریب تھا۔

## الزّین

یہ لفظ شَین (عیب لگانا) کے مقابلے کا ہے۔ یہ جرف میں زرعی مقام تھا۔ ابن زبالہ کہتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے وہ کھیتی بوئی تھی جسے ”زین“ کہا جاتا تھا، یہ ”جرف“ میں تھی۔

# حَرفُ السِّین

## سائر

یہ لفظ صَابِر کے وزن پر ہے، مدینہ کے نزدیک ایک جگہ تھی۔

## سَافِلہ

عَالِیہ (بالائی) کے مقابلے میں بولا جاتا ہے، عالیہ کا قریبی مقام ”سنخ“ تھا جو مسجد سے ایک میل کے فاصلے پر

تھا اور جو اس سے نچلی طرف (مدینے کو) تھا، اسے سافلہ کہا جاتا تھا، یہ بھی ممکن ہے کہ ان کے درمیان وہ جگہ ہو جسے واسطہ کہا جائے کیونکہ زہرہ کے بیان میں گزر چکا ہے کہ حرّہ اور سافلہ کے درمیان تھی، آج کل لوگ یہ لفظ بول کر وہ حصہ مراد لیتے ہیں جو مدینہ کی شامی جانب ہے اور عالیہ سے مراد وہ حصہ لیا جاتا ہے جو اس کے قبلہ والی جانب ہے۔ پہلے کی تائید وہ روایت کرتی ہے جو ابنِ اسحاق سے ہے کہ نبی کریم ﷺ جب بدر میں کامیاب ہو گئے تو ابن رواحہ کو بشارت دینے کے لئے اھلِ عالیہ کی طرف بھیجا جبکہ حضرت زید بن حارثہ کو اھلِ سافلہ کی طرف بھیجا تھا۔

حضرت اُسامہ بن زید کہتے ہیں: ہمارے پاس اس وقت فتح کی یہ اطلاع پہنچی جب ہم حضرت رقیہ بنت رسول اللہ ﷺ کی قبر شریف پر مٹی برابر کر چکے تھے پتہ چلا کہ حضرت زید بن حارثہ آئے ہیں، جب وہ مصلّے کے قریب تھے تو میں اُن کے پاس گیا، لوگوں نے انہیں گھیر رکھا تھا۔

## سَاہِیَہ

وادیٔ عقیق میں اس کا ذکر آ چکا ہے۔

## سَایَہ

غایہ کے وزن پر ہے۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ یہ مدینہ کے ماتحت ایک وادی تھی، اس پر والی ہمیشہ مدینہ ہی کا ہوتا تھا البتہ ہمارے اس دور میں یوں نہیں ہے، اب وہ مدینہ کی ماتحتی سے دوسرے مقامات کی طرح نکل چکا ہے۔ اس مقام ''سایہ'' میں کھجور کے درخت، زرعی زمین، کیلا، انار اور انگور کے درخت تھے۔ بنیادی طور پر یہ حضرت علی بن ابو طالب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی اولاد کا تھا، یہاں سے جبلِ سَراۃ دکھائی دیتا تھا نہ کہ عسفان۔

ابن جنّی کہتے ہیں کہ شمنصیر ''سایہ'' کا پہاڑ تھا، یہ عظیم وادی تھی، اس میں ستّر سے زائد چشمے تھے، یہ وادی ''اَلج'' کہلاتی تھی۔

## سَبّر

یہ ثَیِّب کے وزن پر ہے، بدر اور مدینہ کے درمیان ایک جگہ تھی۔ رسول اللہ ﷺ نے بدر کی غنیمتیں یہیں تقسیم فرمائی تھیں۔

## سِتَار

ضریّہ کی چراگاہ میں ایک پہاڑ تھا، ایک اور پہاڑ بھی تھا جو عالیہ کے اندر دیارِ سلیم میں تھا پھر سیاہ رنگ کے پہاڑ تھے جو ینبع سے تین دن کی مسافت پر تھے۔

## سَجاسِج

یہ وادیٔ روحاء کا نام ہے۔ ابن شبہ کہتے ہیں کہ سجسج وہ ہوا ہے جس میں نہ گرمی ہو اور نہ سردی۔

## سُدّ

یہ عبد اللہ بن عمرو بن عثمان کا بند تھا' اسی سے رانوناء آتی تھی' وہاں ایک اور بند بھی تھا جو ”عیر“ کے قریب تھا جسے آج کل ”سدِ عنتر“ کہتے ہیں۔ علامہ عرام کہتے ہیں کہ ”سد“ جبلِ شوران پر بارش کا پانی ہوتا تھا جسے حضور ﷺ نے بند کرنے کا حکم فرمایا تھا۔ اس سدّ سے قباء تک ایک نالہ جاتا تھا۔ گویا وہ پہلی سدّ مراد لیتے ہیں کیونکہ شوران میں ان کی کلام سے یہی نکلتا ہے کہ وہ جبلِ عیر تھا۔

کچھ کہتے ہیں کہ سدّ' مدینہ میں ایک جگہ تھی جس میں اسماعیل بن عبد الرحمٰن سدّی بیٹھا کرتے تھے چنانچہ انہی کے نام سے منسوب ہوگئی۔

علامہ حارثی کہتے ہیں کہ سدّ' آسمانی پانی تھا جو بنو عوال کی سخت زمین میں اترتا تھا تو شاید یہ وہی سدّ ہے جو اس راستے میں موجود تھی جس میں سے خلیفہ ہارون رشید مدینہ سے معدن بنوسلیم کی طرف جاتے گذرتے تھے' یہ مدینہ اور رحضیہ کے درمیان مدینہ سے بیس میل کے فاصلے پر تھی۔ علامہ اسدی کہتے ہیں کہ وہاں بہت سا پانی موجود تھا جس کے لئے حضرت معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے بند باندھا تھا تاکہ وہ پانی وہاں روکا جا سکے۔

مجھے ایک امیرِ مدینہ نے بتایا تھا کہ یہ جگہ ”ھکو“ کے قریب مشہور ہے۔

بخاری کی اس حدیث میں ہے جس میں حضور ﷺ کے حضرت صفیہ کو ہمراہ لئے خیبر سے واپسی کا ذکر ہے کہ: ”آپ حضرت صفیہ کو لے کر چلے اور جب سدّ الروحاء تک پہنچے تو وہ حلال ہوگئیں۔“ یہ روحاء خیبر کے راستے پر نہ تھا' اسی وجہ سے علامہ کرمانی نے کہا ہے: کہتے ہیں کہ درست نام سدّ الصہباء تھا اور یہ بات بخاری کی ایک اور روایت میں ملتی ہے: آپ حضرت صفیہ کو لے کر چلے اور ہم سدّ الصہباء میں پہنچے۔ اسے حافظ ابن حجر نے درست کہا ہے اور یہ ابو داؤد وغیرہ کی روایت ہے۔ ابن سعد نے خیبر کے بارے میں یہ روایت بیان کی ہے کہ وہ جگہ جہاں حضرت صفیہ سے ہم بستری ہوئی' خیبر سے چھ میل کے فاصلے پر تھی۔

علامہ عیاض کہتے ہیں سدّ الروحاء اس کا پہاڑ تھا' اسے سُدّ اور سَدّ پڑھا جاتا ہے' سدّ الصہباء بھی یونہی ہے۔ سَدّ بمعنٰی ہبہ بھی ہے' وہ کہتے ہیں کہ سُدّ' خلقت کے معنٰی میں ہے اور سَدّ انسان کے فعل کو کہتے ہیں۔ علامہ کسائی کہتے ہیں کہ دونوں لفظ ایک جیسے ہیں۔ انتہٰی۔

علامہ یاقوت کی کلام سے پتہ چلتا ہے کہ جو جگہ ہمارے اس دور میں ”حبس“ کے نام سے مشہور ہے اور وادیٔ قناۃ کی بالائی جانب ہے' اسے بھی سدّ کہا جاتا ہے۔

## سَرَاۃ

حجاز کے بیان میں اس کا ذکر گذر چکا ہے۔

## ذُوالسَّرح

یہ مَلل کے نزدیک ایک وادی تھی۔

## سِرّ

یہ جَہر (بلند آواز) کے مقابلے میں بولا جاتا ہے۔ یہ نجد میں بنو اسد کی جگہ تھی اور پھر بنو تمیم کے علاقے میں بھی ایک جگہ تھی اور سین پر پیش (سُرّ) سے حجاز میں ایک جگہ تھی جو بنو مُزینہ کے علاقے میں تھی۔

## سَرَّارہ

اس کا ذکر بنو بیاضہ کے گھروں کے بیان میں آ چکا ہے اور رانوناء میں بھی آ چکا ہے۔ یہ وہ باغ نہیں جو آج کل قباء کے نزدیک "سرارہ" کے نام سے مشہور ہے۔

## سَرَغ

وادیٔ تبوک میں ایک بستی تھی جو مدینہ سے تیرہ دن کی مسافت پر تھی، یہ مدینہ کی آخری جگہ تھی۔

## سُرَیْر

یہ زُبَیر کے وزن پر ہے۔ یہ مدینہ کے قریب ایک وادی تھی۔ سریر "جار" کے قریب ایک جگہ تھی۔ یہ کشتی والوں کی بندرگاہ تھی جو حبشہ سے مدینے کو آئے تھے۔ پھر سریر نامی ایک وادی بھی تھی جو خیبر کے نزدیک تھی۔

## سَعُد

یہ وہ جگہ تھی جس کے قریب غزوۂ ذات الرقاع ہوا تھا۔ علامہ نصر کہتے ہیں: یہ ایک پہاڑ تھا جو "کدید" سے تیس میل کے فاصلے پر تھا، اس کے پاس گھر تھے، بازار تھا اور میٹھا پانی تھا اور یہ فید کے راستے میں تھا اور اس شخص نے غلطی کی جو یہ کہتا ہے کہ مدینہ سے تین میل کے فاصلے پر تھا۔

## سَفا

قَفا کے وزن پر ہے۔ مدینہ کے قریب ایک جگہ تھی۔

## سَفان

پہلے لفظ سفا کا تثنیہ ہے۔ یہ وہ وادی تھی جو سمندر کے قریب اِضم میں گرتی تھی۔

## سَفوآن

بدر کی جانب ایک وادی تھی۔ بدرِ اولیٰ کے موقع پر حضورﷺ کرز فہری کو تلاش کرتے ہوئے یہاں تک پہنچے تھے جس نے مدینے کے میدان میں ڈاکہ ڈالا تھا۔

## سِقایۃ سلیمان

یہ سلیمان بن عبد الملک کا جرف کے مقام پر کنواں تھا۔ مدینہ سے شام کو جانے والے یہاں لشکر ٹھہراتے تھے اور یونہی قدیم دور میں مصر کی جانب جانے والے یہاں رکتے تھے۔

## سُقیا

حرہ غربیہ میں حضرت سعد کا کنواں تھا جیسے کنوؤں کے بیان میں بتایا جا چکا۔ یہ فُرع کے ماتحت حاجیوں کے راستے میں ایک بڑی بستی تھی۔ علامہ سہیلی کہتے ہیں: اسے سقیا کہنے کی وجہ یہاں کے بہت سارے کنوئیں تھے اور اونٹوں کے بیٹھنے کی جگہ تھی۔

علامہ کثیر سے پوچھا گیا: اس کا نام سقیا کیوں رکھا گیا؟ تو انہوں نے کہا' اس لئے کہ وہاں یہ لوگ میٹھا پانی پیا کرتے تھے۔

ابن الفقیہ لکھتے ہیں کہ تبّع جب مدینے سے واپس ہوا تو سقیا میں ٹھہرا تھا' اسے پیاس لگی تو یہاں بارش ہوگئی چنانچہ اس نے اس کا نام سقیا رکھ دیا۔

خوارزمی کہتے ہیں کہ سقیا' سمندر کے قریب ایک بڑی بستی تھی جو مدینہ سے ایک دن اور ایک رات کی مسافت پر تھی جبکہ علامہ مجد کہتے ہیں کہ یہ مدینہ سے دو دن کی مسافت پر تھی۔ مجد نے یہ پیمائش ابو داؤد سے لی ہے چنانچہ قتیبہ کہتے ہیں کہ یہ وہ کنواں تھا کہ اس کے اور مدینہ کے درمیان دو دن کی مسافت تھی۔ ابو داؤد نے یہ بات وہاں لکھی ہے جہاں سقیا سے میٹھا پانی پینے کا ذکر ہے جبکہ پہلے بتایا جا چکا ہے کہ میٹھے پانی والی حدیث سعد کے کنوئیں کے بارے میں تھی جو مدینہ میں تھا اور اس کے باوجود یہ بات قاحہ کے بارے میں علامہ مجد کے قول کے مخالف ہے کہ یہ سقیا سے ایک میل پہلے اور مدینہ سے تین دن کی مسافت پر تھا بلکہ انہوں نے یہاں تک کہا ہے کہ ابواء' مدینہ سے تقریباً پانچ دن کی مسافت پر تھا حالانکہ پہلے بتایا جا چکا ہے کہ یہ سقیا کے بعد گیارہ میل کے فاصلے پر تھا چنانچہ سقیا' مدینہ سے تقریباً چار دن کی مسافت پر ہوا' اسدی نے اسی کی تصریح کی ہے کیونکہ ان کے قول کا حاصل یہ ہے کہ ان دونوں کے درمیان

چھیانویں میل کا فاصلہ تھا اور سقیا آج کل اسی مسافت پر مشہور ہے، مجد کا یہ قول اسی کے موافق ہے: فُرع، سقیا کی بائیں جانب مدینہ سے چھیانویں میل کے فاصلے پر تھا۔

## سقیفہ بنی ساعدہ

اس کا ذکر بنو ساعدہ کے گھروں اور مسجدوں کے ذکر میں گذر چکا۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ سقیفہ بنو ساعدہ ایک چھپر تھا جس کے نیچے یہ لوگ بیٹھا کرتے تھے، یہ بئر بضاعہ کے قریب تھا۔ شائد انہوں نے اس کا قرب بئرِ بضاعہ کی طرف سے تھا کیونکہ گذر چکا ہے کہ یہ رھط سعد کی منزل میں تھا، حضرت سعد ہی وہ شخص ہیں جنہوں نے بیعتِ ابوبکر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے موقع پر کہا تھا: امیر کبھی تم میں سے ہوگا اور کبھی ہم میں سے، اور پھر حضرت ابوبکر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی بیعت نہیں کی تھی، انہیں ایک قول کے مطابق حوران میں جنّ نے قتل کر دیا تھا۔

## سِگاب

قِطام کے وزن پر ہے، قبلہ کی جانب والے پہاڑوں میں سے ایک پہاڑ تھا۔

## سِلاح

قطام کے وزن پر ہے، یہ خیبر کی نچلی طرف ایک جگہ تھی، یہیں بشیر بن سعد انصاری، بنو غطفان کی جماعت سے ملے تھے جب وہ یمن اور جبار کی طرف لشکر لئے جا رہے تھے۔ سلاح کے نام سے بنو کلاب کا ایک کنواں بھی تھا، جو بھی اس سے پانی پیتا، اسے پاخانہ آ جاتا تھا۔

## سلاسل

یہ لفظِ سلسلہ کی جمع ہے۔ جذام کی سرزمین میں ایک کنواں تھا جو مدینہ سے دس میل کے فاصلے پر تھا، یہ وادی القریٰ کی پچھلی طرف تھا، غزوہ کا نام اسی کی وجہ سے پڑا تھا۔

## سُلالم

یہ خیبر میں فتح ہونے والا آخری قلعہ تھا۔

## ذوالسّلائل

فُرع اور مدینہ کے درمیان ایک وادی تھی۔

## سَلع

یہ مدینہ میں ایک مشہور پہاڑ ہے۔ صحیح بخاری میں ہے کہ حضرت کعب بن مالک کی ایک لونڈی اس چھوٹے سے

پہاڑ کے قریب ان کی بکریاں چراتی تھی، یہ چھوٹا پہاڑ سلع تھا اور مساجدِ فتح میں آ چکا ہے کہ وہاں بنو حرام کی غار تھی، حضور ﷺ اس میں داخل ہوئے تھے اور رات گذاری تھی۔ اسے جبلِ بوابؓ بھی کہتے تھے۔

علامہ اصمعی کہتے ہیں کہ یزید بن عبد الملک کی لونڈی حبابہ نے شعر کہے، یہ بہت خوبصورت تھی، اسے سلع سے محبت تھی چنانچہ کہا:

> ”تمہاری حیاتی کی قسم! مجھے سلع سے پیار ہے، میں اسے دیکھتی ہوں اور اس کے اردگرد کا نظارا کرتی ہوں، اس کے قرب سے میری آنکھوں کو ٹھنڈک ملتی ہے لیکن اس سے مجھے ڈر رہتا ہے کہ کہیں مجھے تکلیف نہ پہنچائے۔“

## ذُوسَلَم

مدلجہ، تعہن کے اندر ایک جگہ تھی، حضور ﷺ کے سفر ہجرت میں اس کا ذکر ملتا ہے۔

## سُلَیع

سَلْع کا اسم تصغیر ہے۔ مدینہ میں ایک پہاڑ تھا، اس پر اسلم بن افصیٰ کے گھر تھے۔ ان کے گھروں سے یہ بات ثابت ہوتی ہے کہ سلع کے بالمقابل جو چھوٹا پہاڑ تھا اس پر آج کل امیرِ مدینہ کا قلعہ ہے۔ اسے اس کی امامت کے دنوں میں امیر ابن شیحہ نے بنوایا تھا، یہ ٦٧٠ھ سے پہلے کی بات ہے۔ اس نے اسے اپنی حفاظت کے لئے بنوایا تھا۔ اس سے مدینہ کا اردگرد دکھائی دیتا تھا۔ اس سے پہلے امراء کے قلعے باب السلام کے قریب ہوتے تھے، آج کل وہاں مدرسہ اشرفیہ ہے۔

## سَلِیل

امیر کے وزن پر ہے۔ عقیق کے میدان کا نام تھا۔

## سلیلہ

یہ ربذہ کی ایک جگہ تھی۔

## سُلَیم

سلم کا اسم تصغیر ہے اور ذات السُّلَیم عقیق کی ایک وادی تھی۔

## سمران

خیبر میں ایک پہاڑ ہے، عام لوگ اسے مسمران کہتے ہیں۔ کچھ نے اسے شمران لکھا ہے، ابن زبالہ روایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے خیبر میں ایک پہاڑ کی چوٹی پر نماز پڑھی تھی، اسے سمران کہتے تھے۔

## ذو سمر

عقیق کی ایک وادی تھی۔

## سُمَیْحَہ

سَمُحَہ کا اسمِ تصغیر ہے۔ یہ مدینہ میں ایک مشہور کنواں تھا۔ علامہ نصر کہتے ہیں کہ یہ مدینہ میں وہ قدیم کنواں تھا جس کا پانی سب سے گہرا تھا۔

علامہ یعقوب کہتے ہیں کہ سمیحہ، مدینہ میں کنواں تھا، وہاں عبید اللہ بن موسےٰ کا باغ تھا۔

## سنام

ربذہ کے قریب پانی جمع ہونے کی جگہ تھی۔

## سُنح

یہ حارث کے دونوں بیٹوں جشم اور زید کا قلعہ تھا۔ کنوئیں کی جانب کو سُنح کہتے تھے۔ پہلے آ چکا ہے کہ یہ مسجد نبوی سے ایک میل کے فاصلے پر تھا۔ یہاں حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا گھر تھا جہاں آپ کی انصاری زوجہ رہتی تھیں، جب حضور ﷺ کا وصال ہوا تو یہیں آپ کو اطلاع ہوئی تھی۔

ابن عساکر اپنی تحفہ میں لکھتے ہیں کہ سُنُح یا سُنح مدینہ کی بالائی جانب ایک جگہ تھی جس میں بنو حارث کے گھر تھے۔ ہمارے شیخ ابو عبد اللہ کہتے ہیں کہ سنح وہ جگہ تھی جہاں مساجد فتح تھیں۔

## سُنْحَہ

مدینہ منورہ میں ایک جگہ ہے۔

## سِنّ

شوران یا میطان کے بالمقابل ایک پہاڑ ہے۔

## سُوَاج

ضریہ کے پہاڑوں میں سے ایک پہاڑ ہے جہاں جن رہتے ہیں، اسے سواج ملحقہ بھی کہا جاتا ہے۔

## سَوَارِق

سوارقیہ کے قریب ایک وادی تھی، جہاں کا پانی میٹھا تھا۔

## سُوَارِقِیّہ

اسے سویر یقیّہ بھی پڑھا جاتا ہے، یہ حضرت ابوبکر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی بستی تھی، پہلے بنوسلیم کے پاس تھی۔ علّامہ عرام کہتے ہیں کہ یہ ایک بڑی بستی تھی جس میں مسجد، منبر اور بازار تھا۔ بنونجار کے لوگ یہاں ہر طرف سے آیا کرتے تھے۔ بنوسلیم میں سے ہر ایک کا یہاں حصہ تھا، یہاں ان کی زرعی زمین تھی، کھجور کے بہت سے درخت تھے، کیلے، انگور، تین، انار، بہی دانہ اور شفتالو تھے، ان کے یہاں اونٹ، گھوڑے اور بکریاں تھیں۔

## سوق اَھدٰی

اَحْوٰی کے وزن پر ہے۔ یہ جگہ ربذہ میں تھی۔

## سوق بنی قَیْنُقاع

بطحان کی پل کے نزدیک دورِ جاہلیت میں یہ ایک بڑا بازار تھا۔ یہ سال میں کئی بار لگتا تھا، لوگ اس پر فخر کرتے اور اس کے بارے میں شعر پڑھا کرتے تھے۔

## سُوَیْدَاء

سوداء کا اسمِ تصغیر ہے۔ یہ ذی خشب کے بعد ایک جگہ تھی جو مدینہ سے دو رات کے سفر پر تھی۔

## سوید

بنواسود کا قلعہ تھا، بنو بیاضہ کے گھروں میں حماضہ کی شامی جانب تھا۔

## سُوَیْقَہ

ساق کا اسمِ تصغیر ہے۔ یہ زمین پر پھیلا سرخ پہاڑ تھا جو ضریّہ سے تیس میل یا اس سے زیادہ کے علاقے میں پھیلا ہوا تھا۔ یہ ایک میٹھا چشمہ بھی تھا جو حرزہ کی نچلی جانب تھا، سیالہ سے ایک میل کے فاصلے پر مکہ کو جانے والے کی داہنی طرف تھا۔ یہ عبد اللہ بن حسن کے قبضے میں تھا۔

علامہ مجد کہتے ہیں کہ سویقہ وہ جگہ تھی جو مدینہ کے قریب تھی، اس میں آل علی بن ابو طالب کے لوگ رہتے تھے۔ محمد بن صالح بن عبد اللہ بن موسےٰ حسنی خلیفہ متوکل کے خلاف نکلا، ابو الساج کو ایک بڑا لشکر دے کر بھیجا، وہ اس کے خلاف کامیاب ہوا۔ اس نے اس کے اہل و عیال کو گرفتار کر لیا اور کچھ کو قتل کر دیا، سویقہ کو برباد کر دیا، درخت اجاڑ دئے اور ان کے گھر برباد کر دئے۔ سویقہ اس کے بعد آباد نہ ہو سکا، یہ حضرت علی کے صدقات میں سے تھا۔ پھر کہا کہ سویقہ سیالہ کے قریب تھا۔ انتہی۔

علامہ یاقوت، ابن السکیت سے نقل کر کے بتاتے ہیں کہ یہ ایک چھوٹا سا پہاڑ تھا جو ینبع اور مدینہ کے درمیان

تھا۔

## سِیّ

یہ مقام مدینہ سے پانچ رات کے سفر پر تھا۔

## سَیَالہ

سَحَابہ کے وزن پر ہے۔ اس کا ذکر مسجد شرف الروحاء میں گذر چکا ہے۔ ابن السکیت کہتے ہیں کہ تُبّع جب مدینہ سے واپس ہوا تو سیالہ میں ٹھہرا تھا۔ وہاں ایک وادی بہتی تھی چنانچہ اسی وجہ سے اس کا نام سیالہ رکھا' اس وادی کے آخر میں شرف الروحاء تھی' یہ مدینہ سے تیس میل کے فاصلے پر تھی۔

## سُیح

سَاحَ یَسِیحُ سِیُحًا کی مصدر ہے۔ یہ اس جگہ کا نام تھا جو مساجدِ فتح کی غربی جانب تھی۔ ابن نجار کہتے ہیں کہ وہاں خندق میں سے ایک نالہ نکلتا تھا جو مدینہ کی نچلی جانب سے سیح تک آتا تھا۔ اس کا یہ نام رکھنے کی وجہ یہ تھی کہ جشم اور اس کا بھائی زید یہاں ٹھہرے ہوئے تھے' انہوں نے یہاں قلعہ بنایا تھا جسے سیح کہا جاتا تھا' اسی وجہ سے اس جانب کا نام پڑ گیا۔

## سَیَر

یہ جَبَل کے وزن پر ہے۔ مدینہ اور بدر کے درمیان ایک ٹیلا تھا' کہتے ہیں کہ بدر کا مالِ غنیمت یہیں تقسیم کیا گیا تھا۔ یہ علامہ مجد نے لکھا ہے' وہ کہتے ہیں: ابوبکر بن موسےٰ کہتے تھے کہ اس لفظ میں اختلاف ہے۔

میں کہتا ہوں کہ شاید ان کا اشارہ لفظ سبر کی طرف ہے کیونکہ پہلے گذر چکا ہے کہ یہ مالِ غنیمت سبر میں تقسیم ہوا تھا۔ علاوہ ازیں ابوبکر سے مراد حارثی ہے' تہذیب نووی میں مالِ غنیمت کے صفراء کی گھاٹی میں تقسیم کرنے کے بعد یہ مذکور ہے کہ حارثی نے کہا: رہا شَیّر تو یہ مدینہ اور بدر کے درمیان ریت کا ایک ٹیلہ تھا۔ کہتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے بدر کی غنیمتیں یہاں تقسیم فرمائی تھیں اور وہ جو مجد نے اس لفظ کے بارے میں لکھا ہے' زیادہ درست ہے کیونکہ میں نے تہذیب ابنِ ہشام کے قابلِ اعتماد نسخہ میں لکھا دیکھا ہے' الفاظ یہ ہیں: وہ مضیق الصفراء سے نکلے اور ایک ٹیلے پر ٹھہرے جو مضیق ایھد نازیہ کے درمیان تھا' اسے سیر کہتے تھے چنانچہ وہاں آپ نے مال غنیمت تقسیم فرمایا۔

ایک اور جگہ میں نے لکھا دیکھا ہے کہ: شعب سیر وہ قدیم مقام تھا جہاں حاجی لوگ اس وقت ٹھہرتے جب مستعجلہ سے کوچ کرتے۔ وہ کہتے ہیں کہ یہ گھاٹی (شعب سیر) دو پہاڑوں کے درمیان تھی جنہیں جبال مضیق کہتے تھے' یہ صفراء کی بالائی جانب تھی' اس کے اور مستعجلہ کے درمیان نصف فرسخ کا فاصلہ تھا۔

# حرف الشین

## شَابَه

یہ ربذہ اور سلیلہ کے درمیان ایک پہاڑ تھا۔

## شاس

مسجد قباء کے صحن میں ایک قلعہ تھا، جب تم قبلہ کی طرف منہ کرو تو تمہاری بائیں طرف تھا۔ یہ بنو عطیہ بن زید کے بھائی شاس کے قبضہ میں تھا۔

## شَبا

عَصا کے وزن پر ہے، اثیل کے مقام پر صفراء کی جانب ایک وادی تھی، وہاں ایک چشمہ تھا جسے شیف الشبا کہتے تھے۔ یہ بنو جعفر بن ابو طالب کا تھا۔

## شِباع

کتاب کے وزن پر ہے۔ حضرت سائب کے کنوئیں کے بیان میں گزرا کہ یہ کنوئیں پر ابھرا ہوا پہاڑ تھا۔

## شِبَاك

جِبَال کے وزن پر ہے اور شبکۃ کی جمع ہے، بنو غنی کے شہروں میں ایک جگہ تھی، مدینہ اور ابرق العزاف کے درمیان تھی، ایک اور جگہ بھی تھی جو بنو الکذاب سفوان اور شاک کے قریب تھی جو مدینہ کے ارد گرد تھی۔

## شَبْعان

جیعان (بھوکا) کے مقابلے کا لفظ ہے، مدینہ میں ایک قلعہ تھا جو مال عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ میں تھا۔

## شُبْکه

لفظ شباك کا مفرد ہے۔ یہ وادیٔ اضم میں ایک جگہ تھی۔

## شَجَرَه

شجر کا واحد ہے۔ مسجد ذوالحلیفہ اسی درخت کی طرف منسوب تھی۔ یہ سمرہ ہی کا نام تھا۔ نبی کریم ﷺ اس کے نیچے ٹھہرے تھے چنانچہ یہ نام مشہور ہو گیا پھر شجرہ وہ مال تھا جس میں بنو قریظہ کا قلعہ تھا اور شاید اسی کو آج کل شُجَیْرہ کہا جاتا ہے۔

### شَدُخ

یہ ایک وادی تھی جہاں نخل نامی جگہ تھی جیسے آگے آ رہا ہے۔

### شَرَاة

یہ ایک بلند پہاڑ تھا جس میں بندر رہتے تھے۔ بنو لیث اور کچھ بنو سلیم یہاں رہتے تھے' بائیں طرف عسفان کے نزدیک تھا۔ اس میں ایک غار تھی جو حجاز کی طرف جاتی تھی' اسے خریطہ کہتے تھے۔

### شَرَبَّة

ہر گھاس والی زمین کو کہتے ہیں جس میں درخت موجود نہ ہو۔ یہ سلیلہ اور ربذہ کے درمیان ایک جگہ تھی۔ کہتے ہیں کہ جب تم بقرہ اور ماوان سے گذرو' ارادہ مکہ کا ہو تو شربہؔ میں پہنچ جاؤ گے۔ یہ نجد کے علاقے میں سب سے ٹھنڈا مقام تھا اور یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ نخل اور معدن بنی سلیم کے درمیان تھا' ان سب کا مطلب ایک ہی ہے۔

### شَرَج

یہ مدینہ کے قریب ایک جگہ تھی جو شرج العجوز کے نام سے مشہور تھی' اس کا ذکر حضرت کعب بن الاشرف کی حدیث میں آتا ہے۔ نجد میں اس نام کا ایک چشمہ بھی تھا۔

### شَرْعَبِیّ

ذباب کے نزدیک ایک قلعہ تھا' یہ یہودیوں کے اہل شوط کا تھا' پھر اوس قبیلہ کے بنو جشم کا ہو گیا۔

### شَرَف

بلند جگہ کو کہتے ہیں' یہ شرف الروحاء اور شرف السیالہؔ تھا کیونکہ سیالہ کے آخر میں تھا اور وادیٔ روحاء کی ابتداء میں تھا۔ ربذہ میں ہے اور ضریہؔ کی چراگاہ بھی یہیں ہے۔

### شُرَیْق

یہ شرق کا اسمِ تصغیر ہے۔ وادیٔ عقیق میں ایک جگہ تھی۔ اسے شُرَیف بھی کہا جاتا ہے۔

### شُطَان

مدینہ کی ایک وادی تھی۔

## شُطمان

بنوقریظہ میں زمین تھی۔

## شطون

مقامِ شعر کی طرف ایک کنواں تھا۔

## شُطِیبہ

اَعواف کی جانب ابنِ عتبہ کا مال تھا، شائد وہاں یہ عتبی کے نام سے مشہور ہے۔ ابن زبالہ کہتے ہیں کہ شطیبہ ہی کے مقام میں بنوقریظہ کے ایک شخص نے بلحارث بن خزرج کی ایک عورت کو نکاح کا پیغام دیا تھا تو اس نے کہا تھا کہ کیا اس کے پاس بئرِ مدری، ھامات، ذی وشیع یا شطیبہ پر زمین ہے یا بئرِ فجار پر؟ وہ اس وقت بئرِ اریس میں تھی۔

## شَظاۃ

وادیٔ قناۃ کا نام ہے۔ قاموس کی طرف سے اضم کے ذکر میں گزر چکا ہے کہ یہ وادی کے بند کا نام تھا۔

## شُعب

یہ اس وادی کا نام تھا جو صفراء میں گرتی تھی۔ لفظِ نخال میں آ رہا ہے کہ یہ اس کا نام تھا اور شِعب، زیر کے ساتھ شعاب کا واحد ہے، یہ اس راستے کو کہتے ہیں جو دو پہاڑوں کے درمیان ہوتا ہے اور شعبِ احد وہ گھاٹی تھی جس میں مسلمان رسول اللہ ﷺ کو لے گئے تھے اور انہیں سہارا دیا تھا۔

ابن اسحاق کہتے ہیں کہ جب رسول اللہ ﷺ گھاٹی کے اگلے حصے پر پہنچے تو حضرت علی بن ابو طالب رضی اللہ تعالیٰ عنہ نکلے، چمڑے کا تھیلا پتھروں سے بھرا ہوا پاس تھا۔

شعب العجوز، مدینہ کی کھلی جگہ میں تھی، اسی کے پاس حضرت کعب بن اشرف رضی اللہ تعالیٰ عنہ قتل ہوئے تھے، اسے شرج العجوز بھی کہتے ہیں۔

سیرت کی کتابوں میں آتا ہے کہ جب ابو نائلہ نے بنونضیر کے قلعہ میں موجود حضرت کعب بن اشرف کو اس رات آواز دی جس میں وہ قتل ہوئے تھے، آپ ابو نائلہ اور اس کے ساتھیوں کے کہنے پر اتر آئے۔ انہوں نے کہا: اے کعب! کیا یہ ممکن ہے کہ تم شعب العجوز کی طرف ہمارے ساتھ چلو، ہم رات کے باقی حصے میں بات چیت کرتے رہیں گے۔ آپ نے کہا: جیسے چاہتے ہو، کر لیتا ہوں چنانچہ وہ تھوڑی دیر چلے اور جب انہیں موقع ملا تو آپ کو قتل کر دیا۔

## شُعلبی

یہ ایک پہاڑ کا نام ہے۔

## شعب المشاش

وادیٔ عقیق میں اس کا ذکر آ چکا ہے۔ یہ جماء العاقل کی پچھلی طرف تھی۔

## شعب شوکه

لفظ شوکه میں آ چکا ہے کہ یہی شعب کے نام سے مشہور تھی اور شرف کے قریب تھی۔

## شُعْبَه

شُعَب کا واحد ہے۔ کسی چیز کا کچھ حصہ ہوتا ہے اور پہاڑ کے ساتھ بولا جائے تو اس کا سرا مراد ہوتا ہے اور درخت کے ساتھ بولا جائے تو مراد اس کی ٹہنیاں ہوتی ہیں اور شعبہ' بلیل کے قریب ایک چشمے کا نام تھا۔

## شُعُث

لفظ اَشْعَث کی جمع ہے۔ یہ سوارقیہ اور معدن بنو سلیم کے درمیان ایک جگہ تھی۔

## شَعْرِ

سر کے بالوں کے معنی میں ہے' یہ ایک بلند پہاڑ تھا جو معدن ماوان کے اوپر تھا اور ربذہ سے کئی میل پہلے تھا۔ یہ مجد نے لکھا ہے مگر ھجری کہتے ہیں کہ یہ "وضح" کی جانب تھا۔ شاعروں نے اسے بہت استعمال کیا ہے چنانچہ حکیم خضری کہتے ہیں:

"اللہ تعالیٰ شعر پہاڑ کو سر بلند رکھے اور اسے بھی جو ستاروں اور غدیر کے درمیان ہے۔"

## شَغْبیٰ

سَکْرٰی کے وزن پر ہے' یہ مدینہ اور ایلہ کے درمیان ایک بستی تھی اور یونہی بدا ایک اور بستی تھی۔

## شُفَر

یہ زُفَر کے وزن پر ہے اور شفیر کی جمع ہے' یہ ام خالد کی چراگاہ میں ایک پہاڑ تھا جو عقیق میں گرتی تھی۔ اس میں مدینہ کے جانور چرتے تھے۔ عمرو بن فہری نے یہاں ڈاکہ ڈالا تو نبی کریم ﷺ اسے تلاش کرنے نکلے اور بدر میں پہنچ گئے۔

## شُقَر

زُفَر کے وزن پر ہے' ربذہ میں ایک کنواں تھا جو پہاڑ کے کونے پر تھا اور معدنِ ماوان کے اوپر تھا۔

## شُقْراء

لفظ اَشْـقر کی مؤنث ہے، حدیثِ پاک میں ہے کہ عمرو بن سلمہ کلابی وفد لے کر نبی کریم ﷺ کی خدمت میں حاضر ہوئے، آپ نے انہیں چراگاہ دی جو شقراء اور سعدیہ کے درمیان تھی، یہ جنگل میں دو کنوئیں تھے۔

## شقراة

چھوٹا پہاڑ جو نقیع کی مغربی جانب تھا۔

## شُقْرَة

فید کے راستے میں ایک جگہ تھی جو سرخ پہاڑوں کے درمیان تھی جبکہ نخیل سے اٹھارہ میل کے فاصلے پر تھی، بئر السائب سے ایک دن کے سفر پر اور مدینہ سے دو دن کی مسافت پر تھی، اُحد میں شکست کھانے والے چند لوگ اسی کی طرف گئے تھے۔ مسجد نبوی مین آتشزدگی کے بعد یہیں سے دوم درخت کی لکڑیاں کاٹ کر لے جائی گئی تھیں تا کہ اسے تعمیر کیا جا سکے۔

## شَقّ

زمخشری نے یونہی بتایا ہے اور شِقّ بھی پڑھا گیا ہے۔ یہ خیبر کے قلعوں میں سے ایک تھا اور فدک کی بستیوں میں سے ایک بستی تھی جہاں لگامیں بنتی تھیں۔

علامہ واقدی کہتے ہیں کہ نبی کریم ﷺ اھلِ نطاۃ سے فارغ ہو کر اھل ''شق'' کی طرف مڑے، دیکھا تو وہاں بہت سے قلعے تھے۔ واقدی نے ان میں سے پہلے قلعے کی فتح کا ذکر کیا اور یہ بتایا کہ اھلِ شق بھاگ کر بزاز کے قلعے کی طرف گئے، وہ بھی شق ہی مین تھا، اھل شق نے مسلمانوں پر تیروں اور پتھروں کی بارش کر دی تھی، نبی کریم ﷺ نے کنکریوں کی مٹھی پکڑی اور ان کے قلعے کی طرف پھینک دی جس سے وہ کانپ اُٹھے اور مسلمانوں نے انہیں پکڑ لیا تھا۔

شقة بني عذره کا ذکر مساجدِ تبوک میں گذر چکا ہے۔

## شقة بنی عذره

## شَلُول

صبور کے وزن پر ہے، مدینہ کے قریب ایک جگہ تھی۔

## شَمّاء

ضریّہ کی چراگاہ میں زمین پر پھیلا بلند پہاڑ تھا۔ علامہ ھجری نے اسے شیماء لکھا ہے اور کہا کہ ''شق'' پہاڑی کا

نچلا حصہ تھا جو عرفجا کی جانب تھا' نام رکھنے کی وجہ یہ تھی کہ یہ سرخ تھا اور اس کی ایک جانب سیاہ تھی۔

## شَمَّاخ

بنو سالم کے گھروں کی طرف قبلہ میں ایک قلعہ تھا۔

## شُمَنْصِیر

جبلِ ''سایہ'' کی پچھلی طرف تھا۔

## شناصیر

یہ جگہ مدینہ کے قریب تھی۔

## شُنُوکَہ

یہ شرف الروحاء سے تھوڑی دور ایک پہاڑ ہے اور اس گھاٹی کے بالمقابل ہے جو شعبِ علی کہلاتی ہے' یہی شنوکہ کی گھاٹی ہے جو مسجدِ شرف الروحاء سے تین میل کے فاصلے پر ہے۔ یہ اسدی نے بتایا ہے۔

علامہ ابنِ اسحاق بدر کے سفر میں لکھتے ہیں کہ حضور ﷺ روحاء کے شگاف سے گذرے' پھر شنوکہ سے گذرے اور جب عرق الظبیہ پر پہنچے۔

ابنِ سعد کہتے ہیں کہ شنوکہ' سیالہ اور ملل کے درمیان تھا اور یہیں سے سہیل بن عمرو بھاگا تھا تو ابن الاخشم نے یومِ بدر پر اسے قید کیا تھا' اس نے پکڑے جانے کے وقت کہا تھا' راستہ دو کیونکہ میں نے قضاءِ حاجت کرنا ہے چنانچہ وہ بھاگا تو نبی کریم ﷺ نے اسے پکڑ لیا تھا۔

## شُنَیف

زبیر کے وزن پر ہے' یہ احجار المراء کے قریب بنوضبیعہ کا قلعہ تھا۔ اس کا وہاں ذکر آ چکا ہے جہاں حضور ﷺ کی قباء میں تشریف آوری کا ذکر ہے۔

## شُوَاحِط

یہ سوارقیہ کے قریب ایک پہاڑ تھا جہاں چیتے اور پہاڑی بکریاں رہتی تھیں۔ یومِ شواحط' اہلِ عرب کا ایک خاص دن تھا۔

## شُوران

ایک پہاڑ تھا جس کی طرف وہ حرہ (پتھریلی) منسوب تھی جہاں سے وادی مہزور شروع ہوتی تھی' شائد آج کل

یہی شوطان کے نام سے مشہور ہے۔

علامہ عرام کہتے ہیں، مدینہ کو جبلِ عیر گھیرے ہوئے ہے۔ پھر بتایا کہ عیر نامی دو پہاڑ ہیں جو سرخ ہیں مکہ کا ارادہ لے کر تم عقیق کو جاؤ تو تمہاری داہنی طرف آتے ہیں جبکہ تمہاری بائیں طرف شوراں آئے گا، یہ بہت بڑا اور بلند پہاڑ ہے۔ علامہ عرام نے اس کے بعد ان چیزوں کا ذکر کیا جو مدینہ کے قبلہ میں تھیں اور پھر کہا کہ ان پہاڑوں پر نہ تو کوئی جڑی بوٹی ہوتی ہے اور نہ پانی، البتہ شوران پر بارش کا پانی مل جاتا ہے، جہاں جہاں پانی کھڑا ہوتا ہے انہیں بجیرات، کرم، عین اور امعاء کہا جاتا ہے۔ یہ وہ پانی ہے جو کئی سال تک رہتا ہے، ان سب مقامات پر سیاہ رنگ کی مچھلیاں ہوتی ہیں جو ہاتھ بھر لمبی ہوتی ہیں۔ یہ نہایت ستھری ہوتی ہیں۔

چنانچہ علامہ عرام کے قول ''من عن یمینك'' (کہ تم عقیق کی طرف جاؤ تو تمہاری داہنی طرف آتے ہیں) سے پتہ چلتا ہے کہ ''عیر'' کے نام کا مشہور پہاڑ شوران ہی ہے، وہی بند کے اوپر ہے جیسے بتایا جا چکا اور اس کی ایک جانب عقیق کے مقام ''کرم'' ہے جو ثرید کی گھاٹی ہے لیکن ابن زبالہ، زبیر اور ہجری سب نے اسے عیر کہا ہے اور اس پر پانی نہیں ہے۔ یوں علامہ عرام کی کلام اس بات کو شامل ہے کہ مدینہ کے قبلہ سے مکہ کی طرف جانے والا جب عقیق کی کسی وادی میں جاتا ہے جو وہاں اس میں گر جاتی ہے تو پھر اس کی داہنی طرف عیرِ آئے گا، مغرب میں عیرِ وارد اور بائیں جانب مشرق میں شوران ہوگا اور اس کی تائید اس بات سے ہوتی ہے جو کچھ انہوں نے بعد میں ذکر کیا ہے کہ وہ سارے کا سارا قبلہ کی طرف سے مدینہ کے مشرق میں ہے اور پھر کہا: ''پھر مکہ کی طرف جائے'' اور پھر وہ کچھ بتایا جو اُبلی میں آ چکا اور اس لئے کہ انہوں نے کہا کہ ''میطان'' ''شُوران'' کے بالمقابل تھا اور قبلہ کی طرف میطان مشرق ہی میں تھا لہٰذا وہ بند جس پر شوران ہے، وہ نہیں جو عیر کے قریب تھا۔

علامہ نصر کہتے ہیں کہ ''شوران'' دارِ سلیم میں ایک وادی تھی جو ''غابہ'' میں گرتی تھی اور مدینہ سے تین میل کے فاصلے پر تھی، تو لگتا ہے کہ علامہ عرام نے وادیٔ شوران کا لفظ اس پر استعمال کیا ہے جو مدینہ تک زیریں حرہ تھا۔

حضرت زبیر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے بازار میں ایک اونٹ دیکھا، آپ اسے موٹا تازہ دیکھ کر خوش ہوئے چنانچہ پوچھا: یہ کہاں چرتا رہا ہے؟ راوی نے عرض کی کہ حرۂ شوران میں۔ اس پر آپ نے فرمایا: اللہ تعالیٰ شوران میں برکت فرمائے۔

## شُوط

یہ اہلِ شوط کا ایک قلعہ تھا جسے شرعی کہا جاتا تھا اور یہ ذباب کے قریب تھا، پہلے گزر چکا ہے کہ کچھ بنو حارث شوط اور کرم الکومہ میں ٹھہرے تھے جسے کومۃ ابو الحمراء کہا جاتا تھا، یہ ذباب کی شامی جانب تھا، بنو ساعدہ کے گھروں اور کومہ کے قریب تھا۔

ابن اسحاق، حضور ﷺ کے احد کی طرف نکلنے کے بیان میں لکھتے ہیں: جب آپ شوط میں پہنچے جو مدینہ اور اُحد کے درمیان تھا تو عبد اللہ بن ابی کھسک گیا اور مدینہ کو واپس آ گیا۔

امام بیہقی نے دلائل میں حضرت ابن شہاب سے روایت کی ہے کہ انہوں نے حضور ﷺ کے احد کی طرف نکلنے کے بارے میں لکھا: جب آپ جبانہ کے مقام شوط میں پہنچے تو عبد اللہ بن ابی کھسک گیا تھا اور ذباب کے لفظ میں گذرا کہ وہ جبانہ میں تھا۔ پھر صحیح بخاری میں حدیثِ عابدہ میں ہے کہ ہم رسول اللہ ﷺ کے ہمراہ نکلے تو ایک باغ تک پہنچے جسے شوط کہتے تھے۔

ابن سعد کی روایت میں ابن اسید سے ہے، وہ کہتے ہیں: حضور ﷺ نے بنو الجون میں سے ایک عورت سے شادی کی تو مجھے حکم فرمایا کہ انہیں لے کر آپ کے پاس پہنچوں چنانچہ میں انہیں لے آیا چنانچہ انہیں شوط کے مقام پر ذباب کی اوپر کی جانب ایک قلعے میں ٹھہرایا۔ انہی کی ایک اور روایت ہے کہ میں نے انہیں بنو ساعدہ میں ٹھہرایا۔ ایک اور روایت میں ہے کہ وہ بنو ساعدہ میں ٹھہریں، رسول اللہ ﷺ چل کر ان کے پاس پہنچے۔

علامہ نضر بن شمیل کہتے ہیں کہ: شوط زمین کی دو اُبھری جگہوں میں ایک مکان تھا، اس میں پانی تھا اور لوگ آتے تھے جیسے گویا راستہ تھا۔ وہاں نیچے جانے پر اونٹ اور اونٹ سوار چھپ جاتے تھے اور یہ بات نیچی زمین میں ممکن تھی اور مہزور کے سیلاب کے بیان میں گذر چکا ہے کہ اس کے آخر میں ابو الحمراء کا ٹیلا تھا اور پھر وہ قناۃ میں گر جاتا تھا۔

## شُوطٰی

شُکرٰی کے وزن پر ہے۔ علامہ ھجری کہتے ہیں: عقیق کی حرہ سے نشیبی زمینیں تھیں جو مشہور تھیں، ان کا ذکر شاعر لوگ کرتے ہیں، ان میں سے شوطٰی اور روضۃ الجام تھیں۔

علامہ مجد کہتے ہیں کہ "شوطٰی" مدینہ میں عقیق کے اندر ایک جگہ تھی۔ اسی کے بارے میں شاعر مزنی مدینہ سے خریدے جانے والے اپنے غلام سے کہتا ہے:

> "اے یسار! آرام حاصل کرو کیونکہ شوطٰی اور تربانین کل کے بعد نہ رہیں گے، یہ ایسے شہر ہیں کہ جہاں موت محسوس نہیں ہوتی لیکن یہاں غذا قلیل ہوتی ہے۔"

اور یہ شوطٰی بھی بنو سلیم کی پتھریلی زمین تھا۔

## شُیَیْخَان

یہ لفظ شُیَیْخ کا تثنیہ ہے، واج کی طرف یہ دو قلعے تھے۔ ابن زبالہ کہتے ہیں کہ: ان دونوں کے سامنے وہ مسجد تھی جس میں احد کو جاتے ہوئے نبی کریم ﷺ نے نماز پڑھی تھی۔

علامہ مجد کہتے ہیں: یہ وہ جگہ تھی جسے تثنیہ بنا کر شیخان کہتے تھے، حضور ﷺ نے احد کو جاتے ہوئے یہاں رات

کو لشکر ٹھہرایا تھا' وہیں لوگ آپ کے سامنے لائے گئے تو جسے آپ نے چاہا جانے کی اجازت دی اور جسے چاہا واپس کر دیا چنانچہ حضرت ابو سعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ بتاتے ہیں کہ میں ان لوگوں میں شامل تھا جنہیں شیخین سے احد کے دن واپس بھیج دیا گیا تھا۔

کچھ کہتے ہیں کہ یہ دونوں قلعے تھے' ان کا نام رکھنے کی وجہ یہ ہوئی کہ ایک بوڑھے اور بڑھیا نے وہاں گفتگو کی تھی۔

علامہ مطری کہتے ہیں کہ شیخان' مدینہ اور احد کے درمیان جبلِ احد کو جاتے ہوئے مشرقی راستے پر دو جگہیں تھیں۔ وہ بتاتے ہیں: نبی کریم ﷺ اور آپ کے صحابہ حرۂ واقم کی طرف نکلے اور شیخین میں رات گذاری اور ہفتے کے دن صبح کو احد کی طرف روانہ ہوئے۔

# حَرْفُ الصَّاد

## صَاحَہ

دَامَہ کے وزن پر ہے۔ اس زمین کو کہتے ہیں جس میں کچھ بھی اُگتا نہ ہو۔ یہ باہلہ کے زمین پر پھیلے ہوئے پانچ پہاڑوں کا نام تھا جو عقیقِ مدینہ کے قریب تھے اور گویا ولید بن عقبہ نے انہیں اس شعر میں جمع کر دیا ہے:

"اگر علی نہ ہوتے تو ان کی بڑی بات یوں ہوتی جیسے اصم کی بنجر زمین میں اونٹ کا گوز ہوتا ہے۔"

## صَارة

یہ تیماء اور وادی القریٰ میں ایک پہاڑ تھا۔

## صَارِیُ

مدینہ کے قبلہ میں ایک پہاڑ تھا۔

## صایف

مدینہ کے نزدیک ایک جگہ تھی۔

## صُبح

اس کا معنیٰ دن کا ابتدائی حصہ ہوتا ہے۔ علامہ یاقوت لکھتے ہیں کہ صبح اور صباخ بنو قریظہ کے حیالِ غلی میں دو کنوئیں تھے۔ علامہ اصمعی کہتے ہیں کہ حیاء نملیٰ میں صباح اور صبح دو کنوئیں (یا چشمے) تھے۔

ظاہر ہے کہ یہ صبح کے پہاڑ تھے جو بدر میں مکہ کی طرف جانے والے کی بائیں طرف تھے' اسی لئے علامہ مجد

نے کہا: میں جب مکہ سے مدینہ کو چلا تو یہاں سے گزرا تھا۔ کچھ عرب کہتے ہیں کہ ان صبح نامی پہاڑوں کے اوپر بہت سارے کھجور کے درخت اور زرعی جگہ تھی۔ انتہی۔

## صُحُرَہ

لغت میں گڑھے کو کہتے ہیں جو پتھریلی جگہ میں کئی مقامات پر ہوتے ہیں۔ یہ اس جگہ کا نام تھا جو نقیع کو غربی جانب سے گھیرے ہوئے تھی، آج کل اس طرف کے عرب اسے سُحُرَہ کہتے ہیں۔

## صِحُن

گھر کے صحن کا معنی ہے، یہ سوارقیہ کی اوپر والی جانب ایک پہاڑ تھا، اس کا پانی میٹھا تھا جو زراعت کے کام آتا تھا۔

## صُخَیرَات الثّمام

اس کا بیان ثاء کے حروف میں گزر چکا ہے۔

## صُدَار

غُراب کے وزن پر ہے۔ یہ بھی مدینہ کے گرد ایک جگہ تھی۔

میں کہتا ہوں کہ شاید یہ صدارہ کے نام سے وادیٔ روحاء میں مشہور جگہ ہے۔

## صِرَار

اسے ضـرار بھی بولتے تھے لیکن یہ غلط ہے۔ علامہ خطابی کہتے ہیں کہ یہ ایک قدیم کنواں تھا جو عراق کے راستے میں مدینہ سے تین میل کے فاصلے پر تھا تاہم ایک اور جگہ کا نام بتاتا ہے کہ یہ کنواں نہ تھا البتہ وہاں کافی کنوئیں موجود تھے چنانچہ شاعر کہتا ہے:

”شاید ”صرار“ کے کنوئیں جوش ماریں۔“

میں کہتا ہوں یہودیوں کے گھروں کے بیان میں پہلے آ چکا ہے کہ ان میں سے کچھ لوگ ”جوانیہ“ میں تھے، ان کا وہاں ایک قلعہ تھا جسے صرار کہتے تھے، اسی کی وجہ سے اس جانب کا نام صرار پڑ گیا، وہیں بنو حارثہ کے دو چشمے بھی تھے۔ لہٰذا صرار، حرہ کی جانب مدینہ کے شامی علاقے میں قلعہ تھا اور پہلے بتایا جا چکا ہے کہ یہ لوگ بنو عبدالاشہل کے ہمراہ ان کے گھروں میں رہتے تھے پھر ان کو خیبر کی طرف جلا وطن کر دیا گیا اور پھر حضیر بن سماک اشہلی نے ان پر نرمی کر دی تھی کیونکہ اسے خِفاف بن ندبہ نے کہا تھا۔ اس نے کہا تھا: اگر میں ہلاک ہو گیا تو بخدا بنو حارثہ ہلاک ہو جائیں گے اور اگر یہ ہلاک ہو گئے تو ہم ہلاک ہو جائیں گے۔

نیز اس بات سے بھی کوئی رکاوٹ نہیں کہ عراق کے راستے میں بھی یہ کنواں ہو جسے صرار کہا جاتا ہو اور اس پر دلیل نصر کا قول ہے کہ: صرار، مدینہ کے قریب ایک کنواں تھا جو دورِ جاہلیت میں کھودا گیا' عراق کی جانب اس کا چرچا تھا۔ علامہ یاقوت کہتے ہیں کہ صرار، مدینہ کے قریب قبلہ کی طرف ایک پہاڑ ہے۔ پھر وہ بتاتے ہیں کہ صرار، عراق کے راستے میں مدینہ سے تین میل کے فاصلے پر ایک جگہ تھی۔

علامہ عمرانی کہتے ہیں کہ یہ ایک پہاڑ کا نام تھا۔

وہ یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ قبلہ کی جانب میں موجود پہاڑوں میں سے ایک تھا۔ وہ کہتے ہیں کہ صرار ایک قدیم کنواں بھی تھا جو مدینہ سے تین میل کے فاصلے پر تھا۔ یہ بھی کہتے ہیں کہ مدینہ میں ایک جگہ کا نام تھا پھر غزوۂ عرفدۃ الکدر کے بیان میں ہے کہ انہوں نے یہاں مالِ غنیمت تقسیم کیا تھا' یہ جگہ مدینہ سے تین میل کے فاصلے پر تھی۔

میں کہتا ہوں کہ جس حدیث میں یہ بیان ہے کہ حضور ﷺ نے صرار میں پہنچ کر گائے ذبح کرنے کا حکم دیا تھا' اس سے مراد وہ صرار تھا جو مدینے میں تھا' اسی لئے امام بخاری رحمہ اللہ نے کہا: صرار، مدینہ کے گرد ایک جگہ تھی' اسی پر آپ نے یہ باب باندھا ہے: **باب اتخاذ الطعام عند القدوم**۔ ایک اور روایت اس کی وضاحت کرتی ہے کہ: نبی کریم ﷺ جب مدینہ میں پہنچے تو یہاں ایک اونٹ ذبح فرمایا یا گائے۔

## صُعْبِیّہ

یہ میٹھے پانی کے کنوئیں تھے جن سے زراعت کی جاتی تھی' یہ بنو خفاف کے قبضے میں تھے جو اُبلٰی کے قریب بنو سلیم میں سے تھے۔

## صُعَیْب

لفظ صَعْب کا اسمِ تصغیر ہے۔ کچھ نے اسے صُعَیْن بھی پڑھا ہے جو صَعْن کا اسمِ تصغیر ہے۔ اس کا ذکر وہاں آیا ہے جہاں بتایا گیا ہے کہ مدینہ کی مٹی سے شفاء ملتی ہے پھر بویرہ کے بیان میں بھی اس کا ذکر ہے۔

## صِفَاح

روحاء کے مقام پر ایک جگہ تھی۔

## صفاصف

یہ عبداللہ بن عمرو بن عثمان کے بند اور صعبیہ کے درمیان ایک جگہ تھی۔

## صُفراء

لفظ اصفر کی تانیث ہے۔ یہ وہ وادی تھی جہاں کھجور کے بہت سے درخت' چشمے اور زرعی زمین تھی' اس کا ذکر

مسجدوں کے بیان میں آ چکا ہے، نبی کریم ﷺ بدر کو جاتے ہوئے ذفران کی طرف مڑ گئے تھے اور جب واپس ہوئے تو اسی راستے سے گذرے تھے۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ حضور ﷺ اس میں سے کئی بار گذرے تھے۔

## صَفَر

مہینے کا نام ہے جو محرم سے ملتا ہے۔ یہ ملل کے میدان میں سرخ پہاڑ تھا جو عبودا کے بالمقابل تھا، دونوں کے درمیان راستہ تھا۔ وہیں حسن بن زید کا ایک مکان تھا اور اس کی پچھلی طرف ایک گڑھا تھا جسے ردھة العجوزین کہا جاتا تھا اور العجوزین وہاں پر زمین پر پھیلی پہاڑیاں تھیں، جہاں ابو عبیدہ بن عبد اللہ بن زمعہ بن اسود بن مطلب زمعی رہتے تھے جو ماں کی طرف سے عبد اللہ بن حسن بن حسن بن علی بن ابو طالب رضی اللہ تعالیٰ عنہم کی اولاد کے دادا تھے۔

## صُفَّه

اس کا ذکر چوتھے باب کی آٹھویں فصل میں آ چکا ہے۔

## صَفُنه

جَفُنَہ کے وزن پر ہے۔ بنو عطیہ بن زید کی رہائشی جگہ تھی، وہیں مسجد قباء کے صحن میں ان کا شاس نامی قلعہ تھا۔

## صَفِينه

سَفِینَہ کے وزن پر ہے، یہ بنو سالم اور قباء کے درمیان ایک جگہ تھی۔

## ذُو صُلُب

مدینہ کی وادیوں میں اس کا ذکر آ چکا ہے۔

## صُلُحَه

دارِ بنو سلمہ کا نام تھا۔ یہ نام حضور ﷺ نے حربی کی بجائے رکھا تھا، ہاں ابن زبالہ کے نسخے اور مراغی کی تحریر میں یہ لفظ طُلُحَہ لکھا ہے۔

## صُلُصُل

یہ مدینہ سے سات میل کے فاصلے پر ایک جگہ تھی اور عقیق کی وادیوں میں آ چکا ہے کہ جو پانی صلصلین کے سامنے سے آتا تھا وہ بئر ابو عاصیہ میں گرتا تھا اور جو پچھلی طرف سے آتا تھا وہ بطحاء میں گرتا تھا اور یہ بطحاء دونوں پہاڑوں کے کنوئیں سے عقیق میں گرتی تھی۔

ابن سعد لکھتے ہیں کہ نبی کریم ﷺ غزوہ فتح کے موقع پر رمضان کی دس تاریخ بروز بدھ عصر کے بعد نکلے اور

جب صلصل پہنچے تو سامنے سے حضرت زبیر بن العوام رضی اللہ تعالیٰ عنہ دو سو مسلمان لے کر ملے، اسی دوران آواز آئی کہ جسے روزہ چھوڑنا منظور ہو، چھوڑ دے اور جو رکھنا چاہے، رکھ لے۔

آج کل یہ ایک مشہور پہاڑ ہے جو بیداء کے درمیان ہے اور مکہ کو جانے والے کی دائیں طرف آتا ہے۔

## صَلاصِل

وادیٔ بطحان کی پتھریلی جگہ میں ایک زمین تھی۔ اس کا بیان عقیق میں موجود عاصم کے محل کے بیان میں گذر چکا ہے۔

## صَمْد

مدینہ کے قریب کنواں (یا چشمہ) تھا اور اس کا ایک دن مشہور تھا۔ یہ علامہ مجد نے کہا ہے اور یہی صمد قباء میں ایک جگہ تھی، کعب بن مالک نے اپنے شعر میں اسی کی جمع لکھی ہے:

> ”سن لو! قریش کو یہ بات بتا دو کہ سلع پہاڑ اور عریض سے صماد تک ہم شیروں کی بات کرتے جاتے ہیں اور ہمارا یہ طریقہ عاد علیہ السلام سے جاری ہے۔“

## صَمْغَه

وادیٔ قناۃ کے قریب ایک جگہ کا نام تھا چنانچہ ابن ہشام نے عینین کے مقام پر قریش کے اُترنے کا ذکر کیا ہے جو وادیٔ قناۃ کے کنارے پر تھی۔ پھر وہاں ان کے صمغہ میں جانور چرانے کا ذکر کیا ہے۔

## صَمَّان

یہ سرخ رنگ کا پہاڑ تھا، کچھ زیادہ بلند نہ تھا اور **دھناء** کے پڑوس میں تھا اور یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ اہلِ عاج کے قریب تھا۔

میں کہتا ہوں کہ **دھناء** سے مراد ریت کے سات ٹیلے تھے جو دیار بنوتمیم میں تھے اور ظاہر ہے کہ یہ مقام اہلِ عاج تھا تو ان دونوں سے مراد ایک ہی ہے چنانچہ اسی لئے قاموس میں کہا ہے کہ: **صمّان** ہر وہ زمین ہوتی ہے جو سخت ہو، پتھروں والی ہو۔ یہ عالج میں ایک جگہ تھی۔

## صُوَار

یہ مدینہ میں ایک جگہ تھی۔

## صَوَرَی

جَمَزَی کے وزن پر ہے، ابن الاعرابی کہتے ہیں کہ یہ مدینہ کے قریب بلادِ مزینہ میں ایک وادی تھی۔

میں کہتا ہوں کہ یہ نقیع کی جانب تھی، آج کل اسے صُوْرِیہ کہا جاتا ہے۔

## صَوْرَان

صَوْرٌ کا تثنیہ ہے، کھجور کے گھنے چھوٹے درختوں کی جگہ۔ یہ بقیع سے دور ایک جگہ تھی جو بنو قریظہ کے راستے پر تھی۔

مالک کہتے ہیں کہ میں حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے غلام نافع کے پاس آیا کرتا، دوپہر کا وقت ہوتا اور دھوپ سے بچنے کے لئے سر پر کچھ نہ ہوتا، وہ بقیع میں صورین کے مقام پر رہتے تھے۔

سیرت کی کتابوں میں ہے کہ جب نبی کریم ﷺ بنو قریظہ کی طرف متوجہ ہوئے تو اپنے اصحاب کے ساتھ صورین سے گذرے پھر پہلے بیان کیا جا چکا ہے کہ صافیہ اور اس کے قریب رفاہی زمینیں صورین کی بالائی جانب مروان کے محل کے ساتھ ملتی تھیں، وادئ مہزور کا پانی انہیں سیراب کرتا تھا پھر مروان کے محل کے قریب صورین تک پہنچتا تھا اور پھر وادی کے اندر بنو یوسف کے محل تک پہنچتا اور پھر نقیع میں جا گرتا تھا۔ یہ صوران بھی غابہ کے نزدیک تھا۔

## ذُوصُوَيْر

زبیر کے وزن پر ہے۔ یہ عقیق کی وادیوں میں سے صوری کے قریب تھی۔

## صُهّي

صَهْوَة کی جمع ہے۔ یہ پہاڑ میں کچھ گھر تھے۔ روضۃ الصّھی کے لفظ میں آ چکا۔

## صهباء

شراب کا ایک نام ہے۔ خیبر کے نزدیک ایک جگہ تھی جہاں مسجد بھی تھی، یہیں سورج لوٹایا گیا تھا، یہ خیبر سے بارہ میل کے فاصلے پر تھی۔

## صَهْوَه

عقیق کی ایک وادی تھی۔ ابن شبہ کہتے ہیں کہ حضرت عبد اللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے صہوہ میں اپنی زمین صدقہ کر دی تھی۔ یہ یین اور حورہ کے درمیان ایک جگہ تھی اور مدینہ سے ایک رات کے سفر پر تھی۔ یہ زمین خلیفہ کے قبضہ میں رہی۔

## صَياصِي

یہ قباء میں چودہ قلعے تھے۔

### صَيْصَه

قباء میں ایک قلعہ تھا۔

## حَرْفُ الضّاد

### ضَاحِك

لفظِ ضَـــحِكَ سے اسم فاعل کے وزن پر ہے۔ ملل کے سامنے ایک پہاڑ تھا' اس کے اور ضویحک کے درمیان ایک وادی تھی جسے یَین کہتے تھے۔

### ضَاُس

فَأُس کے وزن پر ہے۔ یہ مدینہ اور ینبع کے درمیان ایک جگہ کا نام ہے۔

### ضاف

یہ نقیع کی وادیوں میں سے اس کی غربی جانب ایک وادی تھی جسے پہاڑوں نے گھیر رکھا تھا اور ''قدس'' اس کی غربی جانب تھا۔ اس کی زمین ہموار تھی جس میں سرخی تھی۔

### صَبُعْ

عقیق کی ایک وادی تھی اور پھر حرۂ بنو سلیم میں ایک جگہ تھی۔

### ضَبُوْعَه

حَلُوْبَہ کے وزن پر ہے۔ یہ بلیل کے پاس ایک منزل تھی جو مشیرب اور حلائق کے درمیان تھی اور مشیرب' ذات الجیش کے شامی جانب تھی۔ خلائق کے بیان میں آ چکا ہے کہ حضور ﷺ بلیل اور ضبوعہ کے اس مقام پر اُترے تھے جہاں پانی جمع ہوتا تھا' بئرِ ضبوعہ سے آپ کے لئے پانی لایا گیا تھا۔ کچھ نسخوں میں یہ لفظ صَبُوعہ ہے۔

### ضَجُنَان

ابو موسےٰ کہتے ہیں کہ حرمین کے درمیان ایک جگہ یا ایک پہاڑ تھا۔ علامہ بکری کہتے ہیں کہ قدید اور ضجنان کے درمیان ایک دن کی مسافت تھی اور قاموس میں ہے کہ یہ مکہ سے پچیس میل کے فاصلے پر تھی۔

### ضَحُیان

عصبہ کے مقام پر احیحہ بن جلاح کا قلعہ تھا۔

## ضرعاء

شمنصیر پہاڑ کے قریب ایک بستی تھی۔

## ضَرِیّہ

ضریّہ کی چراگاہ کے بیان میں اس کا ذکر آ چکا۔

## ضری

سمی کے وزن پر ہے' ضریّہ میں ایک کنواں تھا۔

## ضع ذرع

قلعے کی طرح کا ایک ٹیلہ تھا جو بنو حطمہ کے کنوئیں کے قریب تھا جسے ذرع کہتے تھے۔

## ضَغَاضِغ

شمنصیر کے قریب ایک پہاڑ تھا۔ اس کے قریب بنو سعد بن بکر کی بستیاں تھیں جو حضور ﷺ کے رشتہ دار تھے۔

## ضِغُن

خیبر اور فید کے درمیان بنو فزارہ کا ایک کنواں تھا۔

## ضَفِیُرۃ

ریت کا ایک تودہ تھا اور زمین میں کوہان کی طرح مستطیل شکل کا تھا جو سیلاب کے پانی کے لئے رکاوٹ تھا۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ یہ مغیرہ بن اخنس کی زمین کا نام تھا جو عقیق میں تھی۔ زبیر کہتے ہیں کہ مروان نے عبد اللہ عامری کو مدینہ سے چوتھے میل سے لے کر عقیق میں حضرت مغیرہ بن اخنس کی زمین کے ٹیلے تک کا حصہ دے دیا تھا۔

میں کہتا ہوں کہ اس سے یہ پتہ نہیں چلتا کہ یہ ان کی زمین کا نام تھا بلکہ یہ معلوم ہوتا ہے کہ یہ ان کی زمین کی طرف منسوب تھا گویا یہ بنیاد تھی جو اسے دوسروں سے الگ کرتی تھی اور پانی کو روکتی تھی۔ عقیق میں بتایا جا چکا ہے کہ ضفیرہ کی بنیاد وہاں اور جگہ تھی اور یہ بھی آ چکا کہ اروی نے خیال کیا تھا کہ سعید بن زید نے ان کے اس ٹیلے کو اپنی زمین میں شامل کر لیا تھا پھر سیلاب نے اُن کے اس ٹیلے کو ظاہر کر دیا اور بتا دیا کہ یہ ان کی زمین سے باہر ہے۔

علامہ ھجری کہتے ہیں کہ حضرت عثمان بن عنبسہ نے ضریّہ کے چشمے پر جنگل میں ٹیلہ بنایا تھا تاکہ پانی رُک سکے۔

## ضلع

ضلع بنوشیصبان اور ضلع بنو مالک، ضریہ کی چراگاہ میں دو پہاڑ تھے جن کے درمیان ایک دن کی مسافت پر وادیٔ تسرید تھی۔

بنو مالک مسلمان جنّوں کی ایک شاخ تھی جبکہ بنوشیصبان کافر جنّوں کی شاخ تھی، لوگ ان کے کفر و اسلام کی باتیں کرتے رہتے تھے، ان میں جنگ رہتی تھی۔ علامہ مجد نے اس بارے میں ایک عجیب حکایت لکھی ہے کہ بنو مالک کی شاخ میں لوگ داخل ہوتے اور شکار کرتے تھے جبکہ بنوشیصبان میں ایسا نہ تھا، بسا اوقات ان کے پاس کوئی ایسا شخص آتا جس کی پہچان نہ ہوسکتی، وہ گھاس کھا جاتا اور شرارتیں کرتا۔

## ضُوَیْحِك

یہ وہ پہاڑ تھا جو ہنسنے والے کو رلا دیتا تھا۔ ضلع اور ضویحک کے درمیان وادیٔ بین تھی۔

## ضُیْقَه

یہ ذات خماط کے قریب تھی، وہاں ایک مسجد تھی جس کا ذکر چھٹے باب کی چوتھی فصل میں گزرا۔ آج کل وادیٔ اضم کے بالائی حصے کو بھی ضیقه کہتے ہیں۔

# حَرْفُ الطَّاء

## طاشا

وادیٔ اشعر غوریہ کی ایک وادی تھی جو وادیٔ صفراء میں جا گرتی تھی۔

## طِخْفَه

سرخ رنگ کا ایک لمبا پہاڑ تھا جو گھاٹ اور کنوؤں کے بالمقابل تھا۔ ضریہ کی چراگاہ میں اس کا ذکر ہو چکا۔

## طَرَف

علامہ مجد کہتے ہیں کہ یہ مقام مدینہ سے چھتیس میل کے فاصلے پر تھا۔ علامہ واقدی کہتے ہیں کہ یہ نخیل کے قریب ایک کنواں تھا۔ ابن اسحاق کہتے ہیں کہ یہ عراق کی جانب تھا۔ علامہ اسدی نے عراق کا راستہ بتاتے ہوئے لکھا ہے کہ طَرَف، مدینہ سے پچیس میل کے فاصلے پر جبکہ نخیل سے بیس میل کے فاصلے پر تھا۔ پھر وہاں کے کنوؤں وغیرہ کا ذکر کیا ہے چنانچہ لکھتے ہیں کہ بالائی جانب کے آخر میں ابو رکانہ کا کنواں تھا جو مدینہ سے دس میل کے فاصلے پر تھا۔

## ذو الطُّفَيْتَين

عقیق کے مقام پر سیلاب کے راستے میں ایک کنواں تھا' آج کل اسے ابو الطفا کہتے ہیں۔ علامہ ھجری کہتے ہیں کہ یہ گھنی کنکریوں میں میٹھا پانی تھا' جو اس سے پانی پی لیتا' خونی پیشاب کرتا۔

## طفیل

علامہ عرام کہتے ہیں کہ یہ چھوٹی پہاڑی تھی اور خبت کے درمیان تھی' یہ خبت مغرب میں ھرشٰی کی دائیں طرف تھی اور جو شعر بلال میں مذکور ہے' وہ یہ نہیں تھی۔

## طُوَیلع

لفظِ طالع کی تصغیر ہے۔ عام لوگوں کی زبان پر یہ مدینہ میں ایک جگہ تھی حالانکہ یوں نہیں ہے بلکہ یہ نجد میں تھی۔ کہتے ہیں کہ یہ بنو تمیم کی تھی۔

## طُیَخہ

کچھ لوگ اسے طیحہ بولتے ہیں' اسے طیخ بھی پڑھتے ہیں۔ ذی المروہ کی نچلی جانب ایک جگہ تھی۔

# حرف الظّاء

## ظاھرہ

حرۂ غربیہ سے نقا اور مدرج کی جانب ایک جگہ تھی۔ تیسرے باب کی گیارہویں فصل کے آخر میں انصار کے دو گروہوں کا ایک قول گذر چکا ہے کہ: ''تم سے ظاہرہ کا وعدہ رہا۔'' یہ پتھریلی زمین تھی چنانچہ وہ اس طرف گئے' حضور ﷺ کو اطلاع ہوئی تو آپ مہاجرین کو لے کر ان کی طرف چل دئے۔

## ظُبْیَۃ

یہ ظِبَاء کا واحد ہے' جہینہ کے گھروں میں ایک جگہ تھی۔ حضرت عمرو بن حزم کی حدیث میں ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے لکھا تھا: یہ وہ حصہ ہے جو محمد نبی اللہ ﷺ نے عوسجہ بن حرملہ جہنی کو دیا ہے' یہ ذی المروہ سے ظبیہ تک ہے' وہاں سے جعلات تک اور وہاں سے جبل قبلیہ تک۔ پھر ظبیہ نامی ایک جگہ بھی تھی جو ینبع اور غیقہ کے درمیان تھی اور ساحلِ سمندر پر تھی نیز نجد میں یہ ایک کنواں بھی تھا۔

### ظُبیَہ

یہ عَـلَـم (نام) ہے' اس کی طرف عرق مضاف ہے جس کا ذکر ان مساجد میں آ چکا ہے جو مکہ کے راستے میں وادئ روحاء کے مقام پر تھیں۔ علامہ سہیلی کہتے ہیں کہ ظبیہ ایک درخت ہے جو قتاد درخت سے ملتا جلتا ہے اور سایہ دار ہوتا ہے۔ یہی وہ مقام ہے جہاں عقبہ بن ابی معیط بدر سے واپسی پر بھوک پیاس سے قتل کئے گئے تھے چنانچہ حدیث صحیح میں آپ کا قول ہے کہ میں نے انہیں بدر میں گرا پڑا دیکھا یعنی ان میں سے اکثر کو۔

### ظَلِم

کَتِف کے وزن پر ہے' قبیلہ کی وادیوں میں سے ایک وادی تھی' علامہ ھجری نے اسے اشعر کی وادیوں سے شمار کیا ہے۔ علامہ نصر کہتے ہیں کہ ظلم ایک پہاڑ ہے جو اضم اور جبلِ جہینہ کے درمیان ہے اور اصمعی کے مطابق یہ عمرو بن کلاب کا سیاہ پہاڑ تھا اور عرّام کے مطابق یہ تین پہاڑوں میں سے ایک تھا جو راستوں کے درمیان تھے۔

### ظِھَار

کِتاب کے وزن پر ہے۔ خیبر میں ایک قلعہ تھا۔

## حرف العین

### عَابد

عابد' عَبُّـود اور عُبَیـد یہ تین پہاڑ تھے' علامہ ھجری نے ان کا ذکر فرش ملل کا تعارف کراتے ہوئے کیا ہے' عبّو درمیان میں تھا اور سب سے بڑا تھا۔ اس کی ایک جانب حسن بن زید کا کنواں تھا۔

### عَارِمہ

فـاطـمـہ کے وزن پر ہے' پھیلے پہاڑوں کے درمیان ایک گڑھا تھا جنہیں عوارم کہتے تھے' ضریّہ کی چراگاہ کے درمیان تھا۔

### عاص' عویص

مکہ اور مدینہ کے درمیان دو عظیم وادیاں تھیں۔

### عَاصِم

صـاحب کے وزن پر ہے۔ یہ بنو عبد الاشہل کا قلعہ تھا۔ یہ بنو نجار کے گھروں کے قریب تھا' اسی نام کا ایک اور

قلعہ تھا جو قباء میں کسی یہودی کا تھا' اسی میں وہ کنواں تھا جسے قباء کہا جاتا تھا۔ ذو عاصم عقیق کی وادیوں میں سے تھی' نام رکھنے کی وجہ یہ ہوئی کہ یہودیوں کو جب مدینہ سے نکال دیا گیا اور وہ نقیع میں اُترے تو مزینہ کے حلیف بن گئے' عاصم بن عدی بن عجلان نے انہیں حلیف بنایا چنانچہ زمین کا وہ حصہ جہاں انہیں حلیف بنایا گیا اسے شعبۂ عاصم کا نام دیا گیا۔

## عاقِل

یہ ایک پہاڑ تھا۔ اس میں حارث بن آکل المرار رہتا تھا جو امرئ القیس کا دادا تھا۔

## عَالِیہ

یہ لفظ عالی کی مؤنث ہے۔ علامہ عیاض کہتے ہیں کہ عالیہ اور عوالیٔ مدینہ' مدینہ سے تہامہ تک کی بستیاں اور عمارتیں عالیہ اور عوالی کہلاتی تھیں اور تہامہ سے جو نچلی طرف کا علاقہ تھا اسے سافلہ کہتے تھے۔

میں کہتا ہوں کہ اسے عالیہ ذاتی طور پر کہتے ہیں نہ کہ عالیۃ المدینہ کے لحاظ سے کیونکہ اس کا مطلب یہ بنتا ہے کہ مدینہ اور اس کا اردگرد عالی تھا اور اگر ہم علامہ عرام کی رائے کے مطابق کہیں کہ مدینہ کا نصف حصہ حجازی ہے اور نصف تہامی تو ان میں سے کسی کو بھی عالیہ نہیں کہہ سکیں گے' نہ ہی اس نصف کو مدینہ کے صرف مشرق میں ہے جبکہ احادیث وغیرہ میں عالیۃ المدینہ کا لفظ لانا اس کے مخالف ہے کیونکہ احادیث میں واضح طور پر موجود ہے کہ قباء عالیہ میں شمار ہوتا ہے اور جب ابن زبالہ نے عالیہ کی وادیوں کا ذکر کیا تو وادیٔ قناۃ کو شمار نہیں کیا حالانکہ وہ مدینہ کے مشرق میں ہے' البتہ رانونا کو شمار کیا حالانکہ وہ اس کے مغرب میں ہے اور مشہور یہ ہے کہ جو حصہ مدینہ کے قبلہ کی جانب مسجد نبوی سے ایک یا دو میل یا اس سے زیادہ دوری پر ہے' وہ عالیۃ المدینہ کہلاتا ہے جیسے ہم اس کی آئندہ وضاحت کریں گے۔

علامہ مجد' عیاض کی روایت کے بعد لکھتے ہیں: کچھ لوگ کہتے ہیں کہ عالیہ وہ حصہ ہے جو رمّہ سے آگے مکہ تک جاتا ہے۔ ابو منصور لکھتے ہیں کہ حجاز کا عالی حصہ شہر کے لحاظ سے اعلیٰ اور جگہ کے لحاظ سے باعزت حصہ ہے اور یہ وسیع شہر ہیں۔ انتہٰی۔ اسی سے پتہ چلتا ہے یہ سب صرف عالیہ کے متعلق ہے نہ عالیۂ مدینہ۔

علامہ عیاض کہتے ہیں کہ مدینہ کا عالی حصہ چار میل پر پھیلا ہوا ہے' کچھ تین میل کہتے ہیں اور یہ کم سے کم مسافت ہے اور زیادہ سے زیادہ آٹھ میل ہے انتہٰی اور اس کا ردّ وہ ہے جو انہوں نے سنخ میں کہا ہے کہ یہ بنو حارث بن خزرج کے گھر تھے جو عوالیٔ مدینہ میں تھے' اس کے اور حضور ﷺ کے گھر کے درمیان ایک میل کا فاصلہ تھا۔

عتبیہ میں مالک سے ہے کہ عالیہ کا دور تک علاقہ تین میل کے فاصلے تک ہے یعنی مسجد نبوی سے' اس کی تائید اس سے ہوتی ہے جو زھری کے ذریعے حضرت انس سے روایت ہے کہ رسول اللہ ﷺ عصر کی نماز پڑھتے تو سورج اونچا ہوتا اور جانے والا عوالی تک پہنچ جاتا' وہ وہاں پہنچتا تو سورج ابھی اونچا ہوتا اور مدینہ سے کچھ عوالی کا حصہ تقریباً چار میل تھا۔ بیہقی کے مطابق عوالی کی دوری چار یا تین میل تھی۔ ابو داؤد کے مطابق تین میل تک تھی' دار قطنی چھ میل گنتے ہیں اور

عبد الرزاق دو یا تین میل گنتے ہیں۔

ان سب روایتوں کو جمع کرنے کی صورت یہ ہے کہ عوالی کا کم از کم فاصلہ مدینہ سے ایک یا دو میل تھا، عمارتوں کے لحاظ سے دوری تین یا چار میل تھی اور اس کے علاوہ دوری آٹھ میل تھی۔

## عَائِد

سقیا کی جانب ایک وادی تھی جو فُرع میں داخل تھی۔ اسے عایذ بھی پڑھا گیا ہے، اسے مجد نے روایت کیا ہے اور اسدی کہتے ہیں کہ وادیٔ عائد سقیا سے ایک میل پہلے آتی ہے، اسے وادیٔ قاحہ کہتے ہیں۔

## عائد

ربذہ کے قریب ہے۔

## عائر

اس کی طرف نسبت کرکے **ثنیّۃ العایر** کہتے ہیں جو رکوبہ کی دائیں طرف ہے، اسے **غایر** بھی پڑھتے ہیں لیکن پہلا لفظ زیادہ مشہور ہے۔

## عبابید

**تعھن** کے قریب ایک جگہ تھی، یہ لفظ **عبابیب** بھی آتا ہے پھر **عثیانیہ** بھی آتا ہے، سفرِ ہجرت میں یہ لفظ آیا ہے۔

## عباثر

**عَبیثران** کی جمع ہے۔ یہ مشہور بُوٹی ہے پھر اشعر کی ایک وادی ہے جو نخل اور **بواط** کے درمیان تھی، اس میں سے ایک نالہ ینبع کی طرف جاتا تھا، یہ جہینہ کی ایک شاخ کے پاس تھی، ان سے نچلا حصہ موسےٰ بن عبد اللہ حسینی نے خریدا اور وہاں کنواں بنایا تھا۔

## عُبلاء

مدینہ کے ماتحت ایک جگہ کا نام تھا، اسے عبلاء المرودہ بھی کہا جاتا تھا۔ رنگ کرنے کے لئے ایک بوٹی تھی۔ عبلاء البیاض ایک اور جگہ تھی۔

## عُبُّود

لفظ عابد میں اس کا ذکر ہو چکا ہے۔

## عِتر

مدینہ کے قبلہ کی طرف ایک پہاڑ تھا' اسے مستند راقصیٰ کہتے تھے۔ زہیر نے کہا تھا:

"یہ عِتر کی طرح کھڑا ہے کیونکہ اس کی چوٹی پر عبادت ہوتی ہے۔"

کہتے ہیں کہ شاعر نے منصب عِتر سے مراد بت لیا ہے کیونکہ عتر اس کے قریب تھا۔ عُتُر ذبح کرنے کو کہتے ہیں۔

## عثاعث

سیاہ رنگ کی چھوٹی پہاڑیاں تھیں جو ضریہ کی چراگاہ میں تھیں اور وادیٔ مہزور کے اوپر جھکی ہوئی تھیں۔

## عَثعَث

دَبُرَب کے وزن پر ہے۔ یہ وہ پہاڑ تھا جسے مدینہ میں سُلَیع کہتے تھے' اس پر بنو اسلم کے گھر تھے۔

## عُجمَتان

عُجمَہ کا تثنیہ ہے۔ عقیق میں بطحاء کی طرف ایک جگہ۔

## عَدَنَہ

شربہ کی ایک جگہ تھی۔ یہاں داؤد بن عبداللہ بن ابی الکرام اور بنو جعفر بن ابراہیم کے گھر تھے۔

## عُدَینہ

عصبہ کے مقام پر صفاصف اور وادی کے درمیان ایک قلعہ تھا۔ ایک عورت کی وجہ سے یہ نام رکھا گیا' وہ اس میں رہا کرتی تھی۔

## عُذُق

بنو امیہ بن زید کا قلعہ تھا اور بئرِ عذق کا ذکر کنوؤں میں آ چکا ہے۔

## عُذَیبہ

عَذُبہ کا اسمِ تصغیر ہے' ینبع اور جار کے درمیان کنواں تھا' اسے عذیب بھی بولا گیا ہے۔

## عَراقیب

بڑی بستی تھی اور ضریہ میں ایک کان تھی۔

## عُزّٰی

غُزّٰی کے وزن پر ہے، وادی قمی کا نام ہے جیسے نون کے حروف میں آ رہا ہے۔

## عَرُب

کَتِف کے وزن پر ہے، مدینہ کے نزدیک ایک جہت کو کہتے تھے، عبد الملک نے حصہ کثیر شاعر کو دیا تھا۔ لفظ عَرِم بھی اسی وزن پر ہے البتہ اس کے آخر میں میم ہے، یہ بھی ایک وادی تھی جو ینبع سے سمندر تک چلی جاتی تھی۔

## عَرُج

یہ بڑی بستی تھی، مکہ کے راستے میں مسجدوں کے ذکر میں اس کا ذکر آیا ہے۔

علامہ مجد کہتے ہیں، یہ مدینہ سے بیاسی میل دور تھی۔ کہتے ہیں کہ تبّع جب مدینہ سے واپس لوٹا تو دیکھا کہ یہاں چوپائے لنگڑے ہو گئے چنانچہ اس نے اس کا نام ''عرج'' رکھ دیا۔

علامہ کثیر سے پوچھا گیا کہ اسے ''عرج'' کیوں کہتے ہیں؟ تو انہوں نے کہا: اس لئے کہ یہاں سے راستہ ٹیڑھا ہو جاتا ہے۔

ابن الفقیہ کہتے ہیں: کہا جاتا ہے کہ یہاں کا پہاڑ شام تک پھیلا ہوا ہے اور لبنان سے مل جاتا ہے اور پھر وہاں سے انطاکیہ اور شمساط تک چلا جاتا ہے، وہاں اسے ''لکام'' کہا جاتا ہے، پھر ملطیہ اور پھر قالی قلا اور پھر بحر الخزر تک جاتا ہے، اس میں باب ہے اور بلادِ دان میں ملتا ہے، اس کی لمبائی پانچ سو فرسخ ہے۔

## عَرُصَه

ہر وسیع میدان جس میں عمارت نہ ہو کیونکہ وہ بچوں کے کھیلنے کے لئے ہوتا ہے۔ عقیق کے کھلے میدان ''عرصۃ العقیق'' کا ذکر تیسری فصل میں آ چکا ہے، یہ بڑا اور چھوٹا کہلاتا ہے۔

## عِرُض

''جرف'' ہی کا دوسرا نام ہے جیسے جرف کے بیان میں گذرا۔ علامہ مطری کہتے ہیں کہ مسجد ذو قبلتین کے اردگرد کنوئیں اور زرعی زمینیں تھیں جنہیں ''عرض'' کہتے تھے، یہ جرف کی کھیتیوں کے قبلہ میں تھیں۔ علامہ اصمعی کہتے ہیں کہ مدینے کی اعراض اس کی وادیوں میں موجود بستیاں تھیں۔ یہ بھی کہتے ہیں کہ ہر وہ وادی جس میں درخت ہوں، عرض کہلاتی تھی۔ یہ بھی کہتے ہیں کہ ہر وادی عرض کہلاتی ہے پھر سرزمین حجاز میں دیہات کو اعراض کہا جاتا ہے۔

## عرفات

میدانِ عَرفَات والا لفظ ہے۔ یہ مسجد قباء کی طرف ایک اونچا ٹیلہ تھا، نام رکھنے کی وجہ یہ تھی کہ یومِ عرفہ پر نبی

کریم ﷺ یہاں ٹھہرے تھے اور یہیں سے عرفات کو دیکھا تھا۔

## عرفجاء

اشق میں ایک کنواں تھا۔

## عُرُفه

لغت میں اس کا معنیٰ مضبوط اور بلند زمین ہوتا ہے' یہ درخت پیدا کرتی ہے۔ یہ لفظ کئی مقامات پر بولا جاتا ہے۔ عرفة الاجبال' دیار فزارہ میں پہاڑ' عرفة الحمٰی' ضریہ کی چراگاہ اور عرفة منعج۔

## عرق الظبية

اس کا ذکر "ظاء" کے حروف میں آچکا ہے۔

## عُرْیان

لباس والا ہونا کے خلاف ہے۔ آلِ نضیر کا قلعہ تھا یہ بنونجار میں سے حضرت انس بن مالک کا قبیلہ تھا۔ جیسے صقع القبلہ میں گذرا۔

## عُرَیض

یہ لفظ عرض کی تصغیر ہے' مدینہ میں ایک وادی تھی' یہ مدینہ کی شامی جانب وادیٔ قناۃ کے قریب تھی۔ یہ حدیث پہلے گذر چکی ہے: "مدینہ کی سب سے صحیح چراگاہ جو حرۂ بنوقریظہ سے عریض تک ہے۔" سیرت میں بیان ہے کہ ابوسفیان نے نخل عریض کے گلّوں میں سے ایک گلّہ جلایا اور بھاگ گیا۔

## عُرَیفَطان

عرفطان کی تصغیر ہے' اس کا واحد عرفطه ہے' یہ اُبلیٰ میں ایک وادی تھی۔

## عُرَینه

جھینہ کے وزن پر ہے' مدینہ کے گرد شام کے راستے میں ایک بستی تھی۔ حضرت معاذ بن جبل رضی اللہ تعالیٰ عنہ بتاتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے مجھے عرینہ بستی کی طرف بھیجا اور حکم فرمایا کہ میں زمین کے نشان لگادوں۔ حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے آیۂ مبارکہ وَمَآ اَفَاءَ اللّٰہُ عَلٰی رَسُوْلِہٖ کے متعلق فرمایا کہ یہ خاص طور پر وہ زمینیں تھیں جو رسول اللہ ﷺ کی تھیں' عرینہ کی بستی' فدک اور فلاں فلاں۔

نیز یہی وہ جگہ ہے جہاں چراگاہ میں ایک پتھر ملا تھا جس پر لکھا تھا: میں عبد اللہ اسود ہوں اور حضرت عیسےٰ بن

مریم علیہ السلام کی طرف سے اھلِ عرینہ کی طرف بھیجا گیا تھا۔

## عَزّاف

دھناء کے مقام میں ایک پہاڑ تھا۔ مُخیصر کے لفظ میں اس کا ذکر آ رہا ہے، وہاں علامہ مجد نے لکھا ہے کہ عزاف سے مدینہ تک بارہ میل کا سفر ہے۔

قاموس میں ہے کہ یہ لفظ شدّاد کے وزن پر ہے، اس بادل کو کہتے ہیں جس میں گرج چمک ہو نیز بنوسعد کا ریتلا ٹیلہ تھا یا دھناء کے مقام پر مدینہ سے بارہ میل دور ایک پہاڑ تھا، نام رکھنے کی وجہ یہ تھی کہ یہاں جنات کے بولنے کی گرج سنائی دیتی تھی۔ پھر ابرق العزاف بنی اسد کا کنواں (یا چشمہ) تھا اس کا پانی حومانۃ الدراج سے یہاں لایا جاتا تھا اور یہاں سے بطن نخل میں، پھر طرف میں اور پھر مدینہ میں، انتہی۔

صحاح میں ہے کہ العزاف بنوسعد کا ٹیلا تھا، اسے ابرق العزاف کہتے تھے جو زرود کے قریب تھا۔ نہایہ میں ہے کہ عزیف الجن، جنات کی آواز کو کہتے ہیں، یہ بھی کہتے ہیں کہ رات کے وقت طبل کی طرح سنی جانے والی آواز کو کہتے ہیں۔ یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ ان ہواؤں کی آواز ہوتی ہے جو فضاء میں سنائی دیتی ہے چنانچہ جنگل والے لوگ اسے جنّات کی آواز سمجھتے ہیں۔

## عزوزی

حرمین کے درمیان ایک جگہ تھی۔ سنن ابو داؤد میں ہے: ہم رسول اللہ ﷺ کے ہمراہ مکہ سے مدینہ کا ارادہ لے کر نکلے اور جب "عزوزی" کے قریب پہنچے تو آپ اُتر پڑے، پھر ہاتھ اُٹھا کر کچھ دیر تک بارگاہِ الٰہی میں دعا کرتے رہے اور سجدے میں گر گئے۔

## عسعس

فُرقُد کی طرح ہے۔ یہ ضریّہ کی چراگاہ میں ایک پہاڑ تھا، "دارۃ عسعس" اسی کی وجہ سے کہتے ہیں۔

## عُسفان

یہ مکہ اور مدینہ کے درمیان کافی آبادی والی بستی تھی اور مکہ سے دو دن کی دوری پر تھی، نام رکھنے کی وجہ یہ تھی کہ یہاں سے سیلاب مڑ جاتا تھا۔ علامہ اسدی لکھتے ہیں کہ یہاں کنوئیں تھے، اونٹوں کے بیٹھنے کی جگہ تھی اور چشمہ تھا، اسے عولاء کہتے تھے۔

## عُسیب

راما کے بالمقابل ایک پہاڑ تھا جو نقیع کی شرقی جانب تھا، اوپر کی طرف سے یہ اس کی پہلی علامت تھی۔ علامہ

ھجری نے کسی کے حوالے سے لکھا ہے کہ اس پر نبی کریم ﷺ کی جائے سجدہ تھی۔

## عَسِیّہ

معدن قبلیہ کی جانب ایک جگہ تھی۔ اسے غشیہ بھی لکھا گیا ہے۔

## عُشّ

کوّے وغیرہ کے گھونسلے کو کہتے ہیں۔ یہ عقیق کی ایک وادی تھی۔

## عُشَیْرَہ

گنتی کے لئے لفظ عشرہ کی تصغیر ہے۔ ذوالعشیرہ، عقیق کی ایک وادی تھی۔ ذوالعشیرہ کا لفظ حدودِ حرم میں بھی آیا ہے جو حفیاء کی شرقی جانب تھی۔ ذوالعشیرہ، صمتان میں ایک جگہ بھی تھی جس میں دس بوٹیاں اُگتی تھیں۔

ازھری کہتے ہیں کہ ذوالعشیرہ، ینبع اور ذی المروہ کے درمیان ایک چھوٹا سا قلعہ تھا جس میں پیدا ہونے والی کھجوریں سارے حجاز میں بہتر مانی جاتی تھیں ہاں خیبر کی صیحانی اور مدینہ کی برنی و عجوہ اس سے بہتر شمار ہوتی تھیں۔ پھر مسجدوں کے ذکر میں ذوالعشیرہ کا ذکر آیا ہے کہ یہ ینبع میں ایک جگہ تھی۔ اس نام کے غزوہ کا ذکر بھی آچکا ہے۔ مغازی (جنگوں کے ذکر) میں اس کا باب ہے۔ ”**باب غزوۃ العشیرہ او العسیرہ**“ حضرت ابوذر نے اسے ذوالعشیرہ کہا ہے۔ اسے عُشَیْرۃ اور عُشَیْر بھی پڑھا گیا ہے پھر اس کی طرف ”ذات“ کا لفظ مصاف کیا جاتا ہے۔

## عَصُبہ

پہلے حرف پر زبر یا پیش پڑھی گئی ہے، کچھ نے اسے **عَصَبَہ** پڑھا ہے، اس کی جگہ **مَعَصّب** کا لفظ بھی آیا ہے **مُحَمَّد** کے وزن پر، یہ بنوجحجی کا گھر تھا جو مسجد قباء کے غرب میں تھا۔ بخاری شریف میں حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے ہے کہ: جب پہلے مہاجرین حضور ﷺ کی یہاں آمد سے پہلے **عصبہ** پہنچے (یہ قباء میں ایک جگہ تھی) تو ان کی امامت حضرت ابوحذیفہ کے غلام سالم کیا کرتے تھے کیونکہ یہ تلاوت خوب کرتے تھے۔

## عُصْر

**عَصَر** بھی پڑھا گیا ہے۔ یہ ایک پہاڑ تھا، جب حضور ﷺ خیبر کی طرف تشریف لے جارہے تھے تو یہاں سے گذرے تھے۔

ابن الاشرف حدیثِ خیبر میں کہتے ہیں: حضور ﷺ خیبر کو چلے تو **عَصَر** پہنچے۔ یہ لفظ **عَصَر** ہے اور یہ مدینہ اور وادیٔ فُرع میں ایک پہاڑ تھا، اس کے قریب مسجد تھی جس میں حضور ﷺ نے نماز پڑھی تھی۔

## عَظم

اَعْظم کے لفظ میں اس کا ذکر آ چکا ہے، رہالفظِ ذُوعُظُم تو یہ خیبر کی بستی تھی جس میں چشمے اور کھجور کے درخت تھے۔ اسے عَظم بھی پڑھا گیا ہے۔

## عَقْرب

بچھو کے معنٰی میں ہے، یہ روحاء کی شامی جانب ایک قلعہ تھا، بنو بیاضہ وہیں رہتے تھے۔

## عِقْپان

بنو بیاضہ میں ایک قلعہ تھا، فارس کی سرزمین کی شامی جانب سبخہ سے ملتا تھا۔

## عُقَیْربا

خالد بن عقبہ کی زمین تھی جو بنو حارثہ کی شامی جانب تھی۔

## عَقِیق

اس باب کی ابتداء میں اس کا ذکر آ چکا ہے۔

## عَلَاء

بلندی کے معنٰی میں ہے۔ یہ مدینہ میں قلعہ یا جگہ تھی جبکہ عُلَا وادیٔ قرٰی کی طرف ایک جگہ تھی۔ مساجدِ تبوک میں اس کا ذکر آ چکا ہے۔

## عَلَم

"حاجز" کی شرقی جانب تنہا پہاڑ ہے، اسے اَبان کہتے تھے، اس میں کھجور کے درخت تھے اور ایک وادی بھی تھی۔

## عَمُق

یہ ایک وادی تھی جو فُرعْ میں گرتی تھی، اسے عمقین کہتے تھے، یہ حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے کسی لڑکے کی تھی۔ کچھ کہتے ہیں کہ وادیٔ فُرع میں یہ ایک چشمہ تھا اور وادیٔ عقیق میں آ چکا ہے کہ ثنیہ عمق کی پچھلی طرف والی وادی فُرع میں گرتی تھی نیز عمق حاجیوں کی ایک منزل تھی جو سلیلہ اور معدن بنی ثرید کے درمیان تھی۔

قاموس میں ہے کہ یہ لفظ صُرُد کی طرح ہے۔ یہ ذاتِ عذق اور معدنِ بنو سلیم کے درمیان ایک منزل تھی۔

## عَمِیْس

یہ فرش اور ملل کے درمیان ایک وادی تھی۔

ابن اسحاق بدر کے سفر میں لکھتے ہیں: پھر آپ تربان سے گذرے پھر ملل سے' پھر عمیس سے اور پھر صُخَیرات الثمام پر گذرے۔ کچھ اسے غمیس بھی پڑھتے ہیں۔

## عُتَاب

مدینہ اور فید کے درمیان ایک راستہ تھا' کچھ اسے پہاڑ کہتے ہیں۔

## عَنَابِس

مسجد قبلتین کے قبلہ کی جانب کھیتیاں تھیں۔

## عُنَابہ

سیاہ رنگ کا ایک چھوٹا پہاڑ جو رویثہ سے نچلی جانب مدینہ تک جاتا تھا' پھر دیارِ بنو کلاب میں ایک کنواں تھا جو اس راستے پر تھا جو مدینہ کو جاتا تھا' اس میں حضرت زین العابدین بن سیّدنا امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ رہتے تھے۔ محدثین اسے عُنَّابہ پڑھتے ہیں نیز سمیرا کے نزدیک اسی نام کا ایک مکان تھا۔

## عَنَاقِہ

سحابہ کے وزن پر ہے' ضَرِیّہ کے قریب بنو غنی کی جگہ تھی۔ قاموس میں ہے کہ یہ اُن کا کنواں تھا۔

## عواقر

''فرش'' کے مقام پر زمین پر پھیلی پہاڑی تھی۔

## عُوَال

ان تین پہاڑوں میں سے ایک تھا جو راستے میں مدینہ سے ایک دن رات کی مسافت پر تھا' دوسرے پہاڑ ظلم اور لعباء تھے۔ عرام کہتے ہیں کہ ''طرف'' کو تین پہاڑ گھیرے ہوئے ہیں ظلم اور حزم بنی عوال (یہ غطفان کے تھے) اور عوال میں کنوئیں تھے جن میں سے بئرِ لبیہ تھا۔

علامہ یاقوت' عرام سے نقل کرتے ہیں کہ حزم بنی عوال' غطفان کا پہاڑ تھا جو مدینہ کو جانے والے کی دائیں طرف تھا' وہاں کئی کنوئیں تھے۔

## عوالی

عالیہ میں اس کا ذکر ہو چکا ہے۔

## عوسا

وادیٔ رانوناء میں اس کا ذکر آ چکا ہے۔

## عُوَیْقِل

لفظِ عاقل کی تصغیر ہے' حرزہ میں ایک گڑھا تھا۔

## عَیْر

گدھے کو کہتے ہیں' اس پہاڑ کا نام ہے جو مدینہ کے قبلہ کی جانب عقیق کی شرقی جانب ہے۔ حدودِ حرم میں اس کا ذکر آ چکا ہے' اسی نام کا ایک اور پہاڑ اس کے اوپر موجود ہے' اسے عیر الصادر کہتے ہیں جبکہ پہلے کو عیر الوارد کہتے ہیں' اسی لئے زبیر نے عقیق کی وادیوں میں لکھا ہے: پھر شعار الحمراء ہے پھر فراۃ اور عِیَیْرَیْن ہیں۔

علامہ ھجری کہتے ہیں کہ: عقیق کا سیلاب ثنیۃ الشرید میں گرتا تھا۔ پھر لکھتے ہیں کہ: ثنیہ کو شرقی جانب سے عیر الوارد گھیرے ہوئے ہے اور اس کی غربی جانب ایک پہاڑ ہے جسے فراۃ کہتے ہیں۔ پھر شوران کے ذکر میں گزر چکا ہے کہ عرار اور عیر دو سرخ پہاڑ ہیں۔

یہ بیان حدودِ حرم کے بیان میں عیاض کے اس قول کے خلاف جاتا ہے جس میں معصب زبیری کا یہ قول ملتا ہے کہ:

> ''مدینہ میں ایسا کوئی پہاڑ نہیں جسے عیر یا ثور کہتے ہوں حالانکہ احد کی فضیلت میں یہ حدیث گذر چکی ہے:
>
> ''احد پہاڑ جنت کے ایک کنارے پر ہے اور عیر دوزخ کے کنارے پر۔'' پھر ابن ماجہ کی ایک حدیث میں ہے:
>
> ''احد وہ پہاڑ ہے جو ہم سے محبت رکھتا ہے' ہم اس سے محبت رکھتے ہیں' یہ جنت کے دروازے پر ہے اور عیر دوزخ کے دروازے پر ہے۔''

## عِیص

یہ ان وادیوں میں سے جو اضم سے مل جاتی ہیں۔ غزوۂ وِدّان میں آتا ہے: نبی کریم ﷺ نے حضرت حمزہ بن عبد المطلب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو سیف البحر کی طرف عیص کی جانب سے بھیجا۔

حدیثِ ابونصیر میں ہے: آپ نکلے اور ذی المروہ کی جانب سے عیص پہنچے جو ساحلِ سمندر پر واقع تھا' اس راستے پر چلے تھے جہاں سے قریش شام کو جاتے تھے۔

ابن سعد کہتے ہیں کہ زید بن حارثہ کا چھوٹا لشکر عیص کی طرف گیا۔ یہ مدینہ سے چار رات کی مسافت پر تھا اور ذی المروہ سے ایک رات کی مسافت پر۔

## عُیُنَان

لفظ عین کا تثنیہ ہے۔ علامہ مطری نے اسے عینین لکھا ہے اور لفظ عینین کے ذکر میں اس کا حوالہ آ رہا ہے۔ یہ وہ پہاڑ تھا جس پر احد کے دن تیر انداز بیٹھے تھے۔ اسی کے شرقی کنارے پر حضور ﷺ کی مسجد تھی جس کا ذکر مساجدِ مدینہ میں آ چکا ہے اور یہیں وہاں کے چشمے کی منڈیر تھی اور شاید یہیں شہداء کا ایک چشمہ بھی تھا لہٰذا انہیں عینان کہا گیا۔ یہ بھی کہتے ہیں کہ احد کے دن شیطان یہیں کھڑا تھا' اس نے آواز دی تھی کہ محمد ﷺ قتل ہو گئے ہیں۔

ابن اسحاق کہتے ہیں کہ مشرکین آگے بڑھے اور عینین میں اترے' یہ ایک پہاڑ تھا جو وادیٔ قناۃ سے سبخہ میں تھا' یہ وادی کے کنارے اور مدینہ کے بالمقابل تھا۔

## عین ابراھیم

ابراہیم ابن ہشام کا کنواں تھا جو ملل میں تھا۔

## عین ابی زیاد

غابہ کے نزدیک تھا۔

## عین ابی نَیُّزَر

یہ چشمہ (یا کنواں) ینبع میں تھا اور حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی طرف سے عام لوگوں کے لئے وقف تھا۔

ابن شبہ حضرت علی کے صدقات کا ذکر کرتے ہوئے لکھتے ہیں: آپ کے اموال ینبع میں کئی تھے' ان میں سے ایک کنواں (یا چشمہ) عین البحیر تھا' ایک کو عین ابی نیزر کہتے تھے' ایک کو نولا کہتے تھے اور یہ وہی تھا جس کے بارے میں آتا ہے کہ حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے خود اس میں کام کیا تھا' اسی میں نبی کریم ﷺ کی مسجد تھی' آپ اس وقت ذو العشیرہ کی طرف جا رہے تھے۔ پھر حضرت علی نے ینبع میں بعیبغات کنواں بنایا اور ان کی صدقات والی کتاب میں لکھا ہے کہ ینبع میں میرے کنوئیں وغیرہ صدقہ ہیں جنہیں میں نے وقف کر دیا ہے البتہ رباح' ابونیزر اور جبیر کو ہم نے آزاد کر دیا ہے وہ اس زمین میں کام کریں گے اور یہیں سے کھائیں پئیں گے' انتہیٰ۔

ابونیزر' حضرت علی کے غلام تھے جن کی طرف کنوئیں کی نسبت تھی' یہ اس نجاشی کے لڑکے تھے جس کی طرف

مسلمان ہجرت کر گئے تھے، حضرت علی نے انہیں خریدا اس کے والد کی نیکی کے بدلے میں آزاد کر دیا تھا۔

کہتے ہیں کہ نجاشی کے بعد اہلِ حبشہ نے بادشاہ بنانے کے لئے ابو نیزر کو پیغام بھیجا لیکن اس نے یہ کہہ کر انکار کر دیا کہ مجھے اللہ نے دولتِ اسلام دے دی ہے لہٰذا مجھے حکومت کی ضرورت نہیں۔ اس کا قد کافی لمبا تھا اور یہ بہت خوبصورت تھا۔

ابن ہشام کہتے ہیں: مجھے یہ بات صحیح طور پر یاد ہے کہ ابو نیزر، نجاشی کی اولاد سے تھا، اسے چھوٹی عمر ہی میں اسلام کا شوق تھا چنانچہ وہ رسول اللہ ﷺ کی خدمت میں حاضر ہوا اور سیّدہ فاطمہ اور ان کے بچوں کے ساتھ رہنے لگا تھا۔

ابو نیزر کہتے ہیں: میں حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی جائیداد عین ابو نیزر اور بغیبغہ پر تھا کہ آپ میرے پاس آئے، پوچھا: کیا تمہارے پاس کچھ کھانے کو ہے؟ اور پھر کھانے پینے کا واقعہ سنایا۔ پھر کہا کہ آپ نے کدال پکڑا اور نیچے جا کر ایک ضرب لگائی لیکن کنوئیں سے پانی نہ نکلا، دیر ہو گئی، آپ باہر نکلے تو پیشانی سے پسینہ بہہ رہا تھا، آپ نے پسینہ پونچھا اور دوبارہ کدال پکڑ کر کنوئیں پر آئے، کھودنا شروع کیا چنانچہ پانی پھوٹ نکلا۔ آپ جلدی سے باہر نکلے اور کہا، میں اللہ کو گواہ بنا کر کہتا ہوں کہ یہ کنواں صدقہ ہے (عام لوگوں کے لئے ہے) پھر کہا کہ دوات اور کاغذ لاؤ۔ ابو نیزر کہتے ہیں کہ میں لے آیا تو آپ نے اس کا وقف نامہ لکھ دیا۔ آپ نے لکھا کہ یہ فقراء اہلِ مدینہ اور مسافروں کے لئے ہے، یہ دونوں کنوئیں نہ تو بیچے جا سکیں گے اور نہ ہی کسی کو بطور عطیہ دیئے جا سکیں گے، ہاں اگر حضرت حسن یا حسین کو ان کی ضرورت پڑے تو وہؓ ان پر قبضہ کر سکیں گے، کسی اور کا حق نہیں ہے۔

ابن ہشام کہتے ہیں کہ اس کے بعد امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ پر قرض کا بوجھ پڑا تو حضرت معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ابو نیزر کے کنوئیں کے دو لاکھ دینار دینے کا ارادہ کیا لیکن آپ نے بیچنے سے انکار کر دیا۔

## عین الاَزْرق

عام لوگ اسے عین الزرقاء کا نام دیتے ہیں۔ اس کا ذکر چھٹے باب کی پہلی فصل کے آخر میں آ چکا ہے۔

## عین تُحَنَّس

یہ مدینہ میں حضرت حسین بن علی رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے قبضے میں تھا۔ اسے آپ کے غلام تُحَنِّس نامی نے کھودا تھا پھر اسے حضرت علی بن حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے ولید بن عقبہ بن ابو سفیان کے ہاتھوں ستر ہزار دینار کے عوض بیچ دیا تھا جس سے انہوں نے اپنے والد حضرت امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا قرض اتارا تھا، کیونکہ جب قتل ہوئے تو اتنا قرض ذمے تھا۔

## عین الحدید

یہ اضم کے مقام پر تھا۔

## عیون الحسنین

یہ کنوئیں حسین بن زید بن علی بن حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہم کے تھے۔ یہ مدینہ کے ماتحت تین کنوئیں تھے' ایک تو مضیق میں تھا' دوسرا ذی المروہ اور تیسرا اسقیا میں تھا۔

ابو الفرج نہروانی حضرت حسین بن زید سے روایت کرتے ہیں کہ وہ ابوعبد اللہ جعفر صادق رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی نگرانی میں رہے' جب جوان ہو گئے تو انہوں نے کہا: اپنی قوم میں سے تمہیں کسی لڑکی سے نکاح کرنے میں کیا رکاوٹ ہے؟ لیکن میں نے اعراض کیا' انہوں نے پھر یونہی کہا تو میں نے کہا: آپ جس سے چاہیں' میرا نکاح کر دیں۔ انہوں نے فرمایا کہ کلثوم بنت محمد بن عبد اللہ الارقط سے کرلو کیونکہ وہ خوبصورت اور مالدار ہے' چنانچہ میں نے کلثوم کو پیغام بھیج دیا۔ وہ میرے قاصد سے سن کر ہنس پڑیں اور میری اس جرأت پر تعجب کرنے لگیں' میں نے یہ بات حضرت ابوعبد اللہ کو بتائی تو انہوں نے مجھے دویمنی دھاری دار سوٹ دیئے اور کہا کہ اس کے گھر جاؤ اور اسے اپنی حیثیت بتاؤ۔

میں کلثوم کے دروازے پر پہنچا اور جھانکا تو اس نے میری طرف دیکھ کر کہا: تمہاری حیثیت ہی کیا ہے؟ میں نے یہ بات حضرت ابوعبد اللہ کو بتائی تو انہوں نے کہا: کچھ دن کے لئے مدینے سے غائب ہو جاؤ چنانچہ میں شکار کے بہانے غائب ہو گیا پھر واپس مدینہ آیا تو کلثوم کی لونڈی میرے پاس آئی اور کہنے لگی: ہم تو تمہاری شادی کی فکر میں ہیں لیکن تم شکار کرتے پھرتے ہو؟ میں اپنی مالکہ کی طرف سے کئی بار تمہیں تلاش کرنے آئی ہوں' اس نے میرے ہاتھ دس ہزار دینار بھیجے ہیں اور دس ہی لباس بھیجے ہیں اور کہا ہے کہ جب چاہو آ جاؤ اور یہ مہر ادا کر دینا۔

صبح ہوئی تو میں اس کا مالک بن چکا تھا' میں نے اسے تیار رہنے کو کہا اور پھر حضرت ابوعبد اللہ کو اطلاع دی' انہوں نے کہا کہ سفر کی تیاری کرو اور جمعرات کی رات مسجد میں جا کر اپنے نانا کی خدمت میں سلام عرض کرو' ہم زیاد بن عبید اللہ کے کنوئیں پر تمہارے انتظار میں ہونگے۔ میں نے یونہی کیا اور ان کے پاس پہنچا۔ انہوں نے میرے لئے سفر کے کپڑوں کا حکم دیا اور فرمایا کہ اللہ سے ڈرتے رہنا اور ہر کوتاہی پر توبہ کرنا نہ بھولنا' اب جاؤ اور میں معن بن زائدہ کی طرف تمہیں خط لکھ کر دے رہا ہوں اور انشاء اللہ تین ماہ تک تم سے غائب رہوں گا اور جب تم کام کر لو تو ہمارے پاس آنا چنانچہ میں نے آپ کے حکم کی تعمیل کی اور معن کے پاس گیا' میں نے دیکھا تو وہ بیٹھے اور لوگ ان کے پاس کھڑے تھے۔ میں نے سلام کہا تو انہوں نے جواب میں سلام کہا اور پوچھا کون ہو؟ میں نے بتایا تو وہ چلائے اور کہا: میں نہیں چاہتا کہ میرے پاس آؤ۔ میں نے کہا' میں تمہارے بارے میں اچھا گمان رکھنے پر اللہ سے پناہ مانگتا ہوں اور پھر واپس ہوا۔ مجھے ایک آدمی ملا اور اس نے کہا: جو کچھ تم نے کھویا ہے اللہ اس کے بدلے تمہیں بہتر دے گا' پھر مجھے تین ہزار دینار دیئے اور پوچھا: کپڑوں کی ضرورت ہو تو بتاؤ چنانچہ یہ سب کچھ میں نے کلثوم کو لکھ دیا۔

جب عشاء کا وقت ہوا تو معن بن زائدہ میرے پاس آئے اور میرے سامنے جھک کر ہاتھ چومے اور کہا: اے

میرے آقا کے بیٹے! میرا عذر قبول کیجئے کیونکہ غلطی کر چکا ہوں۔ میں نے انہیں حضرت ابو عبد اللہ کا خط دیا' انہوں نے چوم کر اسے پڑھا اور پھر مجھے دس ہزار دینار پیش کئے اور تین سواریاں دیں پھر تین سوٹ دئے اور مجھے الوداع کہا چنانچہ میں نے اپنی ضرورتیں پوری کیں اور عمرہ کرنے کے لئے مکہ آیا' مجھے پتہ چلا کہ حضرت ابو عبد اللہ مکہ آئے ہوئے ہیں' میں حاضر ہوا اور سلام عرض کیا۔ انہوں نے کہا: تم نے معن سے بیس ہزار دینار لے لئے ہیں؟ میں نے کہا' ہاں۔ انہوں نے کہا کہ ہمارے ساتھ کچھ لوگ ہیں جو اللہ سے تمہارے لئے دعائیں کرتے رہے ہیں' انہیں بھی کچھ دے دو۔ میں نے کہا' آپ جو چاہیں' دے دیتا ہوں۔ انہوں نے کہا کیا کچھ دو گے؟ میں نے کہا ایک ہزار دینار دیتا ہوں' انہوں نے کہا پانچ پانچ سو دینار دے دو۔ میں نے یونہی کیا اور مدینہ واپس آ گیا پھر انہوں نے ایک کنواں مروہ میں' ایک مضیق میں اور ایک سقیا میں کھودنے کا حکم دیا۔ پھر میں نے بقیع میں کئی گھر بنائے' تو دیکھو' میں ابو عبد اللہ اور ان کی اولاد کا شکریہ کیسے ادا کر سکتا ہوں؟

## عین الخیف

یہ کنواں عوالیٔ مدینہ کی طرف آتا ہے اور مساجد فتح کے اردگرد کو سیراب کرتا ہے' یہ مسجدیں الگ الگ جگہوں پر ہیں' آج کل انہیں شبشب کہا جاتا ہے۔

## عین رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم

اس کا ذکر چھٹے باب کی پہلی فصل کے آخر میں کیا جا چکا ہے۔

## عین الشہداء

اس کے بارے میں بتایا جا چکا ہے کہ حضرت معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اسے جاری کیا تھا' اسے کاظمہ کہتے تھے۔ یہ نام معروف نہ تھا۔ عینین کے قریب ایک کنواں تھا جو عالیہ کی طرف تھا۔ ظاہر یہ ہے کہ یہ عین الشہداء کے علاوہ ہے۔

## عین الغوار

یہ اضم میں تھا۔

## عین فاطمہ

اس کا ذکر یہودیوں کے گھروں کے بیان میں آ چکا ہے اور یہی وہ جگہ ہے جہاں مسجد نبوی کے لئے اینٹیں پکائی جاتی تھیں۔ حرۂ غربیہ میں بطحان کے قریب آثار ملتے ہیں جہاں قدیم دور میں اینٹیں پکائی جاتی تھیں' دیکھنے پر پتہ چلتا ہے۔

## عین القشیری

یہ کنواں مکہ کے راستے میں سقیا اور ابواء کے درمیان تھا۔ اس میں بہت پانی تھا۔ اس کے کئی گھاٹ تھے جہاں سے حاجی لوگ پانی پیتے تھے، یہاں بہت سے کھجور کے درخت تھے جو عبداللہ بن حسن علوی کے قبضے میں تھے۔

## عین مروان

یہ وادیٔ اضم میں تھا۔

## عُیُنَین

علامہ مجد کہتے ہیں کہ یہ لفظ عین کا تثنیہ ہے، ابھی عینان میں اس کا ذکر ہو چکا ہے لیکن کچھ لوگ اسے ہر حال میں عینین ہی بولتے ہیں کیونکہ علامہ ازہری اس کے بارے میں لکھتے ہیں کہ عُیُنَین احد کے قریب ایک پہاڑی ہے۔ انتہٰی۔

علامہ مطری اسے عُیُنَین پڑھتے ہیں تو شاید کلام ازھری میں بھی یہ لفظ یونہی ہے لہٰذا یہ عَین کا تثنیہ نہیں ہو گا۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ کچھ نے اسے عِینَین لکھا ہے لیکن یہ بات پکی نہیں ہے۔

# حَرفُ الغَین

## غابہ

المشارق میں اسے باء کے ساتھ ہی لکھا ہے، عوالیٔ مدینہ میں اموال سے ایک مال تھا۔ اسے غایة بھی پڑھا گیا ہے لیکن مالک نے اس بات کا رد کیا ہے چنانچہ حافظ ابن حجر نے بھی مالک کی پیروی میں لکھا ہے کہ: غابہ، عوالیٔ مدینہ میں سے ہے اور پھر مزید لکھا کہ یہ شام کی طرف تھا۔ انتہٰی۔ حالانکہ اس میں کوئی اختلاف نہیں کہ یہ مدینہ کی سافلہ (نچلی) جانب ہے، اسی لئے انہوں نے لکھا ہے کہ یہ شام کی جہت میں ہے اور یہ عوالیٔ مدینہ میں ہو بھی کیسے سکتا ہے، یہ تو مدینہ کی وادیوں کے پانی جمع ہونے کی جگہ تھی؟ جیسے پانچویں فصل کے آخر میں بتایا جا چکا ہے چنانچہ علامہ ھجری لکھتے ہیں: پھر مدینہ کا سیلابی پانی سافلۂ مدینہ (نچلی طرف) میں جا گرتا تھا اور صورین کا کنواں غابہ میں تھا اور پھر آج کل یہ مدینہ کی نچلی طرف مشہور ہے، وہاں اہل مدینہ کی جائیدادیں تھیں جو خراب ہو چکی تھیں۔ حضرت زبیر بن عوام نے اسے ایک لاکھ ستر ہزار دینار میں خریدا تھا اور ان کے ترکہ میں سولہ لاکھ کی بیچی گئی۔

زبیر ابن بکار، عبید اللہ بن حسن علوی سے روایت کرتے ہیں، انہوں نے بتایا کہ حضرت معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے مدینہ میں آپ کی جائیداد کے وکیل عبد الرحمٰن بن ابو احمد بن جحش سے کہا کہ کوئی وادی خریدو وہ کچھ دیر بعد

آئے اور کہا' میں نے کچھ وادیاں دیکھی ہیں' انہوں نے کہا بتاؤ! عبدالرحمٰن نے کہا کہ وادیٔ بلدہ ہے' حضرت معاویہ نے کہا کہ مجھے اس کی ضرورت نہیں۔ انہوں نے کہا: النخیل' حضرت معاویہ نے کہا' اس کی ضرورت نہیں' عبدالرحمٰن نے کہا کہ پھر دعان ہے' انہوں نے کہا کہ اس کی بھی ضرورت نہیں پھر انہوں نے ''غابہ'' کا نام لیا تو حضرت معاویہ نے کہا کہ یہ خرید لو۔

اس پر ابن ابی احمد نے کہا کہ میں نے آپ سے کئی وادیوں کا ذکر کیا جنہیں آپ جانتے نہ تھے تو آپ نے انہیں پسند نہیں کیا پھر ایک اور وادی کا ذکر کیا ہے تو آپ نے کہا کہ اسے خرید لو۔ انہوں نے کہا کہ جب تم نے غابہ کا نام لیا ہے تو اسی میں مجھے بہت سے پانی کا پتہ چلا ہے۔

میں کہتا ہوں کہ حضرت معاویہ نے غابہ کے لفظ سے پانی کی کثرت کا پتہ لگایا تھا کیونکہ لغت میں غابہ درختوں والی جگہ کو کہتے ہیں۔

حضرت محمد بن ضحاک کہتے ہیں کہ حضرت عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سلع پہاڑ پر کھڑے ہوتے تو اپنے غلاموں کو آواز دیتے' وہ غابہ میں ہوتے تو انہیں آواز سنائی دیتی۔ یہ رات کا آخری وقت ہوتا تھا اور فاصلہ آٹھ میل کا ہوتا تھا۔

علامہ مجد کہتے ہیں کہ غابہ بارہ میل کے فاصلے پر تھا اور یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ مدینہ سے آٹھ میل کے فاصلے پر تھا۔

علامہ یاقوت کہتے ہیں کہ درندے نبی کریم ﷺ کے پاس غابہ میں حاضر ہوئے اور آپ سے درخواست کی کہ ان کے کھانے کو حصہ مقرر فرما دیں۔ پھر ابن زبالہ نے یہ حدیث بیان کی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے غزوۂ ذی قرد کے موقع پر غابہ میں نمازِ قصر پڑھی تھی۔

## ذات الغار

یہ میٹھے پانی کا کنواں تھا جو سوارقیہ سے تین فرسخ کے فاصلے پر تھا۔

## غُبَیب

یہ لفظ غبّ کی تصغیر ہے۔ مسجد جمعہ کی جگہ کا نام تھا۔

## ذو غُشُث

صُرَد کے وزن پر ہے۔ ضریہ کی چراگاہ میں ایک پہاڑ تھا۔

## غدیر الاَشطاط

یہ عسفان سے مکہ کی طرف تین میل کے فاصلے پر تھا۔

## غدیر خم

خاء کے حروف میں اس کا ذکر ہو چکا ہے۔

## غُرَاب

کوے کے معنٰی میں ہے۔ یہ مدینہ کی شامی (شمالی) جانب ایک پہاڑ ہے، جو مدینہ اور مخیض کے درمیان ہے۔

ابن زبالہ المنازل میں لکھتے ہیں کہ ایک قوم مخیض سے غراب الضائلہ پھر قصاصین اور پھر احد کی طرف رہا کرتی تھی۔

ابن اسحاق کہتے ہیں: نبی کریم ﷺ مدینہ سے چلے اور غراب کے راستے پر تشریف لے گئے، یہ ایک پہاڑ ہے جو مدینہ سے شام کے راستے میں آتا ہے پھر مخیض کی طرف گئے۔ اس کی جگہ غرابات جمع کا لفظ بھی بولا جاتا ہے چنانچہ حدیثِ پاک میں آتا ہے: اور جب ہم غرابات میں پہنچے تو آپ نے اُحد کی طرف دیکھا۔ آج کل اسے غُرَیْبَات کہا جاتا ہے۔

میں کہتا ہوں کہ حضرت زبیر، عقیق کی وادیوں کے بیان میں لکھتے ہیں: پھر رایۃ الغراب آتا ہے۔ اور غراب ایک کنوئیں کا نام بھی ہے جو رحضیّہ کے راستے میں آتا ہے جو مدینہ سے ایک دن کے سفر پر ہے۔

## غُرَان

وادیٔ ازرق کا نام ہے جو امج کی پچھلی طرف ایک میل کے فاصلے پر ہے۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ یہ وادیٔ ضَخم کا نام ہے جو وادی سایہ کی پچھلی طرف ہے، اسے رھاط بھی کہتے ہیں۔

ابن اسحاق کہتے ہیں کہ غران ایک وادی ہے جو نخل اور عسفان کے درمیان ایک شہر "سایہ" تک چلی جاتی ہے۔

## ذو الغَرَاء

عقیقِ مدینہ میں ایک وادی ہے۔

## غُرّۃ

گھوڑے کے ماتھے کی سفیدی کو کہتے ہیں۔ یہ ایک قلعے کا نام تھا جو مسجد قباء کے منارہ کے پاس تھا۔ اسے عُرَّہ بھی لکھا گیا ہے۔

## غَزال

ہرن کے معنے میں ہے۔ یہ ایک وادی ہے جو شمنصیر کی طرف سے آتی ہے، وہاں بنوخزاعہ رہتے تھے۔

## غَشِیَّہ

معدن القبلیه کی جانب ایک جگہ تھی۔ یہ لفظ عَسِیّہ بھی لکھا ملتا ہے۔

## ذو الغُصْن

غصن بمعنی ٹہنی ہے۔ عقیق کی وادیوں میں سے ایک ہے۔

## غَضُوَرْ

جَعْفَر کے وزن پر ہے' یہ جگہ مدینہ اور خزاعہ و کنانہ کے علاقہ کے درمیان تھی۔ علامہ یاقوت کہتے ہیں کہ یہ مکہ اور مدینہ کے درمیان وہ جگہ تھی جہاں خزاعہ رہتے تھے۔

## ذو الغضوین

لفظ غضی کا تثنیہ ہے' سفرِ ہجرت میں لفظ کا ذکر یوں ہے: پھر راہ دکھانے والا دونوں حضرات کو ذوالغضوین سے موڑتے ہوئے وادی میں لے گیا۔ اسے ذوالعصوین بھی کہتے ہیں۔

## غُمْرہ

جو چیز کسی کو ڈھانپ لے' نجد کے راستے میں ایک جگہ کا نام ہے' حضور ﷺ نے یہاں حضرت عکاشہ بن محصن رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو جہاد کرنے بھیجا تھا۔ ابن سعد نے اسے غمر مرزوق کہا ہے اور یہ بنوسعد کا کنواں تھا۔

## غُمُوضْ

یہ خیبر میں بنوحقیق کا قلعہ تھا۔ کچھ اسے قموص بولتے ہیں اور زیادہ صحیح یہی ہے۔

## غَمِیس

امیر کے وزن پر ہے۔

## غَمِیم

رابغ اور جحفہ کے درمیان ایک جگہ تھی۔ غمیم نامی آدمی کے نام پر اس کا نام رکھا گیا' حضور ﷺ نے یہ جگہ حضرت اوفی بن موالیہ کو دے دی تھی اور شرط لگا دی تھی کہ مسافروں وغیرہ کو کھانا کھلایا کریں اور اس سلسلے میں انہیں تحریر کر دی تھی۔

علامہ عیاض کہتے ہیں کہ غمیم ایک وادی تھی جو عسفان سے آٹھ میل کے فاصلے پر تھی اور ''کراع'' حرہ کی طرف ایک سیاہ پہاڑ تھا جو اس وادی تک پھیلا ہوا تھا۔

میں کہتا ہوں کہ اس کی تائید ابن ہشام کے اس قول سے ہوتی ہے کہ: غمیم' عسفان اور ضجنان کے درمیان تھا۔

### غَوْر

وہ جگہ جو تہامہ اور ذاتِ عرق سے سمندر تک نچلی جانب ہے' اسے غور کہتے ہیں' اسے غور اعظم بھی کہا جاتا ہے' بنو سلیم کے علاقے میں ایک جگہ کا نام تھا اور جو قبلیہ سے ینبع تک چلی جاتی تھی۔

### غَوْل

جَول کے وزن پر ہے' حلّیت کی غربی جانب ایک پہاڑ ہے جہاں کھجور کے کافی درخت موجود تھے۔

### غُیَیْقَه

"جار" کے قریب ساحلِ سمندر پر ایک جگہ تھی جس میں وادیٔ ینبع اور رضویٰ گر جاتی تھیں۔ علامہ سکونی کہتے ہیں کہ یہ بنو غفار کا کنواں تھا۔

## حَرْفُ الْفَاء

### فَارِع

صاحب کے وزن پر ہے' باب الرحمہ کے قریب' دار جعفر بن یحییٰ کے گھروں کی جگہ میں ایک قلعہ تھا' حضور ﷺ اس کے سائے میں بیٹھے تھے۔ یہ ایک بستی بھی تھی جو سایہ کی بالائی جانب تھی' جہاں باغ اور چشمے (کنوئیں) تھے۔

### فَاضِجَه

عالیہ میں جائیداد تھی جو آج کل ناحیة جفاف کے نام سے مشہور ہے' وہاں بنو نضیر کا قلعہ تھا اور شعمی سے ضریہ تک ایک وادی بھی تھی۔ فاضجہ دو یا زیادہ پہاڑوں کے درمیان زمین کا خلاء ہوتا ہے۔

### فَاضِح

ریم کے نزدیک ایک پہاڑ ہے اور پھر ایک وادی بھی تھی جو بنو عیر کے علاقے شریف میں تھی۔

### فَجّ الرَّوْحَاء

سیالہ کے بعد آتی ہے' یہاں سے حضور ﷺ کئی بار گزرے تھے۔

### فُحْلان

لفظ فحل (سانڈھ) کی جمع ہے' احد پہاڑ کے قریب ایک جگہ تھی۔ قاموس میں ہے کہ فِحْلَان' احد میں ایک جگہ

تھی۔

## فَحْلَتَان

یہ دو بلند پہاڑیاں تھیں جو مدینہ سے ایک دن کے سفر پر واقع تھیں جو مدینہ اور صحراء کے نزدیک ذی المروہ کے درمیان تھیں، انہیں فیفاء الفَحْلین کہتے تھے، مساجدِ تبوک میں اس کا ذکر آتا ہے۔

## فَدَك

اس کا ذکر صدقات (رفاہی مال) میں آ چکا ہے۔ علامہ عیاض کہتے ہیں کہ یہ مدینہ سے دو یا تین دن کے سفر پر تھا، علامہ مجد نے صرف پہلے قول کو لیا ہے اور انہوں نے اس بات کو عجیب و غریب جانا ہے کہ آج کل اہلِ مدینہ اس سے واقف نہیں، میرا بھی یہی حال تھا، پھر میں نے ابن سعد کا کلام دیکھا جس میں بتایا گیا تھا کہ حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ بنو سعد بن بکر کی طرف فدک میں چھوٹا سا لشکر لے کر گئے۔ رسول اللہ ﷺ کو پتہ چلا تھا کہ ان کے پاس کافی جنگجو ہیں، وہ خیبر کے یہودیوں کی امداد کرنا چاہتے ہیں چنانچہ آپ نے سو آدمی دے کر حضرت علی کو بھیجا، آپ رات کو چلتے اور دن چھپ جاتے، یوں عجمی علاقے میں خیبر اور فدک کے درمیان پہنچے، مدینہ اور فدک کے درمیان چھ راتوں کا سفر تھا۔

وہاں ایک آدمی سے ملے اور ان لوگوں کے بارے میں پوچھا۔ اس نے کہا: میں اس صورت میں بتاؤں گا اگر مجھے آپ جان کی امان دیں۔ انہوں نے یہ بات مان لی چنانچہ اس نے ان کا پتہ بتا دیا چنانچہ لشکر نے ان پر حملہ کیا جس کے نتیجے میں پانچ سو اونٹ اور دو ہزار بکریاں پکڑ لیں جبکہ بنو سعد ظعن کو بھاگ گئے۔

یہ اہلِ فدک یہودی تھے اور جب خیبر فتح ہو چکا تو انہوں نے حضور ﷺ سے اس بات مطالبہ کیا کہ اُن کا شہر انہی کے قبضے میں رہنے دیں۔ ایک روایت میں ہے کہ انہوں نے اس کے نصف پر آپ سے صلح کی اور جب حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے انہیں جلا وطن فرمایا تو ان کی طرف وہ شخص بھیجا تھا جس نے ان کے لئے آدھے حصے کی قیمت لگائی تھی۔

دونوں باتوں کو جمع کرنے کی صورت یہ ہے کہ صلح تو اس سارے پر ہوئی تھی اور حضور ﷺ نے خیبر کی طرح یہاں کے نصف پھل پر ان سے معاملہ فرمایا تھا تو جس نے ایک حصے پر صلح کرنے کی روایت کی تو اس نے پھلوں کے بارے میں طے شدہ معاملے کو دیکھا ہوگا۔

کہتے ہیں کہ اس کا نام فدک بن خام کی وجہ سے رکھا گیا کیونکہ سب سے پہلے یہاں وہی آباد ہوا تھا۔

## فَرَاء

غُراب کے وزن پر ہے لیکن شعر میں ''فَرای'' بھی آیا ہے، جبلِ عیر الوارد کی غربی جانب ایک پہاڑ ہے ان دونوں کے درمیان جبل الشرید ہے۔

قاموس میں آتا ہے کہ ذوالفراء ایک جگہ تھی جو عقیق مدینہ کے قریب تھی۔

## فرش ملل

اور فُریش اس کی تصغیر ہے' یہ دونوں "ملل" کے قریب مشہور ہیں' ان دونوں کو وادی کا نشیبی حصہ الگ الگ کرتا ہے جسے "مشعر" کہتے ہیں' وہاں کئی گھر اور عمارتیں تھیں' کثیر بن عباس مدینہ سے بائیس میل کا سفر کر کے "فرش ملل" میں اترتے تھے۔

## فُرُوع

علامہ سہیلی اسے فُرُع کہتے ہیں' اس دوسری صورت کو المشارق میں بیان کیا گیا ہے پھر یہ لفظ بعض کے نزدیک فُرُوع بھی ہے' سہیلی کے نزدیک فَرَع ہے اور یہ اشعر کی وادیوں میں سے ایک وادی ہے جو سویقہ کے قریب ہے' اس کے اور مشعر کے درمیان ہے جو مدینہ سے ایک دن کے فاصلے پر ہے۔

علامہ مجد کہتے ہیں کہ فرع' سقیا کی بائیں جانب مدینہ سے آٹھ بُرد (چھیانویں میل) کے فاصلے پر تھی' وہاں منبر (بلند مقام)' کھجور کے درخت اور کنوئیں تھے' یہ ایک بڑی بستی تھی' اس کے بڑے کنوئیں عینان تھے جو بہت گہرے تھے جن میں سے ایک تو ربض میں اور دوسرا نجف میں تھا' ان سے بیس ہزار درختوں کو سیراب کیا جاتا تھا۔ اس میں بہت سی بستیاں تھیں۔

علامہ سہیلی کہتے ہیں' یہ وہ پہلی بستی تھی جہاں سے حضرت اسماعیل علیہ السلام اور ان کی والدہ مکہ کو جاتے ہوئے کھجوریں لے گئے تھے۔

## فُرَیْقَات

یہ جمع کا لفظ ہے اور فرقة کی تصغیر ہے' یہ بھی عقیق کی ایک وادی تھی' یہ وادیاں اکٹھی ہو کر حلوان میں گرتی تھیں۔

## فَضاء

علامہ صغانی اسے فضا پڑھتے ہیں۔ یہ بھی مدینے میں ایک جگہ تھی اور فضاء بنی خطمہ کا ذکر ان کے گھروں میں گذر چکا ہے۔ بطحان کا سیلاب اسی کی طرف آتا تھا' مہزور اور مذینیب کا سیلاب یہیں پر مل جاتا تھا اور یہ ماجشونیہ کے قریب جگہ تھی۔

## فُعْرٰی

یہ سُکرٰی کے وزن پر ہے' کچھ اسے قِعْرٰی بھی کہتے ہیں' ایک پہاڑ ہے جو وادیٔ صفراء میں ہے۔

## فَغُوہ

یہ جبلِ آرہ کے قریب ایک بستی تھی۔

## فقار

اس کا ذکر حَزْرہ میں آچکا ہے' میرے خیال میں آج کل یہی فقرہ کے نام سے مشہور ہے۔

## فَقِیر

غَنِی کے مقابلے میں ہے۔ مدینہ کے قریب دو جگہوں کا نام تھا جنہیں فقیران کہتے تھے۔ حضرت جعفر صادق رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں کہ رسول اکرم ﷺ نے حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو زمین کے چار پلاٹ عطا فرمائے تھے' فقیران' بئر قیس اور شجرہ۔ کچھ کہتے ہیں کہ فقیر ایک کنوئیں کا نام تھا۔ عالیۂ مدینہ میں ایک باغ تھا جسے فُقَیر کہتے تھے۔

ابن شبہ نے حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے صدقہ کا ذکر کرتے ہوئے لکھا ہے کہ ان میں سے عالیہ میں فقیرین تھا' پھر بتایا ہے کہ حضرت حسن یا حضرت حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے فروخت کر دیا تھا چنانچہ یہ زمین کئی ہاتھوں میں چلی گئی۔

پھر ابن شبہ نے حضرت علی کی اصل تحریر بتائی جو اس صدقہ کے بارے میں تھی' الفاظ یہ تھے: فقیر میرے پاس ہے اور تم لوگ جانتے ہی ہو کہ یہ اللہ کے نام پر صدقہ ہے۔

## فُلْجَان

یہ حرۂ غربیہ میں سعد کے سقیا کی زمین کا نام تھا۔

## فَلْجَہ

عقیق کی ایک وادی تھی۔ ابو وجزہ سعدی نے اسے روض الفلاج کا نام دیا ہے۔

اس سے معلوم ہوا فلاج' فلجہ کی جمع ہے جس میں سے تاء کو حذف کیا گیا ہے۔ علامہ یاقوت نے یہی تصریح کی ہے چنانچہ لکھا ہے: فلجہ وہ جگہ ہے جو عقیقِ مدینہ میں تھی اور صوبر کے بعد تھی' ابو وجزہ نے اس کا نام فلاج رکھا ہے۔ انتہیٰ۔

علامہ مجد نے اسے فِلَاج لکھا ہے' یہ مدینہ کے قریب ایک باغ تھا جہاں ربیع کے موسم میں لوگ جمع ہوتے تھے' وہاں بارش کا پانی جمع ہو جاتا تھا' وہیں ایک کنواں تھا جسے مختبیٰ کہتے تھے۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ موج ایک وادی تھی جو فدک اور وابشہ کے درمیان تھی۔

میں کہتا ہوں کہ عقیق کے کنوؤں میں سے ایک مرج تھا لیکن وہاں اسے مزج لکھا ہے اور شاید ابو وجرہ کے شعر میں اس لفظ سے یہی مراد ہے۔ مجد کہتے ہیں کہ اس وادی کی اُوپر والی جانب ایک باغ تھا جسے فلاج کہتے ہیں۔

## فُلَیج

زُبَیر کے وزن پر ہے جو فِلج کی تصغیر ہے، ان تالابوں میں سے تھی جہاں مدینہ کی وادیوں کا پانی جمع ہوتا تھا۔

## فُنَیق

مدینہ کے قریب ایک جگہ تھی۔

## فُوَیرِع

بنونجار میں سے بنوعم کے گھروں میں ایک قلعہ تھا۔

## فیفاء الخبار

اس کا ذکر لفظ خبار میں گذر چکا ہے۔

## فیفاء الفحلین

یہ فحلتین میں گزرا۔

# حرف القاف

## قائم

صاحب کے وزن پر ہے، بنو انیف کی جائیداد تھی، قباء سے قبلہ کی طرف مغرب میں واقع تھی۔

## قار

مدینہ کی بستیوں میں سے ایک بستی تھی۔

## قاحة

مدینہ سے تین دن کے فاصلے پر تھی اور یہ سقیا سے پہلے مدینہ کی جانب ایک میل کے فاصلے پر تھی۔ حافظ ابن حجر کہتے ہیں کہ اس وادی کو وادی العبادید کہتے تھے۔ علامہ اسدی کا بیان گذر چکا ہے کہ اسے وادی العائد کہتے تھے، یہ بنو غفار کے قبضے میں تھی۔ علامہ عیاض کہتے ہیں کہ قاحۃ، عبادید میں ایک وادی تھی، سب سے اسے قاف سے لکھا ہے لیکن

قابسی اور ھمدانی نے فاء سے لکھا ہے تاہم یہ غلطی ہے کیونکہ حدیث ہجرت میں آیا ہے: ”قاحہ سے گذرے“ البتہ عرام کی کتاب کے دونسخوں میں میں نے فاء اور جیم سے لکھا دیکھا ہے۔

## قاعِ

مساجدِ فتح کی غربی جانب مسجد بنوحرام کے قریب ایک جگہ تھی۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ یہ بلوائیوں کا قلعہ تھا جو بئرِ عذق کے قریب تھا لیکن مجھے اس کا ماخذ معلوم نہیں ہوسکا۔ مکہ کے راستے میں بھی قاع نامی جگہ تھی اور قاع النقیع دیارِ سلیم میں تھا۔

## قُبَاء

اسے قبا بھی پڑھتے ہیں لیکن علامہ بکری اس کا انکار کرتے ہیں۔ علامہ نووی کہتے ہیں کہ واضح لفظ مدّ سے ہے، یہ مذکر ہے اور منصرف ہے (تینوں حرکتیں آسکتی ہیں)۔ علامہ خلیل لکھتے ہیں کہ قبا عوالیٔ مدینہ میں ایک بستی تھی، ابن جبیر کہتے ہیں کہ یہ مدینہ کے قریب ایک بڑی بستی تھی (یا بڑا شہر تھا) اور حدائق النخل سے اس کی طرف راستہ جاتا تھا۔ کچھ احادیث سے پتہ چلتا ہے کہ اسی میں عصبہ اور بنو غرس شامل تھے، اس سے ظاہر ہے کہ یہ اس کی مشرق و مغرب میں حد تھی۔

علامہ مجد، مشارق کی اتباع میں لکھتے ہیں کہ: اصل میں یہ وہاں ایک کنوئیں کا نام تھا جس کی وجہ سے بستی کا نام رکھا گیا۔ مجد نے اسے ابن زبالہ کے اس قول سے لیا ہے: قباء میں ایک یہودی شخص تھا جس کا یہاں قلعہ تھا جسے عاصم کہتے تھے، یہ دارِ ثوبہ بن حسین بن سائب بن ابولبابہ میں تھا اور اسی میں وہ کنواں تھا جسے قباء کہتے تھے۔

مراغی کی تحریر سے میں نے نقل کیا ہے کہ: اس کا نام قباء کنوئیں کی وجہ سے رکھا گیا تھا جو وہاں موجود تھا، اسے ھبار کہتے تھے، اس سے انہوں نے بدفالی لی تو اس کا نام قباء رکھ دیا اور شاید ابن زبالہ کا جونسخہ میرے سامنے ہے اس میں یہ بات بتانا رہ گئی ہے کیونکہ میں نے اقشہری کے قلم کا لکھا دیکھا ہے کہ: ابن زبالہ کہتے ہیں: مجھے عبدالرحمٰن بن عمرو العجلانی نے کہا: قباء کا نام کنوئیں کے نام پر رکھا گیا جو وہاں موجود تھا، اسے قُبَّار کہتے تھے (شکاری کا چراغ) اس سے انہوں نے بدفالی لی تو اس کا نام قباء رکھ دیا، یہ کنواں دارِ ثوبہ بن حسین بن ابی لبابہ کا تھا۔ علامہ مجد اس کے بارے میں لکھتے ہیں کہ یہ مدینہ سے دو میل کے فاصلے پر تھا۔ علامہ عیاض کی المشارق میں ہے کہ یہ مدینہ میں ایک بستی تھی جو اس سے تین میل کے فاصلے پر تھی، جبکہ ابن حجر لکھتے ہیں کہ یہ مدینہ میں مسجدِ نبوی سے ایک فرسخ کے فاصلے پر تھی۔

میں کہتا ہوں کہ خود میں نے اسے مسجد نبوی کے دروازے بابِ جبریل سے مسجد قباء کی چوکھٹ تک ناپا ہے تو یہ حدودِ حرم میں بتائے ہاتھ کے مطابق سات ہزار دو سو سے کچھ زائد ہاتھ کے فاصلہ پر تھی تو یہ فاصلہ دو مکمل میل اور میل کے سات حصوں میں سے پانچ حصے بنتا ہے اور یہ اس بناء پر کہ میل تین ہزار ہاتھ ہو، لہٰذا درست پیائش پہلی ہے اگرچہ

مطری نے دوسری پیائش کو صحیح کہا ہے اور کہتے ہیں کہ عیاض نے پہلی پیائش لی ہے۔

مسجد قباء کی فضیلت مسجدوں کے ذکر میں آ چکی ہے۔

پھر قباء نامی ایک بڑی بستی بھی تھی جہاں محارب اور عامر بن ربیعہ وغیرہ رہتے تھے' یہاں کنوئیں' کھیتیاں اور کھجور کے باغ تھے۔ علامہ عرام نے ان کا ذکر افاعیہ اور مران کی جانب بتائے ہوئے کیا ہے جبکہ علامہ اسدی نے ضریہ سے مکہ تک کے راستے میں کیا ہے جو ذاتِ عرق سے چار دن کی مسافت پر تھی اور یہ آج کل کشبث کے نام سے مشہور ہے۔

## قُباب

غراب کے وزن پر ہے۔ مدینہ میں ایک قلعہ تھا۔

## قَبَلِیَّہ

عَرَبِیَّہ کے وزن پر ہے' گویا یہ قَبَل کی طرف منسوب ہے' اس کا مطلب تمہارے سامنے پھیلی ہوئی زمین ہے۔ قاموس میں یہ لفظ قِبْلِیّہ اور قَبَلِیّہ دونوں طرح ہے' معاون کا لفظ اسی کی طرف مضاف ہے۔

علامہ عیاض کہتے ہیں کہ یہ جگہ فُرع کے نزدیک تھی۔ نہایہ میں لکھا ہے کہ یہ جگہ ساحلِ سمندر سے ایک طرف تھی' اس کے اور مدینہ کے درمیان پانچ دن کی مسافت تھی۔ اسے فرع کی جانب بھی بتاتے ہیں جو نخلہ اور مدینہ کے درمیان جگہ تھی۔

علامہ زمخشری کہتے ہیں کہ یہ قبلیہ سراۃ کہلاتی تھی جو مدینہ اور ینبع کے درمیان تھی چنانچہ یہ وادی جو ینبع تک بہتی تھی' اسے غور کہتے تھے اور جو مدینہ کو بہتی تھی' اسے قبلیہ کہتے تھے' شام کی طرف سے اس کی حد خَبُأ (یہ بنو عراک کے پہاڑ تھے) اور شرف السبالہ کے درمیان تک تھی' یہ وہ زمین تھی جس سے حاجی گذرتے تھے' اس میں پہاڑ اور وادیاں تھیں۔

## قُدُس

علامہ ھجری کہتے ہیں کہ قدُس کے پہاڑ بقیع کی غربی جانب تھے اور پھر قدس وہ پہاڑ تھے جو ایک دوسرے سے متصل تھے' بڑے تھے' فائدہ مند تھے جو عَرعَر اور خزم اُگاتے تھے۔ اس میں باغ بھی تھا نیز مزینہ کے کافی گھر تھے۔ علامہ اسدی کہتے ہیں کہ بائیں طرف والا پہاڑ جو قشیری کے چشمے پر تھا' اسے قدس کہتے تھے جس کا اوّل حصہ عرج میں اور دوسرا اس چشمے کی پچھلی طرف تھا۔

## قدوم

صبور کے وزن پر ہے۔ یہ ایک پہاڑ تھا چنانچہ مدائنی کہتے ہیں کہ ''قناۃ'' ایک وادی تھی جو قدوم کی طرف سے

گذرتی تھی۔ یہ اُحد کے شہیدوں کی قبروں کے نیچے سے گذرتی تھی۔ علامہ زمخشری کہتے ہیں کہ قدوم، سراۃ میں ایک گھاٹی بھی تھی اور نعمان میں ایک جگہ، یہ وہ جگہ تھی جہاں ابراہیم خلیل علیہ السلام نے ختنہ کیا تھا۔

علامہ عیاض لکھتے ہیں کہ قدوم کے جس کنارے کا ذکر حدیثِ فریعہ میں آتا ہے تو اس میں قَدُوم پڑھا جاتا ہے پھر اس کو شدّ اور شد کے علاوہ پڑھتے ہیں۔ ابن وضاح کہتے ہیں کہ یہ مدینہ میں ایک پہاڑ تھا اور وہ لفظ جو حدیثِ ابوھریرہ میں آتا ہے "قَدُوم ضَان" تو یہ دوس کے مقام پر ایک پہاڑ کی گھاٹی تھی۔

## قُدَیْد

زبیــــر کے وزن پر ہے، یہ ایک شہر تھا جو مکہ اور مدینہ کے درمیان تھا، اس میں بہت سے کنوئیں (یا تالاب) تھے۔

## قُدَیْمَة

جُهَیْنه کے وزن پر ہے۔ یہ بھی مدینہ میں ایک پہاڑی ہے۔

## قُرَاضِم

مدینہ کے قرب میں ایک جگہ تھی۔

## قَرَاقِر

مدینہ میں زمین کا ایک پلاٹ تھا جو آلِ حسین بن علی بن ابو طالب رضی اللہ تعالیٰ عنہم کے قبضے میں تھا۔

## قَرَائِن

یہ تین گھر تھے جو مسجد میں شامل کر لئے گئے، یہ حضرت عبد الرحمٰن بن عوف رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے قبضے میں تھے۔

## قُرَّان

اُبْلیٰ کی طرف مکہ اور مدینہ کے درمیان ایک وادی تھی۔

## قُرْح

یہ وادیٔ قری کا بازار تھا، صعید کا لفظ اس کی طرف مضاف ہوتا ہے (صعید قرح) اس کا مطلب یہ ہے کہ یہ لفظ راء کے ساتھ ہے لیکن مساجدِ تبوک میں یہ لفظ قُرح لکھا ہے۔ دورِ جاہلیت میں یہاں پر بازار تھا۔ کہتے ہیں کہ اسی بستی میں حضرت ھود علیہ السلام کی قوم عاد ہلاک ہوئی تھی۔

## قَرَدُ اور ذوقرد

یہ وہ مقام تھا جہاں مسلمان غزوۂ غابہ کے موقع پر پہنچے تھے چنانچہ وہ غزوہ بھی اسی طرف منسوب کر دیا گیا۔ ابن الاثیر لکھتے ہیں کہ یہ مقام مدینہ اور خیبر کے درمیان تھا اور مدینہ سے دو دن کے سفر پر تھا۔ علامہ عیاض نے لکھا کہ یہ مدینہ سے ایک دن کے سفر پر تھا اور غطفان کے مقام سے ملتا تھا۔ صاحب المغازی ابان بن عثمان لکھتے ہیں کہ دوفرد، حضرت طلحہ بن عبید اللہ کا کنواں تھا، انہوں نے اسے خرید کر مسافروں کے لئے وقف کر دیا اور جو بیسان کے بارے میں گذرا، اس میں ہے کہ نبی کریم ﷺ ذی قرد کے غزوہ میں اس کنوئیں سے گذرے جسے بیسان کہتے تھے۔

## قِرْدَہ

سجدہ کے وزن پر ہے، اسے فردہ بھی پڑھا جاتا ہے، یہ نجد کے کنوؤں میں سے ہے، یہاں حضرت زید بن حارثہ کا لشکر اترا تھا، زید الخیل یہیں فوت ہوئے تھے۔

## قَرَصَہُ

یہ حضرت سعد بن معاذ کی جائیداد تھی۔ اس کا ذکر مساجدِ مدینہ میں گذر چکا۔

## قرقرة الکدید

حرفِ کاف میں اس کا ذکر آ رہا ہے۔ یہ مقام بھی خیبر میں تھا۔ خیبر کو جاتے وقت رہنمائی کرنے والا وادیوں کی طرف لے گیا تو قرقرہ میں انہیں نماز کا وقت ہو گیا تھا، رسول اللہ ﷺ نے شق اور نطاۃ میں اترنے تک نماز نہیں پڑھی تھی۔

ابن عقبہ کے مغازی میں، ابن رزام یہودی کے قتل کے بارے آتا ہے: جب وہ قرقرۂ تیاز میں پہنچے۔ یہ مقام خیبر سے چھ میل کے فاصلے پر تھا۔ پھر بتایا کہ وہ ساتھیوں سمیت قتل کر دیا گیا۔

## قُرَيَّہ

سُمَيَّہ کے وزن پر ہے۔ مدینہ کے قریب ایک جگہ تھی۔

## قُرای

یہ قریہ کی جمع ہے، آنے والی وادیٔ قری اسی طرف منسوب ہے اور پہلے چشموں کے ذکر میں قری عُرَيْنہ کا لفظ گذر چکا ہے۔

## قُسیَان

عثمان کے وزن پر ہے اور قُسَیَّان اس کا اسمِ تصغیر ہے، عقیق کی ایک وادی ہے۔

## قُشَام

غُرَاب کے وزن پر ہے، مدینہ سے کئی دن کے سفر پر ایک پہاڑ ہے۔

## قصر اسمٰعیل بن ولید

یہ اِھاب نامی کنوئیں پر تھا۔ وہاں اس کا ذکر ہو چکا۔

## قصر ابراهیم بن هشام

بنو امیہ بن زید کے پاس تھا۔

## قصر بني حديله

بیر حاء میں اس کا ذکر آ چکا ہے۔

## قصر خارجه

یہ کھلے میدان میں خارجہ بن حمزہ کا تھا۔

## قصر خلّ

آج کل حصن خل کے نام سے مشہور ہے اور بطحان کے مغرب میں ہے۔

ابن شبہ کہتے ہیں: رہا قصرِ خل جو رومہ کے راستے میں ہے تو حضرت معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے نعمان بن بشیر کو اسے بنانے کا حکم دیا تھا تاکہ اہلِ مدینہ کی حفاظت کی جا سکے اور کہا جاتا ہے، بلکہ انہوں نے مروان بن حکم کو حکم دیا تھا، وہ مدینہ میں تھا، مروان نے نعمان بن بشیر کو اس کام پر مقرر کیا تھا۔

اس میں ایک پتھر تھا جس میں لکھا تھا: نعمان بن بشیر نے اسے اللہ کے بندے امیر المؤمنین معاویہ کے حکم پر بنایا۔ اسے قصرِ خل کہنے کی وجہ یہ تھی کہ یہ راستے پر تھا اور ہر وہ راستہ جو پتھریلی زمین اور ریت میں ہو، اسے خل کہتے ہیں۔ انتہیٰ۔

ابن زبالہ بیر حاء کے ذکر میں بتاتے ہیں کہ ابوبکر بن خرم نے کہا: حضرت معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے قصرِ خل ایک قلعے کے طور پر بنایا۔ کیونکہ انہیں بنو امیہ کے بارے میں لڑائی کی فکر تھی، اس کا نام قصرِ خل اس لئے رکھا کیونکہ یہ حرہ میں ریتلی جگہ پر بنا تھا اور جب انہوں نے بیرحاء خرید لیا تو قصر بنی حدیلہ اسی جگہ پر بنایا، مقصد بنو امیہ کی حفاظت

تھی۔ یہ قصرِ خل کسی دور میں قید خانہ رہ چکا تھا۔

## قصر ابن عراك

اُحد کے راستے میں بنو عبد الاشہل کے قبرستان کی طرف تھا۔

## قصر ابن عوان

یہ مدینہ میں تھا۔ اس کی ایک جانب یمانی میں یمن سے بنو جذماء اس وقت رہا کرتے تھے جب اوس وخزرج یہاں نہیں ٹھہرتے تھے۔

یہ وہی تھا جس کا ذکر پہلے ہوا لیکن ابن زبالہ کے نسخہ میں ''ابن عراك'' آیا ہے چنانچہ ان کے الفاظ یہ ہیں: بنو جذماء، بنو عبد الاشہل کے قبرستان اور ابن عراک کے محل کے درمیان رہتے تھے۔

## قصر ابن ماه

بئر جحیم سے نچلی طرف تھا۔

## قصر مروان

یہ صورین کے قریب تھا اور صدقات نبویہ کے بھی، اس جانب میں کئی جگہیں تھیں جنہیں قصر کہتے تھے۔

## قصر نفیس

یہ نفیس، انصار کے غلاموں میں سے ایک شخص تھا، اس کا محل حرۂ واقم میں تھا جو مدینہ سے دو میل کے فاصلے پر تھا۔

## قصر بني يوسف

یہ آل عثمان کے غلام تھے، مروان کے محل کی نچلی طرف نقال اور نقیع کی طرف رہتے تھے۔

## ذُوالقَصّہ

یہ نجد کی جانب مدینہ سے بارہ میل کے فاصلے پر ایک جگہ تھی، حضرت ابوبکر رضی اللہ تعالیٰ عنہ اس کی طرف گئے تھے یہاں لشکر درست کیا اور جھنڈے باندھے تھے۔

علامہ اسدی کہتے ہیں کہ یہ مدینہ سے پانچ میل کے فاصلے پر تھا، علامہ نصر چوبیس میل کا فاصلہ بتاتے ہیں۔

ابن سعد کہتے ہیں کہ محمد بن مسلمہ، بنو ثعلبہ اور بنو عوال کی طرف گئے، وہ ذوالقصہ میں تھے، اس کے اور مدینہ کے درمیان چوبیس میل کا فاصلہ تھا اور یہ ربذہ کے راستے پر تھا۔ پھر ذوالقصہ، زبالہ اور شقوق کے درمیان ایک جگہ تھی جو

شقوق کے قریب صرف دو میل کے فاصلے پر تھی۔

## قُصَیْبَہ

مدینہ اور خیبر کے درمیان ایک وادی تھی، آگے وادئ دوم میں اس کا ذکر آ رہا ہے۔

## ذو القُطُب

عقیق میں ایک وادی تھی۔

## قف

اصل میں اس جگہ کو کہتے ہیں جو زمین میں ابھری ہوئی اور سخت ہو۔ اس جگہ میں بھی اردگرد کی زمین سے بلندی تھی، یہاں بیٹھے ہوئے اونٹ کی شکل کے پتھر جمع تھے۔ یہ مدینہ کی اس وادی کا نام تھا جہاں اہلِ مدینہ کی جائیداد تھی۔ اس سے پہلے لفظ زھرہ میں اس کا ذکر آ چکا ہے، بنو ماسکہ کے حضور ﷺ کے صدقہ کے قریب دو قلعے تھے جو قف میں تھے۔ بظاہر یہ جگہ وہ تھی جو حسینیات کے نام سے مشہور تھی جو مشربہ کی شامی جانب اس کے قریب ہی تھی۔

زبیر کہتے ہیں حضرت اُم المومنین سیّدہ ماریہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے قف کے مقام پر حضرت ابراہیم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو جنم دیا تھا، یہ عالیہ میں وہ جگہ تھی جسے آج کل مشربۂ اُم ابراہیم کہا جاتا ہے پھر یہ بھی سند ملتی ہے کہ نبی کریم ﷺ کے پاس کچھ بکریاں تھیں جو قف کے مقام پر چرتی تھیں اور ماریہ کے پاس آ جاتی تھیں۔

ابو داؤد میں حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے ہے کہ کچھ یہودیوں نے رسول اللہ ﷺ کو قف میں بلایا تھا، آپ بیت المدارس (یہودیوں کا مدرسہ) میں تشریف لے گئے تھے۔ بیت المدارس کا ذکر مسجد المشربہ میں گذر چکا ہے۔

مؤطا میں ہے کہ انصار کا ایک آدمی قف کے مقام پر ایک جگہ نماز پڑھ رہا تھا، یہ مدینہ کی وادیوں میں سے ایک وادی تھی، ان دنوں کھجور کا پھل تیار تھا، اس نے دیکھا تو اسے بڑی خوشی ہوئی اور رکعتیں یاد ہی نہ رہیں کہ کتنی پڑھ چکا تھا۔ کہنے لگا کہ میرے اس مال نے مجھے فتنہ میں ڈال دیا ہے، چنانچہ حضرت عثمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس آیا، وہ ان دنوں خلیفہ تھے، ان سے بات کی، انہوں نے کہا کہ یہ صدقہ ہے، اسے بھلائی میں خرچ کر دو چنانچہ اس نے حضرت عثمان کو پچاس ہزار میں فروخت کر دیا چنانچہ اسے ''خمسین'' کہنے لگے۔

اسی حسینیات کے پاس ایک اور جائیداد تھی جسے ثمین کہتے تھے یعنی مہنگی۔

## قِلادَۃ

گلے میں پہنے جانے والے ہار کے معنی میں ہے، قبلیہ کا ایک پہاڑ تھا۔

## قَلَهِیّ

مدینہ کے قریب حضرت سعد بن ابو وقاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا ایک گڑھا تھا' حضرت عثمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے قتل کے بعد وہ اس میں آ ٹھہرے تھے اور حکم دیا تھا کہ انہیں کوئی بات نہ بتائی جائے۔

ابن السکیت کہتے ہیں کہ قلهیّ وہ مکان تھا جہاں بنوسلیم کا کنواں تھا۔

## قَلَهٰی

جَمَزیٰ (تیز رفتاری) کے وزن پر ہے' کچھ اسے قَلُهٰی پڑھتے ہیں' وادی ذی رولان میں ایک بستی تھی جہاں بنوسلیم رہتے تھے۔

یاقوت کہتے ہیں: قَلُهٰی کے بارے میں علامہ عرام لکھتے ہیں کہ مدینہ میں وادی ذی رولان تھی' وہاں بستیاں تھیں جن میں سے ایک قَلُهٰی تھی۔

## قُمُوص

صُبُور کے وزن پر ہے۔ یہ خیبر میں ایک پہاڑ تھا۔ کچھ کہتے ہیں کہ قلعہ تھا' کچھ کہتے ہیں کہ یہ ایک پہاڑ تھا جس پر بنوحقیق یہودی کا قلعہ تھا' یہی بات درست ہے۔ کہتے ہیں کہ غموص نامی قلعہ بھی تھا۔

موسیٰ بن عقبہ' غزوۂ خیبر کے بارے میں لکھتے ہیں کہ یہودی اپنے ایک محفوظ قلعے میں داخل ہو گئے جسے قموص کہتے تھے' رسول اللہ ﷺ نے بیس راتوں تک اس کا محاصرہ کئے رکھا۔ پھر موسےٰ نے مرحب کے سامنے آنے کا ذکر کیا اور حضرت علی کو جھنڈا دیئے جانے کا بتایا پھر مرحب کے قتل کا ذکر کیا۔

## قناۃ

پہلے ذکر کی گئی مدینہ کی وادیوں میں سے ایک تھی۔

## قُنَیع

ضریّہ کی چراگاہ میں اس کا ذکر ہو چکا ہے۔

## قواقل

بنوسلیم کے گھروں کی طرف' عصبہ کے ساتھ ایک قلعہ تھا۔

## قُوَبع

عقیق کی وادیوں میں سے ایک وادی تھی۔

### قوران

یہ وہ وادی تھی جو جرہ میں گرتی تھی، اسی کے اندر ایک بستی تھی جسے ملحاء کہتے تھے، یہ سوارقیہ میں سے ایک تھی، یہاں میٹھے پانی کے کنوئیں اور کھجور کے درخت تھے۔

### قُوُرٰی

سُکرٰی کے وزن پر ہے۔ اس کا ذکر لفظ بُعاث میں آچکا ہے اور ظاہر یہ ہے کہ یہ ایک باغ تھا جو آج کل قوران کے نام سے مشہور تھا، مدینہ کی شرقی جانب اور ولال سے نچلی طرف تھا۔

### قَیُنُقَاع

اسے قَیُنُقَاع اور قَیِنقاع بھی پڑھا جاتا ہے، یہودیوں کا ایک قبیلہ تھا جس کی طرف سوق مضاف کیا جاتا ہے (اور سوق بنی قینقاع) کہتے ہیں کیونکہ یہ ان کے گھروں میں تھا۔

## حَرْفُ الْکَاف

### کاظِمہ

ابن مرزوق، شرح بردہ میں کہتے ہیں کہ میں نے کاظمہ کو دیکھا کو تھا لیکن یاد نہیں کہ کہاں ہے، یہ مدینہ منورہ کے قریب ایک جگہ بھی تھی۔ علامہ اصمعی کہتے ہیں کہ جب بصرہ سے مکہ کا ارادہ لے کر کوئی نکلتا ہے اور کاظمہ جانا ہوتا ہے تو یہ تین میل کے فاصلے پر آتا ہے۔ اس کا پانی نمکین ہے۔ علامہ یاقوت اس کے بعد لکھتے ہیں کہ کاظمہ بھی ایک جگہ ہے جس کا ذکر ابوزیاد نے کیا ہے۔

### کَبّا

حَتّٰی کے وزن پر ہے، یہ بطحان میں ایک جگہ ہے۔ علامہ کلبی کہتے ہیں کہ مدینہ پاک میں ایک ہیجڑا تھا جسے بغاشی کہتے تھے، مروان سے کہا گیا کہ یہ شخص قرآن میں سے کچھ بھی نہیں پڑھ سکتا اسے کہا کہ اُم القرآن۔ (الحمد شریف)۔ سناؤ! اس پر اس نے کہا کہ میں تو قرآن کی بیٹیاں بھی نہیں پڑھ سکتا تو اس کی ماں کیسے پڑھوں گا؟ مروان نے کہا! تم قرآن سے ٹھٹھا کر رہے ہو؟ چنانچہ حکم دیا تو اس کی گردن کبّا کے مقام پر اڑا دی گئی، یہ جگہ بطحان میں تھی۔

### کَتَانَہ

صفراء اور اثیل کے درمیان ایک کنواں تھا جو جعفر بن ابو طالب کا تھا۔

## کُتَیبَہ

یہ لفظ کَتِیبۃُ الجیش (لشکر کا ایک حصہ) سے لیا گیا ہے۔ ابو عبید نے اسے کُثَیبَہ پڑھا ہے' یہ خیبر میں ایک قلعہ تھا۔ جو مالِ غنیمت میں سے نکالا ہوا پانچواں حصہ تھا اور اللہ کے رسول کا حصہ تھا پھر ذوالقرٰی' یتامیٰ' مساکین کا حصہ تھا نیز ازواج مطہرات کا حصہ تھا اور اس میں ان کا حصہ تھا جو رسول اللہ ﷺ اور اھل فدک کے درمیان صلح کے لئے گئے تھے۔

علامہ واقدی' شق اور نطاۃ کی فتح کا ذکر کر کے لکھتے ہیں کہ: پھر نبی کریم ﷺ کتیبہ کی طرف پھرے اور وطیح و سلالم میں گئے' یہ ابن ابی الحقیق کا وہ قلعہ تھا جس میں وہ رہتے تھے' انہوں نے اپنے آپ کو نہایت محفوظ کر لیا تھا' ان کے پاس نطاۃ اور شق کے سب شکست خوردہ اکٹھے ہوئے اور قموص میں قلعہ بند ہو گئے وہ کتیبہ میں تھا' وطیح و سلالم میں یہ سب سے محفوظ قلع تھا۔

اس کے بعد علامہ واقدی نے نبی کریم ﷺ کے چودہ دن تک محاصرے کا ذکر کیا اور یہ بتایا کہ آپ نے ان کے لئے منجنیق گاڑی تھی' پھر یہ بتایا کہ انہوں نے اس بات پر صلح کا سوال کیا کہ قلعہ میں موجود لوگوں کا خون نہ بہایا جائے' ان کی اولادیں چھوڑ دی جائیں' وہ اس کے بدلے میں اپنا مال' زمین' صفراء' بیضاء (سونا چاندی) اور ہر قسم کا سامان پیش کرتے ہیں اور صرف تن کے کپڑے لے کر چلے جائیں گے۔

## کُدُر

لفظ اُکْدُر کی جمع ہے' اسے مضاف کر کے قرقرۃ الکدر کہتے ہیں' قرقرہ تو نرم زمین کو کہتے ہیں جبکہ کدر وہ پرندہ ہوتا ہے جو مٹیالے رنگ کا ہوتا ہے۔ یہ معدن کی طرف رحضیہ کے قریب ایک جگہ تھی۔

طبقات ابن سعد میں ہے قرقرہ الکدر اور قرارۃ الکدرۃ بھی کہا جاتا ہے' یہ معدن بنوسلیم کی طرف ارحضیہ کے قریب ایک جگہ تھی۔ حضور ﷺ بنوسلیم کے گروہ کے لئے نکلے تھے' قبیلے کو دیکھا تو وہ پیچھے ہٹ چکے تھے لہٰذا ان کے اونٹ ہانک لئے اور جنگ کی نوبت نہ آئی۔ پھر اسی جگہ غزوۂ سویق کے موقع پر آپ ابوسفیان کو تلاش کرتے پہنچے تھے۔

ابن اسحاق کہتے ہیں کہ غزوہ بنوسلیم کے موقع پر ان کے کنوئیں پر پہنچے جسے کدر کہتے تھے اور وہاں تین دن تک ٹھہرے رہے۔

## کَدِیْد

نخیل کے قریب ایک وادی تھی جسے فید سے مدینہ تک کا راستہ قطع کرتا تھا جو مسجد سے ایک میل کے فاصلے پر تھی اور کدید ایک چشمہ بھی تھا جو خلیص کے بعد تھا اور مکہ کی طرف راستہ کی دائیں طرف آٹھ میل کے فاصلے پر تھا۔

## کراع الغمیم

اس کا ذکر حرف غین میں آچکا ہے۔

## کُرّ

نمکین سمندر کے قریب ایک جزیرہ جو جحفہ سے چھ میل کے فاصلے پر ہے۔

## کُشُب

کُتُب کے وزن پر ہے۔ یہ سیاہ پہاڑ ہے، وہ جانب اسی سے مشہور ہے، کبھی کبھی مدینہ کے امیر یہاں آتے رہتے تھے۔

## کِفَاف

وادیٔ قرٰی کے قریب ایک جگہ۔

## کُفُت

مدینہ کی قریبی جگہ، اس کا ذکر اضم میں آچکا ہے۔

## کفتة

بقیع الغرقد کا قبرستان ہے۔ علامہ مجد کہتے ہیں، نام رکھنے کی وجہ یہ ہے کہ یہ مردوں کی حفاظت کرتا اور انہیں بچاتا ہے۔

## کُلَاب

ضریہ کی چراگاہ کی جانب ایک کنواں تھا۔

## کُلَاف

یہ ایک وادی تھی جو مدینہ کی ماتحتی میں تھی۔

## کلب

مدینہ کا ایک قلعہ تھا اور رأس الکلب ایک پہاڑ تھا۔

## کُلَیَّه

کلیه کا اسم تصغیر ہے، مکہ کے راستے میں ایک بستی تھی۔ علامہ اسدی کہتے ہیں کہ یہ جحفہ سے دس میل کے فاصلے

پر میدان کی طرف تھی، وہاں نمکین کنواں تھا جسے کلیہ کہتے تھے، اس کی چوڑائی دو ہاتھ تھی، اس کے پاس دکانیں تھیں۔

## کِمْلی

کِسْرٰی کے وزن پر ہے، بئرِ زروان کا نام تھا۔ ابن الکلبی نے قصہ سحر میں حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما کی روایت میں ہے: بئرِ کملی میں پتھر کے نیچے (تعویذ) تھا۔

## کُنس حُصَین

یہ قباء میں مہراس کے نزدیک ایک قلعہ تھا۔

## کُوَاکِب

مدینہ اور تبوک کے درمیان ایک پہاڑ تھا۔ مدینہ کی مسجدوں میں اس کا ذکر آ چکا۔ ابو زیاد کلابی کہتے ہیں کہ کواکب، ابوبکر بن کلاب کے علاقے میں کئی پہاڑیاں تھیں۔

## کوث

یہ مدینہ اور شام کے درمیان ایک پہاڑ تھا اور طائف میں ایک بستی تھی، حجاج ثقفی یہیں تعلیم دیا کرتے تھے۔

## کومه

یہ مٹی کا ٹیلہ ابو الحمراء الرابض کا تھا اور ایسا تھا جیسے کئی ٹیلے تھے جو ثمغ کے قریب، مدینہ کی شامی جانب میں تھے اور مہزور کے اندر آخر میں ابو الحمراء کا ٹیلہ تھا پھر یہ وادی بھی تھی قناۃ میں گرتی تھیں۔

## کُوَیر

زُبَیر کے وزن پر ہے، ضریہ میں ایک پہاڑ کا نام۔

## کُوَیرہ

پچھلے لفظ ہی میں ھاء کی زیادتی ہے، یہ قبلیہ کے پہاڑوں میں سے تھا۔

## کَیْدَمه

یہ حضرت عبد الرحمٰن بن عوف رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا بنو نضیر کے اموال میں سے حصہ تھا۔ اس کا ذکر بئرِ اریس میں آ چکا ہے۔ طبرانی کی اوسط میں ہے کہ حضرت عبد الرحمٰن بن عوف رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے یہ کیدمہ حضرت عثمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ہاتھ چالیس ہزار کا بیچ دیا تھا اور انہوں نے بنو زہرہ، فقراء اور ازواجِ مطہرات رضی اللہ تعالیٰ عنہن میں تقسیم کر دیا تھا۔

# حَرفُ اللَّام

## لأی

لعلی کے وزن پر ہے۔ مدینہ کے قریب ہی ایک جگہ تھی۔

## لَابَتان

لَابَةٌ کا تثنیہ ہے، یہ پتھریلی زمین تھی اور یہ لابتان، مدینہ کے شرقی اور غربی حرے تھے۔ علامہ اصمعی کہتے ہیں کہ ''لابہ'' اس زمین کو کہتے ہیں جس میں سیاہ کنکر پڑے ہوں۔

## لُأی

لُحی کے وزن پر ہے۔ یہ عقیق کی ایک وادی تھی اور علامہ مجد کہتے ہیں کہ یہ عقیق میں ایک جگہ تھی اور یہ پہلے لای سے الگ ہے۔

## لَحُیَا جملٍ

یہ لحی کا تثنیہ ہے، یہ وہ دو ہڈیاں ہیں جن میں نچلے دانت جڑے ہوتے ہیں اور جَمل اونٹ کے معنیٰ میں ہے۔ ایک روایت میں لحی جملٍ کا لفظ آتا ہے جو مفرد ہے۔ یہ لِحی بھی لکھا ملتا ہے لیکن اس پر زبر زیادہ مشہور ہے۔ اس کا بیان مسجد لحی جملٍ میں آ چکا ہے، یہ ان مسجدوں میں تھی جو مکہ کے راستے میں تھیں نیز لحی جمل ایک پہاڑ بھی ہے جو فید کے راستے میں اُحرجہ سے چھ میل کے فاصلے پر ہے۔

علامہ اسدی کہتے ہیں، نام رکھنے کی وجہ یہ ہے کہ چونکہ دونوں پہاڑ پھیلتے چلے گئے ہیں اور تقریباً ملے ہوئے ہیں تو گویا دو جبڑوں کی طرح ہیں۔

علامہ مجد نے جمل کے ذکر میں کہا ہے کہ لحی جمل بھی مدینہ اور فید کے درمیان فید سے دس فرسخ کے فاصلے پر ہے، نیز حرّان اور تثلیث کے درمیان ایک جگہ ہے جبکہ لحیا جمل (تثنیہ) قشیر کے علاقے میں دو پہاڑ ہیں۔

## لَظٰی

آگ (یا جہنم) کا نام ہے اور ذات لظی، خیبر کی طرف جہینہ کے علاقے میں ایک منزل تھی، اسے ذات اللّظی بھی کہتے ہیں۔

## لَعبَاء

خرم بنوعوال میں بہت سے پتھروں والی ایک جگہ ہے۔ یہ قاموس میں ہے اور لفظ لحوال میں اس کے خلاف لکھا

جا چکا ہے۔ یاقوت کہتے ہیں کہ لعباء حرم بنو عوال میں ایک ندی تھی اور حجاز کی کسی جانب غطفان کا پہاڑ تھا اور لعباء' بنو زنباع کی چراگاہ کی بالائی جانب ایک سخت زمین تھی۔ ان کا تعلق بنو ابوبکر بن کلاب سے تھا۔

## لَعْلَع

مدینہ میں ایک پہاڑ تھا اور مکہ میں بھی ہے نیز اس نام کا جنگل میں ایک کنواں بھی ہے جبکہ بصرہ اور کوفہ کے درمیان ایک منزل کو بھی کہتے تھے۔

## لَفُت

اسے لِفُت اور لَفَت بھی پڑھتے ہیں' مکہ کے راستے میں' مدینہ کے قریب ایک گھاٹی تھی' یہ بھی کہتے ہیں ھرشی کے پہلو میں ایک وادی تھی۔

## لَقُف

وہ میٹھے پانی کے کنوئیں جہاں نہ کوئی کھیتی ہوتی ہو اور نہ ہی درخت۔ قوران کی بالائی جانب سوارقیہ کے نزدیک ایک وادی تھی۔ حدیثِ ہجرت میں نصف اور لفت میں اختلاف ہے کہ کونسا مراد ہے اور صحیح دونوں ہی ہیں' ایک جگہ یہ لفظ ہے تو دوسری جگہ دوسرا اور صحیح ہونے کا دارومدار دونوں جگہوں کے صحیح سالم ہونے پر ہے لیکن سوارقیہ والی جانب ھجرت کے راستے میں آتی ہی نہیں۔

## لِوٰی

اِلٰبی کے وزن پر ہے' یہ بنو بیاضہ کا قلعہ تھا جبکہ بنو سلیم کے علاقے میں ایک وادی تھی' پھر ضریہ سے چالیس میل کے فاصلے پر رملہ الدملول اور جریب کے درمیان ایک جگہ تھی۔

# حَرْفُ الْمِیْم

## مابه

قباء میں بنو آنیف کی جائیداد تھی نیز اس کے اور قائم کے درمیان ان کے دو قلعے تھے۔

## ماجشونیه

ماجشون کی طرف نسبت ہے' اس لفظ پر زبر' زیر اور پیش تینوں حرکتیں پڑھی جائیں گی' وادی بطحان میں ایک جائیداد تھی اور اس کے قریب صعیب کی قبر تھی۔

## مثشب

منبر کے وزن پر ہے۔ لغت میں اٹھی اور ابھری ہوئی زمین کو کہتے ہیں، یونہی نرم زمین کو بھی کہتے ہیں۔ یہ حضور ﷺ کے ایک مال کا نام ہے۔ قاموس کہتے ہیں کہ یہ وہ جگہ تھی جہاں آپ کا مال موجود تھا۔

میں کہتا ہوں کہ یحییٰ کے نزدیک یہ لفظ مِیْشم آیا ہے لیکن پہلا زیادہ صحیح ہے۔ یاقوت کہتے ہیں کہ یہ لفظ مِیْبم ہے۔ حاصل یہ ہے کہ اس میں ہمزہ موجود نہیں کیونکہ انہوں نے اسے میم کے حروف میں ذکر کیا ہے جس کے ساتھ یاء ہے۔

## مَأثُول

یہ مدینہ کے قریب ہی ایک جگہ تھی۔

## مُبْرَك

مقعد کے وزن پر ہے، یہ وہ جگہ تھی جہاں بنوغنم میں مسجد کے قریب آپ کی اونٹنی بیٹھ گئی تھی، آج کل یہاں مدرسۂ شہابیہ موجود ہے جو دارِ ابو ایوب میں بنایا گیا ہے جیسے تیسرے باب کی گیارہویں فصل میں بیان کیا چکا ہے۔

مبرک نامی ایک پہاڑی راستہ بھی تھا جو ینبع سے مدینہ تک جاتا تھا، چوڑائی چار یا پانچ میل تھی، ثنیۂ مبرك اسی کی طرف منسوب تھی۔ یہ گھاٹی آج کل مشہور ہے۔

## مُبْضعه

حیّ اور رویثہ کے درمیان ایک جگہ تھی۔

## مُتَابِع

ضریہ کی چراگاہ میں اِمرۃ کی دائیں جانب ایک پہاڑی تھی۔ علامہ یاقوت اسے مُتالع لکھتے ہیں، یہ ظہران کی شرقی جانب، قنان پہاڑ ہیں، فوارہ کے نزدیک ایک چشمہ تھا اور ظهران، قنان کے اردگرد ایک پہاڑی ہے۔ یہ وہ وادی نہیں جو مکہ کے قریب تھی۔

## مُثْعَر

مقعد کے وزن پر ہے، اسے مثغر بھی لکھا گیا ہے۔ یہ قبلیہ کی وادیوں میں سے ثاجہ اور حورہ کے درمیان تھی اور فرش و فریش میں جا گرتی تھی۔

## مُثقّب

اس راستے کا نام تھا جو مکہ اور مدینہ کے درمیان تھا۔ یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ نام قبیلۂ حِمْیَر کے ایک آدمی کے نام پر پڑا تھا کیونکہ کسی بادشاہ نے اسے لشکر دے کر بھیجا تھا جو یہاں سے گذرا تھا، پھر یہ ایک راستہ بھی تھا جو مکہ سے کوفہ کو جاتا تھا۔ علامہ اصمعی مُثَقَّب لکھتے ہیں۔

## مجتھر

حدودِ حرم کا بیان کرتے وقت یہ لفظ آ چکا ہے۔

## مُجدَل

کھیتیوں میں ایک قلعہ تھا جو سلیمان بن عبد الملک کے سقایہ (حوض) کے سامنے تھا۔ علامہ یاقوت کہتے ہیں کہ یہ لفظ میم پر زبر سے مَجْدَل ہے، یہ بنو ھذیل کی ایک منزل تھی۔

## مُجر

یہ ایک بڑا تالاب تھا جو سوارقیہ کی جانب، ملحاء کے گرد، قوران میں، پہاڑیوں کے درمیان تھا، ان پہاڑیوں کو ذو مجر کہتے تھے۔

## مُحضَه

محض بمعنی خالص سے ہے، یہ جبل آرہ کے نزدیک ایک بستی تھی۔

## مُحَنب

عراق کے راستے کی جانب ایک کنواں اور زمین تھی۔

## مُحَیصِر

محصر کی تصغیر ہے جو حصار سے لیا گیا ہے، مدینہ کے قریب ایک جگہ تھی، جرید کہتے ہیں:

"مُحیصر اور عُـــزّاف کے درمیان ایک منزل تھی جیسے عہدِ موسےٰ سے قراطیس کے اندر وحی آتی رہی تھی۔"

## مَحِیص

مَلِیك کے وزن پر ہے، یہ بھی مدینہ میں ایک جگہ تھی۔ شاعر کہتا ہے:

"مُحیص، پھر واقم اور پھر صوار ہے تو پھر مغرب کے حاجی لوگ کس سے ملیں گے۔"

## مخاضہ

یمانی گوشہ میں زمین کا ایک پلاٹ تھا۔

## مُخَایِل

عقیق کی وادیوں میں سے تھی۔ مخائل نام کی تین وادیاں تھیں جن میں سے بالائی تو افلس میں گرتی تھی اور دو حفیر پر تھیں، حضرت عمر کے غلام نمیر کہتے ہیں:

> ''میں مخایل میں ٹھہرا اور سلع کو چھوڑ دیا کیونکہ معیشت میں نرمی کے بعد سختی آ گئی۔''

## مختبی

وادی ذی رولان کی فلاج نامی وادی میں تالاب تھا۔ نام رکھنے کی وجہ یہ تھی کہ یہ عضاہ، سلم، سدر اور جلاف کے درمیان تھا، یہ دونوں پہلوؤں سے نہیں بلکہ ایک اور طرف سے لائی جاتی تھی کیونکہ اس کے دو کنارے تھے، ان دونوں جہتوں سے اس پر قدرت نہ تھی۔ مختبیاتِ فلیج کا ذکر، عقیق کے تالابوں میں گذر چکا ہے۔

## مُخَرِّی

اسمِ فاعل ہے خَـرّاہُ سے، جب کسی کو ہتھیار بند کیا جائے تو بولتے ہیں۔ یہ صفراء کے دو پہاڑوں میں سے ایک تھا۔ جبکہ دوسرا پہاڑ مسلح تھا۔ ایسے ناموں کی وجہ سے حضور ﷺ نے ان دونوں کے درمیان چلنا ناپسند فرمایا۔

## مَخِیُض

مـخیـض اللبن (دودھ کی لسی) سے ہے۔ یہ وہ پہاڑ تھا جس پر نبی کریم ﷺ چلے تھے پھر غراب پر چلے، اس کا ذکر حدودِ حرم کے بیان میں آ چکا۔

## مدارج

یہ عُرُج کی گھاٹی تھی، اس سے تین میل پہلے مدینہ کے قریب تھی، اس پر غایر اور رکوبہ نامی گھاٹیاں تھیں۔

## مُدَجّج

دَجَّـج سے ہے، کوئی ہتھیار لے تو بولتے ہیں۔ یہ مکہ کے راستے میں ایک وادی تھی، خیال ہے کہ حضور ﷺ کیلئے راستہ دکھانے والا اسی راہ پر چلا تھا جب آپ نے ہجرت فرمائی تھی۔

## مدران

ثـنـیۃ مدران کا لفظ اسی سے نکلا ہے، یہ لفظ مساجدِ تبوک میں آیا ہے، مجد نے اس مقام پر اسے صحیح سمجھ کر ذکر کیا

ہے پھر اسے مردان کے لفظ میں بھی لائے ہیں اور کہا ہے کہ یہ اسی مقام کا نام ہے۔

## مُدَرَّج

دَرَّج سے بنایا گیا ہے، جب کسی کو درجہ بدرجہ اوپر چڑھاتے ہیں، تو بولتے ہیں، یہ ثنیۃ الوداع کا نیا نام تھا، مجد نے اس بناء پر یہ کہا ہے کہ یہ مکہ کے راستے میں ہے لہٰذا انہوں نے اسے وہ گھاٹی قرار دیا جو عقیق میں نیچے اترتی تھی۔

## مِدْعٰی

کچھ مِدْعٰی کہتے ہیں۔ یہ وادیٔ ضریہ کی جانب بنو جعفر بن کلاب کا ایک حوض تھا۔ علامہ ہجری کہتے ہیں کہ وادی مدعٰی، وادیٔ ذی عشث میں جا گرتی تھی اور یہ چراگاہ کا بہترین پانی تھا۔

## مَدْیَن

علامہ مقریزی لکھتے ہیں کہ یہ فدک، فُرع اور رہاط کی طرح مدینہ کے ماتحت تھا۔ وہ کہتے ہیں کہ یہ مدین بحر قلزم پر واقع ہے، تبوک کے بالمقابل ہے اور اس سے سات دن کے سفر پر ہے، یہ تبوک سے بڑا تھا۔ یہیں وہ کنواں تھا جہاں سے حضرت موسےٰ علیہ السلام حضرت شعیب علیہ السلام کے جانوروں کو پانی پلاتے تھے، یہاں انہوں نے ایک گھر بھی بنایا تھا۔

## مَذَادُ

ذَادَہٗ سے ہے، جب کسی چیز کو ھانکتے تھے تو بولا کرتے تھے۔ یہ مسجد فتح کی غربی جانب، بنو سلمہ میں سے بنو حرام کے قلعے کا نام تھا۔ اس پر اس جانب کا نام پڑ گیا، اسی کے نزدیک زرعی زمین تھی جسے مذاد کہتے تھے۔

## مِذَاہب

مدینہ کے اردگرد ایک جگہ تھی۔

## مُذَیْنِب

مذنب کی تصغیر ہے۔ وادیوں میں اس کا ذکر آچکا ہے۔

## مَرَابِد

مربد کی جمع ہے۔ یہ عقیقِ مدینہ میں ایک جگہ تھی، معن بن اوس نے کہا تھا:

”ذات الحماط اس کے نکلنے اور طلوع ہونے کی جگہ ہے، پھر بطن عقیق میدان ہے اور پھر مرابد ہے۔“

یہ تو مجد نے لکھا ہے لیکن کتاب زبیر میں یہ الفاظ ہیں:
''پھر بطن الفقیع ہے جو میدان ہے، پھر مرابد ہے۔''

## مُرَاخ

عقیق کی وادیوں میں اس کا ذکر ہو چکا ہے جو مغرب میں قبلہ کی طرف تھی، اسے ''مراخ الصحرہ'' کہا جاتا تھا، آج کل یہ مشہور کنواں ہے۔

## مَرَاض

سَحَاب (بادل) کے وزن پر ہے۔ یہ طرف کی جانب مدینہ سے چھتیس میل کے فاصلے پر تھی، اسی سے دوضات المراض کا لفظ بنتا ہے۔ اسے مِرَاض بھی پڑھتے ہیں۔

## مَرّان

اسے مُرّان بھی کہتے ہیں، یہ مدینہ سے اٹھارہ میل دور ایک جگہ تھی۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ مرّان، کتابِ مکہ میں مر الظّہران کو کہتے ہیں، اس کا ذکر مکہ کے راستوں میں مساجذ کے بیان میں آ چکا ہے کیونکہ اس کتاب میں مرّان کہا گیا ہے تو گویا یہ عیاض کے قول کا انکار کرتے ہیں لیکن مدینہ کے ماتحت مران بھی آتا ہے، اگرچہ یہ اس دوری پر نہیں جو عیاض نے لکھی ہے کیونکہ جموم کے لفظ میں آ چکا ہے کہ وہ قباء اور مران کے درمیان تھی اور یہ قباء وہ نہیں جو مدینے میں ہے بلکہ افاعیہ کی جانب تھی اور معدن بنو سلیم کے قریب تھی۔

عرام کہتے ہیں، مَرّان ایک بڑی بستی تھی، یہاں بہت سے چشمے اور کنوئیں تھے، کھجور کے درخت تھے، یہ بصرہ کے راستے پر تھی، یہ بنو ھلال کے قبضے میں تھی جبکہ ایک حصہ بنو ماعز کا تھا وہاں قلعہ اور منبر تھا۔

## مراوح

مِرْوَح کی جمع ہے۔ یہ قباء کے نزدیک ایک قلعہ تھا جو بنو ضبیعہ کی شاخ سے ثابت کے قبضے میں تھا۔

## مِرْبَد

مسجدِ نبوی کی تعمیر کے بیان میں آ چکا ہے کہ یہ مقام پہلے ''مِربُد'' تھا (اونٹ بٹھانے کی جگہ) یونہی مسجدِ قباء بھی مربد تھی۔ مدینہ میں مرابد کئی تھیں۔

## مربد النعم

حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے یہاں تیمّم کیا تھا جیسے بخاری شریف میں ہے، اسی پر انہوں نے التیمّم فی الحضر کا مسئلہ بیان کیا ہے چنانچہ امام شافعی لکھتے ہیں کہ: حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما جُرُف سے یہاں آئے

اور جب مربد پہنچے تو تیمّم کیا اور نماز پڑھی۔ آپ سے کہا گیا کہ تیمّم کر رہے ہیں جبکہ مدینہ کی دیواریں سامنے دکھائی دے رہی ہیں۔ انہوں نے کہا تھا کہ: کیا میں مدینہ میں داخل ہونے تک زندہ رہ سکوں گا؟ پھر وہ مدینہ میں داخل ہوئے تو سورج ابھی اُونچا تھا' آپ نے نماز دوبارہ نہیں پڑھی تھی۔

علامہ ھجری کہتے ہیں کہ مربد النعم مدینہ سے دو میل کے فاصلے پر تھا۔ دوسرے ایک میل بتاتے ہیں اور یہی قیاس بھی کہتا ہے۔

علامہ واقدی' خندق کی راہ پر صف بندی بتاتے ہوئے واقعۂ حرّہ میں لکھتے ہیں کہ: یزید بن ہرمز ذباب سے مربد النعم تک کے مقام پر تھا' دھم غلام اس کے ہمراہ تھا جو جھنڈا اٹھائے ہوئے تھا۔

علامہ واقدی کہتے ہیں کہ مربد النعم کے اندر حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے دور میں اونٹ رکھے جاتے تھے۔

## مِرْبَع

منبر کے وزن پر ہے' یہ بنو حارثہ میں ایک قلعہ تھا۔

## مُرْتج

یہ مدینہ کے قریب ایک وادی تھی جو حضرت حسن بن علی رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے قبضے میں تھی۔ یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ وادی ودّان میں تھی۔

## مَرْجَح

مکہ کے راستے میں ایک جگہ تھی۔ سفرِ ہجرت میں ابن اسحاق بتاتے ہیں: پھر راہنمائی کرنے والا آپ دونوں حضرات کو مرجح مجاج کی طرف لے چلا اور پھر ذی العتصوین سے ایک طرف کو ہوتے ہوئے دونوں کے اندر داخل ہوا' پھر کشد میں اور پھر جَدَاجِد میں لے گیا۔ اس کے بعد ابن اسحاق نے اجرد' ذو سلم اور تعہن کا ذکر کیا۔

منذر بن ماء السماء بادشاہ' مراد پر داخل ہوا تاکہ اس کے بھائی عمرو بن ھند کی مخالفت کرے چنانچہ ان پر جبر سے کام لیا تو مکشوح مرادی نے اسے قتل کر دیا' پھر کہا:

> "ہم نے مینڈھے کو قتل کر دیا ہے' ہم نے اس پر خل میں حملہ کیا جو مرجح سے تعلق رکھتا ہے' ہم یہیں کھڑے تھے۔"

## مَرْحَب

مَقْعَد کے وزن پر ہے۔ نبی کریم ﷺ خیبر کو جاتے ہوئے یہاں سے گذرے تھے۔ وہ راہ دکھانے والا آپ کو

ایک مقام پر لے گیا اور کہنے لگا کہ اس کی طرف جانے والے کئی راستے ہیں' آپ نے فرمایا: نام تو لو۔ اس نے کہا ایک راستہ تو وہ ہے جسے حزن کہتے ہیں' آپ نے فرمایا: اس پر نہ چلو' اس نے کہا اس راستے کو شاش کہتے ہیں۔ آپ نے فرمایا: اس پر بھی نہ چلو' پھر کہا کہ ایک راستہ حاطب ہے' آپ نے فرمایا' اس پر بھی نہ چلو' آج کی رات میں نے وہ نام سنے ہیں جن جیسے کبھی نہیں سنے۔ راہنما نے کہا کہ ایک راستہ مرحب کو جانے کا ہے' کوئی اور راستہ نہیں رہا' اس راستے کا نام مرحب ہے: آپ نے فرمایا کہ اس پر چلتے جاؤ۔

## ذوالمَرْخ

ساحلِ سمندر میں ینبع کے قریب ایک جگہ تھی۔

## ذومُرْخ

فدک اور وابشیہ کے درمیان ایک جگہ تھی۔ علامہ مجد نے یہاں فلجہ کے لفظ کی دلیل لکھی ہے جس کا ذکر آ چکا اور ظاہر یہ ہے کہ اس میں مزج ہے جس کا ذکر آگے آ رہا ہے البتہ ذاء کو حرکت دے کر پڑھا ہے لیکن یاقوت کہتے ہیں کہ ذومرخ' عقیق میں ہے۔

## مَرْوان

لفظ مَرْو کا تثنیہ ہے۔ بڑے سفید چمکدار پتھر کو کہتے ہیں۔ یہ ربذہ کے پہلو میں ایک پہاڑی تھی' کچھ ایسے قلعہ کا نام بتاتے ہیں۔

## ذوالمَرْوہ

یہ صفا پہاڑی کے مقابلے کی پہاڑی کا نام ہے۔ یہ مدینہ سے چھیانوے میل کے فاصلے پر ایک مقام بھی تھا۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ یہ وادیٔ قری میں ایک بستی تھی جو مدینہ کی حد سے ایک میل کے فاصلے پر تھی۔ مجد کہتے ہیں' یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ وادیٔ قری اور ذی خشب کے درمیان تھی۔

میں کہتا ہوں مشہور یہی ہے کہ یہ ذی خشب اور وادیٔ قری کے درمیان تھی لیکن آج کل اھل مدینہ ذی خشب میں موجود وادی کو وادیٔ قری کہتے ہیں۔

علامہ اسدی لکھتے ہیں کہ ذوالمروہ وادیٔ قری کے بعد مدینہ کی جانب تین دن کے سفر پر آتا ہے چنانچہ ابنِ زبالہ لکھتے ہیں کہ: نبی کریم ﷺ ذی المروہ میں اترے اور وہاں نمازِ فجر پڑھی پھر سورج بلند ہونے تک کسی سے بات نہیں کی پھر وہاں سے نکلے اور مروہ پر آئے اور اس کے ساتھ پیٹھ لگا کر بیٹھ گئے اور یوں دعا کرنا شروع کی:

''الٰہی شہروں میں سے اسے بابرکت بنا' ان لوگوں سے وباء دور فرما دے' انہیں تازہ پھل کھانے کو

دے' الٰہی انہیں بارش عطا فرما' الٰہی انہیں جھگڑا کرنے والوں سے بچا اور انہیں ان سے بچا۔"

ایک اور روایت میں ہے کہ آپ ذوالمروہ میں تشریف فرما ہوئے تو ہر طرف سے جہینہ آپ کے پاس جمع ہو گئے اور لوگوں سے تنگی کی شکایت کرنے لگے' یہ بتایا کہ وہ لوگ انہیں پانی نہیں لینے دیتے۔ آپ نے ان لوگوں کو بلایا اور ان میں سے کچھ کو کچھ پر گواہ بنایا کہ میں انہیں یہ جگہ دے رہا ہوں اور انہیں کہہ دیا ہے کہ ان پر ظلم نہ کرنا' میں نے تمہارے لئے دعا کر دی ہے اور میرے دوست جبریل نے مجھے کہا ہے کہ میں تمہیں حلیف بنا دوں۔

مساجدِ تبوک کے آخر میں بیان ہوا کہ آپ نے بنو رفاعہ کو جگہ دیدی تھی۔

## مُرَیح

مرح کی تصغیر ہے جس کا معنٰی خوشی ہوتا ہے۔ یہ بنو قینقاع کا قلعہ تھا جو بطحان کی پل ختم ہونے کی جگہ پر تھا اور مدینہ جانے والے کی داہنی طرف تھا۔

## مُرَیخ

مرخ (مشہور درخت) کی تصغیر ہے۔ یہ ینبع کے قریب ایک چھوٹی سی پہاڑی تھی جو برک اور رعان کے درمیان تھی۔

## مُرَیسیع

اسے غین سے بھی پڑھتے ہیں' یہ ساحلِ سمندر سے قدید کی جانب جگہ تھی۔ حدیثِ طبرانی میں ہے کہ یہ بنو خزاعہ کا حوض تھا' اس کے اور فُرع کے درمیان ایک میل کا فاصلہ تھا۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ مریسیع سے فُرع کا فاصلہ ایک گھنٹے کا تھا' یہیں غزوۂ مریسیع ہوا تھا اور یہیں انہیں قید کیا گیا تھا۔

## مُزَاحِم

یہ بنو الحبلی کے گھروں کے عین درمیان قلعہ تھا۔ ابن حبین کے راستے میں ایک بازار لگتا تھا' دورِ جاہلیت اور اسلام کے ابتدائی دور میں لگا کرتا' اس کی جگہ کو مزاحم کہتے تھے۔

## مُزج

عقیق کے تالابوں میں سے ایک تھا' حضیر سے سیلاب اس کی طرف آتا تھا۔

## مُزدَلِف

یہ عتبان کے والد مالک بن عجلان کا قلعہ تھا جو مسجدِ جمعہ کے پاس تھا۔

## مُسْتَظِلّ

اِسْتَظَلَّ بِالظِّلِّ سے اسم فاعل ہے (یعنی سائے میں چلا گیا)۔ یہ بئرِ غرس کے قریب ایک قلعہ تھا جو احیحہ بن عجلان کے پاس تھا پھر ان کے دادا کی دیت کے بدلے میں بنو عبد المنذر کو مل گیا۔

## مُسْتَعْجِلہ

یہ وہ تنگ جگہ تھی کہ ناربہ کی طرف سے خیف اور صفراء کو جاتے وقت اس میں سے گزرتے تھے۔

## مُسْتَنْذِر

بنو دیل کے قبیلے کے بیان میں اس پہاڑی کا ذکر آ چکا ہے اور مستند رِاقصیٰ کا ذکر عیر پہاڑ کے ذکر میں ہے۔

## مُسَیَّر

یہ بنو عبد الاشہل کا قلعہ تھا جو بنو حارثہ کے پاس تھا۔

## مَسْکَبَہ

سَکَب سے لیا گیا ہے، اس کا معنیٰ پلٹ دینا ہوتا ہے۔ مسجد قباء کی شرقی جانب ایک جگہ تھی، وہاں ایک قلعہ تھا جسے واقم کہتے تھے۔

## مَسْلَح

مدینہ کے ماتحت ایک جگہ تھی۔

## مُسْلِح

صفراء نامی دو پہاڑوں میں سے ایک تھا۔

## مشاش

ایک وادی جو عقیق کے کھلے علاقے میں گرتی تھی۔

## مَسْرُوح

مدینہ کے نواح میں ایک جگہ تھی۔

## مِشْعَط

مِرْفَق (کہنی) کے وزن پر ہے۔ یہ بنو حدیلہ کا قلعہ تھا، مسجد ابی بن کعب کی غربی جانب تھا۔ اسی جگہ میں ابو نبیہ

کا گھر تھا اور اُمہات المؤمنین نیز سیّدہ فاطمۃ الزہراء رضی اللہ تعالیٰ عنہن کی قبروں کے بیان میں آچکا ہے کہ یہ گھر بقیع کی غربی جانب تھا کیونکہ خوخۂ ابونبیہ کا ذکر وہاں ہوا ہے پھر یہ حدیث گذر چکی ہے: اگر بلاء کہیں ہوسکتی ہے تو وہ مشعط کے اندر ہوگی۔

## مِشْعَل

مِنبَر کے وزن پر ہے۔ یہ مکہ اور مدینہ کے درمیان ایک جگہ تھی۔

## مشفق

مدینہ اور تبوک کے درمیان ایک وادی تھی۔

ابن اسحاق حضور ﷺ کی تبوک سے مدینہ کو واپسی کے ذکر میں لکھتے ہیں: راستے میں پانی تھا جو وشل سے نکلتا تھا، جو ایک، دو اور تین آدمیوں کو بھی سیراب نہ کرتا تھا، وہ ایسی وادی میں تھا جسے وادی مشفق کہتے تھے، نبی کریم ﷺ نے فرمایا: ہم میں سے جو پہلے یہاں پہنچ جائے تو ہمارے آنے تک یہاں سے پانی نہ پئے، منافقوں کا ایک گروہ پہلے پہنچ گیا اور انہوں نے سارا پانی پی لیا۔ آپ جب وہاں پہنچے تو کچھ بھی موجود نہ تھا۔ آپ نے فرمایا: کیا میں نے انہیں منع نہ کر دیا تھا اور پھر ان پر لعنت فرمائی۔ پھر آپ نے پہاڑی کے نیچے ہاتھ رکھا تو اللہ کی مرضی سے آپ کے ہاتھوں سے پانی بہہ نکلا۔ آپ نے اسے ہاتھ لگایا اور دعا فرمائی تو پانی جاری ہو گیا اور نکلتے ہوئے پانی سے شور نکل رہا تھا۔

## مُشَیْرِب

مشروب کی تصغیر ہے یعنی پانی پینے کی جگہ۔ اس کا ذکر حدودِ حرم کے بیان میں آچکا ہے۔

## مَسَرّ

ضریّہ کی چراگاہ کی اوپر والی جانب ایک وادی تھی۔

## مَصْلوق

بنو عمرو بن کلاب کے کنوؤں میں سے ایک کنواں (یا تالاب) تھا۔

## مُصَلّٰی

یہ مدینہ میں مصلّائے عید تھا اور اسی نام کی عقیق مدینہ میں ایک جگہ تھی۔

## مُضَیْح

بنو ہوازن کا پہاڑ تھا اور یہیں پر حسین بن زید کا ایک کنواں (یا تالاب) تھا۔ اور مضیق الصفراء مستعجلہ ہی کو کہتے

ہیں۔

## مطلوب

مدینہ کے قریب ایک گہرا کنواں تھا جو مدینہ کی شامی جانب تھا' ایک تالاب نَمْلٰی میں تھا' ایک خثعم کا تھا' یہیں عبدالملک نے جائیداد لی تھی جو بنواُمیہ کی سب زمینوں سے اچھی تھی۔

## مُظْعِن

سقیا اور ابواء کے درمیان ایک وادی تھی۔

## معجب (معجف)

مدینہ کی وادیوں میں سے ایک وادی تھی اور معجف ایک باغ کا نام تھا جو حضرت عبداللہ بن رواحہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے قبضے میں تھا' غزوۂ موتہ کے موقع پر انہوں نے خدا اور رسول کے لئے پیش کر دیا تھا۔

## معدن الاحسن

اسے معدن الحسن بھی کہتے تھے۔ مدینہ پاک میں یہ بنوکلاب کی ایک جگہ یا بستی تھی۔ یہ بھی کہتے ہیں کہ یمامہ کی ایک بستی تھی۔

## معدن بنی سُلَیم

اسے معدن قران بھی کہتے ہیں۔ یہاں نجد کے راستے میں بڑی بستی تھی جہاں کنوئیں وغیرہ تھے اور یہ مدینہ سے سومیل کے فاصلے پر تھی۔ ابن سعد کے مطابق چھیانویں میل کے فاصلے پر تھی۔

## معدن المامون

مغیث کے لفظ میں اس کے بارے میں لکھا آ رہا ہے۔

## معدن النقرہ

بطنِ نخل سے دو دن کی مسافت پر تھی۔

## مُعَرَّس

مسجدِ معرس میں اس کا ذکر آ چکا ہے۔ سحری کے وقت مسافر کے سو جانے کو کہتے ہیں۔

## معرض

بنوقریظہ کا قلعہ تھا' وہ جب خوفزدہ ہوتے تو اس میں آ جاتے تھے اور یہ بقیع بنوقریظہ کے اس سائبان سے ایک اس نخیل تک تھا جہاں سے سیلاب نکلتا تھا۔ اسی نام کا قلعہ بنوعمرو اور بنوثعلبہ کا بھی تھا جو دارِ سوید میں تھا اور جوان کی مسجد کے بالمقابل تھا۔

## مُعْرقه

یہ وہ راستہ تھا جہاں سے قریش شام کو جایا کرتے' یہ ساحلِ سمندر کے ساتھ تھا اور جب واقعہ بدر ہوا تو قریش کا لشکر اسی راستے پر گیا تھا۔ حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے حضرت سلمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے کہا تھا: کہاں لے چلو گے' کیا معرقہ کے راستے پر جاؤ گے یا مدینے کے راستے پر؟

## مُعَصَّب

معرّس کے وزن پر ہے' بنو جحجبی کے گھروں کا نام تھا۔

## مَغْسَله

علامہ مجد کہتے ہیں کہ اس کے سین پر زیر ہے جیسے مَنْزِلَہ کا لفظ ہے۔ مدینہ کی ایک طرف صحراء تھا جہاں لوگ جا کر نہایا کرتے۔ تاریخ دانوں نے یونہی لکھا ہے اور آج کل مدینہ کے قریب یہ بہت بڑا باغ ہے۔ انتہٰی۔ اور بطحان کی غربی جانب ہے لیکن آج کل یہ مَغْسَلہ کے نام سے مشہور ہے۔ پہلے گذر چکا ہے کہ بنو دینار کی ایک مسجد الغسالین تھی اور ظاہر ہے کہ وہ اسی مقام پر تھی۔

## مُغَلَّاوان

یہ زمین پر پہلی عظیم پہاڑی تھی جو ابن ہشام کے تالاب کی طرف تھی۔

## مُغِيث

اَغَاثَ کے لفظ سے اسمِ فاعل ہے' یہ چاندی کی کان اور ربذہ کے درمیان ایک وادی تھی' اسے مغیث ماوان کہتے تھے۔ علامہ اسدی اسے مغیثة الماوان کہتے ہیں۔ انہوں نے وہاں کنوؤں اور اونٹوں کے بیٹھنے کی جگہ کا ذکر کیا ہے اور کہا ہے کہ اس سے ڈیڑھ میل کے فاصلے پر معدن الماوان تھی اور جو اس معدن کی اوپر والی جانب پہاڑ تھا' اسے مشقر کہتے ہیں۔

## مَغُوثَه

مدینہ کے قریب ایک جگہ تھی۔

## مُفْحِل

مدینہ کے قریب ہی ایک جگہ تھی۔

## مَقَارِيب

مدینہ کے قریب ہی ایک جگہ تھی۔

## مَقَاعِد

مَقْعَد کی جمع ہے۔ مدینہ کے دروازے پر ایک جگہ تھی۔ داؤدی کہتے ہیں کہ یہ سیڑھی تھی اور یہ بھی کہتے ہیں کہ دارِ عثمان بن عفان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس ایک چبوترہ تھا۔ عیاض کہتے ہیں: کہا جاتا ہے کہ یہ مسجد کے دروازے کے قریب ایک جگہ تھی، یہ بھی کہتے ہیں کہ مسجد کے گرد ایک چبوترہ تھا۔ ابن حبیب بتاتے ہیں کہ حضرت عثمان کے گھر کے نزدیک ایک چبوترہ تھا اور حضرت عثمان کا گھر مشرق میں مسجد کے دروازے کے قریب تھا اور یہ بات علامہ باجی وغیرہ کے اس قول کے مطابق ہے کہ: یہ مسجد کے دروازے کے قریب ایک جگہ تھی۔

صحیح بخاری میں حضرت حمران رضی اللہ تعالیٰ عنہ بتاتے ہیں کہ میں حضرت عثمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس پانی کا لوٹا لے کر گیا، وہ **مقاعد** پر بیٹھے تھے، انہوں نے اچھی طرح سے وضو کیا اور بتایا کہ میں نے رسول اللہ ﷺ کو دیکھا تھا کہ آپ نے مجلس میں وضو فرمایا الحدیث پھر حدیث ابو داؤد میں ہے کہ جب حضور ﷺ کے صاحبزادے حضرت ابراہیم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا وصال مبارک ہوا تو آپ نے ان کی نماز جنازہ مقاعد میں پڑھی تھی۔

ابو الفرج نہروانی کی ایک روایت میں ہے کہ حضرت ابوبکر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے مسجد میں تشریف فرما۔ نبی کریم ﷺ سے ایک ایسے آدمی کے بارے شعر پڑھنے کی اجازت چاہی جو اس نے اللہ و رسول کے بارے میں لکھے تھے۔ پھر بتایا کہ حضور ﷺ نے فرمایا: آؤ مقاعد کو چلیں۔ جب وہ مقاعد میں پہنچے تو اس نے اشعار سنائے۔

## مُقْشَعِرّ

قُشَعْرِيرَه مصدر سے اسم فاعل ہے۔ یہ قبلیہ کے پہاڑوں میں سے ایک تھا۔

## مُقَمَّل

وادیٔ نقیع میں ایک چھوٹا سا ٹیلہ تھا، اسی پر مسجد مقمل تھی جس کا مسجدوں میں ذکر گزر چکا۔

## مَکُرَعَه

بئرِ عذق کے قریب مسجد قباء میں ایک جگہ تھی۔

## مُکَسَّر

کَسَّرَ تَکْسِیْرًا سے اسم مفعول ہے اور ذوالمکسر، عقیق کی ایک وادی تھی۔

## مکیمن

مکمن کی تصغیر ہے۔ مکیمن الجماء کا لفظ بولتے ہیں، وادیٔ عقیق میں جماء تضارع سے متصل ایک پہاڑ ہے۔ ابن شبہ کی ''اخبارِ مکہ'' میں ہے کہ جماءِ عاقرِ عقیق مدینہ کے اندر ایک بت تھا جسے مکیمن کہتے تھے اور چونکہ جماء العاقر اس کے قریب تھی لہٰذا اسی وجہ سے اس کا نام یہ پڑ گیا۔

## مُلْتَدْ

عقیقِ مدینہ میں ایک جگہ تھی۔

## ملحاء

عقیق کی ایک وادی تھی۔

## مِلُحه

بنوقریظہ کا قلعہ تھا جو ابنِ ابی جدیس کی اراضی کی پچھلی طرف تھا اور بنوقریظہ کی نچلی جانب کھیتی تھی جو رکیّہ اور ضریّہ کے پہلو میں تھی، اسے مِلُحَہ کہتے تھے، وہاں ایک قلعہ تھا اور شاید یہ وہی تھا۔

## ملحتان

مِلحہ کا تثنیہ ہے۔ یہ ملح (نمک) کا ٹکڑا ہوتا ہے۔ یہ اشعر میں قبلیہ کی ایک وادی تھی جو شامی جانب سے ظلم سے ملتی تھی اور یہ دونوں مقام ملحة الرمث اور ملحة الحريض تھے۔

## مَلَل

مکہ کے راستے میں ایک وادی تھی جو مدینہ سے اکیس میل کے فاصلے پر تھی۔ ابن وضاح اسے بائیس میل لکھتے ہیں۔ کچھ اٹھارہ میل کہتے ہیں، کچھ کہتے ہیں کہ اس سے دو راتوں کی مسافت پر تھی۔

مؤطا میں آتا ہے کہ حضرت عثمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے مدینہ میں جمعہ پڑھا اور عصر کی نماز ملل میں پڑھی۔ مالک کہتے ہیں کہ اس کا مطلب یہ ہے کہ چونکہ گرمی تھی اور آپ تیز رفتاری سے گئے تھے۔ کچھ یہ کہتے ہیں کہ ملل

ایک وادی تھی جو جبل مزینہ ورقان سے نچلی طرف تھی اور فرش سویقہ میں گرتی تھی پھر فرش سے نیچے جا کر اضم میں گرتی تھی اور پہلے آ چکا ہے کہ یہ ذی خشب کے مقام پر اضم میں مل جاتی تھی اور جس نے یہ کہا ہے کہ یہ مدینہ سے دو راتوں کی مسافت پر تھی، اس کا یہی مطلب ہے۔

ابن الکلبی کہتے ہیں کہ تبع جب مدینہ سے واپس چلا تو ملل میں آ ٹھہرا تھا، یہاں تھکا ماندہ آیا تھا چنانچہ اس کا نام ملل رکھ دیا۔

علامہ کثیر سے پوچھا گیا کہ اسے ملل کیوں کہتے ہیں؟ تو انہوں نے کہا: اس لئے کہ یہاں ٹھہرنے والا آ کر تھک گیا تھا۔ یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ نام اس لئے رکھا گیا کیونکہ مدینہ سے یہاں چل کر آنے والا یہاں پہنچ کر تھک جاتا تھا۔

## مَناصِع

مدینہ میں یہ وہ مقام تھا جہاں رات کے وقت عورتیں قضائے حاجت کے لئے جایا کرتی تھیں اور یہ اس وقت کی بات ہے جب گھروں میں طہارت خانے نہ بن سکے تھے۔ یہ مقام بئرِ ابوایوب کی جانب تھا اور شاید آج کل بئرِ ایوب کے نام سے یہی مقام مشہور ہے جو مدینہ کی حفاظتی دیوار کے مشرق میں ہے اور بقیعِ غرقد کی شامی جانب ہے۔ باقی زقاق المناصع کا ذکر ان گھروں کے بیان میں گذر چکا ہے جو شرقی جانب مسجد کے اردگرد تھے۔

## مَناقب

مدینہ کے قریب ایک پہاڑ تھا جس سے یمن کو یمامہ اور نجد کے اعالی کی طرف سے راستہ جاتا تھا۔ کلامِ اصمعی سے پتہ چلتا ہے کہ یہ مقام ذاتِ عرق کے قریب نجد میں تھا لہٰذا عقیق مدینہ مراد نہیں۔

## مُنبَجِس

یہ وادئ عرج کا نام ہے۔

## مُنتَخِر

مشعر کی طرف فرش ملل میں ایک جگہ تھی۔

## مُنحَنی

یہ وہ جگہ تھی جس کا ذکر اس غزل میں ہے جو مدینہ کے مقامات کے بارے میں لکھی گئی ہے اور اہلِ مدینہ آج کل یہ کہتے ہیں کہ یہ جگہ مصلّے کے قریب تھی جو بطحان کی شرقی جانب ہے، اسی لئے شیخ شمس الدین ذھبی نے کہا تھا:

"میری جوانی یوں واپس گئی جیسے تھی ہی نہیں اور مڑ کر بڑھاپا چھا گیا تو جو منحنی اور نقا کا معاینہ کرتا ہے
تو ان دونوں کے بعد مصلّے تک کچھ نہیں دیکھتا۔"

## مُنشِد

حمراء الاسد کی بائیں جانب ایک پہاڑ ہے جیسے علامہ ھجری کہتے ہیں کہ شاید آج کل یہ پہاڑ حمراءِ نملہ کے نام سے مشہور ہے۔

علامہ مجد کہتے ہیں کہ یہ پہاڑ فُرع کے راستے میں حمراءِ مدینہ سے آٹھ میل کے فاصلے پر ہے پھر رضویٰ اور ساحل کے درمیان منشد ایک جگہ بھی ہے اور تیم کا ایک شہر بھی ہے۔

## مَنحِج

علامہ ھجری نے اس کا نام منجح لکھا ہے۔ یہ وہ وادی تھی جس میں بنوغنی کی اراضی تھی جو اضاخ اور اَمرۃ کے درمیان ضریہّ چراگاہ کی جانب تھی۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ یہ چراگاہِ ضریہّ میں ایک جگہ تھی اور پھر بنو اسد کی وادی بھی تھی جہاں پانی کی کثرت تھی۔

## مُنَقّٰی

نَقّٰی سے اسمِ مفعول ہے۔ علامہ مجد کہتے ہیں' یہ اس زمین کا نام تھا جو اُحد اور مدینہ کے درمیان تھی۔ ابن اسحاق کہتے ہیں' کچھ لوگ یومِ اُحد پر رسول اللہ ﷺ سے شکست کھائے بھاگ آئے تھے' وہ منقّی میں پہنچے جو اعراض کے قریب تھا۔

میں کہتا ہوں کہ منقی اس کا نام نہیں جس کا ذکر علامہ مجد نے کیا ہے اور جو اعوص کے بیان میں گذرا بلکہ وہ ہے جو عراق کے راستے میں مدینہ کی شرقی جانب مشہور ہے اور مجد کا گمان ہے کہ یہ شکست صرف مدینہ کے لئے تھی حالانکہ ایسا نہیں کیونکہ شقرہ کے لفظ میں گذر چکا ہے اور ابنِ قتیبہ کے معارف میں گذرا ہے کہ وہ شکست خوردہ تین دن کی مسافت پر گئے تھے۔

## مُنگَثَہ

نَگَثَ یَنگُثُ سے ہے جب کوئی چیز ٹوٹ جاتی ہے تو بولتے ہیں۔ یہ قبلیہ کی وادیوں میں سے ایک وادی تھی جو اجرد سے شروع ہوکر بوطا میں جاملتی تھی۔ یہ اجرد جہینہ کا پہاڑ تھا۔

## منور

مدینہ کے قریب ایک پہاڑ تھا۔ قاموس میں ہے کہ یہ ایک جگہ یا پہاڑ تھا جو حرۂ بنو سلیم میں تھا' حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے کہا تھا: تم میں سے کون دور اور منور کو جانتا ہے؟ مزینہ میں سے ایک نے کہا میں جانتا ہوں۔ آپ نے کہا کہ دور اور منور کے درمیان بہتر منزل ہے کیونکہ یہ اونٹوں کے ٹھہرنے کی جگہ ہے جو لُوٹ ڈالا کرتے

ہیں، دیکھو بخدا میں اس بات کو پسند کرتا ہوں کہ تمہاری اس دنیا سے میرا حصہ یہی مسجد ہے جو دور اور منور میں ہے، میں اس میں عبادت کروں گا یہاں تک کہ مجھے موت آ جائے۔

منور بنو نضیر کا ایک قلعہ بھی تھا جو ابن طہمان کے گھر میں تھا۔

## مَنِیع

فَعِیل کے وزن پر ہے، یہ بنو سواد کے قلعے کی جگہ تھی اور مسجد قبلتین کی جنوبی جانب حرّہ کے میدان میں تھی۔

## مُنِیف

أَنَافَ سے اسمِ فاعل ہے، بنو دینار بن نجار کا قلعہ تھا جو ان کی مسجد کے قریب تھا۔

## مھایع

ایک بڑی بستی تھی جہاں منبر تھا اور سایہ کے قریب تھی۔ اس کا والی امیرِ مدینہ کی طرف سے ہوتا تھا۔

## مھجور

مدینہ کے قریب ہی ایک تالاب (یا کنواں) تھا۔

## مِہرَاس

جبلِ اُحد میں ایک چشمہ (یا تالاب) تھا اور یہ اُحد کی گھاٹی کے آخر میں مشہور ہے، چھوٹے بڑے گڑھوں سے بارش کا پانی یہاں جمع ہوتا تھا، مہراس اسی گڑھے کا نام تھا۔

حضور ﷺ کو اُحد کے دن پیاس لگی، حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ گڑھے سے پانی لے کر حاضر ہوئے، اس کی بُو اچھی نہ تھی، آپ نے انہیں معاف فرمایا اور اس سے چہرہ کا خون دھویا اور سر پر ڈال لیا۔ ایک روایت میں ہے کہ مسلمان اس دن گھوم کر پہاڑ کی طرف آئے لیکن اس جگہ غار تک نہ پہنچے۔ وہ مہراس کے نیچے تھا۔ پھر انہوں نے حضور ﷺ کا ان کی طرف آنا بیان کیا۔

ابن عقبہ کے مغازی میں ہے کہ لوگ گھاٹی پر چڑھے، اللہ تعالیٰ نے اپنے نبی کو ثابت قدم رکھا، آپ پیچھے سے انہیں بلا رہے تھے، اس وقت مہراس کے پاس گھاٹی میں کھڑے تھے۔ اس کے بعد راوی نے آپ کا گھاٹی میں آواز دینے کے لئے چڑھنا بیان کیا۔

## مَھرُوز

بازار مدینہ کی جگہ تھی۔

## مھزُور

مدینہ کی وادیوں میں اس کا ذکر ہو چکا ہے۔

## مَھزول

چراگاہِ ضریہّ میں کنوئیں کی اگلی طرف ایک وادی تھی۔ علامہ زمخشری نے کہا کہ تنوف پہاڑ کی نچلی طرف تھی۔

## مَھیُعَہ

مَعِیشہ کے وزن پر ہے۔ اسے مَھُیَعَہ بروزن مرحلہ کہا جاتا ہے' یہ جحفہ کا نام تھا۔ حافظ منذری لکھتے ہیں کہ جب عمالقہ نے عاد کے بھائی بنوعبیل کو یثرب سے نکال دیا تو یہاں آ ٹھہرے' ان کے پاس جحاف کا سیلاب آیا جو انہیں بہا لے گیا چنانچہ اسی وجہ سے اس کا نام جحفہ پڑ گیا۔ علامہ عیاض کہتے ہیں: جحفہ نام پڑنے کی وجہ یہ تھی کہ سیلاب انہیں بہا لے گیا تھا۔

## موجا

بنو وابل بن زید کا قلعہ تھا' یہاں ان کی مسجد تھی۔

## میاسر

عذرہ کے علاقے میں ایک جگہ تھی جو اس علاقے میں رحبہ اور سقیا الجزل کے درمیان تھی' یہ وادیٔ قریٰ کے قریب تھی۔

## ذو المِیُثَب

عقیق کی وادیوں میں سے ایک وادی تھی۔

## مَیُطان

بنو قریظہ کا شرقی جانب پہاڑ تھا۔ علامہ عرام کہتے ہیں کہ یہ شوران کے بالمقابل تھا' یہاں ان کا کنواں تھا جسے صعہ کہتے تھے' یہاں سبزہ وغیرہ موجود نہ تھا' یہ سلیم اور مزینہ کے قبضے میں تھا' اس کے بالمقابل سن نامی پہاڑ تھا' کچھ اور بلند پہاڑ بھی تھے جنہیں حلاء کہتے تھے۔

## منُفَعَہ

یہ نجد کی جانب بطن نخل کے پیچھے کونے پر ایک جگہ تھی جو مدینہ سے چھیانویں میل دور تھی' غالب بن عبد اللہ لیثی کا چھوٹا سا لشکر یہیں پہنچا تھا۔

# حَرْفُ النُّوْن

## نَابِح

صاحب کے وزن پر ہے' نَبَعَ الْمَاءُ (پانی پھوٹ پڑا)۔ یہ جگہ مدینہ کے قریب تھی۔

## نَاجِیَه

بصرہ کے راستے پر مدینہ کے قریب ایک جگہ تھی۔ اصمعی کہتے ہیں کہ بنو اسد کے علاقے میں جبس کی نچلی طرف ایک کنواں (یا تالاب) تھا۔

## نَازِیَه

یہ ایک وسیع جگہ تھی جہاں کانٹے دار درخت تھے' یہ مستعجلہ اور مسجد المنصرف کے درمیان تھی یعنی مسجد الغزالہ کے درمیان۔ علامہ عیاض نے اسے وہاں چشمہ قرار دیا ہے چنانچہ کہتے ہیں: نازیہ ایک چشمہ تھا جو مکہ سے جانے والے کے راستے پر صفراء کے قریب تھا اور مضیق الصفراء سے پہلے مدینہ کے زیادہ قریب تھا۔ یہ اس وقت بند ہو گیا تھا جب وہاں جنگیں ہوئی تھیں۔ انتھٰی۔

علامہ عرام رحضیہ کا ذکر کرنے کے بعد کہتے ہیں: پھر وادیٔ عریفطان کی طرف چڑھتے ہوئے مکہ کی طرف پھر جائے' اس وادی کے بالمقابل پہاڑ تھے جنہیں اُبلٰی کہا جاتا تھا' پھر ایک وادی تھی جسے سودہ کہتے تھے۔ ان کے ہاں تالاب ضبلیعہ تھا' یہ میٹھے کنوئیں تھے جو قابلِ زراعت تھے' یہ وسیع زمین تھی' وہیں ایک چشمہ تھا جسے نازیہ کہتے تھے جو بنو حقاف اور انصار کے درمیان تھا' انہیں یہاں پر ضرر پہنچا تو انہوں نے اسے بند کر دیا حالانکہ یہ میٹھا چشمہ تھا' انہی جگہوں کی وجہ سے ان کے یہاں کئی لوگ ہلاک ہو گئے تھے۔ سلطانِ شہر نے کئی مرتبہ انہیں اپنی زمین کے عوض کثیر رقم دینا چاہی لیکن انہوں نے لینے سے انکار کر دیا۔ پھر عرام نے ابلیٰ کے تالابوں کا ذکر کرتے ہوئے کہا کہ جب تم نازیہ سے گزرو تو ھدنیہ تالات پر پہنچو گے اور پھر اس مقام سے تم سوارقیہ پہنچو گے جو یہاں سے تین میل کے فاصلے پر ہے۔

اس نازیہ میں کئی جنگیں ہوئی تھیں جو مضیق الصفراء اور مدینہ کے درمیان نہ تھیں بلکہ ابلیٰ' رحضیہ اور سوارقیہ کی طرف تھیں لیکن سب کا نام ایک تھا۔

## نازیین

یہ ایک بلند جگہ تھی جہاں عبداللہ بن حارث کی قبر تھی۔ جیسے مسجد مغیق الصفراء میں گزرا۔

## ناصفه

عقیق نامی وادیوں میں ایک وادی تھی تاہم علامہ زمخشری نے اسے قبلیہ کی وادیوں میں شمار کیا ہے۔

## ناعم

صاحب کے وزن پر ہے۔ یہ خیبر کا ایک قلعہ تھا۔ خیبر کے دن محمود بن مسلمہ یہیں قتل ہوئے تھے۔ ناعم ایک اور جگہ تھی۔

## نَاعِمَه

عوالیٔ مدینہ میں حدیقہ (باغ) تھا اور اس کی ایک طرف نویعمه باغ تھا' اس جگہ کو نواعم کہتے تھے۔

## نِبَاع

ینبع اور مدینہ کے درمیان ایک جگہ تھی پھر عقیق کی وادیوں میں عشرہ پھر نبعة الطوی پھر الحيشية اور پھر نبعه تھیں۔ اس نباع کے بارے میں خفاف بن ندبہ کہتے ہیں:

"بطنِ نباع میں مجھے گھروں سے عشق ہے۔"

## نُبَیع

زبیر کے وزن پر نَبَعَ الْمَاءُ سے لیا گیا ہے۔ یہ مدینہ کے قریب ایک جگہ تھی۔

## نَبی

نبی ﷺ کا نام' مدینہ کے قریب ایک پہاڑ تھا۔ کچھ اور جگہوں کا نام بھی یہی تھا۔

## نَجُد

جرش سے کوفہ تک کی سرزمین کے درمیان ایک جگہ تھی جس کی مغربی حد' حجاز تھی اور قبلہ کی بائیں جانب یمن تھا اور یہ نجد پورے کا پورا یمن کے زیر اثر تھا۔ یہ عیاض کا قول ہے لیکن درست یہ ہے کہ یمن کے تحت نجد کا ایک خاص حصہ تھا' پورا نجد نہ تھا۔

## نُجُیر

صَفِینہ نامی جگہ کے بالمقابل ایک تالاب تھا۔

## نُجَيل

نَجَل کی تصغیر ہے۔ یہ ینبع کے قریب، مدینہ کا ایک حصہ تھا۔ قاموس میں ہے کہ یہ مدینہ کے قریب ایک جگہ تھی یا ینبع کے ماتحت تھی۔

## نُخَال

ایک وادی کا نام تھا جو صفراء میں گرتی تھی، اسے شعب کہتے تھے۔ ارابن میں اس کا ذکر ہو چکا۔

## نَخْل

نَخلہ کا اسمِ جنس ہے۔ یہ نجد میں بنو ثعلبہ کی رہائش تھی جو مدینہ سے دو دن کی مسافت پر تھا۔ ابنِ اسحاق کہتے ہیں کہ نبی کریم ﷺ بنی محارب اور بنو ثعلبہ بن غطفان سے غزوہ کے لئے تشریف لے گئے تو نخل میں اُترے تھے، یہ غزوۂ ذات الرقاع تھا۔ حافظ ابن حجر غزوۂ ذات الرقاع کے بارے میں لکھتے ہیں کہ ان کے قول: فَنَزَلَ نَخْلًا سے مراد وہ مکان تھا جو مدینہ سے دو دن کے سفر پر وادی میں تھا جسے شدخ کہتے تھے۔ اس وادی میں قیس، فزارہ، اشجع اور انمار کے کئی گروہ رہتے تھے۔

بیہقی نے الدلائل میں واقدی کے حوالے سے لکھا ہے، وہ کہتے ہیں: ذات الرقاع، نخیل کے قریب ایک جگہ تھی جو سعد، شقراء اور بئرِ ارما کے درمیان تھی اور مدینہ سے تین میل کے فاصلے پر تھی۔ درست بات یہ ہے کہ تین دن کی مسافت پر تھی۔

## نَخَلی

جَمَزَی اور نَسَکَی کے وزن پر ہے۔ اشعر کی وادیوں میں سے ایک وادی تھی جو ینبع میں گرتی تھی، اس کی نچلی طرف حسن بن علی بن حسن کے تالاب تھے جن میں سے ایک ذات الاسیل تھا اور اس کی نچلی طرف بلدہ اور بلیدہ تھے۔

## نُخَيل

نخل کی تصغیر ہے۔ یہ مدینہ سے پانچ میل کے فاصلے پر ایک چشمہ (تالاب) تھا۔ علامہ اسدی کہتے ہیں کہ یہ فید کے راستے میں ایک منزل تھی جہاں پانی تھا اور کدید نامی بستی کا بازار تھا، یہاں چشمے تھے جو حسین بن علی کے تھے جنہیں فخ میں قتل کر دیا گیا تھا۔ اسدی کے مطابق یہ مدینہ سے ساٹھ سے کچھ زیادہ میل کے فاصلے پر تھا اور کدید میں رسول اللہ ﷺ کی مسجد تھی اور جس وادی میں راستہ تھا اسے ذوامر کہتے ہیں۔

## نِسَار

کِتَاب کے وزن پر ہے۔ ضریہ کی چراگاہ میں ایک پہاڑی تھی۔ کچھ کہتے ہیں کہ یہ نَسر نامی پہاڑ تھا۔ ابو عبید کہتے ہیں کہ یہ کئی پہاڑ تھے جو ایک دوسرے کے قریب تھے' انہیں انسر کہا جاتا تھا اور نسار اسی کو کہتے تھے۔

## نَسْر

مشہور پرندے (گدھ) کے نام سے ہے۔ یہ مدینہ کے قریب ایک جگہ تھی۔

## نِسْح

یہ وہ جگہ ہے جسے رسول اللہ ﷺ اور آپ کے بعد خلفاء نے چراگاہ بنایا تھا۔ یہ وادئ عقیق کی ابتداء میں تھی۔ گویا کہ بقیع کی چراگاہ کا نام تھا کیونکہ یہ عقیق کے شروع میں تھی۔

## نُصُب

یہ بھی مدینہ کے قریب ایک جگہ تھی اور یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ قبلیہّ کی رہائشی جگہوں میں سے تھی۔

حضرت مالک کہتے ہیں کہ حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما ذات النصب کی طرف سوار ہوئے تھے اور نمازِ قصر پڑھی تھی۔ نُصُب اور نُصُب بتوں کو کہتے تھے۔

## نِصْح

صفراء اور ینبع کے درمیان سیاہ رنگ کے پہاڑ تھے اور نُصَیْح' عذیبہ کے قریب ایک پہاڑ تھا۔

## نَضَاد

حجازی لوگ اسے نَضَاد پڑھتے ہیں بر وزن قطام اور بنو تمیم اسے غیر منصرف ناموں میں شمار کرتے ہیں یہ ضریہّ کی چراگاہ میں غنی کا پہاڑ تھا۔

## نَضِیْر

یہود کے ایک قبیلہ کے کچھ لوگ یہاں آ کر آباد ہوئے تھے۔

## نِطاۃ

خیبر کے قلعوں میں سے ایک قلعہ تھا۔ کچھ کہتے ہیں کہ خیبر کی ساری زمین کو کہتے ہیں لیکن واقدی کے کلام سے پتہ چلتا ہے کہ یہ خیبر کی ایک جانب تھی اور نبی کریم ﷺ نے جب قلعۂ ناعم فتح کیا تو وہاں کے لوگ قلعۂ زبیر کو چلے گئے۔ یہ قلعہ قلّہ کے سرے پر بڑا محفوظ تھا۔ یہود میں سے ایک آدمی نبی کریم ﷺ کے پاس آیا اور عرض کی' اگر آپ مجھے

امان دیدیں تو میں آپ کو ایسی راہنمائی کروں گا کہ آپ اہل نطاہ کو آسانی سے فتح کر کے اھلِ شق کی طرف جا سکیں گے۔ آپ نے اسے امان دیدی۔ اس نے کہا کہ آپ مہینہ بھر بھی یہاں ٹھہرے رہیں تو ان یہودیوں کو پرواہ نہیں کیونکہ زیرِ زمین ان لوگوں نے یہ نالا کھودا ہوا ہے وہ اس سے پانی پی سکیں گے چنانچہ آپ نے ان کا وہ نالا بند کر دیا۔

واقدی کہتے ہیں کہ یہ آخری قلعۂ نطاۃ تھا جسے آپ نے فتح کیا اور پھر اہلِ شق کی طرف تشریف لے گئے تھے۔

## نُعمان

یہ مدینہ میں ایک وادی تھی۔ ابن اسحاق کہتے ہیں کہ غزوۂ خندق میں مشرکین، احد کی جانب بابِ نعمان میں ٹھہرے تھے، الاکتفاء میں بھی یہی روایت ہے لیکن تہذیبِ ابن ہشام میں ہے کہ وہ نقمی میں ٹھہرے تھے۔

## نُعَیم

زُبیر کے وزن پر ہے۔ یہ مدینہ کے قریب ایک جگہ تھی۔

## نعف مناسیر

ابن السکیت کہتے ہیں کہ یہ دوداء اور مدینہ کے درمیان ایک جگہ تھی۔

## نَفّاع

بنوخطمہ کے گھروں میں ایک قلعہ تھا جو بئرِ عمارہ پر تھا۔

## ذو نفر

اسے نُفُر بھی پڑھتے ہیں۔ یہ ربذہ کی پچھلی طرف ایک جگہ تھی جو سلیلہ سے تین دن کے سفر پر تھی۔

## نَفِیس

اس کی طرف محل کا لفظ منسوب تھا چنانچہ اسے قصرِ نفس کہتے تھے۔

## نِقَاب

یعنی عورت کے منہ ڈھانکنے کا کپڑا۔ یہ مقام مدینہ کے ماتحت تھا۔ یہاں سے دو راستے نکلتے تھے جو وادیٔ قریٰ اور وادیٔ میاہ کی طرف جاتے تھے۔

## نَقَا

یہ وادیٔ بطحان اور اس جگہ کے درمیان ایک جگہ تھی جہاں تالاب تھا جو بئرِ اَعجام کے نام سے مشہور تھا۔ علامہ مطری کہتے ہیں کہ جس نقا کا ذکر شعروں میں ملتا ہے وہ مصلّے کی غربی جانب سے وادیٔ بطحان کے غرب میں

حاجیوں کے ٹھہرنے کی جگہ کے درمیان تھا' یہ وادی مصلّے اور نقا کے درمیان واقع تھی۔

## نقب بنی دینار

اسے نقب المدینہ کہتے تھے۔ یہ حرۂ غربیہ میں عقیق کا راستہ تھا' یہیں تالاب بھی تھا۔ ابن اسحاق سفر بدر بیان کرتے ہوئے لکھتے ہیں: آپ نقب المدینہ پر مکہ کو چلے تھے' پھر عقیق پر تشریف لے گئے۔ ایک اور مقام پر لکھا ہے کہ: قریش سے غزوہ کے لئے آپ نقب بنی دینار پر چلے تھے اور پھر فیفاء الخبار کو چلے گئے تھے۔

## نَقْعَاء

حَمْراء کے وزن پر ہے' چراگاہِ نقیع کی پچھلی طرف دیار مزینہ میں ایک جگہ تھی۔ نبی کریم ﷺ غزوہ بنی المصطلق میں یہاں ٹھہرے تھے۔ یہ جگہ عقیق کی وادیوں میں سے تھی۔ علامہ کثیر نے اسے مرج راهط اور نقعاء راهط کے نام دیئے ہیں۔

سیرتِ واقدی میں مسلمانوں کے مریسیع سے واپسی پر تیز چلنے کا ذکر ہے اور یہ بتایا گیا ہے کہ نبی کریم ﷺ تیسرے دن اس پانی کے پاس پہنچے جسے نقعاء کہتے تھے' یہ نقیع کی اوپر والی جانب تھا۔ لوگوں نے اس غزوہ میں پیٹھیں پھیر لیں تو شدید آندھی نے گھیر لیا اور وہ اس سے خوفزدہ ہو گئے۔

پھر واقدی نے حضور ﷺ کی اس اطلاع کا ذکر کیا کہ یہ آندھی مدینہ میں ایک بڑے منافق کے مرنے کی وجہ سے چلی تھی۔ منافقوں کو اس کا سخت صدمہ ہوا۔ یہ شخص زید بن رفاعہ بن تابوت تھا جو اسی دن مرا تھا اور جب وہ مدینہ پہنچے تو اھلِ مدینہ نے بتایا کہ یہاں بھی آندھی چلی تھی اور جب اس منافق کو دفن کر دیا گیا تو رُک گئی تھی۔

## نَقَمٰی

یہ احد کے قریب ایک جگہ تھی' یہ ابو طالب کی تھی۔ ابن اسحاق کہتے ہیں کہ خندق کے دن غطفان اور ان کے پیروکار نجدی آئے اور نقمی کے کنارے احدؔ کی جانب ٹھہرے تھے۔

## نَقِیْع

نقیع کی چراگاہ میں اس کا ذکر گذر چکا ہے (حِمَی النقیع)۔

## نقیع الخَضِمات

علامہ مجد کہتے ہیں کہ نقیع الحمی اور نقیع الخضمات الگ الگ تھیں' نون دونوں میں آتا ہے اور بقیع پڑھنا غلط ہے۔ خضمہ سبز جڑی بوٹی اور اس زمین کو کہتے ہیں جس میں سبزہ ہو۔

نقیع الخضمات ' مدینہ کے قریب ایک جگہ تھی جسے حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے چراگاہ بنایا تھا' یہ حجاز کی

وادیوں میں سے تھی‘ اس کا سیلاب مدینہ کو جاتا تھا اور حمی النقیع بیس فرسخ کے فاصلے پر تھی۔

ابن سیّد الناس حدیثِ ابو داؤد ذکر کرتے ہیں: حضرت سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے بتایا کہ میرے والد جب جمعہ کی اذان سنتے تو اسعد بن زرارہ کے لئے دعا کرتے۔ میں نے اس سلسلے میں پوچھا تو انہوں نے کہا کہ ہمیں سب سے پہلے انہوں نے ہی ھزم النبیت میں جمعہ پڑھایا تھا‘ اسے نقیع الخضمات کہتے تھے۔ پھر کہا کہ نقیع الخضمات اس روایت میں تاء سے آیا ہے لیکن بکری نے اسے نون سے لکھا ہے اور کہا ہے کہ ھزم النبیت ایک پہاڑ تھا جو مدینہ سے بارہ میل کے فاصلے پر تھا۔

## نمرہ

عطرہ کے وزن پر ہے۔ یہ قدید میں ایک جگہ تھی‘ صاحب المسالک والممالک نے اسے مدینہ کے ماتحت علاقوں میں ذکر کیا ہے۔

## نَمَلی

جَمَزٰی‘ قلبیٰ اور نسکی کے وزان پر ہے‘ علامہ جرمی کہتے ہیں کہ یہ مدینہ کے قریب ایک چشمہ تھا‘ اسے نملاء کہتے ہیں جو حمراء کے وزن پر ہے‘ گویا اسے نملی کہنے کی وجہ یہ تھی کہ وہاں کثرت سے کیڑیاں رہتی تھیں۔ علامہ اصمعی عامری کے حوالے سے لکھتے ہیں کہ نملی پہاڑ تھے جن کے قریب اور پہاڑ تھے جو بلند نہ تھے۔ اس نملی کے پانیوں میں سے حنجرہ اور ودکاء بھی تھے۔ عامری کہتے ہیں کہ اھل نملی کا ایک اور کنواں (یا چشمہ) بھی تھا جو وادیٔ مہزور میں تھا۔ اس کا حاصل یہ ہے کہ یہ ضریّہ کی چراگاہ کی ایک جانب تھا۔

## نُہبان

یہ نہبِ اسفل اور نہب اعلیٰ نامی دو بلند پہاڑ تھے جو مزینہ اور بنو لیث کے تھے جو اوپر چڑھنے والوں کی دائیں طرف قدسین کے بالمقابل تھے‘ ان دونوں اور قدسین و ورقان کے درمیان راستہ فرق کرتا تھا۔

## نواحان

یہ قباء میں بنو انیف کے دو قلعے تھے۔

## نَواعم

اس کا ذکر لفظ ناعمہ میں گزر چکا ہے۔ یہ عالیہ میں بنو نضیر کے گھر تھے۔

## نُوبَہ

یہ مدینہ سے تین میل کے فاصلے پر ایک جگہ تھی۔ اس کا ذکر مغازی (جنگوں) میں ملتا ہے۔ یہ یاقوت نے لکھا

ہے پھر نوبنہ پھیلی ہوئی سرخ رنگ کی پہاڑی بھی تھی جو بنو ابوبکر بن کلاب کی زمین میں تھی۔

### نِیَار

یہ ایک قلعہ تھا یا ایک شخص تھا جس کی طرف یہ قلعہ منسوب تھا، یہ بنو مخدعہ کے گھروں میں تھا۔

### نُیر

یہ وہ پہاڑ ہے جس کا ذکر ضریّہ کی چراگاہ میں گذرا۔ علامہ اصمعی کہتے ہیں کہ یہ وہ پہاڑ ہے جو نجد کی اوپر والی جانب ہے، غنی کی شرقی جانب اور فاخرہ کی غربی جانب......

### نِیق العُقاب

جحفہ کے قریب ایک جگہ تھی جہاں فتح مکہ کے موقع پر رسول اللہ ﷺ، ابوسفیان بن حارث بن عبد المطلب اور عبد اللہ بن مغیرہ سے ملے تھے جو ہجرت کر کے جا رہے تھے۔ استیعاب میں ہے کہ یہ دونوں آپ سے سقیا اور عرج کے درمیان ملے تھے، یہ بھی کہتے ہیں کہ ابواء میں ملے تھے۔

## حَرفُ الهاء

### هَدَبیّہ

یہ تین کنوئیں تھے جو بنو جفاف کے تھے، نہ تو یہاں زرعی زمین تھی اور نہ ہی باغ۔ یہ سوارقیہ سے تین میل کے فاصلے پر تھا۔

### هَجَر

حدیثِ قلّتین میں اس کا ذکر موجود ہے۔ علامہ نووی کہتے ہیں کہ لفظ هَجَر مدینہ منورہ کے قریب ایک بستی تھی۔ اس سے مراد هجر البحرین نہیں جو ایک مشہور شہر تھا۔

### هُجَیم

عصبہ میں ایک قلعہ تھا۔ اس کا ذکر بئر هجیم میں آ چکا ہے۔

### هَدّار

سوارقیہ کے نزدیک ایک مقام تھا۔ یہی هدّار یمامہ کی جانب مسیلمہ کذاب کا گھر بھی تھا۔

## هُدُن

وادیٔ قریٰ کی پچھلی طرف ایک تالاب تھا۔

## هَرُشٰی

سُکْرٰی کے وزن پر ہے۔ ثنیہ کا لفظ اسی کی طرف منسوب کرتے ہیں (ثنیہ هرشی)' عقبہ هرشی بھی بولا جاتا ہے۔ یہ مکہ کے آدھے راستے پر ایک نشان تھا۔

علامہ عرام کہتے ہیں کہ یہ برابر زمین پر پھیلی پہاڑیاں تھیں' یہاں کوئی شے اُگتی نہ تھی' اس کی نچلی طرف دو میل کے فاصلے پر وَدّان تھی جو مغیب الشّمس سے ملتی تھی۔ یہ هرشٰی اس مقام پر واقع ہے جو شام اور مدینہ کے راستے کو ملاتا ہے۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ طریق شام سے انہوں نے آج کل کے طریق مصر کو مراد لیا ہے۔

میں کہتا ہوں کہ آج کل یہ وہ راستہ ہے جہاں سے مدینہ کے حاجی گذرتے ہیں لیکن هرشٰی ان کی بائیں طرف ہے کیونکہ وہ خبت میں چلتے ہیں اور وَدّان اس سے رابغ کی طرف نچلی طرف ہے۔ قدیم دور میں یہ دو راستوں کے ملنے کی جگہ تھی' اس کے دو راستے تھے' ان میں سے جس راستے پر بھی کوئی چل کر آتا ایک ہی جگہ پہنچتا۔

کہتے ہیں کہ حضرت عمر بن عبد العزیز رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے حضرت عقیل بن علقمہ کو تلاوتِ قرآن کرنے کو کہا تو انہوں نے سورۂ زلزال پڑھی اور اس آیت پر پہنچے **فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ وَ مَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ**۔ اس پر حضرت عمر نے کہا: کیا میں نے تجھ سے کہا نہ تھا کہ تم اچھی تلاوت نہیں کر سکو گے' اللہ تعالیٰ نے تو خیر (بھلائی) کا ذکر پہلے کیا ہے لیکن تم نے شرّ کو پہلے کر دیا ہے۔

اس نے کہا:

''دونوں آیتوں نے هرشی کا ناک پکڑ رکھا ہے۔''

اس پر سارے لوگ ہنس پڑے۔

## هلوان

عقیق کی وادیوں میں سے ایک وادی تھی۔

## هَکُرٰی

یہ ایک مشہور جگہ تھی اور مدینہ سے چالیس میل کے فاصلے پر تھی' وہاں اس کے امیر کبھی کبھی ٹھہرا کرتے تھے۔

## هَکَرَان

یہ ایک پہاڑ ہے جو قباء کے بالمقابل کشب نامی جگہ میں ہے۔

### هَمَج

یہ تالاب تھے جہاں کھجور کے درخت تھے' یہ وادیٔ قریٰ کی جانب تھے۔

### هيفاء

یہ بئرِ المطلب سے ایک میل کے فاصلے پر ایک جگہ تھی۔

## حرف الواو

### وَابِل

صاحب کے وزن پر ہے۔ شدید اور موسلا دھار بارش کو کہتے ہیں۔ یہ عوالیٔ مدینہ کی طرف ایک جگہ تھی۔

### واتده

یہ نقیع کی چراگاہ کی بالائی جانب ایک نشان کھڑا تھا جہاں وادیٔ مجوی گرتی تھی۔

### وادی

یہ اس وادی کا نام تھا جس میں فج الروحاء تھی۔

### وادی ابی کبیر

یہ محرم اور معرس کی اوپر والی جانب تھی اور حفیرہ کی ابتداء میں تھی۔

### وادی اُحَیلِیّین

نارِ حجاز میں اس کا ذکر گذر چکا ہے۔

### وادی اَزُرق

لفظ جمدان میں گذر چکا ہے کہ یہ امج سے ایک میل بعد میں تھی پھر صحیح بخاری میں ہے کہ نبی کریم ﷺ وادیٔ ازرق سے گذرے تھے تو فرمایا تھا: میں ایسے دیکھ رہا ہوں کہ موسیٰ علیہ السلام اس گھاٹی سے اُتر رہے ہیں' وہ تلبیہ پڑھتے ہوئے اللہ کی پناہ لے رہے ہیں اور بارگاہِ الٰہی میں گڑ گڑا رہے ہیں۔ اس کے بعد ھرشٰی کی گھاٹی پر تشریف لائے اور فرمایا: میں گویا یونس بن متّی کو دیکھ رہا ہوں۔

امام بخاری کا یہ کہنا ہے کہ "پھر آئے" اس کا مطلب یہ ہے کہ مدینہ کو تشریف لائے۔

## وادی بطحان

یہ مدینہ کی وادیوں میں سے تھی۔ پانچویں فصل میں اس کا ذکر گذر چکا ہے۔

## وادی جزل

یہ وہ وادی تھی جس میں رحبہ تھی اور جزل کا سقیا' وادیٔ قری کے قریب تھا اور وادیٔ اِضم' نخیل ذی المروہ میں مل جاتی تھی۔

## وادی دحیل

نقیع کی چراگاہ میں اس کا ذکر آ چکا ہے۔

## وادی دوم

یہ خیبر کی شمالی جانب سے اس کے قبلہ تک پھیلی ہوئی تھی' شمال سے اس کا اوّل حصہ مقامِ غمرہ تھا اور قبلہ کی طرف سے قصیبہ تھا۔ یہ خیبر اور عراص کے درمیان فاصلہ بنتی تھی۔

## وادی سُمک

صفراء کی طرف ایک وادی تھی' کبھی کبھی حاجی یہاں سے گذرتے تھے۔

## وادی القرٰی

قری کی بہت سی وادیوں میں ایک تھی جو مدینہ اور شام کے درمیان تھی۔ حافظ ابن حجر کہتے ہیں کہ یہ ایک قدیم شہر تھا جو مدینہ اور شام کے درمیان تھا۔ ابن قرقول نے یہاں عجیب بات کہی ہے کہ یہ مدینہ کے ماتحت تھی انتہی۔ لیکن اس میں حیرانی کی کوئی بات نہیں کیونکہ صاحب المسالک نے اسے واضح کر دیا ہے جیسے لفظِ تبوک میں گذر چکا ہے اور یہ بھی گذر چکا ہے کہ دومۃ الجندل مدینہ کے ماتحت تھا اور وادیٔ قری میں تھا بلکہ ظاہر ہوتا ہے کہ یہ اس سے بعید تھا کیونکہ یہ مدینہ سے پندرہ یا سولہ رات کے سفر پر تھا۔

رہی وادیٔ قری تو طبقاتِ ابن سعد میں ہے کہ حضرت اسامہ بن زید جب غزوۂ روم سے واپس آئے تو رفتار تیز کر دی اور سات راتوں میں وادیٔ قری پہنچے پھر تیز دوڑنے کا ارادہ کیا اور چھ روز میں مدینہ پہنچے۔ پہلے گذر چکا ہے کہ حِجرِ ثمود وادیٔ قری سے ایک دن کے سفر پر تھا اور یہ بھی آ چکا ہے کہ العلاء وادیٔ قری کی ایک جانب تھا۔

علامہ بیہقی نے واقدی کے حوالے سے لکھا ہے کہ حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے کہا: ہم رسول اللہ ﷺ کے ہمراہ خیبر سے وادیٔ قری کو چلے اور جب ہم وادیٔ قری میں ٹھہرے اور یہودیوں کے پاس پہنچے تو ان کے پاس عرب کے لوگ اکٹھے ہوئے۔

پھر حضرت واقدی نے یہودیوں کے سامنے آنے کا ذکر کیا' وہ اپنے قلعوں میں چلا رہے تھے۔ اگلے دن حضور ﷺ ان کے پاس پہنچے' ابھی نیزہ بھر سورج نہیں ابھرا کہ مسلمانوں کے قبضے میں آ گئے اور آپ نے جنگ کے ذریعے اس مقام کو فتح کیا۔ اللہ تعالیٰ نے مسلمانوں کو بہت سارا مالِ غنیمت دیا۔ رسول اللہ ﷺ چار دن تک وہاں ٹھہرے رہے اور وہیں مالِ غنیمت تقسیم فرمایا تاہم زمین اور کھجور کے باغ ان کے قبضے میں رہنے دیئے' انہیں ان کے سپرد کر دیا۔

جب تیماء کے یہودیوں کو پتہ چلا کہ حضور ﷺ نے خیبر' فدک اور وادیٔ قرٰی کو فتح کر لیا ہے تو انہوں نے جزیہ دینے کی شرط پر صلح کر لی' زمینیں ان کے قبضے میں رہیں اور جب عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا دور آیا تو آپ نے خیبر اور فدک کے یہودیوں کو وہاں سے نکال دیا لیکن اہلِ تیماء کو رہنے دیا' وادیٔ قرٰی کے یہودیوں کو بھی رہنے دیا کیونکہ وہ دونوں مقامات شام کی زمین میں تھے۔ یہ روایت ملتی ہے کہ وادیٔ قرٰی کے قریب سے مدینہ تک حجاز تھا اور اس سے اوپر والا حصہ شام میں شمار ہوتا تھا' حضور ﷺ خیبر اور وادیٔ قرٰی کو فتح کر کے واپس لوٹ آئے۔

احمد بن جابر کہتے ہیں: کہا جاتا ہے کہ حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے وادیٔ قرٰی کے یہودیوں کو جلاوطن کر دیا تھا اور کچھ کہتے ہیں کہ نہیں کیا تھا۔

ذی المروہ کے ذکر میں گذر چکا ہے کہ کچھ نے اسے وادیٔ قرٰی میں شمار کیا ہے اور اگر یہ ثابت ہو جاتا ہے تو یہ وہ وادیٔ قرٰی نہ ہو گی کیونکہ بلاکث اور برمہ کے ذکر میں اس کی تائید موجود ہے اور آج کل اہلِ مدینہ بھی یہی کہتے ہیں کیونکہ وہ ذی المروہ اور ذی خشب کی جانب کو وادیٔ قرٰی شمار کرتے ہیں۔

## واردات

ضریّہ کی چراگاہ میں زمین پر پھیلی چھوٹی پہاڑیاں تھیں۔

## واسط

بنو خدرہ کا قلعہ تھا' ایک اور قلعہ بھی تھا جو بنو خزیمہ کا تھا جو حضرت سعد بن عبادہ کی قوم تھی' ایک اور بھی تھا جو بنو مازن بن نجار کا تھا پھر یہ ینبع اور بدر کے درمیان ایک جگہ تھی پھر ایک پہاڑ بھی تھا جس کے ساتھ عقیق کے سیلاب ٹکراتے تھے اور پھر جشجاثہ میں گر جاتے تھے۔

## وَاقِم

صاحب کے وزن پر ہے۔ یہ بنو عبد الاشہل کا قلعہ تھا پھر مسکبہ میں بھی ایک قلعہ تھا جو مسجد قباء کے مشرق میں تھا یہ ابو عویم بن ساعدہ کا تھا پھر احیحہ کا بھی ایک قلعہ تھا۔

## والج

شیخان یہیں موجود تھے، یہ دونوں قلعے تھے اور اس کی ایک جانب وادئ قناۃ کے ساتھ ایک قلعہ تھا جسے ازرق کہتے تھے۔

## وبُرَہ

آرہ کے پہاڑوں میں سے ایک چشمے پر یہ بستی تھی۔ اس کا ذکر حضرت اھبان اسلمی کی حدیث میں آیا ہے کہ وہ یبین میں رہتے تھے اور یہ جگہ بنو اسلم کی تھی۔

## وَبعَان

اسے وَلعان بھی پڑھتے ہیں، آرہ کی کسی جانب ایک بستی تھی۔

## وَجُمَہ

یہ ایک پہاڑ تھا۔

## وَحِیدۃ

لفظ وحید کی مؤنث ہے۔ یہ جگہ ماریہ کے ماتحت تھی جو مکہ اور مدینہ کے درمیان تھی۔

## وَدّان

فُرع کے قریب ایک بستی تھی، جہاں ضمرہ، غفار اور کنانہ قبائل رہتے تھے، یہ ابواء سے آٹھ میل کے فاصلے پر تھی۔

ابو زید کہتے ہیں کہ ودان کا تعلق جحفہ سے تھا اور یہ وہاں سے ایک دن کے سفر پر تھی، اس کے اور ابواء کے درمیان چھ میل کا فاصلہ تھا، جب میں حجاز میں تھا تو ودان میں بنو جعفر بن ابو طالب کا ایک رئیس تھا، فرع میں ان کی جائیداد اور قبیلہ تھا، ان کے اور حسنی لوگوں میں جنگیں ہوتی تھیں، یہ سلسلہ اسی طرح چلتا رہا اور پھر یمن سے ایک گروہ غالب آ گیا جو بنو حرب کہلاتے تھے۔

## وَدُعان

ینبع میں ایک جگہ تھی۔

## هضب

ایک پہاڑ تھا جس کا ذکر ضریہ کی چراگاہ میں آ چکا۔

## وَرُقَان

مدینہ سے جانے والے کی بائیں طرف سیاہ رنگ کا ایک عظیم پہاڑ تھا جو سیالہ سے جی تک عرج اور رویثہ کے درمیان جھکا ہوا ہے اور دائیں طرف اس کے پہلو میں سیالہ ہے پھر روحاء پھر رویثہ اور پھر جی ہے' ورقان میں کئی قسم کے پھل دار اور بے پھل درخت ہیں' یہاں چشمے بھی تھے' یہاں بنو اوس رہتے تھے جن کا مزینہ سے تعلق تھا۔

علامہ اسدی کہتے ہیں کہ یہ سیالہ سے نکلتے وقت راستے کی بائیں طرف تھا اور کہتے ہیں کہ یہ مکہ سے متصل تھا۔

علامہ عرام ذکر کرتے ہیں کہ جو جی کے نزدیک اس کے ساتھ تھا وہ قدسان تھا' اس کے اور ان دونوں کے درمیان عقبہ رکوبہ کا فاصلہ تھا اور احد پہاڑ کی فضیلت میں گذر چکا ہے کہ حدیث طبرانی کے مطابق ورقان جنت کا ایک پہاڑ ہے' پھر یہ حدیث بھی ہے کہ پہاڑوں میں سے بہتر احد' اشعر اور ورقان ہیں اور پھر یہ کہ یہ پہاڑ ان میں سے تھا جو مدینہ میں گرے تھے اور جس پر اللہ کی تجلی پڑی تھی' ایک اور روایت میں ہے کہ یہ ان پہاڑوں میں سے تھا جن سے کعبہ بنا تھا پھر مسجد عرق الظبیہ میں گذر چکا ہے کہ حضورﷺ نے فرمایا تھا: کیا تم جانتے ہو کہ اس پہاڑ کا نام کیا ہے؟ یعنی ورقان کے بارے میں فرمایا' آپ نے مزید فرمایا کہ یہ جنت کے پہاڑوں میں سے ایک ہے' الٰہی اس میں برکت دے اور اس کے اھل کو برکت دے' پھر فرمایا کہ یہ روحاء کی نرم زمین ہے اور یہ جنت کی وادیوں میں سے ایک وادی ہے۔

ابن شبہ کہتے ہیں' کہا جاتا ہے: ھٰذا یَوْمٌ حَمُتٌ' یہ اس وقت کہا جاتا ہے جب دن خوب گرم ہو۔

## وَسُبَاء

بنو سلیم کا چشمہ تھا جو ابلی کے دامن میں تھا۔

## وسط

ضریہ کی چراگاہ میں ایک پہاڑ تھا۔

## وسوس

یہ لفظ وسواس سے لیا گیا ہے' یہ قبلیہ کی وادیوں میں سے تھی جو اَجرد سے حاضرہ اور نکباء میں آ پڑتی تھی' یہ دونوں شاخیں تھیں' یہاں جہینہ وغیرہ کا باغ تھا اور حاضرہ بنو عبدالعزیز بن عمر کا چشمہ تھا جو حرار کی ابتداء میں تھا۔

## وَشِیْجَه

عقیق کی وادیوں میں سے ذو وشیع تھی جو مدینہ کی جائیداد میں شامل تھی۔

## وَطِیح

خیبر کے بڑے قلعوں میں سے ایک تھا' یہ نام ثمود کے ایک شخص وطیح بن مازن کے نام پر رکھا گیا تھا۔ کتاب ابو

عبیدہ میں یہ لفظ وطیحہ ہے۔

## وظیف الحمار

یہ عقیق میں ایک وادی تھی جو سلیمان بن عبد الملک کے کنوئیں سے زغابہ تک کے درمیان تھی۔

طبقات ابنِ سعد میں حضرت ماعز کے قصہ میں ہے کہ جب انہیں پتھر لگا تو عقیق کی جانب دوڑے اور مکیمن میں گھر گئے' انہیں گھیرنے والا عبد اللہ بن انیس تھا جس نے وظیف الحمار میں گھیرا چنانچہ اسے مار مار کر قتل کر دیا۔

یہ مکیمن عقیق میں تھی لیکن اس جگہ سے دور تھی۔

## وَعِیُرہ

ثور پہاڑ کی شرقی جانب ایک پہاڑ تھا جو اس سے بڑا اور احد سے چھوٹا تھا۔

## ولعان

وبعان کو ولعان بھی کہہ لیتے تھے۔

# حَرُفُ الیَاء

## یَتُیب

یہ وہ پہاڑ ہے جس کا ذکر حدودِ حرم میں آیا ہے۔

## یثرب

مدینہ منورہ کے ناموں میں اس کا ذکر آ چکا ہے۔ ابن زبالہ کہتے ہیں کہ یثرب مدینہ کی بستیوں میں مرکزی حیثیت رکھتا ہے اور یہ قناۃ سے جرف تک کا علاقہ تھا۔ یعنی اس کی یہ حد مشرق و مغرب کی طرف سے ہے اور برفی کہلا والی زمین سے زبالہ تک یعنی شام اور قبلیہ تک (یہ علاقہ وہ ہے جہاں کی بستیوں میں سے یثرب مرکزی ہے) پھر یثرب کہلانے والے علاقے کی شامی جانب نخل ہے جسے "مال" کہتے ہیں اور زبالہ کا ذکر پہلے ہو چکا ہے۔

## ذویدوم

عقیق کی وادیوں میں سے ہے۔

## یدیع

فدک اور خیبر کی جانب کا علاقہ ہے جہاں فزارہ وغیرہ کے کنوئیں اور چشمے ہیں۔

## یراجم

نقیع کے خالی حصے میں پہاڑ کے آخر میں ایک تالاب تھا' حضرت زبیر رضی اللہ تعالیٰ عنہ بتاتے ہیں کہ نبی کریم ﷺ نے نقیع کے اندر یراجم کے تالاب سے وضو فرمایا اور فرمایا کہ (اس وقت) تم برکت والی بستی میں ہو۔

## یَرَعَہ

یہ جگہ دیار فزارہ میں ثوابہ اور حراضہ کے درمیان تھی۔

## یُلْبن

نقیع کی چراگاہ میں ایک تالاب (یا نہر) تھی۔ ابن السکیت کہتے ہیں کہ یہ نقیع میں بڑا گڑھا تھا۔ علامہ ہجری کہتے ہیں کہ فصیح و بلیغ لوگ اس لفظ کو اُلْبن اور یُلْبَن بولتے ہیں۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ یہ مدینہ کے قریب ایک پہاڑ تھا' کچھ کہتے ہیں کہ یہاں تالاب تھا۔

## یسیرہ

کنوؤں کے بیان میں اس کا ذکر آ چکا ہے۔

## یَلْیَل

ینبع اور صفراء کی جانب ایک وادی تھی جو سمندر میں جا گرتی تھی' وہیں ایک بڑا چشمہ تھا جو ریت سے نکلتا تھا اور چشموں میں سب سے گہرا تھا جہاں کچھ بویا نہ جا سکتا تھا' وہاں کھجور کے درخت اور سبزیاں وغیرہ اُگتی تھیں۔ اسے نجیر کہا جاتا تھا اور اس سے اگلی طرف جار کی وادی تھی جو نجیر کے ایک کنارے پر تھی۔

غزوۂ بدر کے ذکر میں آتا ہے کہ قریش وادی کے مقام "عدوۂ قصوی" میں اُترے تھے جو عقنقل اور یلیل کی پچھلی طرف' بدر اور عقنقل کے درمیان تھی لہٰذا یہ یَلْیَل وہ نہیں جس کا ذکر خلائق کے لفظ میں گزر چکا ہے کیونکہ وہ ضبوعہ کے قریب تھی۔

حضرت سبرہ بن معبد کہتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے ایک بادل دیکھا تو عرض کی یا رسول اللہ! ہمیں اُمید تھی کہ یہ بادل ہم پر برسے گا۔ آپ نے فرمایا کہ اسے یَلْیَل میں برسنے کا حکم ملا ہے یعنی وہ وادی جسے یلیل کہتے ہیں۔

## یُنبع

نَبَعَ سے فعل مضارع کا لفظ ہے' کوئی چیز ظاہر و غالب ہو تو کہتے ہیں۔ مدینہ کے نزدیک چار دن کے سفر پر ایک مقام ہے۔ یہاں کثرت سے چشمے تھے لہٰذا یہ نام پڑا۔ کہتے ہیں کہ یہاں ایک سو ستر چشمے تھے اور جب حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ یہاں پہنچے اور اس کے پہاڑوں کی طرف نظر کی تو کہا: ان سے کتنا ستھرا پانی نکلتا ہے۔ یہاں جہینہ' بنو

لیث اور انصار رہا کرتے تھے' آج کل یہ بنو حسن کا ہے جو علوی کہلاتے ہیں۔

ابن شبہ کہتے ہیں کہ حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے حضرت علی کو ینبع میں کچھ زمین دی اور پھر انہوں نے حضرت عمر کا کچھ حصہ خریدا۔

حضرت کشد بن مالک جہنی کہتے ہیں کہ طلحہ بن عبید اللہ اور سعید بن زید بن علی "منحار" میں اترے (یہ حوزۃ سفلی اور منحوین کے درمیان شام کے تاجروں کے راستے میں ایک جگہ تھی) وہ ابوسفیان کے لشکر کی تلاش میں تھے۔ کشد ان سے آگے نکل گئے اور جب حضور ﷺ نے ینبع لے لیا تو کشد کو دے دیا' انہوں نے کہا: میرے پاس بہت کچھ ہے' آپ میرے چچا زاد کو دے دیجئے چنانچہ انہیں دے دیا گیا' ان سے حضرت عبدالرحمٰن بن سعد انصاری تیس ہزار درہم میں خرید لیا' عبدالرحمٰن اس کی طرف گئے اور نفع لیا' واپس آئے تو حضرت علی بن ابو طالب ینبع کے قریب ملے' پوچھا کہاں سے آئے ہو؟ انہوں نے کہا ینبع سے' میں نے اس کی قیمت لگا دی ہے تو آپ خریدنا چاہتے ہیں؟ حضرت علی نے کہا: میں نے قیمت دے دی ہے۔ انہوں نے کہا' یہ آپ کا ہو گیا۔

حضرت عمار بن یاسر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں کہ نبی کریم ﷺ نے ینبع کے علاقے ذوالعشیرہ میں حضرت علی کو زمین دی پھر حضرت عمر نے اپنے دور میں انہیں ایک ٹکڑا دیا پھر حضرت علی نے اس کے ساتھ ایک قطعہ خریدا تھا۔ حضرت علی کے ینبع میں کئی چشمے (یا حوض) تھے جو الگ الگ مقامات پر تھے' آپ نے انہیں عام لوگوں کے لئے چھوڑ دیا۔

حضرت ابو فضالہ ینبع میں حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی بیمار پرسی کو گئے' وہ بیمار تھے' حضرت علی نے کہا' آپ یہاں کیوں ٹھہرے ہوئے ہیں' اگر آپ یہاں فوت ہو گئے تو جہینہ کے دیہاتی آپ کو سنبھالیں گے لہٰذا مدینہ کو چلے جائیے' اگر آپ کو موت آ گئی تو آپ کے ساتھی آپ کو سنبھال لیں گے۔ حضرت علی نے کہا کہ میں اس تکلیف سے نہیں مروں گا کیونکہ رسول اللہ ﷺ نے مجھے عہد دے رکھا ہے کہ اس وقت تک نہیں مروں گا جب تک مجھے ضرب نہ لگے گی اور میری ڈاڑھی وغیرہ خون سے لت پت نہ ہو جائے گی۔

## یُھیق

مدینہ کے قریب ایک جگہ تھی۔ علامہ مجد کہتے ہیں' کہ اس لفظ کا ذکر کسی نے بھی نہیں کیا' حدیث میں آیا ہے:

"عنقریب اہلِ مدینہ پر تلوار چلے گی"۔

## یُیَین

عرب زبان میں ایسا کوئی لفظ نہیں جس کا پہلا اور دوسرا حرف "یاء" ہو' صرف یہی ایسا لفظ ہے۔ صغانی نے اسے یُیَین لکھا ہے۔

علامہ نصر کہتے ہیں کہ یہ جگہ ایک وادی تھی جو مدینہ کی آبادیوں میں تھی اور یہاں چشمہ تھا، یہ مدینہ سے ایک برید (بارہ میل) کے فاصلے پر تھی۔

علامہ زمخشری کہتے ہیں کہ یہ وادی میں ایک تالاب تھا جسے ''حورتان'' کہتے تھے، یہ بنو حسن میں سے بنو زید موسوی کے قبضے میں تھا۔

''سر الصناعۃ'' میں ہے کہ یین ایک وادی تھی جو ضاحک اور ضویحک کے درمیان تھی پھر دو پہاڑ تھے جو ''فرش'' کی نچلی طرف تھے۔

میں کہتا ہوں کہ ان دونوں کا سیلابی پانی ''حورتین'' میں گرتا تھا۔ اس چشمے اور بستی کے آثار اب تک یہاں موجود ہیں، یہاں پھل بکثرت تھے اور ھجری نے یہ کہا ہے کہ ''یین'' مدینہ کا پھلوں والا شہر ہے۔ یہ بنو زید کی بستی کے قریب مشہور تھا پھر ان کے اور بنو یزید کے درمیان لڑائیاں ہوئیں، چنانچہ بنو زید یہاں سے صفراء کو چلے گئے اور بنو یزید فُرع کو، یہ برباد ہو گیا۔ قدیم زمانے میں یہاں بنو اسلم کے گھر تھے۔

حضرت اسماء بن خارجہ اسلمی رضی اللہ تعالیٰ عنہ بتاتے ہیں کہ میں نبی کریم ﷺ کے پاس یومِ عاشورا پر حاضر ہوا تو آپ نے پوچھا: اے اسماء! آج تم نے روزہ رکھا ہے؟ میں نے عرض کی، نہیں، آپ نے فرمایا: ابھی روزے کا ارادہ کر لو۔ میں نے عرض کی، میں نے تو صبح کو کھانا کھایا تھا۔ فرمایا: باقی دن روزہ دار کی طرح گذارو اور اپنے قومی لوگوں سے بھی کہو کہ روزہ رکھ لیں۔

اسماء کہتے ہیں کہ میں نے اپنا جوتا ہاتھ میں لیا اور اسے پہنے بغیر یین میں اپنی قوم کے پاس پہنچا اور ان سے کہا: رسول اللہ ﷺ کا حکم ہے کہ دن کے باقی حصے کا روزہ رکھ لو۔

اھبان اسلمی کی حدیث میں ہے کہ وہ یین میں رہتے تھے، ایک دن وہ حرۂ وبرہ میں بکریاں چرا رہے تھے کہ بھیڑیا ان کی بکریوں پر جھپٹا۔ الحدیث۔

یین کا درمیانی راستہ، درب الفقرہ کا راستہ تھا جو جماوات کی شامی جانب تھا کیونکہ یین مکہ کے راستے پر ملل کے قریب تھا۔

ابن اسحاق بدر کے سفر کے بارے میں لکھتے ہیں: پھر آپ ''تربان'' سے گذرے، پھر ''ملل'' سے، پھر ''غمیس الحمام'' سے اور پھر ''صخیرات الثمام'' سے۔ نیز یین ایک کنواں تھا جو وادیٔ عیاش میں تھا۔ واللہ اَعلم!

* * *

آٹھواں باب

# اس میں زیارۃ النبی ﷺ کا ذکر ہے

اس میں چار فصلیں ہیں۔

## فصل نمبر ۱

## زیارت کے بارے میں واضح قسم کی احادیث

### پہلی حدیث:

دار قطنی کے مطابق حضرت عبید اللہ بن عمرؓ حضرت نافع سے اور وہ ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کرتے ہیں' وہ بتاتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے ارشاد فرمایا:

مَنْ زَارَ قَبْرِیْ وَجَبَتْ لَہٗ شَفَاعَتِیْ○

"جو میری قبر کی زیارت کر لیا کرے گا' اسے لازماً میری شفاعت ملے گی۔"

یہاں اس حدیث کے راویوں کے بارے میں بڑی لمبی بحث لکھی گئی ہے جس کا قارئین حضرات سے کوئی تعلق نہیں البتہ الفاظِ حدیث کی وضاحت کچھ یوں ہے:

حدیث میں وَجَبَتْ کا لفظ آیا ہے۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ آپ کی شفاعت ثابت شدہ ہے یہ ضرور حاصل ہو گی کیونکہ آپ کا وعدہ سچا ہے۔

ایک لفظ "لَہٗ" ہے یعنی یہ شفاعت صرف زیارت کرنے والے کے لئے ہو گی' کسی اور کے لئے نہ ہو گی' یا یہ مراد ہے دوسروں کو بھی یہ شفاعت حاصل ہو گی لیکن اسے خصوصیت حاصل ہو گی' اس میں اس کے لئے عظمت ہو گی' یا یہ مطلب ہے کہ اگر وہ زیارت ترک نہیں کرے گا تو ان میں شامل ہو جائے گا جنہیں یہ شفاعت ملے گی۔

پھر "شَفَاعَتِی" کے الفاظ میں زیارت کرنے والے کے لئے عزت و شرافت ہے کیونکہ فرشتے' انبیاء اور مؤمنین بھی تو شفاعت کریں گے لیکن اسے یہ خصوصیت حاصل ہو گی کہ حضور ﷺ خود اس کی شفاعت فرمائیں گے اور یہ بات واضح ہے کہ شفاعت کرنے والا جتنا عظیم ہو گا' اس کی شفاعت بھی اتنی ہی عظیم ہو گی۔

### دوسری حدیث:

بزاز کے مطابق حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما بتاتے ہیں کہ نبی کریم ﷺ نے فرمایا:

مَنْ زَارَ قَبْرِیْ وَحَلَّتْ لَہٗ شَفَاعَتِیْ○

’’جو بھی میری قبر کی زیارت کرے گا‘ میری شفاعت اس کے لئے حلال ہو جائے گی۔‘‘

علامہ سبکی کہتے ہیں کہ یہ وہی پہلی حدیث ہی ہے‘ فرق صرف یہ ہے کہ پہلی حدیث میں لفظ وَجَبَتْ ہے اور اس میں حَلَّتْ ہے۔ یہاں یہ حدیث ذکر کرنے کا مقصد یہ ہے کہ پہلی حدیث کی تائید کی جا سکے۔

## تیسری حدیث:

طبرانی نے کبیر اور اوسط میں جبکہ دارقطنی نے اسے اپنی امالی میں لکھا ہے اور ابن مقری نے اپنی معجم میں‘ حضرت مسلمہ بن سالم جہنی کے مطابق حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما بتاتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

مَنْ جَاءَنِیْ زَائِرًا لَّا تَحْمِلُهٗ حَاجَةٌ اِلَّا زِيَارَتِیْ كَانَ حَقًّا عَلَیَّ اَنْ اَكُوْنَ لَهٗ شَفِيْعًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ۝

’’جو میری زیارت کو آیا کرے گا‘ میری زیارت کے علاوہ اس کا کوئی اور مقصد نہ ہوگا تو یہ میرا لازمی حق ہوگا کہ قیامت کو میں اس کی شفاعت کروں۔‘‘

ابن مقریؒ کے مطابق حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کہتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

مَنْ جَاءَنِیْ زَائِرًا كَانَ حَقًّا عَلَی اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ اَنْ اَكُوْنَ لَهٗ شَفِيْعًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ۝

’’جو بھی میرے پاس میری زیارت کو آئے گا تو اللہ کا مجھ پر حق ہوگا کہ قیامت کے دن اس کی شفاعت کروں۔‘‘

حافظ ابن السکن نے یہ حدیث اس باب میں ذکر کی ہے: **باب ثواب من زار قبر النّبیّ صلّی اللّٰه علیه وسلّم**‘ یہ امام تھے۔ جو نہایت پختہ تھے‘ ۳۵۳ھ کو مصر میں فوت ہوئے۔ ان کے بیان کرنے کا مقصد یہ ہے کہ اس حدیث کے صحیح ہونے پر اجماع ثابت ہے۔

## چوتھی حدیث:

دارقطنی اور طبرانی کے مطابق حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما بتاتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

مَنْ حَجَّ فَزَارَ قَبْرِیْ بَعْدَ وَفَاتِیْ كَانَ كَمَنْ زَارَنِیْ فِیْ حَيَاتِیْ۝

’’جو حج کرے اور میرے وصال کے بعد میری قبر کی زیارت کرے گا تو یوں سمجھو کہ گویا میری زندگی میں اس نے میری زیارت کی۔‘‘

پھر ابن الجوزی نے ’’مثیر الغرام الساکن‘‘ میں حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے یہ روایت لکھی ہے‘ وہ بتاتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

مَنْ حَجَّ فَزَارَ قَبْرِیْ بَعْدَ مَوْتِیْ كَانَ كَمَنْ زَارَنِیْ فِیْ حَيَاتِیْ وَ صُحْبَتِیْ۝

’’جو حج کر کے میرے وصال کے بعد میری قبر کی زیارت کرے گا تو ایسے ہو گا جیسے اس نے میری حیاتی میں میری صحبت میں میری زیارت کی۔‘‘

## پانچویں حدیث:

ابن عدی نے الکامل میں یہ حدیث لکھی ہے‘ حضرت ابنِ عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما بتاتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

مَنْ حَجَّ الْبَيْتَ وَلَمْ يَزُرْنِيْ فَقَدْ جَفَانِيْ ○

’’جو حج کرے لیکن میری زیارت نہ کرے تو اس نے مجھ پر ظلم کیا۔‘‘

## چھٹی حدیث:

دار قطنی نے اپنی ’’السنن‘‘ میں اس حدیثِ ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما پر کلام کرتے ہوئے لکھا ہے کہ:

مَنِ اسْتَطَاعَ اَنْ يَّمُوْتَ فِي الْمَدِيْنَةِ فَلْيَفْعَلْ ○

’’جو شخص مدینہ منورہ میں فوت ہونے کی صورت نکال سکتا ہے‘ اسے یوں کرنا چاہیے۔‘‘

حضرت دار قطنی اس حدیث کو بیان کر کے حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کی یہ روایت لکھتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

مَنْ زَارَنِيْ اِلَى الْمَدِيْنَةِ كُنْتُ لَهٗ شَهِيْدًا وَّ شَفِيْعًا ○

’’جو مدینہ میں آ کر میری زیارت کرے گا تو میں اس کی شہادت دوں گا اور اس کی شفاعت کروں گا۔‘‘

## ساتویں حدیث:

ابو داؤد طیالسی کہتے ہیں کہ ہمیں سوار بن میمون ابو الجراح عبدی نے بتایا کہ آلِ عمر میں سے مجھے ایک شخص نے حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کرتے ہوئے بتایا کہ انہوں نے کہا تھا: میں نے رسول اللہ ﷺ کو یہ فرماتے سنا:

مَنْ زَارَ قَبْرِيْ‘ یا فرمایا مَنْ زَارَنِيْ كُنْتُ لَهٗ شَفِيْعًا وَّ شَهِيْدًا وَمَنْ مَّاتَ فِيْ اَحَدِ الْحَرَمَيْنِ بَعَثَهُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ فِي الْاٰمِنِيْنَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ○

’’جو میری قبر کی زیارت کرے‘ یا فرمایا میری زیارت کرے تو میں اس کی شفاعت کروں گا یا فرمایا اس کی گواہی دوں گا اور جو دو حرموں میں سے ایک میں فوت ہو جائے گا تو قیامت کے دن اللہ تعالیٰ اسے امن والے لوگوں میں اٹھائے گا۔‘‘

## آٹھویں حدیث:

ابو جعفر عقیلی سوار بن میمون سے اور وہ آلِ خطاب میں سے ایک آدمی سے روایت کرتے ہیں کہ نبی کریم ﷺ نے فرمایا:

مَنْ زَارَنِیْ مُتَعَمِّدًا کَانَ فِیْ جِوَارِیْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَمَنْ مَّاتَ فِیْ اَحَدِ الْحَرَمَیْنِ بَعَثَهُ اللّٰهُ فِی الْاٰمِنِیْنَ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ○

"جو میرا ارادہ لے کر میری زیارت کرے گا' قیامت کو میرے قریب ہوگا اور جو دونوں حرموں میں سے ایک میں فوت ہوگا تو قیامت کے دن اللہ تعالیٰ اسے امن پانے والے لوگوں میں اُٹھائے گا"

پھر ایک اور روایت میں ھارون بن قزعہ سے اور وہ آلِ خطاب میں سے ایک شخص سے روایت کرتے ہوئے "فی جواری یوم القیمۃ" کے بعد لکھتے ہیں:

مَنْ سَکَنَ الْمَدِیْنَةَ وَصَبَرَ عَلٰی بَلَآئِهَا کُنْتُ لَهٗ شَهِیْدًا اَوْ شَفِیْعًا یَوْمَ الْقِیٰمَةِ○

"جو مدینہ میں رہائش رکھے اور اس میں آنے والی تکلیفوں پر صبر سے کام لے تو میں قیامت کے دن اس کی گواہی دوں گا یا فرمایا کہ شفاعت کروں گا۔"

اور پھر اس کے بعد من الآمنین کی بجائے من الآمنین یوم القیمۃ کے الفاظ لکھے ہیں۔

## نویں حدیث:

امام دار قطنی نے ھارون بن قزعہ سے اور انہوں نے آلِ حاطب میں سے ایک شخص کے ذریعے حضرت حاطب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

مَنْ زَارَنِیْ بَعْدَ مَوْتِیْ فَکَاَنَّمَا زَارَنِیْ فِیْ حَیَاتِیْ وَمَنْ مَّاتَ بِاَحَدِ الْحَرَمَیْنِ بُعِثَ مِنَ الْاٰمِنِیْنَ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ○

"جو میرے وصال کے بعد میری زیارت کرے گا تو یوں ہوگا جیسے اس نے میری زندگی میں میری زیارت کی اور جو دو حرموں میں سے ایک میں فوت ہوگا تو اسے قیامت کے دن امن پانے والے لوگوں میں اُٹھایا جائے گا۔"

## دسویں حدیث:

ابو الفتح ازدی حضرت عماد بن محمد کے ذریعے لکھتے ہیں کہ مجھے میرے خالو سفیان نے منصور سے' انہوں نے یم سے' انہوں نے علقمہ سے اور انہوں نے حضرت عبد اللہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حوالے سے بتایا کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

مَنْ حَجَّ حِجَّةَ الْإِسْلَامِ وَزَارَ قَبْرِیْ وَغَزَا غَزْوَةً وَصَلّٰی فِیْ بَیْتِ الْمُقَدَّسِ لَمْ یَسْأَلُهُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ فِیْمَا افْتُرِضَ عَلَیْهِ○

”جو اسلام کے مطابق حج کرے، میری قبر کی زیارت کرے، کسی جنگ میں حصہ لے اور بیت المقدس میں نماز پڑھ لے تو اللہ تعالیٰ کو اس پر فرض کردہ اعمال میں سے کسی کے بارے میں حساب لینے کی ضرورت نہ ہوگی۔“

## گیارھویں حدیث:

ابو الفتوح سعید بن محمد یعقوبی اپنی کتاب میں لکھتے ہیں: حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ بتاتے ہیں، رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

مَنْ زَارَنِیْ بَعْدَ مَوْتِیْ فَكَاَنَّمَا زَارَنِیْ وَ اَنَا حَیٌّ وَ مَنْ زَارَنِیْ كُنْتُ لَهٗ شَهِیْدًا اَوْ شَفِیْعًا یَوْمَ الْقِیٰمَةِ○

”جو میرے وصال کے بعد میری زیارت کرے گا تو گویا اس نے میری زندگی میں میری زیارت کر لی، میں قیامت کے دن اس کا گواہ بنوں گا یا فرمایا کہ اس کی شفاعت کروں گا۔“

## بارھویں حدیث:

ابن ابی الدنیا کے مطابق حضرت انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ بتاتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

مَنْ زَارَنِیْ بِالْمَدِیْنَةِ كُنْتُ لَهٗ شَفِیْعًا وَّ شَهِیْدًا یَّوْمَ الْقِیٰمَةِ○

”جو شخص مدینہ منورہ میں میری زیارت کرے گا، میں قیامت کے دن اس کی شفاعت کروں گا اور اس کی گواہی دوں گا۔“

ایک اور روایت میں ہے كُنْتُ لَهٗ شَهِیْدًا اَوْ شَفِیْعًا یَوْمَ الْقِیٰمَةِ۔ البتہ بیہقی نے اسے یوں روایت کیا ہے:

مَنْ مَّاتَ فِیْ اَحَدِ الْحَرَمَیْنِ بُعِثَ مِنَ الْاٰمِنِیْنَ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَمَنْ زَارَنِیْ مُحْتَسِبًا اِلَی الْمَدِیْنَةِ كَانَ فِیْ جِوَارِیْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ○

”جو دو حرموں میں سے ایک میں فوت ہوگا تو قیامت کے دن امن پانے والوں میں اُٹھایا جائے گا اور جو مدینہ میں ثواب کی نیت سے میری زیارت کرے گا تو قیامت کے دن میرے قریب ہوگا۔“

## تیرھویں حدیث:

ابن نجار اپنی اخبار مدینہ میں لکھتے ہیں کہ حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے مطابق رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

مَنْ زَارَنِیْ مَیِّتًا فَكَاَنَّمَا زَارَنِیْ حَیًّا وَ مَنْ زَارَ قَبْرِیْ وَجَبَتْ لَهٗ شَفَاعَتِیْ یَوْمَ الْقِیَامَةِ وَمَا مِنْ

اَحَدٍ مِّنْ اُمَّتِیْ لَهٗ سِعَةٌ ثُمَّ لَمْ یَزُرْنِیْ فَلَیْسَ لَهٗ عُذْرٌ○

”جو میرے وصال کے بعد میری زیارت کرے گا تو گویا اس نے زندگی میں میری زیارت کر لی اور جو میری قبر کی زیارت کرے گا تو قیامت کے دن میں لازماً اس کی شفاعت کروں گا اور میرے کسی بھی اُمتی کو توفیق ہو اور پھر بھی میری زیارت نہ کرے تو قیامت کو اس کے پاس کوئی بہانہ نہ ہوگا۔“

## چودھویں حدیث:

حضرت ابو جعفر عقیلی رحمہ اللہ حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

مَنْ زَارَنِیْ فِیْ مَمَاتِیْ كَانَ كَمَنْ زَارَنِیْ فِیْ حَیَاتِیْ وَمَنْ زَارَنِیْ حَتّٰی یَنْتَهِیَ اِلٰی قَبْرِیْ كُنْتُ لَهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ شَهِیْدًا اَوْ قَالَ شَفِیْعًا○

”جو میرے وصال کے بعد میری زیارت کرے گا تو ایسے شخص کی طرح ہوگا جس نے میری زندگی میں میری زیارت کی اور جو میری قبر پر آ کر میری زیارت کرے گا تو قیامت کے دن میں اس کی گواہی دوں گا یا فرمایا شفاعت کرونگا۔“

پھر ابن عساکر نے اپنی طرف سے سند بیان کر کے لکھا کہ آپ نے فرمایا تھا:

مَنْ رَّاٰنِیْ فِی الْمَنَامِ كَانَ كَمَنْ رَّاٰنِیْ فِیْ حَیَاتِیْ○

”جس نے خواب میں میری زیارت کی تو وہ اس شخص جیسا ہوگا جس نے میری زندگی میں میری زیارت کی۔“

## پندرھویں حدیث:

ابن مندہ کے دور میں ایک حافظ الحدیث نے حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما کی حدیث بتائی کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

مَنْ حَجَّ اِلٰی مَكَّةَ ثُمَّ قَصَدَنِیْ فِیْ مَسْجِدِیْ كُتِبَتْ لَهٗ حَجَّتَانِ مَبْرُوْرَتَانِ○

”جو مکہ کو حج کرنے جائے اور پھر میری مسجد میں میری زیارت کا ارادہ لے کر آئے تو اس کے لئے دو حج کا ثواب لکھ دیا جائے گا جو قبول شدہ ہوں گی۔“

یہ حدیث مسند الفردوس میں ہے لیکن سبکی نے اس کا ذکر نہیں کیا۔

## سولہویں حدیث:

حضرت یحییٰ بن حسن بن جعفر حسینی نے اخبار المدینہ میں لکھا ہے: حضرت علی کرم اللہ وجہہ بتاتے ہیں کہ رسول

صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

مَنْ زَارَ قَبْرِیْ بَعْدَ مَوْتِیْ فَکَاَنَّمَا زَارَنِیْ فِیْ حَیَاتِیْ وَمَنْ لَّمْ یَزُرْنِیْ فَقَدْ جَفَانِیْ۝

”جو میرے وصال کے بعد میری قبر کی زیارت کرے گا تو گویا اس نے میری زندگی ہی میں میری زیارت کر لی اور جس نے میری زیارت نہ کی یقیناً اس نے مجھ پر ظلم کیا۔“

پھر ابو سعید عبد الملک بن محمد بن ابراہیم نیشاپوری جرکوسی نے ”شرف المصطفےٰ صلی اللہ علیہ وسلم“ میں بتایا کہ حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے کہا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

مَنْ زَارَ قَبْرِیْ بَعْدَ مَوْتِیْ فَکَاَنَّمَا زَارَنِیْ فِیْ حَیَاتِیْ وَمَنْ لَّمْ یَزُرْ قَبْرِیْ فَقَدْ جَفَانِیْ۝

”جس نے میرے وصال کے بعد میری قبر کی زیارت کی تو یوں ہوگا کہ جیسے میری زندگی میں میری زیارت کی اور جو میری قبر کی زیارت نہ کرے گا' یقیناً مجھ پر ظلم کر رہا ہوگا۔“

یہ عبد الملک سنہ ۴۰۶ھ میں نیشاپور کے اندر فوت ہوئے' ان کی قبر مشہور ہے اور لوگ اس کی زیارت کرتے ہیں۔ ابن عساکر ایک روایت بتاتے ہیں کہ حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے کہا:

”جو شخص رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے لئے درجہ اور وسیلہ کی دعا کرے گا تو قیامت میں اس کے لئے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی شفاعت حلال ہو چکی ہوگی اور جو آپ کی قبر کی زیارت کر لے گا تو وہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے پڑوس میں ہوگا۔“

## سترھویں حدیث:

حضرت یحییٰ بن حسن ہی کے مطابق بکر بن عبد اللہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حوالے سے ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

مَنْ اَتَی الْمَدِیْنَةَ زَائِرًا اِلَیَّ وَجَبَتْ لَهٗ شَفَاعَتِیْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَمَنْ مَّاتَ فِیْ اَحَدِ الْحَرَمَیْنِ بُعِثَ اٰمِنًا۝

”جو میری زیارت کی خاطر مدینہ میں آئے گا تو قیامت کے دن میں لازماً اس کی شفاعت کروں گا اور جو دو حرموں میں سے کسی ایک میں فوت ہوگا تو امن دے کر اُٹھایا جائے گا۔“

## فصل نمبر۲

# زیارت کی باقی دلیلیں اگرچہ ان میں لفظِ زیارت کا ذکر نہیں ہے

اس فصل میں یہ بتایا جا رہا ہے کہ شرعی طور پر زیارت قبرِ انور کی سخت تاکید ہے اور یہ زیارت تقریباً واجب ہے بلکہ بعض حضرات اسے واجب ہی قرار دیتے ہیں۔ پھر یہ بتایا جا رہا ہے کہ رسول اکرم ﷺ اپنی قبرِ انور میں زندہ ہیں اور قبر انور کی طرف تیاری کرکے جانا شرعی طور پر جائز ہے اور یہ بتایا گیا ہے حضور ﷺ کی زیارت کی نذر ماننا صحیح ہے اور یہ کہ آپ پر سلام پیش کرنے سے اجر ملتا ہے۔

علامہ سبکی رحمہ اللہ کے مطابق ابو داوٗد نے حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

مَا مِنْ اَحَدٍ یُّسَلِّمُ عَلَیَّ اِلَّاَ رَدَّ اللّٰہُ عَلَیَّ رُوْحِیْ حَتّٰی اَرُدَّ عَلَیْہِ السَّلَامَ○

”جب بھی کوئی شخص مجھ پر سلام پیش کرتا ہے تو اللہ تعالیٰ میری روح مجھ پر لوٹا دیتا ہے اور میں اس کے سلام کا جواب دیتا ہوں۔“

(دنیا میں لاکھوں، کروڑوں عاشقانِ رسول اللہ ﷺ آپ پر دن رات سلام پیش کر رہے ہیں تو معلوم ہوتا ہے کہ آپ کی روحِ انور ہمہ وقت آپ کے جسمِ انور میں موجود رہتی ہے اور یہ سلسلہ آخر وقت تک جاری رہے گا۔ ۱۲ چشتی)

علامہ بیہقی نے اس سلسلے میں یہ باب ذکر کیا ہے: **باب زیارۃ قبر النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم** اور پھر اس پر بہت سے ائمہ کرام نے اعتماد اور بھروسہ کیا ہے، اعتماد کرنے والوں میں سے حضرت امام احمد بھی ہیں۔ یہ زیارت ایک عظیم کام ہے۔

ابن قدامہ نے احمد کی روایت سے ان الفاظ میں حدیث ذکر کی ہے: مَا مِنْ اَحَدٍ یُّسَلِّمُ عَلَیَّ عِنْدَ قَبْرِیْ۔ اگر یہ حدیث ثابت ہو جاتی ہے تو پھر یہ اس سلسلے میں بالکل واضح ہے کہ آپ کی طرف سے سلام کے جواب کی فضیلت اسی کو حاصل ہوگی جو قبرِ انور کے پاس کھڑا ہو کر سلام عرض کرتا ہوگا اور اگر یہ ثابت نہیں ہوتی تو پھر قبرِ انور کے پاس کھڑا ہو کر سلام عرض کرنے والے کو یہ امتیاز حاصل ہوگا کہ حضور ﷺ اس سے خطاب فرمائیں گے اور اسے جواب دیں گے چنانچہ اس میں غائب کو آپ کے جواب کے مقابلے میں زیادہ فضیلت حاصل ہوگی اور پھر حضور ﷺ کی خدمت میں سلام عرض کرنا دو طرح کا ہوتا ہے، ایک وہ سلام ہے جس کا مقصد یہ ہے کہ ہم اللہ تعالیٰ سے دعا کرتے ہیں کہ آپ پر سلام بھیجے خواہ ہم غائب کا لفظ بولیں یا حاضر کا جیسے ہم یوں کہیں: **صلّی اللّٰہ علیہ وسلّم** اور **الصلوٰۃ و السلام علیک یا**

رسول اللّٰہ' خواہ یہ الفاظ آپ کے ہاں سے کوئی غائب شخص کہے یا آپ کے پاس کھڑا ہو کر عرض کرے اور یہی وہ بات ہے جسے اُمت کی طرف سے آپ کے ساتھ خصوصیت حاصل ہے' کسی اور پر سلام پڑھا جائے تو وہ تبعًا ہو گا۔ لہٰذا یوں نہ کہا جا سکے گا: فُلَانٌ عَلَیْہِ السَّلَامُ اور آپ پر سلام پیش کرنے کی دوسری صورت یہ ہے کہ آپ کی خدمت میں سلام کا نذرانہ پیش کرے جیسے کوئی زیارت کرنے والا آپ کی قبرِ انور پر پہنچ کر سلام پیش کرتا ہے' اس میں کسی شخص کو خصوصیت حاصل نہیں بلکہ یہ ساری اُمت کے لئے ہے' وہ ایجاد کر رہا ہوتا ہے کہ جیسے وہ اپنے آپ پر سلام پڑھتا ہے یا اپنے رسول پر' سلام اس سے حاصل ہو ہی جاتا ہے۔ رہا پہلا طریقہ تو اللہ بہتر جانتا ہے اگر یہ ثابت ہو جاتا ہے تو دوسرا ممتاز ہو جائے گا قرب اور خطاب کی وجہ سے' ورنہ جو یہ فضیلت نہ پا سکا وہ محروم ہو گا اور یہی وہ بات ہے جس کی تفسیر امام جلیل ابو عبد الرحمٰن عبد اللہ بن زید مقبری نے کی ہے جو امام بخاری کے اکابر اساتذہ میں سے ایک ہیں کیونکہ انہوں نے یہ قول لکھا ہے: مَا مِنْ مُّسْلِمٍ یُّسَلِّمُ عَلَیَّ ' یہ زیارت کے بارے میں ہے کہ: جب کوئی شخص میری زیارت کو آئے اور مجھ پر سلام پیش کرے تو اللہ تعالیٰ میری روح مجھ پر واپس لوٹا دیتا ہے اور میں اس کا جواب دے دیتا ہوں اور رہی یہ حدیث: میرے پاس ایک فرشتہ حاضر ہوا اور عرض کی اے محمد! کیا آپ یہ بات پسند نہیں فرماتے کہ آپ کی امت میں سے آپ پر کوئی بھی سلام عرض کرے تو میں اس کے لئے دس مرتبہ دعا کروں یا آپ پر سلام پیش کرے تو میں دس مرتبہ سلام کہوں؟ تو ظاہر یہ ہے کہ یہ سلام پہلی قسم کا ہو گا (جس میں اللہ سے سلام بھیجنے کی درخواست ہے)۔

امام نسائی اور اسماعیل قاضی نے حضرت ابنِ مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے یہ مرفوع حدیث بیان کی ہے: ''اللہ تعالیٰ کے کچھ ایسے فرشتے ہیں جو زمین میں گھومتے پھرتے ہیں اور میری اُمت کا سلام مجھ پر پیش کرتے ہیں۔'' پھر کچھ اور احادیث بھی ہیں جن میں آتا ہے کہ فرشتہ اُمت کا درود و سلام نبی کریم ﷺ کی خدمت میں پیش کر دیتا ہے اور یہ سلسلہ غائبانہ صلوٰۃ و سلام پیش کرنے والے کے بارے میں ہے' رہا وہ شخص جو قبرِ انور پر حاضر ہے تو کیا اس کے ساتھ بھی یہی معاملہ ہوتا ہے یا خود حضور ﷺ براہِ راست اس سے سنتے ہیں؟ تو اس بارے میں دو احادیث ملتی ہیں' ایک یہ کہ: ''جو مجھ پر میری قبر کے پاس کھڑا ہو کر درود پیش کرتا ہے' میں خود سنتا ہوں اور جو دور سے درود پڑھتا ہے تو وہ مجھے پہنچا دیا جاتا ہے۔

میں کہتا ہوں' حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما بتاتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا: ''جو میری قبر کے پاس مجھ پر درود پیش کرتا ہے تو میری روح اس کے لئے لوٹا دی جاتی ہے اور جو کسی دوسرے مقام سے پڑھتا ہے' وہ فرشتے مجھ تک پہنچا دیتے ہیں اور دوسری حدیث جو اس پہلی کے مقابلے میں ضعیف ہے' حضرت ابوھریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ ''جو مجھ پر میری قبر کے پاس درود پڑھتا ہے تو اللہ تعالیٰ ایک فرشتہ کے ذمے لگا دیتا ہے کہ وہ درود مجھ پر پیش کرے اور یوں اس کی آخرت سنور جاتی ہے' میں اس کا گواہ بنوں گا اور اس کی شفاعت کروں گا۔'' دوسری روایت میں ہے: جو شخص میری قبر کے پاس مجھ پر سلام پیش کرتا ہے تو اللہ تعالیٰ ایک فرشتے کے ذمے لگا دیتا ہے کہ وہ اسے مجھ

پر پیش کرے، یوں اس کی دنیا و آخرت سنور جاتی ہے اور میں قیامت کے دن اس کی گواہی دوں گا اور اس کی شفاعت کروں گا۔“ پہلی حدیث ثابت ہو جاتی ہے تو یہ ایک عظمت کی بات ہوگی ورنہ اس کی اُمید ہوگی چنانچہ اس کی حرص رکھنے کی ضرورت ہوتی ہے (کہ ایسا ہو جائے)۔

علامہ سبکی کہتے ہیں، عنقریب وہ حدیث آ رہی ہے جس سے پتہ چلے گا کہ نبی کریم ﷺ اس کا سلام خود سنتے ہیں جو آپ کی قبر انور کے پاس پیش کرتا ہے اور یہ جان کر کہ وہ آپ کی خدمت میں قبر انور پر حاضر ہے، اس کا جواب دیتے ہیں اور بلاشبہ یہ ایک بڑی فضیلت ہے۔

میں کہتا ہوں، علامہ عبدالحق نے الاحکام الصغریٰ میں حضرت ابنِ عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا: ”جو بھی شخص اپنے اس مومن بھائی کی قبر سے گذرتا ہے، جو اسے جانتا تھا اور اس کو سلام کہتا ہے تو وہ صاحب قبر اسے پہچان لیتا ہے اور اس کے اس سلام کا جواب دیا کرتا ہے۔ اسے ابن عبدالبر نے بھی روایت کیا ہے چنانچہ ابن تیمیہ نقل کرتے ہیں لیکن ان الفاظ سے: ”کوئی شخص جو ایسے آدمی کی قبر سے گذرتا ہے جسے دنیا میں جانتا تھا، اس پر سلام پڑھتا ہے تو اللہ تعالیٰ اس میں اس کی روح لوٹا دیتا ہے چنانچہ وہ اس کے سلام کا جواب دیتا ہے۔“

علامہ عبدالحق اپنی کتاب العاقبہ میں حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی یہ حدیث روایت کرتے ہیں: ”کوئی شخص جو اپنے کسی بھائی کی قبر سے گذرنے کا ارادہ کرتا ہے، وہاں بیٹھ جاتا ہے تو جب تک یہ وہاں بیٹھا رہتا ہے اسے اس سے انس ہو جاتا ہے۔“ پھر ابن ابی الدنیا نے حضرت ابوھریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی ہے ”جب کوئی شخص کسی واقف شخص کی قبر کے پاس جاتا ہے اور اسے سلام کہتا ہے تو وہ اسے سلام کا جواب دیتا ہے اور پہچان لیتا ہے۔“

اس سلسلے میں بہت سی روایات موجود ہیں چنانچہ ابن تیمیہ نے ”اقتضاء الصراط المستقیم“ میں ذکر کیا ہے (جیسے ابن عبدالهادی نے نقل کیا ہے) کہ: شہید بلکہ سب مومن لوگوں کا حال یہ ہے کہ جب کوئی مسلمان ان کی زیارت کو جا کر انہیں سلام کہتا ہے تو وہ اسے پہچان لیتے ہیں اور اس کے سلام کا جواب دیتے ہیں۔“ اور جب عام مومنوں کا یہ حال ہے تو پھر سیّد المرسلین ﷺ کا حال کیسا ہوگا۔

علامہ بارزی رحمہ اللہ ”توثیق عری الایمان“ میں سلیمان بن سحیم سے روایت کرتے ہیں، انہوں نے بتایا کہ میں نے نبی کریم ﷺ کو خواب میں دیکھا تو عرض کی یا رسول اللہ! یہ لوگ جو آپ کی خدمت میں حاضر ہو کر سلام عرض کرتے ہیں، کیا آپ انہیں پہچانتے ہیں؟ آپ نے فرمایا: میں تو ان کے سلام کا جواب بھی دیتا ہوں۔

ابن نجار کے مطابق حضرت ابراہیم بن بشار بتاتے ہیں کہ ایک سال میں حج کے لئے گیا تو مدینے میں پہنچا اور قبر انور کی طرف بڑھا، سلام عرض کیا تو حجرے کے اندر سے میں نے سنا: وعلیك السلام (کہ تم پر بھی سلام ہو)۔ ایسی روایات بہت سارے اولیاء و صالحین سے ملتی ہیں۔

اس بات میں کوئی شک نہیں کہ حضور ﷺ وصال مبارک کے بعد زندہ ہیں اور یونہی سارے انبیاء علیہم السلام

اپنی اپنی قبروں میں زندہ ہوتے ہیں' ان کی زندگی شہیدوں کی اس زندگی سے بہتر ہوتی ہے جس کا ذکر قرآن کریم میں موجود ہے اور پھر ہمارے آقا اور نبی ﷺ تو شہیدوں کے بھی سردار ہیں تمام شہداء کو مراتب تو آپ ہی وجہ سے ملے ہیں پھر حضور ﷺ فرما رہے ہیں کہ: "میرے وصال کے بعد میرا علم ویسے ہی ہے جیسے میری زندگی میں تھا۔"

ابن عدی نے اپنی "کامل" میں حضرت ثابت بن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی ہے' کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

"انبیاء علیہم السلام اپنی اپنی قبروں میں زندہ ہیں اور نماز پڑھتے ہیں۔"

پھر حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے مطابق رسول اللہ ﷺ نے فرمایا: انبیاء علیہم السلام کو ان کی قبروں میں چالیس دنوں کے بعد رہنے نہیں دیا جاتا' وہ اللہ کی بارگاہ میں نماز پڑھتے ہیں اور یہ سلسلہ صورِ اسرافیل پھونکے جانے تک یونہی رہے گا۔

حضرت بیہقی رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ انبیاء علیہم السلام کے وصال کے بعد ان کی زندگی کے بارے میں صحیح احادیث کے بہت سے دلائل موجود ہیں پھر انہوں نے اس حدیث کا ذکر کیا ہے: میں موسےٰ علیہ السلام کے ہاں سے گذرا تو دیکھا کہ وہ اپنی قبر میں کھڑے نماز پڑھ رہے تھے۔ ان کے علاوہ ایسی احادیث موجود ہیں جن میں یہ موجود ہے کہ آپ نے انبیاء علیہم السلام سے ملاقات فرمائی اور انہیں نماز پڑھائی۔

پھر صحیحین میں یہ حدیث ملتی ہے: یکا یک دیکھا تو حضرت موسےٰ علیہ السلام عرش کی ایک جانب کو تھامے کھڑے تھے' اب یہ معلوم نہیں کہ وہ ان لوگوں میں شامل تھے جن پر (موت کی) غشی طاری ہو گئی اور مجھ سے پہلے اُٹھ کھڑے ہوئے تھے یا ان پر یہ حالت طاری ہی نہ ہوئی تھی بلکہ اللہ تعالیٰ نے انہیں بچا لیا ہوا تھا۔

علامہ بیہقی رحمہ اللہ کہتے ہیں' یہ بات اسی صورت میں صحیح ہو سکتی ہے کہ اللہ تعالیٰ اپنے انبیاء علیہم السلام کی ارواحِ مبارکہ کو ان میں لوٹا دے' چنانچہ وہ اللہ کے ہاں یونہی زندہ ہوتے ہیں جیسے شہداء' اور جب پہلی مرتبہ صُور پھونکا جائے گا تو سب بیہوش ہو جائینگے اور کسی بھی صورت میں پھر موت نہ آئے گی' البتہ صرف اِس وقت ان کا شعور ختم کر دیا جائے گا۔

کہتے ہیں کہ شہداء اس حکم سے مستثنےٰ ہوں گے کیونکہ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے:

اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ (مگر جسے چاہے گا ہوش میں رکھے گا)۔

اس کے بعد علامہ بیہقی نے یہ مرفوع حدیث ذکر کی ہے چنانچہ حضرت اوس بن اوس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی زبانی ہے کہ:

"تمہارے دنوں میں سب سے افضل دن جمعہ کا ہے' اس میں حضرت آدم علیہ السلام پیدا ہوئے اور اسی میں ان کی روح قبض کی گئی' اسی میں صور پھونکا جائے گا اور اسی میں لوگ بیہوش ہوں گے لہٰذا کثرت سے اس میں مجھ پر درود پڑھا کرو کیونکہ تمہارا درود مجھ پر پیش کیا جاتا ہے۔"

صحابہ کرام نے عرض کی یا رسول اللہ! ہمارا درود آپ پر کیسے پیش ہو سکے گا' آپ تو بوسیدہ ہو چکے ہونگے؟ آپ نے فرمایا: "اللہ تعالیٰ نے انبیاء علیہم السلام کے جسموں کو کھانا زمین پر حرام کر دیا ہے۔" پھر بیہقی نے اس پر اور دلائل دئے ہیں اور یہ حدیث ذکر کی ہے: اللہ کے سیر کرنے والے فرشتے ہیں جو میری اُمت کا سلام لا کر مجھ پر پیش کرتے ہیں۔

علامہ منذری کے مطابق ابن ماجہ حضرت ابو الدرداء سے روایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

"جمعہ کے دن مجھ پر کثرت سے درود پڑھا کرو کیونکہ یہ مشہور گنا گیا ہے کہ فرشتے اس میں اُترتے ہیں' کوئی مجھ پر درود پڑھتا ہے تو فارغ ہونے سے پہلے اس کا درود مجھ تک پہنچا دیا جاتا ہے۔"

حضرت ابو الدرداء کہتے ہیں' میں نے عرض کی' کیا آپ کے وصال کے بعد ایسا ہوسکتا ہے؟ آپ نے فرمایا' ہاں وصال کے بعد بھی ایسا ہوتا ہے کیونکہ اللہ تعالیٰ نے زمین پر حرام کر رکھا ہے کہ انبیاء علیہم السلام کے جسم کھا لے لہٰذا اللہ کا نبی زندہ ہوتا ہے۔"

حضرت بزاز کے مطابق حضرت عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ بتاتے ہیں کہ نبی کریم ﷺ نے فرمایا:

"بلاشبہ اللہ تعالیٰ کے بہت سے فرشتے ہیں جو میری اُمت کی طرف سے مجھے (درود) پہنچاتے ہیں۔"

نیز آپ فرماتے ہیں:

"میری حیاتی تمہارے لئے بہت بہتر ہے کہ مجھ سے بات کر سکتے ہو' میرا وصال بھی تمہارے لئے بہت بہتر ہے کیونکہ تمہارے اعمال میرے سامنے پیش ہوتے ہیں' میں تمہارے اچھے اعمال دیکھتا ہوں تو اس پر اللہ کا شکر کرتا ہوں اور بُرے دیکھ کر اللہ سے تمہارے لئے بخشش کی دُعا کرتا ہوں۔"

استاد المنصور بغدادی کہتے ہیں:

"ہمارے محققین اہلِ کلام یہ کہتے ہیں کہ ہمارے نبی حضرت محمد ﷺ وصال کے بعد زندہ ہیں' اپنی اُمت کے اعمال پر نظر رکھتے ہیں۔ انبیاء کرام علیہم السلام (قبروں میں) گل نہیں جائیں گے۔"

عنقریب تیسری فصل میں آ رہا ہے کہ ابن حبیب کی روایت کے مطابق حضور ﷺ سن رہے ہوتے ہیں اور یہ جان رہے ہیں کہ تم ان کے سامنے حاضر ہو۔

علامہ بیہقی کتاب الاعتقاد میں لکھتے ہیں کہ: انبیاء علیہم السلام کی ارواح جب نکال لی جاتی ہیں تو پھر ان میں لوٹا دی جاتی ہیں لہٰذا وہ اللہ کے ہاں شہیدوں کی طرح زندہ ہوتے ہیں' نبی کریم ﷺ نے معراج کی رات ان میں سے کچھ کو دیکھا تھا۔

امام بیہقی کہتے ہیں کہ ہم نے انبیاء کی حیات کے ثبوت میں ایک کتاب بھی لکھی ہے۔

میں کہتا ہوں' یہ روایت اسی بات کی تائید کرتی ہے کہ:

”حضرت عیسیٰ علیہ السلام مدینہ میں سے حج یا عمرہ کرنے کے لئے گذریں گے' مجھے سلام کہیں گے تو لازماً میں ان کا جواب دوں گا۔“

اگر یہ کہا جائے کہ حضور ﷺ کا اس گذشتہ حدیث میں یہ ارشاد: ”مگر اللہ تعالیٰ میری روح مجھ میں واپس بھیج دیتا ہے تو میں اس کا جواب دیتا ہوں۔“ یہ بتاتا ہے کہ آپ کی زندگی مسلسل نہیں ہوتی تھی۔ تو اس کا جواب کئی طرح سے دیا جاتا ہے:

(۱) ایک یہ کہ بیہقی رحمہ اللہ نے اس حدیث سے صرف انبیاء علیہم السلام کی حیات پر دلیل بیان کی ہے' کہتے ہیں:

”ان کا ارادہ صرف یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ میری روح لوٹا دیتا ہے تو میں اسے جواب دے دیتا ہوں۔“

(۲) دوسرے یہ کہ علامہ سبکی کہتے ہیں' احتمال یہ ہے کہ روح کا یہ موٹانا معنوی طور پر ہو اور آپ کی روحِ مبارک یہ جہان چھوڑ کر بارگاہِ الٰہی اور ملأ اعلیٰ (اوپر کی مخلوق) میں مشغول ہو اور جب آپ پر سلام پیش کیا جائے تو آپ کی روح مبارک سلام کے جواب کے لئے اس جہان کی طرف آ جائے اور سلام کرنے والے کا جواب دے۔ یعنی آپ کی روح کی توجہ روحانی ہو اور بشری ضرورتوں کو پورا کرنے کے لئے آپ نیچے اُتریں۔

(۳) کچھ حضرات کہتے ہیں کہ یہ دنیا سے نکل جانے والے مخاطبین کی سمجھ کے مطابق خطاب ہے کہ آپ کی روح واپس لوٹ کر سنے اور جواب دے تو گویا انہوں نے کہا: میں اس کا مکمل جواب دیتا ہوں اور مکمل طور پر سنتا ہوں اور ساتھ ساتھ یہ اس بات پر بھی دلالت کرتی ہے کہ روح مبارک پہلے سلام عرض کرنے والے کے موقع پر واپس آ جاتی ہے حالانکہ ابھی پورے طور پر واپس نہ ہوئی تھی اور یوں بار بار روح کے لوٹنے کا کوئی بھی قائل نہیں ہے کیوں کہ اس سے ان گنت موتوں کا ثبوت ہوتا ہے حالانکہ ہم تو یہ اعتقاد رکھتے ہیں کہ علم اور سماع تمام مردوں کو حاصل ہوتا ہے' پھر انبیاء علیہم السلام کو کیوں حاصل نہ ہوگا اور یہ ثابت ہوتا ہے کہ قبر میں ہر میت میں روح واپس آتی ہے جیسے حدیثِ پاک سے ثابت ہے اور یہ ثابت نہیں کہ وہ اس کے بعد دوبارہ فوت ہوں بلکہ یہ ثابت ضرور ہے کہ اسے قبر میں انعام ملتا اور عذاب ہوتا ہے اور یہ ایسی چیزیں ہیں جن سے حیات ثابت ہوتی ہے تاہم اس میں ذرہ سی حیات کا ثبوت بھی کافی ہوتا ہے جس میں سوجھ بوجھ کا ثبوت ہو سکے۔

رہی حیاتِ انبیاء کی دلیلیں تو ان کا مقصد صرف بدنوں میں زندگی کا پایا جانا ہے جیسے حالتِ دنیا میں پائی جاتی ہے' ایسے میں غذا کا ان سے تعلق نہیں ہوتا اور جہان بھر میں ان کا اثر ہوتا ہے۔ اس مسئلہ کی وضاحت ہم نے اپنی کتاب ”الوفاء لمایجب لحضرۃ المصطفیٰ“ ﷺ میں کر دی ہے۔

ابو محمد عبد اللہ بن عبد الملک المرجانی نے اخبار المدینۃ میں لکھا ہے: الدر المنظم کے مصنف کہتے ہیں کہ نبی کریم ﷺ کا وصال مبارک ہوا تو آپ نے اُمت کے لئے رحمت چھوڑی' حضور ﷺ فرماتے ہیں: کوئی بھی نبی جب دفن ہوا تو میرے علاوہ اسے تین دن بعد اُٹھا لیا گیا کیونکہ میں نے اللہ سے دعا کر رکھی ہے کہ قیامت تک تم میں موجود

رہوں۔ ابن حجر کہتے ہیں کہ غزالی نے جو یہ حدیث بتائی ہے کہ ''میں اللہ کے ہاں اس بات میں اعزاز یافتہ ہوں کہ وہ مجھے میری قبر میں تین دن کے بعد چھوڑ دے تو اس کا کوئی ثبوت نہیں ملا۔''

عبد الرزاق کے مطابق حضرت سعید بن میسب رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے کچھ لوگوں کو دیکھا کہ وہ حضور ﷺ کی بارگاہ میں سلام پیش کر رہے تھے' اس پر انہوں نے کہا: کوئی نبی چالیس دن سے زیادہ تک زمین میں نہیں ٹھہرا۔ اس کے بعد عبد الرزاق نے یہ حدیث بتائی: حضور ﷺ نے فرمایا: میں موسےٰ علیہ السلام کے قریب سے اس وقت گزرا جب مجھے معراج کرائی گئی' وہ اپنی قبر میں کھڑے نماز پڑھ رہے تھے۔ شاید عبد الرزاق کا مقصد حضرت سعید بن المسیب کی روایت کا ردّ تھا چنانچہ یہ ردّ صحیح ہے اور اگر ابن المسیب کا قول صحیح ہو تو یہ زیارتِ قبر سے رکاوٹ نہیں بن سکتا کیونکہ حضور ﷺ کی وجہ سے قبر کو عظمت حاصل ہے' آپ کا قبر سے تعلق ہے اور ابن میسّب کو بھی یہ بات ماننے سے انکار نہیں حالانکہ ہمیں یقین ہے کہ نبی کریم ﷺ قبر انور میں رکھے گئے تھے اور اصل استمرار ہے اور یہ استمرار اس وقت تک موجود ہے جب تک کوئی شے اس کے خلاف نہ آ جائے پھر ابن المسیب کے علاوہ دوسروں سے استمرار ثابت ہے چنانچہ حضرت عثمان بن عفان رضی اللہ تعالیٰ عنہ جب محاصرے میں لئے گئے تو کسی صحابی نے آپ سے شام چلے جانے کو کہا لیکن آپ نے کہا: میں اپنی دارِ ہجرت اور رسول اللہ ﷺ کا پڑوس چھوڑنے کو تیار نہیں' علاوہ ازیں حضرت سعید بن میسب کا وہ قصہ تو مشہور ہی ہے کہ حرہ کے دن (یزید کے دور میں) آپ قبرِ انور سے اذان اور اقامت کی آواز سنتے تھے (تو معلوم ہوا کہ آپ میں روح کا وجود استمراری اور دائمی تھا)۔

یحییٰ کے مطابق خالد بن ولید بن حارث بن حکم بن عاص یعنی ابن مطیرہ' جمعہ کے دن رسول اللہ ﷺ کے منبر پر کھڑا ہو کر کہنے لگا: رسول اللہ ﷺ نے علی بن طالب کو عامل بنایا حالانکہ وہ جانتے تھے کہ وہ خائن تھے لیکن آپ کی بیٹی فاطمہ (رضی اللہ تعالیٰ عنہا) نے ان کی شفاعت کر دی' داؤد بن قیس ریاض الجنہ میں تھے' وہ کھڑے ہو گئے اور کہا خاموش ہو جاؤ چنانچہ لوگوں نے اس کی قمیص پھاڑ کر تار تار کر دی اور اسے ڈر کے مارے بٹھا دیا۔

وہ کہتے ہیں' میں نے قبرِ انور سے ہاتھ نکلا دیکھا' آپ فرما رہے تھے: اے دشمن خدا تم نے جھوٹ بولا ہے' اے کافر تم جھوٹ بول رہے ہو۔ کئی بار فرمایا۔

پھر ان لوگوں میں سے جو رسول اللہ ﷺ کی زیارت کے لئے سفر کر کے حاضر ہوئے' حضرت بلال بن رباح تھے جو مؤذنِ رسول تھے' آپ شام سے مدینہ میں حاضر ہوئے اور قبرِ انور پر حاضری دی۔ ابن عساکر ابوالدرداء رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ جب حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ فتحِ بیت المقدس کے بعد کوچ کرتے ہوئے نکلے اور جابیہ پہنچے تو حضرت بلال نے ان سے کہا کہ انہیں شام میں مقرر کر دیں چنانچہ انہوں نے کر دیا۔ پھر ابن عساکر نے ان کے ''داریا'' میں ٹھہرنے کا واقعہ بتایا اور کہا: پھر حضرت بلال نے خواب میں نبی کریم ﷺ کو دیکھا' آپ فرما رہے تھے' اے بلال! یہ تم نے کیا ظلم کر رکھا ہے؟ کیا تمہیں اتنا وقت بھی نہیں ملا کہ میری زیارت کو آ سکو؟

آپ حالات ڈر میں بیدار ہوئے، سواری پر بیٹھے اور مدینہ منورہ کا رُخ کیا، قبر انور پر پہنچے اور رونا شروع کر دیا اور قبرِ انور سے چہرہ ملنے لگے۔ اسی دوران حضرت حسن و حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہما آئے تو آپ نے انہیں سینے سے لگایا اور چومنے لگے۔ دونوں نے کہا: اے بلال! ہم آپ سے وہ اذان سننے کی خواہش رکھتے ہیں جو مسجد میں آپ رسول اللہ ﷺ کے سامنے پڑھا کرتے تھے چنانچہ انہوں نے بات مان لی، مسجد کی چھت پر چڑھے۔ اور اسی جگہ کھڑے ہوئے جہاں کھڑے ہوا کرتے تھے اور اللّٰہ اکبر اللّٰہ اکبر پڑھا۔ اس پر مدینے میں گویا ایک زلزلہ پیدا ہوا اور جب آپ نے پڑھا اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ تو وہ کیفیت اور بڑھ گئی اور جب آپ نے اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ پڑھا تو پردہ دار خواتین باہر نکل آئیں اور انہیں ایسا لگا کہ شاید حضور ﷺ آ گئے ہیں چنانچہ مدینہ میں جتنے مرد و زن اس دن روئے، کبھی بھی نہ دیکھے گئے۔

حضرت حافظ عبدالغنی وغیرہ حضرت بلال رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے بارے بتاتے ہوئے لکھتے ہیں کہ: جیسا کہ روایت میں آتا ہے حضور ﷺ کے بعد حضرت بلال رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے صرف ایک بار اذان پڑھی تھی اور وہ اس وقت جب آپ مدینہ میں قبرِ انور کی حاضری کو آئے تھے اور صحابہ کرام نے آپ سے یہ مطالبہ کیا تھا، آپ نے اذان تو پڑھی تھی لیکن پوری نہ کر سکے تھے۔

یہ بھی کہتے ہیں کہ آپ نے حضرت ابوبکر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے دورِ خلافت میں اذان پڑھی تھی۔

پھر حضرت عمر بن عبدالعزیز رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے بارے میں آتا ہے کہ آپ شام سے خط لکھا کرتے تھے کہ میری خاطر رسول اللہ ﷺ کی خدمت سلام عرض کر دو اور یہ تابعین کا ابتدائی دور تھا۔

فتوح الشام میں ہے کہ حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے جب اہلِ بیت المقدس سے مصالحت کر لی تو حضرت کعب احبار ان کے پاس حاضر ہوئے اور اسلام لے آئے، آپ خوش ہوئے اور پھر ان سے کہا کیا تم میرے ہمراہ مدینہ جا کر نبی کریم ﷺ کی قبرِ انور پر حاضری دے کر آپ کی زیارت کرنا پسند کرو گے؟ انہوں نے کہا، ہاں امیر المؤمنین! میں یہ کام ضرور کروں گا چنانچہ جب آپ مدینہ پہنچے تو سب سے پہلا کام یہ کیا کہ مسجد میں آئے اور رسول اللہ ﷺ کی خدمت میں سلام پیش کیا۔

عبدالرزاق لکھتے ہیں کہ حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما جب بھی کسی سفر سے واپس آتے تو نبی کریم ﷺ کی قبرِ انور پر حاضری دیتے اور عرض کرتے: **السّلام عليك يا رسول اللّٰه، السّلام عليك يا ابابكر، السّلام عليك يا ابتاه۔**

مؤطا میں ہے کہ حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما نبی کریم ﷺ کی قبرِ انور کے پاس ٹھہرتے، آپ پر درود پڑھتے، پھر ابوبکر و عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کی خدمت میں سلام پیش کرتے۔ ابن قاسم اور قعنبی کہتے ہیں کہ ان دونوں کے لئے دعا بھی کرتے۔

ابن عون کہتے ہیں، ایک شخص نے حضرت نافع سے پوچھا: کیا ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما قبرِ انور پر سلام پیش کرتے تھے؟ انہوں نے کہا، ہاں، میں نے تو انہیں سویا اس سے بھی زیادہ مرتبہ ایسا کرتے دیکھا ہے، وہ قبرِ انور کے پاس آتے اور عرض کیا کرتے: السلام علی النبی، السلام علٰی ابی بکر، السلام علی ابی۔

مسند ابو حنیفہ میں حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کہتے ہیں: سنت یہ ہے کہ تم قبلہ کی طرف سے حضور ﷺ کی قبر انور پر حاضری دو، قبلہ کی طرف پیٹھ کرلو اور چہرہ قبر انور کی طرف کرلو، پھر یوں عرض کرو: اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ۔

احمد کے مطابق داؤد بن صالح کہتے ہیں کہ ایک دن مروان آیا اور اس نے ایک آدمی کو دیکھا جس نے اپنا چہرہ قبرِ انور پر رکھا ہوا تھا۔ مروان نے اسے گردن سے پکڑ لیا اور کہا: تم جانتے ہو کہ کیا کر رہے ہو؟ اس نے آپ کی طرف دیکھ کر کہا: ہاں میں جانتا ہوں، میں کسی پتھر کے پاس نہیں آیا، میں تو اللہ کے رسول ﷺ کی خدمت میں آیا ہوں، میں نے رسول اللہ ﷺ سے سن رکھا ہے، فرمایا تھا: دین پر اس وقت نہ رونا جب اہلِ دین حکمران ہو، اس وقت رونا جب نااھل حکمران ہو۔

مؤرخین اور محدثین بتاتے ہیں کہ حضرت زیاد بن ابیہ نے حج کا ارادہ کیا تو ان کے پاس ابوبکرہ آئے، وہ ان سے کلام نہ کرتے تھے، انہوں نے ان کے بیٹے کو پکڑا اور گود میں بٹھا لیا کہ ان سے خطاب کریں اور زیاد کو سنائیں چنانچہ کہا کہ تمہارے باپ نے تو یہ یہ کام کئے ہیں اور پھر حج کو جا رہے ہیں جبکہ اُم حبیبہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا وہاں موجود ہیں چنانچہ اس سال زیاد نے حج کا ارادہ ترک کر دیا۔

دوسرے باب حاجی کو پہلے مکہ جانا چاہئے یا مدینہ میں کی ساتویں فصل میں گذر چکا ہے، اس بات میں اختلاف ہے کہ مکہ سے پہلے مدینہ کی حاضری دینی چاہئے یا بعد میں۔ پہلے مدینہ کی حاضری کے قائل حضرت علقمہ، اسود اور عمرو بن میمون تابعی حضرات ہیں۔ اس کا سبب شاید یہ تھا کہ وہ زیارت کو اہمیت دیتے تھے اور حضرت امام ابو حنیفہ نے مکہ کی حاضری کو اوّلیت دی ہے چنانچہ فتاویٰ ابو اللیث سمرقندی میں حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں: حاجی کے لئے بہتر یہ ہے کہ پہلے مکہ جائے اور جب حج کے کام پورے کر لے تو مدینہ کو چلا جائے لیکن اگر پہلے مدینہ چلا جائے تو جائز ہے، پھر رسول اکرم ﷺ کی قبرِ انور پر حاضری دے چنانچہ قبرِ انور اور قبلہ کے درمیان کھڑا ہو۔

علامہ سبکی رحمہ اللہ نے زیارتِ قبرِ انور کے بارے میں قولی اور فعلی لحاظ سے اجماع نقل کیا ہے اور ائمۂ کرام کے کلام پیش کئے ہیں، انہوں نے کتاب و سنت، اجماع اور قیاس سے اس کا ثبوت پیش کیا ہے۔

۱۔ رہا کتاب اللہ سے دلیل تو انہوں نے یہ فرمان پیش کیا ہے: وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ۔ یہ آیت آپ کے پاس حاضری کے لئے شوق دلاتی ہے، وہاں استغفار کرنے اور آپ کے ان لوگوں کے لئے استغفار پر برانگیختہ کرتی ہے اور آپ کا یہ وہ مرتبہ ہے جو آپ کے وصال کی بناء پر رکنے والا نہیں اور یہ ثابت ہے کہ آپ

تمام مومنین کے لئے استغفار فرماتے ہیں کیونکہ اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے: وَ اسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ اور جب لوگوں کا آپ کی خدمت میں حاضری دینا ثابت ہو گیا تو ان کا استغفار ان تینوں امور کو مکمل کرتا ہے جو توبہ کے لئے ضروری ہیں۔

اللہ تعالیٰ کا فرمان وَ اسْتَغْفَرَ لَهُمُ اللہ تعالیٰ کے فرمان جَآءُوْكَ پر معطوف ہے تو اس سے یہ معلوم نہیں ہوتا کہ رسول اللہ اکرم ﷺ کا استغفار ان کے استغفار کے بعد ہے اور پھر ہم یہ بات تسلیم نہیں کرتے کہ آپ وصال کے بعد استغفار نہیں فرماتے کیونکہ پہلے بتایا جا چکا ہے کہ آپ زندہ ہیں اور اپنی اُمت کے لئے استغفار فرماتے ہیں اور وہ اس وقت جب آپ کے سامنے ان کے اعمال پیش ہوتے ہیں اور آپ کی کامل رحمت سے معلوم ہوتا ہے کہ جو بھی آپ کی خدمت میں حاضر ہو کر اللہ سے استغفار کرتا ہے' آپ اس کے لئے استغفار ترک نہیں فرماتے۔

علماءِ کرام نے موت و حیات کی دونوں حالتوں میں آیت سے عموم سمجھا ہے اور قبرِ انور پر آنے والے کے لئے وہ مستحب سمجھتے ہیں کہ وہ اس کی تلاوت کرے اور اللہ سے استغفار کرے۔ یہاں ایک اعرابی کی حکایت بھی ملتی ہے چنانچہ محمد بن حرب ہلالی کہتے ہیں کہ میں مدینہ میں داخل ہوا' نبی کریم ﷺ کی قبرِ انور پر حاضر ہوا' زیارت کی اور آپ کے بالمقابل بیٹھ گیا' اتنے میں ایک اعرابی آیا' اس نے زیارت کی اور عرض کی: اے سب رسولوں میں سے بہتر! اللہ تعالیٰ نے آپ پر سچی کتاب نازل کی ہے اور اس میں فرمایا ہے وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ تا رَحِیْمًا اور میں بھی گناہوں کی بخشش کے لئے آپ کی خدمت میں حاضر ہوا ہوں اور آپ کی شفاعت چاہتا ہوں' پھر وہ رونے لگا اور کہا:

> "اے ان سب میں سے بہتر جن کی ہڈیاں قبر میں دفن کی جا چکی ہیں اور جن ہڈیوں کی وجہ سے قبر میں خوشبو ہے' میری جان اس قبر انور پر فدا ہے جس میں آپ تشریف فرما ہیں' اسی میں پاکدامنی ہے اور جود و سخاوت موجود ہے۔"

وہ استغفار کرتا رہا اور پھر واپس چلا گیا۔

محمد بن حرب کہتے ہیں کہ میں سو گیا تو خواب میں رسولِ اکرم ﷺ کی زیارت کی' آپ نے فرمایا: اس آدمی کے پاس جاؤ اور کہہ دو کہ اللہ تعالیٰ نے میری شفاعت کی وجہ سے اسے بخش دیا ہے۔ میں بیدار ہوا اور اسے تلاش کرنے نکلا لیکن وہ کہیں نہ مل سکا۔

میں کہتا ہوں' بلکہ حافظ ابو عبد اللہ کے مطابق حضرت علی کرم اللہ وجہہ بتاتے ہیں کہ جب ہم رسول اللہ ﷺ کو دفن کر چکے تھے تو تین دن بعد ایک اعرابی (دیہاتی) ہمارے پاس آیا' اس نے اپنے آپ کو قبرِ انور پر گرا لیا اور خاک اُٹھا کر اپنے سر پر ڈالی' عرض کی یا رسول اللہ! آپ نے ارشاد فرمایا تو ہم نے اسے سنا' میں نے اللہ کا فرمان محفوظ رکھا' اللہ نے آپ پر یہ آیت اُتاری وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ میں نے بھی اپنے آپ پر ظلم کر رکھا ہے' اب آپ کی خدمت میں حاضر ہوا ہوں کہ آپ میرے لئے استغفار فرمائیں چنانچہ قبرِ انور سے آواز آئی کہ اللہ تعالیٰ

نے تمہیں بخش دیا ہے۔ انتہی۔

۲۔ رہی سنت تو اس بارے میں احادیث آ چکی ہیں جن میں بالخصوص آپ کی قبرِ انور کی زیارت کا ذکر ہے اور پھر صحیح احادیث میں زیارتِ قبور کا ذکر موجود ہے جبکہ آپ کی قبرِ انور تو سب قبروں کی سردار ہے اور حدیث کے اس عام حکم میں پہلے ہی داخل ہے۔

۳۔ رہا اجماع تو علامہ عیاض رحمہ اللہ نے فرمایا: رسول اللہ ﷺ کی قبر انور کی زیارت مسلمانوں میں سنت قرار دی گئی ہے' اس پر اجماع علماء ہے اور اس کا شوق دلایا گیا ہے۔ انتہی۔ اور پھر علماءِ کرام نے مردوں کے لئے زیارتِ قبور کو مستحب قرار دیا ہے جیسے نووی نے کہا بلکہ اصحابِ ظاہر میں سے کچھ نے تو اسے واجب قرار دیا ہے البتہ عورتوں کے بارے میں اختلاف ہے جبکہ آپ کی قبر انور کو تو امتیازی حیثیت حاصل ہے۔ علامہ سبکی رحمہ اللہ کہتے ہیں: اسی لئے میں کہتا ہوں کہ حضور ﷺ کی قبرِ انور کی زیارت کرنے والوں کے بارے میں کوئی فرق نہیں ہے خواہ وہ مرد ہوں یا عورتیں۔

علامہ جمال ریمی التقفیہ میں' لکھا ہے حضور ﷺ اور آپ کے دونوں صحابہ کی زیارت کو اختلاف سے الگ کرتے ہیں کیونکہ ان کی زیارت عورتوں کے لئے بھی بلا اختلاف مستحب ہے جیسے علماء کرام حج کے بارے میں لکھتے ہیں: حج کرنے والوں کے لئے مستحب ہے کہ وہ آپ کی قبرِ انور کی زیارت کریں۔

۴۔ رہا قیاس تو وہ یوں کہ رسول اکرم ﷺ اہلِ بقیع اور شہداءِ احد کی زیارت کو تشریف لے جایا کرتے تھے اور جب آپ کے علاوہ کسی اور کی قبر کی زیارت مستحب ہے تو آپ کی قبرِ انور کی زیارت سب سے پہلے مستحب شمار ہوگی کیونکہ اس کا تو حق ہے اور آپ کی تعظیم واجب ہے اور آپ کی زیارت کا مقصد صرف آپ کی تعظیم اور قبرِ انور سے تبرک حاصل کرنے کے علاوہ اور کچھ نہیں' ہم جب آپ پر درود پڑھتے ہیں اور قبر انور کے قریب سلام عرض کرتے ہیں تو ہمیں آپ کی رحمت حاصل ہوتی ہے' فرشتے قبرِ انور کو گھیرے ہوئے ہوتے ہیں اور یہ دعا شرعی طور پر جائز ہوتی ہے۔

## زیارتِ قبور کا مقصد

کبھی تو زیارت قبور کا مقصد آخرت کو یاد کرنا ہوتا ہے' یہ مستحب ہوتی ہے کیونکہ حدیث پاک میں آتا ہے "قبروں کی زیارت کیا کرو کیونکہ یہ آخرت کی یاد دلاتی ہے۔" کبھی اس کا مقصد اہلِ قبور کے لئے دعا کرنا ہوتا ہے جیسے حضور ﷺ کے اہلِ بقیع کی زیارت کا ثبوت ملتا ہے۔ کبھی برکت حاصل کرنے کے لئے ہوتی ہے جب اہلِ قبور اہلِ صلاح ہوں (نیک لوگ ہوں)۔

ابو محمد شار مساحی مالکی رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ میت سے کسی قسم کا نفع حاصل کرنا بدعت ہوتا ہے البتہ حضور ﷺ اور

انبیاء و مرسلین کی قبروں کی زیارت ایسی نہیں۔

میں کہتا ہوں کہ ابن عربی نے بھی ان قبور کی زیارت کو الگ طور پر بیان کیا ہے چنانچہ وہ لکھتے ہیں کہ قبر کی زیارت کرنے والا میت سے نفع حاصل کرنے کا ارادہ نہ کرے کیونکہ یہ بدعت ہے اور نفع کا یہ ارادہ روئے زمین میں حضرت محمد ﷺ کے سوا کسی سے نہیں کیا جا سکتا۔ حافظ زین الدین حسینی دمیاطی نے یہ بات ابن عربی سے لے کر بیان کی ہے، پھر اس کے بعد لکھا ہے کہ: انبیاء صحابہ کرام، تابعین عظام اور باقی رسولوں کی قبروں کی زیارت میں برکت ہوتی ہے اور یہ اثر دیکھنے میں آیا ہے۔

حجۃ الاسلام امام غزالی رحمہ اللہ کہتے ہیں: ہر وہ شخص جس کی ظاہری زندگی میں اس سے برکت حاصل کی جاتی ہے، اس کی وفات کے بعد اس کی قبر سے بھی برکت حاصل کی جا سکتی ہے اور اس غرض کے لئے کجاوے باندھ کر جانا جائز ہوتا ہے۔

کبھی یہ زیارت اہلِ قبور کا حق ادا کرنے کے لئے ہوتی ہے چنانچہ حدیث پاک میں آتا ہے، حضور ﷺ فرماتے ہیں: میت جب قبر میں ہوتی ہے تو جو اس سے دنیا میں محبت کرتا رہا ہوتا ہے، زیارت کرنے پر اسے دیکھ کر انس محسوس کرتی ہے اور پھر حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے حدیث گذر چکی ہے: ”جو شخص بھی اپنے اس مومن بھائی کی قبر کے پاس جاتا ہے جسے وہ دنیا میں جانتا تھا، پھر اسے سلام کہتا ہے تو وہ اسے پہچانتا ہے اور اس کے سلام کا جواب دیتا ہے۔“

میں نے علامہ اقشہری رحمہ اللہ کے قلم سے لکھا دیکھا ہے کہ: ”جو ہر جمعہ کو اپنے والدین یا ان میں سے ایک کی قبر کی زیارت کرنے جاتا ہے تو اسے نیک لکھ دیا جاتا اگرچہ وہ دنیا میں اس سے قبل ان کی بے فرمانی ہی کیوں نہ کرتا رہا ہو۔

علامہ سبکی رحمہ اللہ کہتے ہیں، چونکہ حضور ﷺ کی قبرِ انور کی زیارت میں یہ چاروں مفہوم موجود ہیں اس لئے کوئی اور قبر اس کا مقابلہ نہیں کر سکتی۔

ابو عمران مالکی رحمہ اللہ کہتے ہیں: امام مالک نے یہ کہنا منع کیا ہے کہ: ”ہم نے رسول اللہ ﷺ کی قبر کی زیارت کی“ کیونکہ جو چاہے زیارت کرے اور جو چاہے نہ کرے جبکہ نبی کریم ﷺ کی قبرِ انور کی زیارت تو واجب ہوتی ہے۔

علامہ عیاض کہتے ہیں، حضرت مالک زیارتِ قبر کو مکروہ کہنا اس بناء پر ہے کہ زیارت قبر کی طرف منسوب ہے لہٰذا اگر کوئی یہ کہے کہ میں نے حضور ﷺ کی زیارت کی ہے تو یہ مکروہ نہ ہو گا کیونکہ حدیثِ پاک میں ہے:

> ”اے اللہ! میری قبر کو بت کی حیثیت نہ دینا کہ اسے پوجا جانے لگے کیونکہ اللہ تعالیٰ کا ان لوگوں پر شدید غضب ہوا جنہوں نے اپنے انبیاء کی قبروں کو سجدہ گاہ بنا لیا تھا۔“

علامہ سبکی رحمہ اللہ لکھتے ہیں کہ مالک کی اس روایت پر اس حدیث سے اعتراض ہوتا ہے: مَنْ زَارَ قَبْرِیْ البتہ ہو سکتا ہے کہ مالک تک یہ حدیث نہ پہنچی ہو۔

پھر زیارت نبی کے لئے سفر کرنے اور کجاوے باندھنے کے لئے اس آیت کو بھی دلیل بنایا جاتا ہے: ولو انّھم اذ ظّلموا انفسھم جیسے پہلے بتایا جا چکا ہے خواہ دور سے آئے یا نزدیک سے' پھر من زار قبری کا مفہوم بھی دلیل ہے اور یہ حدیث بھی دلیل بنتی ہے: مَنْ جَاءَ زَائِرًا اور جب یہ بات ثابت ہو گئی کہ زیارت کرنا ایک عبادت ہے تو پھر اس کے لئے سفر کرنا بھی عبادت ہو گا چنانچہ حضور ﷺ کا مدینہ سے قبور شہداء کے لئے جانا ثابت ہے اور جب قریب سے زیارت کے لئے جانا ثابت ہو گیا تو دور سے جانا بھی ثابت ہو گا اور پھر اس سلسلے میں حضور ﷺ کی قبرِ انور کو اوّلیت حاصل ہو گی' پھر اس پر اجماع بھی ہو چکا ہے کیونکہ پہلے اور آخری علماء کا اس پر اتفاق ہے اور رہی یہ حدیث لَا تُشَدُّ الرِّحَالُ اِلَّا اِلٰی ثَلَاثَةِ مَسَاجِدَ تو اس کا معنٰی یہ ہے کہ کسی بھی مسجد کی طرف سفر کر کے جانا نہیں چاہئے البتہ تین مسجدوں کی طرف جا سکتا ہے' کیونکہ عرفہ کا ارادہ کر کے تیار ہو کر جانا تا کہ وہاں حج کے اعمال کر سکے' واجب ہے یونہی سفر جہاد کے لئے جانا نیز دار الکفر سے ہجرت کرنا اور ارادہ کر کے جانا جائز ہے پھر علماء نے یہ بھی جائز قرار دیا ہے کہ تجارت اور دنیا کے کاموں کے لئے جانا بھی تو جائز ہے۔

ابن شبہ کے مطابق حضرت ابو سعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے بتایا کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا: "کسی سوار کے لئے مناسب نہیں کہ کسی سواری پر بیٹھ کر کسی مسجد نماز پڑھنے کے لئے جائے' ہاں مسجدِ حرام' میری اس مسجد اور مسجدِ اقصیٰ کی طرف جا سکتا ہے تو یہ حدیث ہمارے قول کے بارے میں بالکل واضح ہے' علاوہ ازیں ان مسجدوں کے علاوہ کسی اور مسجد کی طرف سوار ہو کر جانا ہے میں کئی مذہب ہیں چنانچہ امام الحرمین نے اپنے شیخ سے نقل کیا ہے کہ انہوں نے منع کا فتویٰ دیا ہے' وہ کہتے ہیں: کبھی تو وہ مکروہ کہتے تھے اور کبھی کہتے تھے کہ حرام ہے جبکہ شیخ ابو علی کہتے ہیں کہ نہ ہی یہ مکروہ ہے اور نہ ہی حرام اور نبی کریم ﷺ نے وضاحت فرمائی ہے کہ عبادت انہی تین مسجدوں کا ارادہ کر کے جانے میں ہے اور ان کے علاوہ عبادت نہیں۔

علامہ داؤدی اس طرف گئے ہیں کہ شہر میں جو مسجدیں فضیلت والی ہوں' ان کی طرف پیدل یا سوار ہو کر جانے میں حرج نہیں' انہوں نے مسجد قباء کو دلیل بنایا ہے کیونکہ کجاوے کس کر جانا اکثر قریبی مسجدوں کے لئے نہیں ہوتا۔ عیاض لکھتے ہیں کہ ان کے منع کرنے کا مقصد ان لوگوں کو روکنا ہے جو نذر مان کر جاتے ہیں جبکہ ہمارا اور جمہور کا مذہب یہ ہے کہ ان تین مسجدوں کے علاوہ کسی اور مسجد کی نذر مان کر جانا صحیح نہیں جبکہ علامہ لیث ہر حال میں اسے صحیح قرار دیتے ہیں۔

حضرت مالک نے عبد اللہ بن ابو بکر بن خرم سے روایت کی ہے کہ حضرت عبد اللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے اس شخص کے بارے میں پوچھا گیا جس نے مدینہ میں رہتے ہوئے قباء کی طرف جانے کی نذر مانی تو آپ نے اجازت دیدی اور اسے حکم دیا کہ پیدل چل کر جائے۔ ابن حبیب نے الواضحہ میں کہا ہے کہ جو شخص اپنی اس مسجد کی طرف جانے کی نذر مانے جس میں فرض نماز پڑھتا ہے تو انہوں نے کہا یہ لازم نہیں۔

علامہ سبکی کہتے ہیں کہ ساری تفصیل معین مکان کا قصد کرنے میں ہے لیکن اگر وہ نذر کے علاوہ زیارت وغیرہ

مقصد کے لئے جاتا ہے تو اسے نہ تو کوئی حرام کہتا ہے اور نہ کوئی مکروہ حالانکہ نبی کریم ﷺ کی زیارت کا قصد کر کے سفر کرنا تو اس سے غرض مسجدِ مدینہ ہوتی ہے کیونکہ اس میں قبرِ انور موجود ہے اور زیارت کرنے والے کا مقصد اس جگہ میں داخلہ ہوتا ہے اور جو اس قبر انور میں موجود ہیں انہیں سلام عرض کرنا ہوتا ہے اور ان کی تعظیم مقصود ہوتی ہے کہ آپ اگر زندہ ہوتے تو آپ کی طرف سفر کیا جاتا' صرف قبر کی تعظیم مقصود نہیں۔

علامہ ماوردی رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ جب لوگ حج کر لیں تو انہیں ان دنوں تک مہلت دے جن کی عادۃً ضرورت ہوتی ہے اور جب وہ وہاں سے لوٹیں تو انہیں لے کر مدینہ کے راستے پر چل پڑے اور آپ کی عظمت کا خیال کرے اور آپ کی اطاعت کا حق ادا کرے۔ یہ زیارت اگرچہ حج کے فرائض میں داخل نہیں لیکن مستحب عبادتوں میں ضرور شامل ہے اور حج کے اچھے کاموں میں اس کا شمار ہوتا ہے۔

علامہ قاضی حسین رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ جب انسان حج سے فارغ ہو جائے تو سنت یہ ہے کہ ملتزم پر ٹھہرے اور وہاں دعائیں کرے اور اس کے بعد مدینہ کی طرف جائے اور حضور ﷺ کی قبرِ انور کی زیارت کرے۔

علامہ قاضی ابو الطیب کہتے ہیں: مستحب یہ ہے کہ نبی کریم ﷺ کی زیارت کرے یعنی خواہ حج کر لے یا پھر عمرہ کر لے۔

علامہ محاملی التجرید میں لکھتے ہیں: حاجی کے لئے مستحب یہ ہے کہ جب مکہ سے فارغ ہو جائے تو نبی کریم ﷺ کی قبرِ انور کی زیارت کرے۔

پھر حضرت ابو حنیفہ کا قول گذر چکا ہے: حاجی کے لئے بہتر یہ ہے کہ مکہ کی طرف پہلے سفر کرے اور جب حج کے کام پورے کر لے تو مدینہ کی طرف چلا جائے۔

حنفیہ کہتے ہیں کہ نبی کریم ﷺ کی قبرِ انور کی زیارت سب مستحب کاموں میں سے افضل ہے بلکہ واجب کے قریب درجہ رکھتی ہے۔ مالکی اور حنبلی حضرات بھی یہی صراحت سے لکھتے ہیں۔

اگر کوئی یہ کہے کہ علامہ عبد الرزاق نے تو روایت کی ہے کہ حضرت حسن بن حسن بن علی رضی اللہ تعالیٰ عنہم نے کچھ لوگوں کو قبرِ انور کے پاس دیکھا تھا تو انہیں روک دیا تھا اور کہا تھا: نبی کریم ﷺ نے فرمایا ہے کہ "میری قبر کو عید گاہ نہ بناؤ اور نہ ہی اپنے گھروں کو قبریں' جہاں بھی ہو مجھ پر درود پڑھو کیونکہ تمہارا درود مجھ تک پہنچ جائے گا۔ پھر حضرت یعلیٰ نے حضرت علی بن حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی کہ انہوں نے ایک آدمی کو دیکھا تھا جو قبرِ انور کے قریب ایک شگاف میں داخل ہو کر دعا کر رہا تھا' آپ نے اسے منع کر دیا تھا اور کہا تھا کیا میں تمہیں وہ حدیث نہ سنا دوں جسے میں نے اپنے والد سے سنا' انہوں نے میرے دادا جی سے سنا اور انہوں نے رسول اللہ ﷺ سے سنا" فرمایا: میری قبر کو عید گاہ نہ بنا لو اور نہ ہی اپنے گھروں کو قبریں' کیوں کہ تم جہاں بھی ہو' تمہارا سلام مجھ تک پہنچ جاتا ہے۔ پھر قاضی اسماعیل نے حضرت سہل بن ابو سہیل سے روایت کی' انہوں نے کہا: میں حضور ﷺ کی خدمت میں سلام عرض کرنے حاضر ہوا' حضرت

حسن بن حسن رضی اللہ تعالیٰ عنہما رات کا کھانا کھا رہے تھے، ان کا گھر حضور ﷺ کے گھر کے نزدیک تھا، ایک روایت میں ہے کہ مجھے حسن بن حسن رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے قبرِ انور کے قریب دیکھا، آپ حضرتِ فاطمہ کے گھر میں رات کا کھانا کھا رہے تھے تو کہا: آؤ کھانا کھا لو۔ میں نے کہا: میرا ارادہ نہیں۔ انہوں نے کہا: میں تمہیں قبرِ انور کے پاس دیکھ رہا ہوں، کیا مقصد ہے؟ ایک روایت میں ہے، فرمایا: کیا بات ہے تم یہاں کھڑے ہو؟ میں نے کہا: میں اس لئے کھڑا ہوں کہ حضور ﷺ پر سلام پیش کروں۔ انہوں نے کہا: جب تم یہاں داخل ہوا کرو تو سلام عرض کر لیا کرو، ایک روایت میں ہے: جب تم مسجد میں داخل ہو جاؤ تو سلام عرض کرو، پھر کہا: رسول اللہ ﷺ نے فرمایا ہے: میرے گھر کو عید گاہ نہ بنا لو اور نہ ہی اپنے گھروں کو قبریں بناؤ الحدیث، پھر کہا کہ: تم اور اندلس والے اس معاملے میں ایک جیسے ہیں۔

ہم اس کا جواب یہ دیں گے کہ قاضی اسماعیل ہی نے حضرت حسین بن علی رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی ہے کہ ایک شخص روزانہ آتا اور صبح کو نبی کریم ﷺ کی قبرِ انور کی زیارت کرتا، آپ پر درود پڑھتا تھا۔ حضرت علی بن حسین نے اس سے پوچھا تم یہ کام کیوں کرتے ہو؟ تو اس نے کہا: میں حضور ﷺ کی خدمت میں سلام پیش کرنے کو اچھا سمجھتا ہوں۔ اس پر حضرت علی بن حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے اس سے کہا: چاہو تو میں تمہیں اپنے والد سے سنی حدیث نہ بتا دوں؟ اس نے کہا، ہاں بتایئے۔ انہوں نے کہا مجھے میرے والد نے میرے دادا سے سن کر بتایا، انہوں نے بتایا تھا کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا: میری قبر کو عید گاہ نہ بناؤ۔ الحدیث۔

اس سے پتہ چلتا ہے کہ اس آدمی نے حاضری میں زیادتی کر رکھی تھی۔ حضرت علی بن حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ اس معاملے میں عنقریب آنے والی امامِ مالک کی روایت سے موافقت کر رہے تھے کہ قبر پر کثرت سے ٹھہرنا مکروہ ہے، اصل زیارت کا انکار نہیں کر رہے تھے یا آپ کا مقصد اسے یہ تعلیم دینا تھا کہ یہ سلام آپ سے غائب ہو کر بھی آپ تک پہنچ جاتا ہے کیونکہ آپ نے دیکھا تھا وہ کثرت سے حاضری کا تکلف کر رہا تھا۔

جو کچھ ہم ذکر کر چکے ہیں اس کا مطلب وہی ہے جو حضرت حسن بن حسن رضی اللہ تعالیٰ عنہما کی طرف سے روایت کیا گیا ہے، اس کی دلیل ان یہ قول ہے کہ: ''جب تم آپ کی مسجد میں داخل ہو جاؤ تو آپ کی خدمت میں سلام پیش کرو۔'' اور اس لئے بھی کہ یحییٰ حسینی نے اپنی کتاب میں حضرت جعفر بن محمد بن علی بن حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہم نے اپنے والد اور پھر دادا سے روایت کی وہ جب نبی کریم ﷺ کی خدمت میں سلام پیش کرنے آتے تو اس ستون کے ساتھ کھڑے ہوتے جو روضہ کے ساتھ تھا، پھر سلام عرض کرتے اور کہتے کہ یہاں حضور ﷺ کا سرِ انور ہے۔

علامہ مطری وغیرہ کہتے ہیں کہ حجروں کو مسجد میں داخل کرنے سے پہلے سلف صالحین کے ٹھہرنے کی جگہ یہی ستون تھا، اور اس میخ کے بارے میں جو آپ کے چہرۂ انور کے سامنے تھی، اس پر کلام کی جا چکی ہے کہ حضرت علی بن حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ چہرۂ انور کی طرف اسی مقام پر ٹھہرتے تھے۔

علامہ یحییٰ نے اخبار المدینہ میں کہا ہے، ہارون بن موسےٰ فروی نے بتایا کہ میں نے اپنے دادا ابو علقمہ سے سنا وہ

پوچھا کرتے تھے کہ گھر مبارک کے مسجد میں داخل کرنے سے پہلے لوگ حضور ﷺ پر سلام کیسے پیش کرتے تھے؟ تو انہوں نے کہا: لوگ گھر کے دروازے پر کھڑے ہو کر سلام عرض کیا کرتے تھے، آپ کا دروازہ ان دنوں بند نہ تھا چنانچہ اسی دوران حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا وصال ہو گیا۔

میں کہتا ہوں: سلف صالحین میں سے کسی ایک کے بارے میں بھی یہ کیسے ممکن ہے کہ وہ حضور ﷺ ہی کی زیارت سے منع کرتے جبکہ وہ اس بات پر اتفاق کر چکے ہیں کہ سب اہلِ قبور کی زیارت کرنا جائز ہے، پھر حضور ﷺ کی زیارت سے کیسے منع کرتے؟ رہا وہ جو ابراہیم بن سعد بن ابراہیم بن عبد الرحمٰن بن عوف زہری رحمہ اللہ سے روایت ہے کہ انہوں نے کہا تھا:

> ”میں نے اپنے والد کو کبھی نہیں دیکھا کہ حضور ﷺ کی قبر انور پر گئے ہوں، وہ یہاں آنا ناپسند کرتے تھے۔“

اگر یہ روایت صحیح ہے تو پھر اس کا مطلب یہ ہے کہ سفر سے آنے والے کے لئے یہاں ڈیرا ڈال دینا انہیں ناپسند تھا، جیسے مالک سے روایت آ رہی ہے۔

رہا حضور ﷺ کا ارشاد: ”میری قبر کو عید گاہ نہ بنانا۔“ تو حافظ منذری کہتے ہیں: اس میں احتمال یہ ہے کہ اس میں کثرت سے زیارتِ قبرِ انور کا شوق پیدا کیا جا رہا ہو، مطلب یہ کہ قبرِ انور کو بھلا ہی دینا کہ کبھی کبھار اس کی زیارت کو آؤ جیسے عید ہوتی ہے کہ سال میں صرف دو ہی بار آتی ہے۔ حافظ منذری کہتے ہیں کہ اسی کی تائید حدیث کے ان الفاظ سے ہوتی ہے کہ: ”اپنے گھروں کو قبریں نہ بنا دینا۔“ اس کا مطلب یہ ہے کہ ان میں نماز پڑھنا یوں ترک نہ کر دینا جیسے وہ قبریں ہوتی ہیں جن میں نماز پڑھنا ہی نہیں ہوتی۔

علامہ سبکی کہتے ہیں: یہ احتمال بھی ہے کہ اس زیارت کے لئے ایسا وقت مقرر نہ کر لو کہ جس کے سوا زیارت کر ہی نہ سکو۔

یہ بھی ارادہ کیا جا سکتا ہے کہ اسے عید کی طرح نہ بنا لو: ”کہ یہاں ڈیرے ڈال لو، یہاں زیب و زینت کرو، اکٹھ کرو یا ایسے کام کرو جو عید کے موقع پر ہوا کرتے ہیں۔ بلکہ تمہاری حاضری صرف زیارت اور سلام کے لئے ہونی چاہیے دعائیں کرو اور واپس چلے جاؤ۔“

میں کہتا ہوں کہ رسول اللہ ﷺ کی وفات سے قبل، حیاتِ مبارکہ میں صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم آپ کی زیارت کے لئے ارادہ کر کے حاضری دیتے تھے بلکہ احمد کے مطابق حضرت یعلیٰ نے ایک حدیث میں بیان کیا ہے:

> ”پھر ہم چلے اور ایک مقام پر اتر گئے، نبی کریم ﷺ سو گئے، کیا دیکھتے ہیں کہ زمین چیرتا ہوا ایک درخت آیا، آپ کو ڈھانپ لیا اور پھر واپس چلا گیا۔ آپ جاگے تو میں نے آپ سے اس بات کا ذکر کیا تو آپ نے فرمایا: یہ وہ درخت ہے جس نے اللہ تعالیٰ سے رسول اللہ ﷺ پر سلام پڑھنے کی

اجازت مانگی تھی جو اسے مل گئی۔"

اب دیکھیئے اگر درخت کا یہ حال ہے تو پھر اس مومن کا کیا حال ہوگا جیسے اس نبی کریم ﷺ کی تعظیم کا حکم دیا گیا ہے اور دلوں میں جن کے اس محبوب کا شوق ڈال دیا گیا ہے' پھر تنے کے رونے کا ذکر اپنے مقام پر گذر چکا ہے۔

قاضی ابن کج (ہمارے ساتھی) کہتے ہیں کہ جب کوئی حضور ﷺ کی قبرِ انور کی زیارت کی نذر مان لے تو میرے نزدیک اس کی صرف ایک ہی صورت ہے کہ اسے پورا کرے اور جب کسی اور کی قبر کی زیارت کرنے کی نذر مانے تو اس میں دو صورتیں ہیں چنانچہ علامہ سبکی کہتے ہیں کہ غیر کے معاملے میں ہمارے اصحاب سے اس کا خلاف دیکھنے میں نہیں آیا' اس پر یقین رکھنا حق ہے کیونکہ اس بارے میں خاص احادیث موجود ہیں اور جو نذر میں یہ شرط لگائے کہ ایسی شے کی نذر مانتا ہے جو شرعی طور پر واجب چیزوں میں شمار ہوتی ہے اور کہے کہ "اعتکاف ایسے ہے کیونکہ ٹھہرنا واجب ہوتا ہے" تو کہے گا کہ رسول اللہ ﷺ کی زیارت واجب امور میں داخل ہے اور وہ آپ کی زندگی میں آپ کی طرف ہجرت تھی۔

کسی غیر کی قبر میں اختلاف کی وجہ یہ ہے کہ وہ آنے والوں کی زیارت کرنے جیسی ہوتی ہے اور اس میں سلام کی وہ صورت نہیں ہوتی' یہ ان میں شامل ہے جو عبادت قرار نہیں دی گئی اگرچہ وہ اس لحاظ سے عبادت بن جاتی ہے کہ شریعت نے اس بارے میں شوق دلایا ہے اور اس میں فائدہ بھی ہوتا ہے تو اس بناء پر لازم ہے کہ وہ اس نذر کو پورا کرے جیسے ان مسائل میں پوری کرتا ہے۔

مالکی حضرات میں سے علامہ عبدی شرح الرسالہ میں لکھتے ہیں: رہی وہ نذر جو مسجد حرام اور مکہ کی طرف چل کر جانے کی ہوتی ہے تو شرع میں اس کا ثبوت موجود ہے اور وہ حج و عمرہ ہے حالانکہ قبرِ انور کی زیارت کے لئے مدینہ کو جانا کعبے اور بیت المقدس سے افضل ہے حالانکہ بیت المقدس میں نہ ہی حج ہوتا ہے اور نہ ہی عمرہ' اگر ان تینوں مقامات کی طرف چلنے کی نذر مانے گا تو اسے پورا کرنا لازم ہوگا' اس سلسلے میں کعبہ پر تو سب کا اتفاق ہے لیکن دوسرے مقامات میں ہمارے اصحاب وغیرہ اختلاف رکھتے ہیں۔

علامہ سبکی کہتے ہیں کہ جس اختلاف کا ذکر ہو رہا ہے وہ زیارت میں نہیں بلکہ ان دونوں مسجدوں کی طرف جانے کی نذر ماننے میں ہے۔

علامہ عبدالحق "تہذیب الطالب" میں کہتے ہیں کہ ابو محمد بن ابو زید سے جن مسائل کے بارے میں سوال کیا گیا تھا' ان میں یہ بھی ہے کہ ان سے ایسے آدمی کے بارے میں کہا گیا جسے اجرت پر رکھا گیا کہ وہ اس مال سے حج کرے گا اور انہوں نے اس پر زیارتِ قبر انور کرنا بھی لازم کر دیا لیکن وہ کسی مجبوری کی بناء پر اس سال حج پر نہ جا سکا تو انہوں نے کہا کہ اس سے زیارت کی مسافت جتنی اجرت واپس لے لی جائے' یہ روایت بیان کرنے والے نے ان کی طرف سے کہا: ہمارے شیوخ کے علاوہ اور نے کہا: اس پر لازم ہے وہ حج کے لئے دوبارہ جائے اور زیارت کرے۔

علامہ سبکی کہتے ہیں کہ ایک تیسری قسم رہ گئی جس کا انہوں نے ذکر نہیں کیا اور وہ سلام پہنچانا ہے اور اس میں شک نہیں کہ اس پر بھی اُجرت رکھی جا سکتی ہے جیسے حضرت عمر بن عبد العزیز رضی اللہ تعالیٰ عنہ کیا کرتے تھے اور ظاہر یہ ہے کہ مالکی حضرات کی مراد یہی ہے ورنہ اُجرت پر رکھے آدمی کی طرف سے صرف وہاں قیام کرنا بے مقصد ہو جاتا ہے۔

علامہ ریلمی نے التقفیہ میں ذکر کیا ہے کہ اجرتِ زیارت کے بارے میں تین صورتیں بنتی ہیں جن میں سے ابن سراقہ کے مطابق صحیح یہ ہے کہ یہ جائز ہے' دوسری صورت ناجائز ہے' یہ ماوردی کا قول ہے کیونکہ وہ کہتے ہیں کہ یہ کام مضبوط نہیں اور تیسری صورت وہ ہے جسے امام علی بن قاسم حکمی نے بیان کیا ہے اور اصبحی کے ساتھی (شاگرد) نے جسے اپنایا ہے یہ ہے کہ اس کی بناء اس بات پر رکھی جائے گی کہ جب کوئی حلف اُٹھائے کہ فلاں سے کلام نہیں کرے گا چنانچہ اس سے تحریری معاہدہ کر لیا یا اسے آزاد کر دیا تو اکثر کے نزدیک وہ قسم توڑنے والا شمار نہ ہو گا۔

## فصل نمبر ۳

اس فصل میں حضور ﷺ کو بارگاہِ الٰہی میں وسیلہ بنانے اور آپ کی شفاعت مانگنے کا ذکر ہے پھر یہ بیان ہے کہ آپ اس کی طرف سے سلام کرنے' وسیلہ بنانے اور دعا کرتے ہیں' میں اس کی طرف متوجہ ہوتے ہیں۔

یاد رکھئے کہ حضور ﷺ کے ذریعے اللہ سے مدد مانگنا' بارگاہِ الٰہی میں سے ان کی شفاعت مانگنا آپ کے مرتبہ اور برکت کا واسطہ دینا انبیاء و مرسلین اور سلف صالحین کا طریقہ چلا آیا ہے جو ہر حال میں ہوتا رہا' آپ کی پیدائش سے پہلے اور بعد میں یہ سلسلہ چلا آیا جب آپ دنیا میں زندہ موجود تھے' آپ کی برزخی زندگی میں اور قیامت کے دن تک یہ سلسلہ جاری ہے۔

### حالِ اوّل:

اس میں انبیاء علیہم السلام کی کئی روایات ملتی ہیں' ہم صرف ایک روایت بیان کر رہے ہیں جسے حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے بیان کیا ہے کہ "رسول اللہ ﷺ فرماتے ہیں کہ جب حضرت آدم علیہ السلام سے خطا سرزد ہوئی تو انہوں نے عرض کی اے پروردگار! میں تجھ سے حضرت محمد کے حق کی بناء پر سوال کرتا ہوں کہ مجھے بخش دے۔ اللہ تعالیٰ نے فرمایا: اے آدم! ابھی تو میں نے حضرت محمد کو پیدا بھی نہیں کیا' تم نے انہیں کیسے پہچان لیا؟ انہوں نے عرض کی' اے پروردگار! جب تو نے مجھے اپنے دستِ قدرت سے بنایا اور مجھ میں اپنی روح پھونکی تو میں نے سر اُٹھا کر دیکھا کہ عرش کے پایوں پر لکھا تھا: لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ۔ میں نے جان لیا کہ تو نے اپنی طرف اس نام کو منسوب کیا ہے جو تمہیں سب سے پیارا ہے۔ اس پر اللہ تعالیٰ نے فرمایا: اے آدم! تو نے بالکل سچ کہا ہے' وہ مجھے ساری مخلوق میں سے محبوب ہیں اور جب تم نے ان کے حق کے ذریعے سوال کیا ہے تو میں تمہاری لغزش بخش رہا ہوں' دیکھو! اگر محمد نہ ہوتے تو میں تمہیں پیدا ہی نہ کرتا۔"

اسے طبرانی نے بھی روایت کیا ہے لیکن انہوں نے یہ الفاظ اور بڑھائے ہیں: ”وہ تمہاری اولاد میں سے آخری نبی ہوں گے۔“

علامہ سبکی کہتے ہیں کہ جب اعمال کے ذریعے اللہ سے سوال کرنا جائز ہے جیسے غار والی صحیح حدیث میں آتا ہے (یہ اعمال مخلوق ہیں) تو نبی کریم ﷺ کے ذریعے سوال کرنا ترجیحی طور پر جائز ہوگا' پھر عام عادت یہ ہے کہ جب کسی کی کسی شخص کے ہاں قدر ہوتی ہے اور وہ اسے کسی کام میں غائبانہ وسیلہ بناتا ہے تو اس کی عزت کی وجہ سے اس کی بات مان لی جاتی ہے اور کبھی محبوب اور عظمت والے کا ذکر بھی بات ماننے کا سبب بن جاتا ہے۔

## حالِ دوم:

دوسری صورت یہ ہے کہ حضور ﷺ کو آپ کی پیدائش کے بعد آپ کی دنیوی زندگی میں آپ کو وسیلہ بنایا جائے' ایسے واقعات میں سے ایک وہ ہے جسے نسائی اور ترمذی نے حضرت عثمان بن حنیف رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ہے کہ ایک اندھے نے نبی کریم ﷺ کی خدمت میں حاضر ہو کر عرض کی کہ اللہ سے دُعا کیجئے کہ وہ مجھے شفا دیدے۔ آپ نے فرمایا: چاہو تو میں دعا کر دیتا ہوں لیکن اگر صبر کر لو گے تو یہ تمہارے لئے بہتر ہوگا۔ اس نے عرض کی آپ دعا دیجئے' چنانچہ آپ نے اسے حکم دیا کہ اچھے طریقے سے وضو کرو اور پھر یوں دُعا مانگو:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ وَ اَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ بِنَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ نَّبِيِّ الرَّحْمَةِ يَا مُحَمَّدُ اِنِّیْ تَوَجَّهْتُ بِكَ
اِلٰى رَبِّیْ فِیْ حَاجَتِیْ لِتَقْضِیَ بِهٖ اَللّٰهُمَّ فَشَفِّعْهُ فِیَّ○

## حالِ سوم:

تیسری صورت یہ ہے کہ حضور ﷺ کے وصال کے بعد آپ کو وسیلہ بنایا جائے چنانچہ حضرت عثمان بن حنیف ہی بتاتے ہیں کہ ایک آدمی کسی ضرورت سے حضرت عثمان بن عفان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خدمت میں آیا کرتا تھا' آپ نہ تو اس کی طرف دیکھتے اور نہ ہی اس کی ضرورت پوری کرتے۔ وہ حضرت عثمان بن حنیف سے ملا اور ان سے اس بارے میں شکایت کی' انہوں نے کہا کہ لوٹا لاؤ اور وضو کرو' پھر مسجد میں جا کر دو رکعت پڑھو اور یوں دعا کرو: اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ وَ اَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ بِنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ يَا مُحَمَّدُ اِنِّیْ تَوَجَّهُ بِكَ اِلٰى رَبِّكَ اَنْ تُقْضٰى حَاجَتِیْ' پھر اپنی حاجت کا نام لو۔ چنانچہ وہ شخص چلا گیا اور آپ کے کہنے کے مطابق عمل کیا اور پھر حضرت عثمان کے دروازے پر گیا' اندر سے دربان آیا اور اس کا ہاتھ پکڑ کر حضرت عثمان کے پاس لے گیا' انہوں نے اسے اپنے ساتھ چٹائی پر بٹھا لیا اور کہا کہ اپنی ضرورت بتاؤ! اس نے اپنی ضرورت بتائی تو آپ نے پوری فرما دی۔

پھر وہ حضرت عثمان بن حنیف سے ملا اور کہنے لگا: اللہ آپ کو بہتر جزاء دے' وہ تو میری ضرورت کا خیال ہی نہیں کرتے تھے' آپ نے میرے بارے میں ان سے بات کر دی ہے۔ اس پر ابن حنیف نے کہا' واللہ میں نے تو ان

سے کوئی بات نہیں کی، میں نے رسول اللہ ﷺ کو دیکھا تھا، ان کے پاس ایک نابینا حاضر ہوا اور آنکھ ضائع ہونے کی شکایت کی، نبی کریم ﷺ نے اس سے فرمایا تھا: چاہو تو دعا کر دوں یا پھر صبر سے کام لو، اس نے عرض کی تھی، یا رسول اللہ! مجھے لے جانے والا کوئی نہیں، میں سخت مشکل میں ہوں، آپ نے اسے فرمایا تھا، لوٹا لاؤ اور وضو کرو پھر دو رکعت پڑھو اور یہ الفاظ پڑھو۔ ابن حنیف کہتے ہیں، بخدا اس بات کو کچھ عرصہ گذر گیا، ایک دن وہی شخص آیا تو ایسے معلوم ہوتا تھا جیسے اسے کوئی تکلیف ہی نہ تھی۔

میں کہتا ہوں، اس سے قبل حضرت فاطمہ بنت اسد رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی قبر کے بارے میں حضور ﷺ کی طرف سے یہ قول گذر چکا ہے: **بحق نبیّك و الانبیاء الّذین من قبلی** (تیرے نبی اور مجھ سے پہلے انبیاء کے حق کی وجہ سے)۔

کبھی آپ کو وسیلہ بنانا آپ کے وصال کے بعد ہوتا ہے اور وہ یوں کہ آپ سے درخواست کی جائے جیسے آپ کی زندگی میں درخواست کی جاتی تھی چنانچہ حضرت مالک سے ہے کہ حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے دور میں لوگ قحط میں گرفتار ہو گئے تو ایک آدمی حضور ﷺ کی قبر انور پر حاضر ہوا اور عرض کی: یا رسول اللہ! آپ اللہ سے اپنی اُمت کے لئے دعا کیجئے کیونکہ وہ ہلاک ہو رہے ہیں، چنانچہ رسول اللہ ﷺ انہیں خواب میں ملے اور فرمایا: عمر کے پاس جاؤ، انہیں سلام کہو اور بتاؤ کہ یہ لوگ بارش مانگتے ہیں پھر ان سے کہنا کہ یہ آپ پر لازم ہے۔ وہ شخص حضرت عمر کے پاس پہنچا اور اس بارے میں اطلاع دی جس پر آپ رونے لگے اور کہا: اے پروردگار! میں عاجز ہو جاتا ہوں تو کوتاہی ممکن ہوتی ہے۔

علامہ سیف نے کہا کہ یہ خواب دیکھنے والے حضرت بلال بن حارث مزنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ تھے جو ایک صحابی تھے۔

اس واقعہ سے دلیل یوں بنتی ہے کہ صحابی نے آپ سے بارش کی ہونے کی درخواست کی حالانکہ آپ عالم برزخ (قبرِ انور) میں تھے، اس حالت میں اللہ سے ان کی دعا کرنے میں کوئی رکاوٹ نہیں اور جو آپ سے سوال کرتا ہے، آپ اسے پہچانتے ہیں جیسے گزر چکا تو پھر آپ سے بارش وغیرہ کی دعا کی درخواست یونہی منع نہیں جیسے آپ کی زندگی میں منع نہ تھی۔

پھر چوتھے باب کی اکیسویں فصل میں آ چکا ہے کہ اہل مدینہ شدید قحط سالی میں گھر گئے تو انہوں نے حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی خدمت میں شکایت کی، انہوں نے فرمایا: رسول اللہ ﷺ کی قبرِ انور دیکھو اور چہرۂ انور کے سامنے آسمان کی طرف سوراخ کر دو، آسمان اور آپ کے درمیان چھت کا پردہ نہ ہو، انہوں نے ایسے ہی کیا تو بارش ہو گئی۔

کبھی حضور ﷺ کو وسیلہ بنانا یوں بھی ہوتا ہے کہ آپ سے مطالبہ کیا جائے بایں طور کہ آپ اللہ تعالیٰ سے وہ سوال پورا کرانے پر قدرت رکھتے ہیں، یہ ایسے ہی ہے جیسے کسی نے عرض کی تھی کہ: میں جنت میں آپ کے ساتھ رہنا چاہتا

ہوں۔ ان کا مقصد صرف یہ تھا کہ آپ جنت میں میرے جانے کا سبب بن جائیں۔

## حالِ چہارم:

چوتھی صورت یہ ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو قیامت کے دوران وسیلہ بنایا جائے اور آپ اللہ سے شفاعت فرمادیں اور یہ وہ معاملہ ہے کہ اس پر اجماع ہو چکا ہے اور اس سلسلے میں کئی احادیث ملتی ہیں چنانچہ حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما بتاتے ہیں کہ اللہ تعالیٰ نے حضرت عیسٰے علیہ السلام کی طرف وحی فرمائی کہ اے عیسٰے! محمد پر ایمان لاؤ اور جو بھی ملے اسے کہہ دو کہ محمد پر ایمان لائے کیونکہ اگر محمد نہ ہوتے تو میں آدم علیہ السلام کو پیدا نہ فرماتا اور اگر میں نے محمد کو پیدا نہ کرنا ہوتا تو میں جنت و دوزخ کو پیدا نہ کرتا' میں نے عرش کو پانی پر پیدا فرمایا تو وہ ہلنے لگا' میں نے اس پر **لا الٰہ الّا اللّٰہ محمّد رّسول اللّٰہ** لکھ دیا تو وہ ٹھہر گیا۔

میں کہتا ہوں کہ جن کا اپنے مولیٰ کے ہاں یہ مقام و مرتبہ ہو' ان سے شفاعت کیوں نہ مانگی جائے اور انہیں کیوں نہ وسیلہ بنایا جائے؟ بلکہ وسیلہ تو سب صالحین کو بنایا جاتا ہے جیسے سبکی نے کہا۔

ابن نعمان نے مصباح الظلام میں حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا وہ واقعہ ذکر کیا ہے جس میں انہوں نے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے چچا حضرت عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو بارش مانگنے کے لئے وسیلہ بنایا تھا۔

حضرت انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں کہ حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ قحط ہونے پر حضرت عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے وسیلے سے بارش کی دعا کرتے اور کہتے: اے اللہ! جب ہم قحط زدہ ہو جاتے تھے تو تیری بارگاہ میں اپنے نبی کا واسطہ دیتے تھے' تو بارش فرما دیتا تھا' اب ہم اپنے نبی کے چچا کا واسطہ دیتے ہیں تو تو بارش فرما دے چنانچہ بارش ہو جایا کرتی۔ ایک اور روایت میں حضرت عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ بتاتے ہیں کہ اے اللہ! ہم تیرے نبی کے واسطے سے بارش کی دعا مانگتے ہیں اور تجھے ان کے بڑھاپے کا واسطہ دیتے ہیں' چنانچہ بارش ہو جاتی چنانچہ اسی سلسلے میں عباس بن عتبہ بن ابولہب نے کہا تھا:

> "میرے چچا کے ذریعے حجاز اور اہل حجاز پر اللہ نے اس رات بارش کی جب حضرت عمر نے ان کے بڑھاپے کے واسطے سے دعا کی تھی۔"

ایک روایت میں ہے کہ حضرت عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اپنی دعا میں کہا تھا: "(اے اللہ!) چونکہ تیرے نبی کے ہاں میری ایک حیثیت ہے اس لئے لوگ تجھ سے مانگنے میری طرف متوجہ ہوتے ہیں۔"

علامہ قاضی عیاض رحمہ اللہ نے شفاء میں لکھا ہے کہ امیر المومنین ابوجعفر نے حضرت مالک سے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی مسجد میں مناظرہ کیا چنانچہ حضرت مالک نے کہا: اے امیر المومنین! اس مسجد میں اپنی آواز بلند نہ کرو کیونکہ اللہ تعالیٰ نے لوگوں کو ادب سکھاتے ہوئے فرمایا ہے: **لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ** (اپنی آوازیں نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی

آواز سے اونچی نہ کرو) اور لوگوں کی یوں تعریف کی ہے: اِنَّ الَّذِیْنَ یَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَھُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰہِ (جو رسول اللہ کے پاس اپنی آوازیں پست کرتے ہیں) اور کچھ لوگوں کو برا قرار دیا ہے اِنَّ الَّذِیْنَ یُنَادُوْنَکَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرَاتِ (جو حجروں کی پچھلی طرف سے آپ کو آواز دیتے ہیں) حالانکہ وصال کے بعد بھی آپ کی عزت ویسی ہی ہے جیسے زندگی میں تھی۔ اس پر ابو جعفر نے آپ کے سامنے اظہارِ عاجزی کیا اور کہا اے ابو عبد اللہ! کیا میں قبلہ کی طرف منہ کر کے دعا کروں یا رسول اللہ ﷺ کی طرف منہ کروں؟ انہوں نے کہا: تم آپ سے چہرہ کیوں پھیرتے ہو؟ وہ تو تمہارے وسیلہ ہیں اور قیامت کے دن تمہارے باپ آدم علیہ السلام کا بھی وسیلہ ہونگے؟ چہرۂ آپ کی طرف رکھو اور آپ سے شفاعت کی درخواست کرو' اللہ تعالیٰ تمہاری درخواست قبول فرما لے گا کیونکہ وہ فرماتا ہے: وَلَوْ اَنَّھُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَھُمْ۔

دیکھئے حضرت مالک کیا بتا رہے ہیں' آپ کا وسیلہ کیسے مانگ رہے ہیں اور دُعا کے وقت کس طرح متوجہ ہیں اور آپ کا ادب و احترام کر رہے ہیں۔

ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ بن حسین سامری حنبلی رحمہ اللہ ''المستوعب'' میں لکھتے ہیں: ''باب زیارۃ قبر النّبیّ صلّی اللّٰہ علیہ وسلّم'' اس باب کا ذکر کرتے ہوئے انہوں نے زیارت کے آداب بتائے ہیں اور کہا ہے: ''پھر قبرِ انور کی دیوار کی طرف آئے اور اس جانب کھڑا ہو جائے' قبرِ انور کو اپنے سامنے رکھے اور قبلہ کو اپنی پیٹھ کی طرف اور منبر سے بائیں طرف ہو۔ اس کے بعد سلام اور دعاء کی صورت ذکر کی' کچھ نے یوں لکھا: ''اے اللہ تو نے اپنی کتاب میں اپنے نبی کے بارے میں لکھا ہے: وَلَوْ اَنَّھُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَھُمْ اور میں تیرے نبی کی بارگاہ میں استغفار کے لئے حاضر ہوں اور تجھ سے سوال کرتا ہوں کہ مجھے بخشش عطا فرما دے جیسے اسے بخشا تھا جو آپ کی حیاتِ مبارکہ میں آپ کے پاس آتا تھا' الٰہی! میں تیرے نبی کے وسیلے سے تیری طرف متوجہ ہوں۔ اور پھر طویل دعا ذکر کی۔

ایک حنفی عالم ابو منصور کرمانی رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ اگر کوئی تمہیں یہ کہہ دے کہ نبی کریم ﷺ کی بارگاہ میں میرا سلام عرض کرو تو تم یوں کہو:

اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ مِنْ فُلَانِ ابْنِ فُلَانٍ یَسْتَشْفِعُ بِکَ اِلٰی رَبِّکَ بِالرَّحْمَۃِ وَ
الْمَغْفِرَۃِ فَاشْفَعْ لَہٗ۝

''یا رسول اللہ! فلاں بن فلاں کی طرف سے آپ پر سلام ہو' وہ آپ کے ربّ کی طرف آپ کا وسیلہ مانگتا ہے جس میں اس پر رحمت ہو اور اسے بخشش ملے لہٰذا آپ اس کی شفاعت فرما دیجئے۔''

علامہ عیاض کہتے ہیں' حضرت ابن وہب کہتے ہیں کہ جب نبی کریم ﷺ پر سلام پیش کرے اور دعا کرنا ہو تو کھڑا ہوتے وقت اپنا چہرہ قبر انور کی طرف کرے' قبلہ کی طرف نہ کرے' قریب ہو سلام پیش کرے لیکن قبر شریف کو ہاتھ نہ لگائے۔

ایک اور روایت میں جسے عیاض نے مبسوط سے لیا ہے' لکھا ہے' وہ کہتے ہیں: میں مناسب نہیں سمجھتا کہ وہ

قبرِ انور کے پاس کھڑا رہتے ہوئے دعا کرتا رہے بلکہ سلام پیش کرے اور چلا جائے۔

میں کہتا ہوں کہ یہ روایت بھی اس روایت کے خلاف ہے جو منصور کے مالک سے مناظرہ میں گذری اور یونہی اس کے بھی مخالف ہے جسے ابن المواز نے نقل کیا ہے اور جو طواف الوداع میں آئی ہے کیونکہ وہ کہتے ہیں: مالک سے کہا گیا' جو ملتزم میں لپٹا ہو تو کیا وہ الوداع کے موقع پر کعبہ کے پردوں سے لپٹ جائے؟ انہوں نے کہا: نہیں بلکہ ٹھہر کر دعا کرے۔ ان سے پوچھا گیا کیا نبی کریم ﷺ کی قبرِ انور کے پاس بھی یونہی کرے؟ (ٹھہر کر دعا کرے) انہوں نے کہا ہاں یونہی کرے۔ انتہی۔

ابن حبیب "باب فرائض الحج و دخول المدینة" میں لکھتے ہیں: جب تم دو رکعت پڑھ لو تو قبلہ کی طرف سے قبرِ انور کے سامنے جانے کا ارادہ کرو' قریب ہو جاؤ' رسول اللہ ﷺ کی خدمت میں سلام پیش کرو' آپ کی تعریف کرو اور اس دوران پروقار اور سکون سے رہو کیونکہ رسول اکرم ﷺ سن رہے ہوتے ہیں اور تمہیں اپنے سامنے کھڑا جانتے ہیں' پھر حضرت ابوبکر و عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما پر سلام پیش کرو اور ان کے لئے دُعا کرو۔

علامہ نووی رحمہ اللہ "رء وس المسائل" میں لکھتے ہیں کہ حضرت مالک رحمہ اللہ نے کہا: جب آدمی کا ارادہ ہو کہ نبی کریم ﷺ کی قبرِ انور کے پاس حاضر ہو تو قبلہ کی طرف پیٹھ کر لے اور چہرہ حضور ﷺ کی طرف کر لے پھر آپ پر درود پڑھے اور دعائیں کرے۔

ابراہیم حربی اپنی "مناسک" میں لکھتے ہیں۔ اپنی پیٹھ قبلہ کی طرف کر لو اور قبر انور کے درمیان کھڑے ہو جاؤ۔

ابو القاسم طلحہ بن عبد اللہ کے مطابق حضرت ابو حنیفہ رحمہ اللہ نے بتایا کہ حضرت ایوب سختیانی آئے اور نبی کریم ﷺ کی قبرِ انور کے قریب ہوئے' قبلہ کی طرف پیٹھ کر لی اور اپنا چہرہ قبر انور کی طرف کر کے خوب روئے۔

علامہ مجد لغوی کے مطابق حضرت ابو حنیفہ رحمہ اللہ نے فرمایا: جب حضرت ایوب سختیانی آئے تو میں مدینہ میں تھا' میں نے دل میں خیال کیا' دیکھتا ہوں' کیا کرتے ہیں چنانچہ انہوں نے اپنی پیٹھ قبلہ کی طرف کر لی اور چہرہ رسول اللہ ﷺ کے چہرۂ انور کی طرف کر لیا اور پھر خوب روئے۔ آپ نے ایک فقیہ کا کردار انجام دیا۔

میں کہتا ہوں کہ یہ روایت اس کے خلاف ہے جو ابو اللیث سمرقندی نے اپنے فتاویٰ میں حضرت ابو حنیفہ سے نقل کی ہے کہ نبی کریم ﷺ پر سلام پیش کرنے والا قبلہ کو منہ کرے۔

علامہ سروجی حنفی رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ ہمارے نزدیک سلام عرض کرنے والا قبلہ کی طرف منہ کر کے کھڑا ہو' علامہ کرمانی حنفی کہتے ہیں کہ: آپ کے سرِ انور کے قریب کھڑا ہو اور اس وقت قبلہ کی طرف منہ کرتے ہوئے منبر اور قبرِ انور کے درمیان ٹھہرے۔

اصحاب شافعی وغیرہ کہتے ہیں: وہ ٹھہرے' پیٹھ قبلہ کی طرف کرے اور چہرہ قبر انور کی طرف کرے۔ امام احمد بن حنبل رحمہ اللہ کا بھی یہی قول ہے۔ انتہی۔

محقق حنیفہ حضرت کمال ابن ہمام کہتے ہیں کہ: یہ جو ابو اللیث سے نقل کیا گیا ہے کہ سلام عرض کرنے والا قبلہ کی طرف منہ کرے تو یہ حضرت امام ابو حنیفہ کے اس قول کی بناء پر مردود ہے جو انہوں نے اپنی مسند میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے ذکر کیا ہے کہ: یہ سنت طریقہ ہے کہ تم قبلہ کی طرف سے قبرِ انور کی طرف آؤ' اپنی پیٹھ قبلہ کی طرف کر دو' اپنا چہرہ قبرِ انور کی طرف کر لو اور یوں عرض کرو:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ○

ابن جماعہ اپنی منسکِ کبیر میں لکھتے ہیں: حنفیوں کا مذہب یہ ہے کہ آدمی سلام و درود کے لئے آپ کے سرِ انور کے قریب یوں کھڑا ہوا کہ وہ اس کی بائیں طرف ہو اور دیوار سے چار ہاتھ دور کھڑا ہوا' پھر گھوم جائے اور چہرۂ انور کے سامنے آتے وقت قبلہ کو پیٹھ کر لے' پھر آپ پر سلام پیش کرے اور درود پڑھے۔

علامہ کرمانی حنفی نے لکھا ہے کہ وہ آپ پر سلام عرض کرنے کے لئے قبرِ انور کی طرف پیٹھ کرتے ہوئے قبلہ کو منہ کر لے' کچھ نے ان کی اتباع کی ہے حالانکہ اس قول کی کوئی حیثیت نہیں لہٰذا جو کچھ میں نے نقل کر دیا ہے اسی پر بھروسہ کرو۔

علامہ سبکی نے علامہ کرمانی حنفی کے قول پر بھروسہ کیا ہے' وہ کہتے ہیں: ان کا استدلال یہ ہے کہ اس طرح دونوں عبادتیں جمع ہو جاتی ہیں' کہتے ہیں' اکثر علماء کا قول ہی بہترین ہے کیونکہ میت سے زندہ جیسا معاملہ کیا جاتا ہے اور زندہ کو تو سامنے کھڑے ہو کر سلام کہا جاتا ہے تو یونہی میت سے بھی ہو گا اور یہ وہ بات ہے جس میں پریشانی کی گنجائش نہیں۔ انتہی۔

علامہ مطری لکھتے ہیں: پہلے بزرگوں کا طریقہ یہ تھا کہ حجروں کے مسجد میں داخل کرنے سے پہلے جب نبی کریم ﷺ پر سلام پیش کرنے کا ارادہ کرتے تو ریاض الجنہ میں اس ستون کی طرف رُخ کرتے جس میں لکڑی کا صندوق رکھا تھا کیونکہ وہ سرِ انور کے بالمقابل تھا' روضہ کی طرف پیٹھ پھیر لیتے' یونہی اسطوانہ توبہ کو پچھلی طرف کر لیتے اور پھر یحییٰ کے مطابق حضرت امام زین العابدین علی بن حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہما کی روایت گذر چکی ہے کہ آپ یونہی کرتے تھے۔

یحییٰ کے مطابق ابو علقمہ غروی کہتے ہیں کہ جب تک حضور ﷺ مسجد میں داخل نہ ہوا تھا' لوگ گھر کے دروازے پر کھڑے ہو کر سلام عرض کیا کرتے تھے۔

میں کہتا ہوں کہ یہ اس وقت کی بات ہے جب چہرۂ انور کی طرف رُخ کرنا مشکل تھا اسی لئے علامہ مطری نے کہا ہے کہ جب رسول اللہ ﷺ کا گھر مبارک مسجد میں داخل کر لیا گیا اور ازواجِ مطہرات کے گھر بھی شامل کر لئے گئے تو تو لوگ حضور ﷺ کے چہرۂ انور کی طرف رُخ کر کے کھڑے ہونے لگے اور سلام پیش کرنے کے لئے قبلہ کی طرف پیٹھ کر دیتے کیونکہ خاص حالت میں قبلہ کی طرف پیٹھ کرنا مستحب ہے جیسے جمعہ' عیدین اور دوسرے شرعی خطبوں کے موقع پر کرتے ہیں۔

ابن زبالہ کے مطابق حضرت سلمہ بن وردان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں کہ میں نے حضرت انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو دیکھا کہ جب وہ نبی کریم ﷺ پر سلام پیش کرتے تو آپ کے چہرۂ انور کے سامنے آ کر کھڑے ہو جاتے۔

ہمارے شافعی حضرات کے کلام میں ہے کہ زیارت کرنے والا سلام‘ دعا اور توسل کے موقع پر چہرۂ انور کی طرف منہ کرے پھر اس کے بعد قبلہ کی طرف منہ کرے‘ قبرِ انور بائیں طرف ہو اور منبر دائیں طرف اور دعا بھی کرے۔

# خاتمہ

یہاں ان چند حضرات کا ذکر کیا جا رہا ہے جنہوں نے حضور ﷺ سے فریاد کی یا قبرِ انور کے پاس کھڑے ہو کر کچھ مانگا تو انہیں مانگا مل گیا اور پسندیدہ حاصل ہو گیا۔ یہ واقعات حضرت امام محمد بن موسےٰ بن نعمان نے اپنی کتاب ”مصباح الظّلام فی المستغیثین بخیر الانام“ میں ذکر کئے ہیں۔ ان میں سے کچھ وہ ہیں جن پر محدثین‘ صوفیہ اور محققین کے اماموں کا اتفاق ہے چنانچہ:

## (۱) حضرت منکدر کا استغاثہ

حضرت محمد بن المنکدر رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ میرے والد کے پاس ایک شخص نے اسّی دینار بطور امانت رکھے اور خود جہاد کو چلا گیا‘ جاتے وقت میرے والد سے کہا: اگر آپ کو ضرورت پڑ جائے تو میری واپسی تک انہیں استعمال کر سکتے ہو‘ ادھر لوگ مہنگائی کا شکار ہو گئے تو میرے والد نے وہ دینار خرچ کر دیئے۔ اسی دوران وہ شخص واپس آ گیا اور اپنا مال مانگا۔ میرے والد نے کہا کہ کل میرے پاس آنا چنانچہ میرے والد نے رات مسجد میں گزاری‘ کبھی حضور ﷺ کی قبرِ انور کے پاس گڑگڑاتے اور کبھی منبر کے پاس‘ انہیں قبرِ انور سے فریاد کرتے صبح ہونے کو آئی‘ یکا یک دیکھا تو اندھیرے میں ایک شخص دکھائی دیا جو کہہ رہا تھا اے محمد! ادھر آؤ‘ چنانچہ میرے والد نے ہاتھ آگے کیا تو دیکھا ایک تھیلی تھی جس میں اسّی دینار تھے اور صبح ہونے پر وہ شخص آ گیا تو انہوں نے اسے دے دیئے۔

## (۲) حضرت امام ابوبکر بن مقری وغیرہ کا استغاثہ

حضرت امام ابوبکر بن مقری رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ میں‘ طبرانی اور ابو الشیخ رسول اللہ ﷺ کے حرم میں تھے‘ ایک حالت طاری تھی اور ہمیں بھوک نے ستا رکھا تھا کیونکہ ہم مسلسل روزے رکھ رہے تھے‘ جب عشاء کا وقت ہوا تو میں نبی کریم ﷺ کی قبر انور پر حاضر ہوا‘ عرض کی‘ یا رسول اللہ! بھوک لگی ہے اور اتنا عرض کر کے واپس آ گیا‘ اسی دوران ابو القاسم نے مجھ سے کہا‘ بیٹھ جاؤ‘ یا تو روزی مل جائے گی یا پھر موت تو آنی ہی ہے۔ ابوبکر کہتے ہیں کہ میں اور ابو الشیخ اُٹھ کھڑے ہوئے جبکہ طبرانی بیٹھے کچھ دیکھتے رہے۔ اسی دوران ایک علوی دروازے پر آیا‘ اس نے دروازہ کھٹکھٹایا تو ہم نے کھول دیا‘ اس کے ہمراہ دو لڑکے تھے جن میں سے ہر ایک کے پاس ایک ایک زنبیل (جس میں مانگا ہوا سامان رکھتے

ہیں) تھی جن میں کافی کچھ تھا۔ ہم بیٹھ گئے، پیٹ بھر کر کھایا اور خیال کیا کہ غلام باقی خوراک لے جائے گا لیکن وہ باقی کھانا چھوڑ کر چلا گیا اور جب ہم کھانا کھا کر فارغ ہوئے تو علوی نے کہا: دوستو! کیا تم نے رسول اللہ ﷺ سے شکایت کی تھی؟ کیونکہ میں نے خواب میں رسول اللہ ﷺ کو دیکھا تو آپ نے مجھے حکم فرمایا کہ کھانا لے کر تمہارے پاس پہنچوں۔

## (۳) ابن الجلاد کا استغاثہ

ابن الجلاد رحمہ اللہ کہتے ہیں، میں نبی کریم ﷺ کے شہر میں پہنچا تو میں فاقے سے تھا، میں قبرِ انور کے پاس پہنچا اور عرض کی، آپ کا مہمان ہوں۔ مجھے اونگھ آ گئی تو خواب میں رسول اللہ ﷺ کو دیکھا، آپ نے مجھے ایک روٹی دی، میں نے آدھی تو کھا لی اور پھر بیدار ہوا تو دوسری آدھی میرے ہاتھ میں تھی۔

## (۴) ابو الخیر الاقطع کا استغاثہ

حضرت ابو الخیر الاقطع رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ کے شہر میں داخل ہوا تو سخت بھوک لگی تھی کیونکہ پانچ دن سے میں نے کوئی چیز چکھی تک نہ تھی چنانچہ میں قبرِ انور کے پاس گیا، حضور ﷺ، حضرت ابوبکر اور حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کی خدمت میں سلام عرض کیا اور عرض کی، یا رسول اللہ! آپ کا مہمان ہوں۔ پھر ایک طرف ہو کر قبرِ انور کی پچھلی طرف سو گیا، خواب میں نبی کریم ﷺ کی زیارت کی، حضرت ابوبکر آپ کی دائیں طرف تھے اور حضرت عمر بائیں طرف جبکہ حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہم سامنے تھے، حضرت علی نے مجھے بلایا اور کہا کھڑے ہو جاؤ کیونکہ رسول اللہ ﷺ تشریف لائے ہیں، میں آگے بڑھا اور آپ کی دونوں آنکھوں کے درمیان بوسہ دیا۔ آپ نے ایک روٹی مجھے عطا فرمائی جس میں سے آدھی میں نے کھا لی تو میں بیدار ہو گیا، باقی آدھی میرے ہاتھ میں تھی۔

## (۵) ابو عبد اللہ محمد بن ابو زرعہ صوفی رحمہ اللہ کا استغاثہ

حضرت ابو عبد اللہ صوفی رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ میں نے اپنے والد اور ابو عبد اللہ بن حنیف کے ہمراہ مکہ کا سفر کیا، ہمیں شدید بھوک لگ چکی تھی، ہم رسول اللہ ﷺ کے شہر میں داخل ہوئے، رات خالی پیٹ سوئے، میں بالغ ہونے کے قریب تھا چنانچہ بار بار اپنے باپ کے پاس آتا اور کہتا: مجھے بھوک لگی ہے چنانچہ میرے والد قبرِ انور کی طرف حاضر ہوئے اور عرض کی یا رسول اللہ! آج رات میں آپ کا مہمان ہوں، اسی دوران مجھے اونگھ آ گئی، تھوڑی دیر بعد انہوں نے سر اُٹھایا تو کبھی روتے اور کبھی ہنستے تھے۔ ان سے پوچھا گیا تو بتایا کہ میں نے رسول اللہ ﷺ کو دیکھا کہ آپ نے مجھے کچھ درہم دیئے چنانچہ ہاتھ کھولا تو درہم موجود تھے چنانچہ اللہ نے ان میں برکت فرمائی اور ہم خرچ کرتے ہوئے شیراز واپس آ گئے۔

## (۶) حضرت احمد بن محمد صوفی رحمہ اللہ کا استغاثہ

حضرت احمد بن محمد صوفی رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ میں تین ماہ تک جنگل میں حیران پھرتا رہا، میری جلد چھل گئی، میں مدینہ میں داخل ہوا، نبی کریم ﷺ کی قبرِ انور پر حاضری دی پھر آپ پر اور آپ کے دونوں صحابہ پر سلام پیش کیا اور پھر سو گیا چنانچہ خواب میں رسول اللہ ﷺ کو دیکھا تو انہوں نے مجھے فرمایا، اے احمد! آ گئے ہو؟ میں نے عرض کی، جی ہاں اور مجھے بھوک لگی ہے، میں آپ کا مہمان ہوں۔ آپ نے فرمایا: ہاتھ پھیلاؤ، میں نے پھیلائے تو آپ نے درہموں سے بھر دیئے، میں بیدار ہوا تو میرے ہاتھوں میں درہم بھرے تھے چنانچہ میں اُٹھا، روٹی خریدی فالودہ لیا اور کھا لیا پھر اسی وقت اُٹھا اور جنگل کو چلا گیا۔

## (۷) ایک اور شخص کا استغاثہ

حضرت ابو القاسم ثابت بن احمد بغدادی رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ انہوں نے مدینۃ النبی ﷺ میں ایک آدمی کو دیکھا جس نے حضور ﷺ کی قبرِ انور کے پاس اذان پڑھی، اس میں اس نے پڑھا: الصلوٰۃ خیر من النّوم چنانچہ اس کے پاس مسجد کا ایک خادم آیا اور یہ سن کر اسے تھپڑ مارا، وہ رونے لگا اور عرض کی یا رسول اللہ! آپ کی بارگاہ میں ہوتے ہوئے میرے ساتھ یہ معاملہ ہوا ہے چنانچہ اسی وقت اس خادم کو فالج ہو گیا، اسے اُٹھا کر اس کے گھر پہنچایا گیا اور تین دن زندہ رہنے کے بعد فوت ہو گیا۔

میں کہتا ہوں کہ وہ واقعہ جسے ابن النعمان نے ابوبکر مقری سے نقل کیا ہے، اسے ابن جوزی نے اپنی کتاب الوفاء میں ذکر کیا ہے۔

## (۸) حضرت ابو اسحاق ابراہیم بن سعید رحمہ اللہ کا استغاثہ

حضرت ابو اسحاق کہتے ہیں کہ میں مدینۃ النبی ﷺ میں تھا، میرے ہمراہ تین اور فقراء تھے، ہمیں سخت بھوک لگی ہوئی تھی چنانچہ میں نبی کریم ﷺ کی خدمت میں حاضر ہوا اور عرض کی یا رسول اللہ! ہمارے پاس کھانے کو کچھ نہیں، خواہ کسی چیز کے ہوں، ہمیں تین مُدّ چاہئیں چنانچہ مجھے ایک آدمی ملا اور اس نے عمدہ کھجور کے تین مدّ دیدیئے۔

## (۹) ابو محمد سیّد عبد السلام بن عبد الرحمٰن حسینی فاسی رحمہ اللہ کا استغاثہ

حضرت ابو محمد عبد السلام رحمہ اللہ بتاتے ہیں کہ میں تین دن تک مدینہ پاک میں رہا لیکن کھانے کو کچھ نہ ملا، میں حضور ﷺ کے منبر کے پاس گیا، دو رکعتیں پڑھیں اور عرض کی: اے نانا جان! مجھے بھوک لگی ہے چنانچہ مجھے ثرید (شوربا ملی روٹی) چاہیئے پھر مجھ پر نیند کا غلبہ ہوا اور میں سو گیا، میں سویا ہوا تھا کہ یکا یک ایک آدمی نے مجھے جگا دیا، میں بیدار ہوا

اور دیکھا کہ اس کے پاس لکڑی کا ایک پیالہ تھا، اس میں ثرید، گھی اور گوشت وغیرہ۔ مجھ سے کہا کہ کھالو میں نے پوچھا: کہاں سے لائے ہو؟ انہوں نے کہا: میرے چھوٹے بچے ہیں، تین دن ہوئے انہیں اس کھانے کی ضرورت تھی، آج کا دن آیا ہے تو مجھے کسی کی طرف سے کچھ مل گیا ہے جس سے میں نے یہ سب کچھ تیار کر لیا ہے، پھر میں سو گیا تو رسول اللہ ﷺ کو خواب میں دیکھا، آپ فرما رہے تھے کہ تمہارے ایک اور بھائی کو اسی کھانے کی ضرورت ہے لہٰذا اس میں سے کچھ اسے بھی کھلا دو۔

## (۱۰) حضرت ابو عبد اللہ محمد بن ابو الامان رحمہ اللہ کا استغاثہ

حضرت ابو عبد اللہ رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ میں مدینۃ النبی ﷺ میں تھا اور محرابِ فاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے پیچھے تھا، سیّد مکثر قاسمی اس محراب کی پچھلی طرف کھڑے تھے، وہ نبی کریم ﷺ کی بارگاہ میں حاضر ہوئے، پھر ہنستے ہوئے ہماری طرف آئے۔ اس پر شمس الدین صواب خادمِ مزار شریف نے اس سے پوچھا: کس وجہ سے ہنسے ہو؟ انہوں نے کہا: میں فاقے سے تھا، میں گھر سے نکلا اور حضرت فاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے گھر کی طرف آیا، حضور ﷺ کی بارگاہ میں فریاد کی اور عرض کی یا رسول اللہ! بھوک لگی ہے، میں سو گیا، خواب میں نبی کریم ﷺ کی زیارت کی، آپ نے مجھے دودھ کا پیالہ دیا، میں نے پیا اور خوب سیر ہو گیا۔ وہ دودھ تم دیکھ سکتے ہو اور پھر انہوں نے میرے ہاتھ پر دودھ تھوک دیا اور ہم نے اس کے منہ میں بھی دیکھا۔

## (۱۱) حضرت صالح عبد القادر التلیسی رحمہ اللہ کا استغاثہ

حضرت صالح عبد القادر رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ فقیروں کے طریقے پر چلتے ہوئے مدینے پہنچا اور نبی کریم ﷺ کی خدمت میں سلام پیش کیا اور بھوک کی تکلیف کی شکایت کی، مجھے خواہش ہوئی کہ گندم کی روٹی، گوشت اور کھجور ملے۔ زیارت کے بعد میں ریاض الجنہ کی طرف بڑھا، وہاں دو رکعت نفل پڑھے اور پھر رات وہیں گزاری۔ یکایک دیکھا کہ ایک آدمی مجھے جگا رہا ہے، میں بیدار ہوا اور اس کے ہمراہ چل پڑا، وہ شخص جوان تھا اور شکل وصورت کے لحاظ سے خوبصورت تھا، اخلاق اچھے تھے، اس نے ثرید کھانا میری طرف بڑھایا، بکری کا گوشت تھا اور کئی قسم کی کھجوریں تھیں جن میں ریحانی وغیرہ کھجوریں تھیں، بہت ساری روٹیاں تھیں جن میں جو کی روٹی بھی تھی، میں نے کھانا کھا لیا تو اس نے میرا کھانے کا برتن گوشت، روٹی اور کھجوروں سے بھر دیا اور پھر بتایا کہ میں ظہر کے بعد سویا ہوا تھا کہ نبی کریم ﷺ کی زیارت ہوئی، آپ نے مجھے حکم فرمایا کہ یہ سامان آپ تک پہنچاؤں پھر آپ کا پتہ بھی بتایا اور ریاض الجنہ میں آپ کا ٹھکانا بتایا۔ پھر اس نے مجھے بتایا کہ آپ نے اسی کھانے کی فرمائش کی تھی۔

## (۱۲) ایک اور شخص کا استغاثہ

ایک شخص نے کہا کہ میں مدینۃ النبی ﷺ میں تھا، میرے پاس کھانے کو کچھ نہ تھا لہٰذا میں کمزور ہو گیا چنانچہ حجرۂ پاک کی طرف آیا اور عرض کی: اے اولین و آخرین کے سردار! میں مصر کا رہنے والا ہوں اور مجھے آپ کے پاس رہتے پانچ ماہ گذر چکے ہیں، پھر عرض کی کہ میں اللہ اور آپ سے سوال کرتا ہوں مجھے سیر کرنے والا کوئی شخص ملا دو یا ایسا شخص ہو جو مجھے یہاں سے نکال دے۔ پھر حجرۂ پاک کے پاس بہت سی دعائیں کیں اور منبر کے پاس بیٹھ گیا، اچانک دیکھا تو ایک شخص حجرہ پاک میں داخل ہوا، کچھ دیر کھڑے کھڑے باتیں کرتا رہا، پھر کہا **یا جدّاہ یا جدّاہ!** پھر میری طرف آیا، میرے ہاتھ تھام لئے اور کہا کھڑے ہو جاؤ! میں کھڑا ہوا اور اس کے ہمراہ ہولیا، اس نے باب جبریل سے مجھے نکالا اور بقیع تک لے گیا پھر وہاں سے چلا تو دیکھا ایک خیمہ لگا تھا، ایک لونڈی اور ایک غلام وہاں موجود تھے۔ اس نے ان دونوں سے کہا کہ اس کے لئے کھانا تیار کرو، اس پر غلام اُٹھا، لکڑیاں اکٹھی کیں اور آگ جلائی، ادھر لونڈی اُٹھی، آٹا گوندھا اور بھوبھل پر روٹی پکائی۔

اس نے مجھے باتوں میں لگائے رکھا، اتنے میں وہ لونڈی روٹی لے آئی، اس نے دو حصے کر دیئے پھر وہ لونڈی ایک پیالہ لائی جس میں گھی تھا، اس نے اسے اس روٹی پر ڈالا، پھر صیحانی کھجوریں لائی اور اسے عمدہ طریقے سے بنا دیا، مجھے کہا کہ کھاؤ! میں نے تھوڑا سا کھایا اور پیچھے ہٹ گیا، اس نے پھر کہا کہ کھاؤ، میں نے پھر کھایا، پھر کہا تو میں نے کھایا، اس نے پھر کہا تو میں نے کہا: اے صاحب! مجھے کئی ماہ ہو گئے کہ گندم کا کھانا نہیں کھایا، اب مجھے ضرورت نہیں، اس نے روٹی کا دوسرا حصہ لے لیا اور جو کچھ مجھ سے بچ گیا تھا اسے ایک برتن میں ڈال دیا پھر دو صاع کھجور توشہ دان میں رکھی اور پوچھا تمہارا نام کیا ہے؟ میں نے بتایا کہ فلاں نام ہے۔ اس نے کہا: میں تمہیں قسم دیتا ہوں کہ میرے نانا کے ہاں دوبارہ شکایت نہ کرنا کیونکہ آپ کو تکلیف ہوتی ہے، تجھے جب بھی ضرورت ہو گی، کھانا مل جایا کرے گا اور ایسا سبب بھی بن جائے گا کہ کوئی شخص تمہیں یہاں سے لے جائے گا۔

پھر غلام سے کہا کہ اسے میرے نانا جان کے حجرے تک لے جاؤ چنانچہ میں غلام کے ساتھ چل کر بقیع تک گیا اور غلام سے کہا کہ تم جا سکتے ہو، میں اپنے ٹھکانے پر پہنچ گیا ہوں۔ اس نے کہا، میں آپ کو چھوڑ کر اس وقت تک نہیں جا سکتا تھا جب تک حجرۂ مبارکہ تک نہ پہنچا دوں، ایسا نہ ہو کہ رسول اللہ ﷺ میرے آقا سے شکایت فرما دیں چنانچہ اس نے مجھے حجرۂ مبارکہ تک پہنچا دیا، مجھے الوداع کہا اور واپس چلا گیا۔ جو کھانا اس نے مجھے دیا تھا، میں اس میں سے چار دن تک کھاتا رہا اور پھر بھوک لگی تو وہی غلام کھانا لے آیا، پھر وقت گذرتا رہا، مجھے جب بھی بھوک لگتی وہ کھانا لے آتا پھر اللہ تعالیٰ نے سبب بنایا اور ایک جماعت کے ساتھ میں ینبع کو چلا گیا۔

## (۱۴۳) حضرت ابو العباس بن نفیس مقری کا استغاثہ

حضرت ابو العباس رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ مدینہ منورہ میں مجھے تین دن سے بھوک لگی تھی، میں قبر انور پر حاضر ہوا اور عرض کی، یا رسول اللہ! بھوک لگی ہے۔ پھر تھوڑی دیر کے لئے سو گیا، ایک لڑکی نے مجھے پاؤں کی ٹھوکر سے جگا دیا، میں اس کے کہنے پر اُٹھا تو اس نے کہا آؤ، میں اس کے ہمراہ اس کے گھر تک گیا، اس نے میرے سامنے روٹی، کھجور اور گھی لا رکھا اور کہنے لگی: اے ابو العباس کھاؤ! مجھے میرے نانا جان نے یہ کھانا کھلانے کا حکم فرمایا ہے چنانچہ جب بھی بھوک لگے، یہاں آ جایا کرو۔

میں کہتا ہوں کہ اس بارے میں حکایات بہت ملتی ہیں بلکہ یہی واقعہ میرے ساتھ بھی گذرا، جب مصری حاجی زیارت کے لئے آئے تو میں مسجد نبوی میں موجود تھا۔ میرے ہاتھ میں مسجد کے اس کمرے کی چابی تھی جس میں میری کتابیں تھیں۔ اتنے میں میرا ایک اُستاد بھائی آیا، میں نے اسے سلام کہا، اس نے مجھے کہا کہ ریاض الجنہ کو چلو اور میرے ساتھ نبی کریم ﷺ کے سامنے کھڑے ہو جاؤ۔ میں نے یونہی کیا۔ پھر میں واپس آیا تو چابی نہیں تھی، میں جہاں جہاں گیا تھا، وہاں بہت تلاش کی لیکن چابی نہ ملی، مجھے سخت پریشانی ہوئی مجھے چابی کی شدید ضرورت تھی چنانچہ میں رسول اللہ ﷺ کی بارگاہِ اقدس میں حاضر ہوا اور عرض کی یا سیّدی، یا رسول اللہ! میرے کمرے کی چابی گم ہو گئی ہے، مجھے سخت ضرورت ہے، میں آپ سے درخواست کرتا ہوں کہ چابی مل جائے۔

پھر واپس آ گیا تو دیکھا ایک شخص میرے کمرے کی طرف جا رہا ہے، مجھے جانا پہچانا لگ رہا تھا، میں اس کی طرف گیا لیکن وہ مجھے نہ مل سکا، پھر میں نے کمرے کے پاس ایک ناواقف بچا دیکھا جس کے ہاتھ میں وہ چابی تھی۔ میں نے پوچھا، یہ تم نے کہاں سے لی ہے؟ اس نے کہا کہ میں نے حضور ﷺ کے چہرۂ مبارک کے سامنے دیکھی تو لے آیا ہوں۔

فقیہ ابو محمد اشبیلی نے ایک اور استخارہ اپنی تصنیف ''فضل الحج'' میں لکھا ہے کہ اہل غرناطہ میں سے ایک شخص کو سخت تکلیف تھی جس کے علاج سے طبیب عاجز آ گئے تھے اور اس کے بارے میں مایوس ہو گئے تھے چنانچہ اس کی طرف سے وزیر ابو عبد اللہ محمد بن ابو الخصال نے نبی کریم ﷺ کی بارگاہ میں ایک خط لکھا جس میں اس کی اس بیماری سے شفاء کی درخواست کی گئی تھی، اس ضمن میں کچھ اشعار بھی لکھے جن میں سے کچھ یہ تھے:

> ''آپ کا ایک غلام رو رو کر آپ کو بلا رہا ہے، وہ چپکے چپکے درخواست کرتا ہے اور اسے آپ کی طرف سے مہربانی کا پورا یقین ہے۔
> اس تکلیف میں وہ آپ سے اُمید لگائے ہوئے ہے جس کو دور کرنے سے لوگ عاجز آ گئے ہیں۔
> میں آپ سے اُمید رکھتا ہوں کہ آپ اس ذات کے صدقے اسے درست فرما دیں جو ہڈیوں کو زندگی

دینا اور جو شفاء دیتا ہے۔

آپ ہی وہ ذات ہیں کہ جن سے زندگی اور وصال کے بعد ہم مصائب دور کرنے کی اُمید لگائے ہوئے ہیں۔ آپ پر مخلوق کی گنتی کے مطابق اللہ کی طرف سے سلام ہو۔“

فقیہ ابو محمد کہتے ہیں کہ سوار مدینے میں پہنچا، یہ اشعار حضور ﷺ کی قبرِ انور کے سامنے پڑھے چنانچہ وہ بیمار اسی وقت تندرست ہو گیا اور جب وہ واپس آیا تو ایسا معلوم ہوتا تھا کہ جیسے اسے کوئی تکلیف تھی ہی نہیں۔

## فصل نمبر ۴

# زیارتِ قبرِ انور اور آپ کی خدمت رہنے کے آداب

ان آداب میں سے کچھ تو ایسے ہیں جن کا تعلق سفرِ مدینہ سے ہے اور وہ ایسے آداب ہیں جن کا تعلق عام سفروں ہی سے ہے یعنی پہلے سفر کا استخارہ کرے، نئے سرے سے توبہ کرے، ظلم کرنے سے باز آئے، وصیت کرے، انہیں راضی کرے جنہیں راضی کرنا ضروری ہے، صاف اور پاکیزہ نان نفقہ لے، اہل و عیال اور دوستوں کو الوداعی سلام کرے، ان سے اپنے لئے دعائیں کرائے، گھر میں دو نفل پڑھے اور سلام پھیر کر آیۃ الکرسی اور سورۃ لایلاف پڑھے، اپنے تمام کاموں میں اللہ کی مدد اور توفیق مانگے اور یوں دعا کرے:

> ”اے اللہ! تو ہی سفر میں میرا ساتھی ہے اور میرے اہل و عیال کا نگہبان ہے، اے اللہ! میں سفر کی مشقتوں، برے منظر اور واپسی کی برائی سے تیری پناہ مانگتا ہوں۔ اے اللہ ہمارے لئے زمین کو لپیٹ دے اور سفر آسان فرما دے۔“

پھر جب اُٹھ کھڑا ہو تو یوں کہے: اے اللہ! میں تیری مدد سے سفر کی تیاری کر رہا ہوں اور تیری طرف متوجہ ہوں، تجھی سے تعلق ہے، اے اللہ! تو ہی میرا سہارا ہے اور تجھی سے اُمید رکھتا ہوں، الٰہی، مشکلات میں مجھے سہارا دے، الٰہی مجھے تقویٰ کی توفیق دے، میرے گناہ بخش دے اور میں جہاں بھی جاؤں بھلائی کا کام کروں۔

پھر مستحب یہ ہے کہ گھر سے نکلتے وقت کچھ نہ کچھ صدقہ و خیرات کرے، اپنے ہمراہ موافق ساتھی لے جسے نیکی کرنے کا شوق ہو، برائی سے نفرت کرے، اگر کوئی بات بھول جائے تو وہ اسے یاد کرا دے اور مدد کرے۔

پھر آدابِ سفر میں سے خلوصِ نیت بھی ہے کیونکہ عمل کی مقبولیت کا دار و مدار نیت پر ہوتا ہے چنانچہ رسولِ اکرم ﷺ کی زیارت سے اس کا مقصد اللہ کا قرب ہونا چاہئے۔

پھر مستحب یہ ہے کہ اللہ کا قرب چاہتے ہوئے حضور ﷺ کی طرف سفر کی نیت کرے، مسجد کی طرف جانے کے لئے رختِ سفر باندھے اور اس میں نماز کی نیت کرے جیسے ہمارے شافعی حضرات کہتے ہیں جن میں سے ابن الصلاح اور نووی بھی ہیں چنانچہ ابن الصلاح کہتے ہیں: اس طریقے سے حضور ﷺ کی زیارت کے معاملے میں کوئی خلل واقع نہیں

ہوتا اور یہ بات کسی سے پوشیدہ نہیں۔

شیخ الحنفیہ علامہ کمال بن ہمام رحمہ اللہ اپنے مشائخ سے روایت کرتے ہیں کہ قبرِ انور کی زیارت کے ساتھ ساتھ مسجد کی نیت بھی کرے۔ پھر کہا: بہتر یہ ہے کہ صرف قبرِ انور کی زیارت کی نیت کرے اور پھر جب دوبارہ اللہ کا فضل ہو تو ان دونوں کی نیت کرے کیونکہ اس میں آپ کی تعظیم زیادہ ہوتی ہے اور آپ کی بزرگی ظاہر ہوتی ہے اور یوں حضور ﷺ کے اس فرمان سے موافقت ہو جاتی ہے کہ: ''اس کے سامنے میری زیارت کے سوا کوئی مقصد نہ ہو۔'' انتہی۔

اور یہ بات محلِ نظر ہے کیونکہ حضور ﷺ نے اپنی مسجد کا ارادہ کرنے کا بھی حکم فرمایا ہے چنانچہ آپ کے حکم پر عمل کرنے ہی میں آپ کی تعظیم پائی جاتی ہے۔

پھر یہ بھی مستحب ہے کہ نبی کریم ﷺ پر زیادہ سے زیادہ درود و سلام پڑھے، ممکن ہو تو ختمِ قرآن کرے اور آپ کے پڑوسیوں پر صدقہ و خیرات کرے چنانچہ شروع ہی سے عبادت کی نیت کر لے تاکہ ارادے پر اسے ثواب حاصل ہو کیونکہ مومن کی نیت، اس کے عمل سے بہتر ہوتی ہے، پھر گناہوں اور ناپسندیدہ کاموں سے بچنے کی نیت کرے اور یہ کام اللہ اور اس کے رسول سے حیاء کرتے ہوئے کر لے۔

ان آداب میں سے یہ بھی ہے کہ اسے محبوب اور شفیع کی ہر سال زیارت کا شوق ہونا چاہئے کہ کسی طرح وہ آپ کی بارگاہ میں پہنچے کیونکہ آپ سے ملاقات کا شوق اور آپ کی بارگاہ میں پہنچنے کی خواہش اس کے ایمان کی علامت شمار ہوتا ہے جس سے قیامت کے دن اسے امن و امان حاصل ہوگا اور یوں اس بارے میں اس کا شوق بڑھے گا اور آپ سے محبت پیدا ہوگی۔

انہی آداب میں سے ایک یہ بھی ہے کہ گھر سے نکلے تو کہے:

بِسْمِ اللّٰہِ تَوَکَّلْتُ عَلَی اللّٰہِ وَ لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ اَللّٰھُمَّ اِلَیْکَ خَرَجْتُ وَ اَنْتَ اَخْرَجْتَنِیْ اَللّٰھُمَّ سَلِّمْنِیْ وَسَلِّمْ مِنِّیْ وَ رُدَّنِیْ سَالِمًا فِیْ دِیْنِیْ کَمَا اَخْرَجْتَنِیْ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ اَنْ اَضِلَّ اَوْ اُضَلَّ اَوْ اَزِلَّ اَوْ اُزَلَّ اَوْ اَظْلِمَ اَوْ اُظْلَمَ اَوْ اَجْھَلَ اَوْ یُجْھَلَ عَلَیَّ عَزَّ جَارُکَ وَجَلَّ ثَنَاءُ کَ وَ تَبَارَکَ اسْمُکَ وَلَا اِلٰہَ غَیْرُکَ○

انہی آداب میں سے یہ بھی ہے کہ سفر کے دوران کثرت سے نبی کریم ﷺ پر درود و سلام پڑھتا رہے بلکہ جب بھی فارغ ہو درود و سلام میں لگا رہے۔

انہی آداب میں سے یہ بھی ہے کہ اس سفر میں آنے والی مسجدوں کی طرف توجہ کرے اور ان آثار کا خیال رکھے جو حضور ﷺ کی طرف منسوب ہیں، ان سب کی زیارت کرے اور ان میں نماز کی برکت حاصل کرے۔

انہی میں سے یہ بھی ہے کہ جب حرمِ مدینہ کے قریب پہنچے مدینہ کی علامات دیکھے، ٹیلے نظر پڑیں تو خوشیاں منائے کہ اس کا دلی مقصد پورا ہونے والا ہے اور نہایت عاجزی سے آگے بڑھے، اگر کسی سواری پر ہو تو مدینہ کو دیکھ کر اسے تیز چلائے کیونکہ یہ خوشی کا مقام ہے اور زیادہ سے زیادہ صلوٰۃ و سلام پڑھنے کی کوشش کرے۔

جب روضۂ انور نظر آئے اور اس کے قریب پہنچ جائے تو سواری سے اُتر کر پیدل چلنے میں بھی حرج نہیں جیسے لوگ کیا کرتے ہیں کیونکہ وفدِ عبدالقیس نے جب نبی کریم ﷺ کو دیکھا تھا تو اپنے اونٹوں سے اُتر پڑے تھے اور کسی نے بھی ان کی اس بات کو برا نہ جانا تھا کیونکہ حضور ﷺ کے وصال مبارک کے بعد بھی آپ کی تعظیم کرنا ویسے ہی ہوتا ہے جیسے آپ کی زندگی میں آپ کی تعظیم لازم ہوتی تھی۔

ابو داؤد مالکی رحمہ اللہ نے ''الانتصار'' میں لکھا ہے کہ اگر کسی سے ممکن ہو تو یوں آداب بجا لانا ضروری ہوتا ہے اور یہ کام مستحب ہوتا ہے کیونکہ اس میں اللہ کے سامنے عاجزی کا اظہار ہوتا ہے اور اس میں نبی کریم ﷺ کی عظمت ہوتی ہے۔

انہی آداب میں سے یہ بھی ہے کہ جب حرمِ مدینہ میں پہنچے تو صلوٰۃ و سلام پیش کرنے کے بعد یوں کہے: اے اللہ! یہ تیرے رسول اللہ ﷺ کا حرم ہے جسے تو اپنے نبی کی زبان پر حرم کہلوایا ہے اور پھر انہوں نے تجھ سے دعا کی تھی کہ تو حرم مکہ کے مقابلے میں اس کے اندر دوگنا بھلائی اور برکت فرما لہٰذا میرا وجود آگ پر حرام فرما دے اور جب تو اپنے بندوں کو اُٹھائے گا تو اپنے عذاب سے مجھے امن میں رکھنا اور مجھے آپ کی برکتیں اسی طرح حاصل ہوں جیسے تیری عبادت کرنے والوں اور اولیاء کو حاصل ہوتی ہیں، پھر مجھے ادب کی توفیق دے، اچھے کاموں کی توفیق دے اور برے کاموں سے بچا۔

اس کے بعد درود و سلام شروع کر دو۔

صاحبِ طراز مالکی رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ زیارت کرنے والے کے لئے یہ بھی ادب ہے کہ غسل کرے اور اچھے سے اچھے کپڑے پہنے چنانچہ ابو عبداللہ سامری حنبلی رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ جب مدینۃ الرسول ﷺ کے لئے چلے تو مستحب یہ ہے کہ مدینہ میں داخل ہونے سے پہلے غسل کرے۔

''الاحیاء'' میں ہے، مستحب یہ ہے بئر الحرہ تک پہنچنے سے پہلے، غسل کرے، خوشبو لگائے اور عمدہ کپڑے پہنے۔

علامہ کرمانی حنفی رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ اگر مسجد کے باہر غسل نہ کر سکے تو مسجد میں داخل ہونے کے بعد غسل کرے۔

حضرت قیس بن عاصم رحمہ اللہ کی حدیث میں ہے کہ جب وہ وفد لے کر آئے تو حضور ﷺ کے پاس داخل ہونے کے لئے سب نے جلدی کی لیکن قیس نے اپنا سامان اتارا، سفر کا لباس اتار کر نیا لباس پہنا اور پھر

باوقار طریقہ سے حضور ﷺ کی خدمت میں حاضری دی چنانچہ آپ کو اس کی یہ بات پسند آئی اور آپ نے ان الفاظ میں ان کی تعریف کی: (اے قیس!) تم میں دو خصلتیں وہ ہیں جنہیں اللہ تعالیٰ پسند فرماتا ہے: بردباری اور باوقار رہنا۔

حضرت منذر بن ساوی تمیمی رحمہ اللہ کے بارے میں آتا ہے کہ وہ کچھ لوگوں کو لے کر بحرین سے آئے چنانچہ دوسرے لوگ ہتھیاروں سمیت حضور ﷺ کی خدمت میں پہنچے اور سلام عرض کیا جبکہ حضرت منذر نے پہلے ہتھیار اتارے' اپنے پاس موجود کپڑے پہنے' داڑھی پر تیل لگایا اور پھر بارگاہِ نبوی میں حاضر ہوئے۔

پھر مناسب یہ ہے کہ جاہلوں جیسے کاموں سے بچے یعنی حالت احرام جیسے اَن سلے کپڑے اوڑھنے سے گریز کرے۔

آداب میں سے یہ بھی ہے کہ جب قبۂ مبارکہ دیکھے اور مدینہ پاک میں داخل ہو تو آپ کی عظمت کی وجہ سے دل میں خشوع وخضوع پیدا کرے کیونکہ یہ وہ مبارک بقعہ ہے جسے اللہ تعالیٰ نے اپنے نبی کے لئے پسند کررکھا ہے جو اس کے محبوب اور پسندیدہ ہیں' پھر اپنے دل میں حضور ﷺ کے مبارک قدموں کے نشان لائے اور قدم مبارک کی جگہوں کا احترام کرے کیونکہ وہ جہاں بھی قدم رکھے گا' وہ حضور ﷺ کے مبارک قدم رکھنے ہی کی جگہ ہو گی لہٰذا قدم رکھتے وقت آپ کی ہیبت دل میں رکھے اور سکون سے چلے اور یوں چلے جسے عاجزی اور سکون سے حضور ﷺ چلا کرتے تھے کیونکہ اللہ تعالیٰ نے آپ کو عظمت دی تھی کہ آپ کا ذکر اپنے ذکر سے ملا رکھا تھا اور جو آپ کا احترام نہیں رکھتا تھا' اس کے عمل کو باطل کر دیتا تھا خواہ اس کا عمل آپ کی مبارک آواز سے آواز اونچا کرنا ہوتا۔ پھر اس بات پر افسوس کرتا رہے کہ دنیا میں آپ کی زیارت نہ کر سکا۔ پھر اپنے گناہوں کی بخشش مانگے۔

انہی آداب میں سے یہ ہے کہ جب تک ممکن ہو' بھلائی کے کاموں پر لگا رہے اور اپنے آپ کو برائیوں سے روکنے میں لگا رہے اور جب آپ کی حرمت میں کسی کی کوتاہی دیکھے تو ناراضگی کا اظہار کرے یا کوئی حضور ﷺ کے حقوق ادا کرنے میں کوتاہی کرے تو اس پر بھی اظہارِ ناراضگی کرے کیونکہ یہ بات علاماتِ محبت میں شمار ہوتی ہے کہ اپنے محبوب پر غیرت کھائے اور دیانت داری کے لحاظ سے لوگوں میں وہی قوی ہو گا جو سب سے زیادہ زیارت کرے گا اور جب دل غیرت کھانے سے خالی ہو جاتا ہے تو محبت سے بھی خالی ہو جاتا ہے' اس حالت میں اگر وہ اپنے اندر محبت کا گمان کرتا ہے تو جھوٹا ہوتا ہے۔

انہی آداب میں سے یہ بھی ہے کہ جب مدینے کے دروازے میں داخل ہو تو یوں کہے:

بِسْمِ اللّٰہِ مَاشَاءَ اللّٰہُ لَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ رَبِّ اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّ اَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّ اجْعَلْ لِّیْ مِنْ لَّدُنْکَ سُلْطَانًا نَّصِیْرًا حَسْبِیَ اللّٰہُ اٰمَنْتُ بِاللّٰہِ تَوَکَّلْتُ عَلَی اللّٰہِ لَاحَوْلَ وَلَا

قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِحَقِّ السَّائِلِیْنَ عَلَیْكَ وَ بِحَقِّ مَمْشَایَ هٰذَا اِلَیْكَ فَاِنِّیْ لَمْ اَخْرُجْ بَطَرًا وَّلَا اَشَرًا وَّ لَا رِیَاءً وَّ لَا سُمْعَةً خَرَجْتُ اِتِّقَاءَ سَخَطِكَ وَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِكَ اَسْاَلُكَ اَنْ تُنْقِذَنِیْ مِنَ النَّارِ وَ اَنْ تَغْفِرَلِیْ ذُنُوْبِیْ اِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ○

جب بھی مسجد کی طرف جائے' یہ دعا ضرور پڑھے کیونکہ حضرت ابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی ایک مرفوع حدیث میں ہے کہ جب کوئی یہ دعا مسجد کی طرف جاتے وقت پڑھے گا تو اللہ تعالیٰ ستّر ہزار فرشتوں کے ذمے لگا دے گا کہ اس کے لئے استغفار کرتے رہیں پھر اللہ تعالیٰ اس کی طرف خاص توجہ فرماتا ہے۔ پھر دل میں مدینہ کی عظمت بٹھائے رکھے کیونکہ یہ بالا جماع ثابت ہے کہ یہ خطہ ساری زمین سے افضل ہے' کچھ علماء کا قول ہے کہ مدینہ ساری دنیا کے مقامات سے افضل ہے چنانچہ کسی نے کہا ہے:

> ”یہ ایسی زمین ہے کہ جس کے اندر جبریلِ امین علیہ السلام چلتے رہے ہیں' اللہ تعالیٰ نے اس کی زمین و آسمان کو شرف وعظمت سے نوازا ہوا ہے۔“

انہی آداب میں سے یہ بھی ہے کہ مناجات کرنے سے پہلے صدقہ و خیرات کرے اور کوئی بھی کام کرنے سے پہلے یہ کام مسجد سے شروع کرے اور جب مسجد نبوی کا مشاہدہ کرے اور حرمِ محمدی کو دیکھے تو دل میں یہ خیال کرے کہ وہ اس جگہ آیا ہے جہاں ابو الفتوح جبریل علیہ السلام اُترتے رہے ہیں اور ابو الغنائم میکائیل علیہ السلام آتے رہے ہیں اور پھر یہ وہ جگہ ہے جسے اللہ نے وحی اور قرآن اُترنے کی خصوصیت بخشی ہے لہٰذا اس مقام کے پیشِ نظر یہاں حد درجہ خضوع وخشوع سے کام لے۔

انہی آداب میں سے یہ بھی ہے جو قاضی فضل الدین بن نصیر غوری نے لکھا ہے کہ زیارت کرنے والے کے لئے بابِ جبریل سے داخل ہونا افضل ہے کیونکہ مسجد نبوی کے دروازوں کے بیان میں گذر چکا ہے کہ لوگ باب السلام سے داخل ہوتے ہیں اور جب داخل ہونے کا ارادہ کرلے تو دل کو فارغ کر لے اور ضمیر کو صاف کر لے پھر دایاں قدم رکھے اور یہ پڑھے:

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِیْمِ وَ بِوَجْهِهِ الْكَرِیْمِ وَ بِنُوْرِهِ الْقَدِیْمِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ مَاشَآءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَ رَسُوْلِكَ وَعَلٰٓی اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِیْمًا كَثِیْرًا اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ وَ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ رَبِّ وَفِّقْنِیْ وَ سَدِّدْنِیْ وَ اَصْلِحْنِیْ وَ اَعِنِّیْ عَلٰی مَا یُرْضِیْكَ عَنِّیْ وَ مُنَّ عَلَیَّ بِحُسْنِ الْاَدَبِ فِیْ هٰذِهِ الْحَضْرَةِ الشَّرِیْفَةِ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ اَیُّهَا النَّبِیُّ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا وَعَلٰی عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِیْنَ○

جب بھی مسجد میں داخل ہو یا نکلے تو یہ دعا پڑھنا ترک نہ کرے' البتہ جب مسجد سے باہر نکلے تو اَبْـــوَابَ رَحْمَتِكَ کی بجائے وَ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ فَضْلِكَ کہے۔

انہی آداب میں سے ایک یہ ہے کہ جب مسجد میں ہو تو مسجد میں ٹھہرنے تک اعتکاف کی نیت کرے خواہ تھوڑی دیر کے لئے کرے جیسے مذہب شافعی میں ہے تاکہ اعتکاف کا ثواب بھی سمیٹ سکے' اس کے بعد روضہ شریف کی طرف متوجہ ہو اور اگر باب جبریل سے داخل ہو تو حجرہ مبارکہ کی پچھلی طرف سے اس کا ارادہ کرے اور اس کے ساتھ ساتھ ہیبت و وقار بھی پیشِ نظر رکھے' اللہ کا خوف رکھے' عاجزی کرے اور محتاجی دکھائے۔ پھر جگہ خالی مل سکے تو حضور ﷺ کے مصلّٰے کے مقام پر کھڑا ہو ورنہ ریاض الجنہ میں منبر والی جگہ پر کھڑا ہو اور اگر وہاں بھی جگہ نہ مل سکے تو جہاں جگہ ملے' کھڑا ہو اور مختصر طور پر دو رکعت نفل پڑھے۔

علامہ کرمانی رحمہ اللہ لکھتے ہیں کہ پہلی رکعت میں سورۃَ قـل یـاَیّھـا الکٰفـرون پڑھے اور دوسری میں سورۃَ اخلاص پڑھے' اس دوران اگر فرض نماز کھڑی ہو جائے یا اس کے نکل جانے کا اندیشہ ہو تو پہلے اسے پڑھے کیونکہ تحیۃ المسجد کے نفل اسی میں آ جائیں گے اور جب فارغ ہو جائے تو اس نعمتِ عظیمہ اور بھاری احسان کے ملنے پر اللہ کی حمد و ثناء کرے۔

حنفی حضرات میں سے علامہ کرمانی اور صاحب الاختیار نے کہا ہے کہ ان دو رکعتوں کے بعد شکرانے کے طور پر سجدہ کرے اور اللہ سے اُمید لگائے کہ وہ اس کی وہ مراد پوری فرما دے گا جو اس نے زیارت سے لگا رکھی ہے اور اسے وہ کچھ عطا فرمائے گا جو اس نے ارادے کر رکھے ہیں۔

علامہ زین مراغی رحمہ اللہ نے اپنے ایک شیخ سے نقل کیا ہے کہ نفلوں کو زیارت سے پہلے پڑھنے کا موقع اس وقت ہوتا ہے جب وہ آپ کے چہرۂ انور کے سامنے سے نہ گذرے اور اگر وہاں سے پہلے گزرتا ہے تو پہلے زیارت کرنا مستحب ہوتا ہے جبکہ مالکی حضرات میں سے بعض نے نفلوں سے پہلے زیارت کرنا مستحب لکھا ہے۔

نفلوں کو پہلے پڑھنے پر مستحب قرار دینے پر دلیل وہ ہے جو علامہ برھان بن فرحون نے ابن حبیب سے نقل کیا ہے' انہوں نے کتـاب الـصّلـوٰۃ میں لکھا ہے' حضرت جابر بن عبد اللہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں کہ میں ایک سفر سے واپس آیا اور رسول اللہ ﷺ کی خدمت میں حاضر ہوا' آپ مسجد کے صحن میں تشریف فرما تھے' میں نے سلام عرض کیا' اس پر آپ نے فرمایا: کیا تم نے مسجد میں داخل ہو کر نفل پڑھے ہیں؟ میں نے عرض کی' نہیں۔ آپ نے فرمایا: جاؤ مسجد میں جا کر نفل پڑھو' پھر میرے پاس آؤ اور سلام عرض کرو۔

علامہ لخمی رحمہ اللہ التبصرۃ کے بَابُ مَنْ جَاءَ مَکَّۃَ لَیْلًا میں لکھتے ہیں کہ: مسجد نبوی میں جا کر قبرِ انور پر جا کر سلام عرض کرنے سے پہلے تحیۃ المسجد پڑھے۔ یہ امام مالک کا قول ہے اور ابنِ حبیب کہتے ہیں کہ جب مسجد میں داخل ہو تو یوں کہے: بسـم اللّٰـہ و السّلام علٰی رسول اللّٰہ' ارادہ یہ ہو کہ جہاں کھڑے ہو کر سلام عرض کرنا ہے' وہاں سلام عرض

کرتا ہے' پھر رکوع کرے اور اگر اس دروازے سے داخل ہو جو قبر انور کی طرف ہے اور وہاں سے گذرے تو ٹھہر جائے اور سلام عرض کرے پھر اس جگہ آئے جہاں اس نے نفل پڑھنا ہیں بشرطیکہ وہاں تنگی نہ ہو۔ انتہی۔

میں کہتا ہوں کہ ابن حبیب کے کلام میں امام مالک کی مخالفت پائی نہیں جاتی کیونکہ ان کی مراد یہ ہے کہ مسجد کے دروازے سے داخل ہونے والے کے لئے مستحب یہ ہے کہ آپ پر درود پڑھے کیونکہ ابن خزیمہ کے مطابق حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مرفوع حدیث ملتی ہے کہ: جب تم میں سے کوئی مسجد میں داخل ہو تو نبی کریم ﷺ پر سلام عرض کرے اور پھر نفل پڑھے اور یوں کہے:

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ ○

پھر اس لئے بھی کہ ابن حبیب نے اس کے بعد ذکر کیا ہے کہ نفل پڑھے' پھر قبرِ انور کے پاس ٹھہرے اور سلام عرض کرے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

انہی آداب میں سے یہ بھی ہے کہ اس کے بعد قبرِ کریم کی طرف متوجہ ہو اور اللہ سے اس بات کی مدد مانگے کہ اس پاکیزہ مقام پر ٹھہرنے کا ادب نصیب فرمائے چنانچہ مکمل خشوع و خضوع کے ساتھ چاندی کے اس کیل کے سامنے کھڑا ہو تاکہ آپ کے چہرۂ انور کے سامنے ہو سکے۔

یہ بھی نقل ملتی ہے کہ زیارت کرنے والا قبرِ انور کے سرہانے کی طرف سے چار ہاتھ کے فاصلے پر دور کھڑا ہو اور ابن عبد السلام نے کہا کہ تقریباً تین ہاتھ کے فاصلے پر کھڑا ہو اور ان دونوں صورتوں میں وہ بلاشبہ مقصورہ شریف کے اندر داخل شمار ہو گا۔

ابن حبیب نے الواضحۃ میں لکھا ہے کہ: قبلہ کی طرف سے قبرِ انور کا ارادہ کرو اور قریب ہو جاؤ۔ پھر الاحیاء میں ہمارے لکھے فاصلہ کو بیان کرنے کے بعد لکھتے ہیں: مناسب یہ ہے کہ تم آپ کے سامنے ہمارے بتائے کے مطابق کھڑے ہو جاؤ پھر حالتِ وصال میں آپ کی زیارت یوں کرو جیسے تم آپ کی حیاتِ مبارکہ میں کر سکے اور قبر انور کے قریب اس سے زیادہ نہ ہو جاؤ جتنا تم آپ کی حیاتی میں آپ کے قریب کھڑے ہو سکتے اور پھر زیارت کرنے والے کو چاہئے کہ ٹھہرتے وقت نہایت ادب و احترام کے ساتھ حجرۂ مقدسہ کے سامنے نظر نیچی کئے رکھے۔ علامہ کرمانی حنفی کہتے ہیں کہ حاضری کے موقع پر ہاتھ باندھتے وقت دایاں ہاتھ بائیں ہاتھ کے اوپر رکھے۔

الاحیاء میں لکھا ہے یاد رکھئے کہ حضور ﷺ تمہاری حاضری' قیام اور زیارت کو خوب جانتے ہیں' تمہارا سلام اور درود آپ تک پہنچ جاتا ہے لہٰذا آپ کی صورتِ مبارکہ کو اپنے خیال میں لاؤ اور دل میں آپ کے عظیم رتبے کا دھیان رکھو کیونکہ رسول اللہ ﷺ سے روایت ہے کہ اللہ تعالیٰ نے آپ کی قبرِ انور پر ایک فرشتہ مقرر فرما رکھا جو آپ کے ہر اُمتی کا سلام آپ تک پہنچاتا ہے۔ یہ اس کے بارے میں ہے جو آپ کی قبرِ انور کے پاس حاضر

نہیں۔

پھر زیارت کرنے والا سلام عرض کرے، آواز نہ بلند ہو اور نہ ہی پست بلکہ درمیانی ہو اور یوں عرض کرے:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ○ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰهِ ○ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خِيْرَةَ اللّٰهِ ○ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰهِ ○ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ الْمُرْسَلِيْنَ وَ خَاتَمَ النَّبِيِّيْنَ ○ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَيْرَ الْخَلَآئِقِ اَجْمَعِيْنَ ○ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا قَآئِدَ الْغُرِّ الْمُحَجَّلِيْنَ ○ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اٰلِكَ وَ اَهْلِ بَيْتِكَ وَ اَزْوَاجِكَ وَ اَصْحَابِكَ اَجْمَعِيْنَ ○ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَعَلٰى سَآئِرِ الْاَنْبِيَآءِ وَ الْمُرْسَلِيْنَ ○ جَزَاكَ اللّٰهُ عَنَّا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَفْضَلَ مَا جَزٰى بِهٖ نَبِيًّا وَّ رَسُوْلًا عَنْ اُمَّتِهٖ وَصَلّٰى عَلَيْكَ كُلَّمَا ذَكَرَكَ الذَّاكِرُوْنَ وَغَفَلَ عَنْ ذِكْرِكَ الْغَافِلُوْنَ اَفْضَلَ وَ اَكْمَلَ مَا صَلّٰى عَلٰى اَحَدٍ مِّنَ الْخَلْقِ اَجْمَعِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ وَ خِيْرَتُهٗ مِنْ خَلْقِهٖ وَ اَشْهَدُ اَنَّكَ بَلَّغْتَ الرِّسَالَةَ وَ اَدَّيْتَ الْاَمَانَةَ وَنَصَحْتَ الْاُمَّةَ وَ كَشَفْتَ الْغُمَّةَ وَ جَاهَدْتَّ فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ○ اَللّٰهُمَّ اٰتِهِ الْوَسِيْلَةَ وَ الْفَضِيْلَةَ وَ ابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَ نِالَّذِيْ وَعَدْتَّهٗ وَ اٰتِهٖ نِهَايَةَ مَا يَنْبَغِيْ اَنْ يَّسْاَلَهُ السَّائِلُوْنَ ○ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ نَّبِيِّكَ وَ رَسُوْلِكَ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ اَزْوَاجِهٖ وَ ذُرِّيَّتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ وَ بَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ نِالنَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ فِي الْعَالَمِيْنَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○

ہاں اگر کوئی اسے پوری نہ پڑھ سکے یا وقت تنگ ہو تو جتنا ممکن ہو پڑھ لیا کرے، کم از کم یہ پڑھ لیا کرے:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ۔

حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما وغیرہ نہایت مختصر الفاظ بولتے تھے، حضرت مالک رحمہ اللہ تعالیٰ یہ پڑھا کرتے:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ۔

حضرت ابو سعید ھندی مالکی نے قبرِ انور پر کھڑا ہونے والے کے بارے میں کہا کہ زیادہ دیر تک کھڑا نہ ہو اور پھر حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کا پڑھا جانے والا سلام بتایا۔

حضرت عیاض رحمہ اللہ لکھتے ہیں: ''پھر تم عاجزانہ طور پر قبر انور کے سامنے کھڑے ہو جاؤ' آپ پر درود پڑھو اللہ کی حمد و ثناء کرو۔''

ابن فرحون کے مطابق ابن حبیب نے کہا' یوں پڑھا کرے:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ وَسَلَّمَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَفْضَلَ وَاَزْكٰى وَاَعْلٰى وَاَنْمٰى صَلَاةٍ صَلَّاهَا عَلٰى اَحَدٍ مِّنْ اَنْبِيَائِهٖ وَاَصْفِيَائِهٖ اَشْهَدُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنَّكَ قَدْ بَلَّغْتَ مَا اُرْسِلْتَ بِهٖ وَنَصَحْتَ الْاُمَّةَ وَعَبَدْتَّ رَبَّكَ حَتّٰى اَتَاكَ الْيَقِيْنُ وَ كُنْتَ كَمَا نَعَتَكَ اللّٰهُ فِيْ كِتَابِهٖ حَيْثُ قَالَ: لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ فَصَلَوَاتُ اللّٰهِ وَمَلَآئِكَتِهٖ وَ جَمِيْعِ خَلْقِهٖ فِيْ سَمٰوَاتِهٖ وَ اَرْضِهٖ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَلسَّلَام عَلَيْكُمَا يَا صَاحِبَيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَا اَبَابَكْرٍ وَّيَا عُمَرُ جَزَاكُمَا اللّٰهُ عَنِ الْاِسْلَامِ وَ اَهْلِهٖ اَفْضَلَ مَا جَزٰى وَ زِيْرَىْ نَبِيٍّ عَلٰى وَزَارَتِهٖ فِيْ حَيَاتِهٖ وَ عَلٰى حُسْنِ خِلَافَتِهٖ اِيَّاهُ فِيْ اُمَّتِهٖ بَعْدَ وَفَاتِهٖ فَقَدْ كُنْتُمَا لِرَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَ زِيْرَىْ صِدْقٍ فِيْ حَيَاتِهٖ وَ خَلَفْتُمَاهُ بِالْعَدْلِ وَ الْاِحْسَانِ فِيْ اُمَّتِهٖ بَعْدَ وَفَاتِهٖ فَجَزَا كُمَا اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ مُرَافَقَتَهٗ فِيْ جَنَّتِهٖ وَ اِيَّانَا مَعَكُمْ بِرَحْمَتِهٖ○ انتہی۔

علامہ مطری اور علامہ مجد نے کئی قسم کے سلام لکھے ہیں جن میں کئی اوصاف پائے جاتے ہیں جبکہ حضور ﷺ کے اوصاف کی کوئی انتہاء نہیں اور وہ مشہور ہیں۔ اس مقام پر گنجائش نہیں لہٰذا ہم نے اتنا بتانا مناسب سمجھا ہے۔

علامہ نووی مذکورہ بیان کے بعد لکھتے ہیں: اگر کسی نے اسے رسول اللہ ﷺ پر سلام کے لئے کہا ہو تو اسے یوں کہنا چاہئے: اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مِنْ فُلَانِ بْنِ فُلَانٍ يَا فُلَانُ بْنُ فُلَانٍ يُسَلِّمُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ' پھر تھوڑا سا اپنی دائیں طرف ہاتھ بھر پیچھے ہٹ جائے' یوں حضرت ابوبکر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے سامنے ہوگا' اب یوں کہے:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَابَكْرٍ صَفِيَّ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَ ثَانِيَهٗ فِي الْغَارِ وَ رَفِيْقَهٗ فِي الْاَسْفَارِ جَزَاكَ اللّٰهُ عَنْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْرَ الْجَزَاءِ.

پھر تھوڑا سا (ہاتھ بھر) اور پیچھے ہٹے اور عرض کرے:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عُمَرُ الْفَارُوْقَ الَّذِيْ اَعَزَّ اللّٰهُ بِهِ الْاِسْلَامَ جَزَاكَ اللّٰهُ عَنْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْرَ الْجَزَاءِ○

علامہ نووی وغیرہ کہتے ہیں کہ پھر اپنی پہلی جگہ پر واپس حضور ﷺ کے چہرۂ پاک کے سامنے آ جائے اور اپنے

لئے حضورﷺ کے وسیلہ کی دعا کرے اور بارگاہِ الٰہی میں انہیں اپنی سفارش کے طور پر پیش کرے۔

میں کہتا ہوں کہ یہاں کھڑے ہو کر نئے سرے سے پھر توبہ کرے اور دعا کرے کہ یہ اس کے لئے خالص توبہ بن جائے نیز یہ دعا کرے کہ اللہ تعالیٰ اس کے حق میں آپ کی شفاعت قبول فرمائے اور ولو انّھم اذ ظّلموا تا رحیما کے بعد استغفار اور گریہ زاری کی کثرت کرے اور یوں کہے:

نَحْنُ وَفْدُكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَ زُوَّارُكَ جِئْنَاكَ لِقَضَاءِ حَقِّكَ وَ التَّبَرُّكِ بِزِيَارَتِكَ وَ
الْإِسْتِشْفَاعِ بِكَ اِلٰى رَبِّكَ تعالى فَإِنَّ الْخَطَايَا قَدْ أَثْقَلَتْ ظُهُوْرَنَا وَ أَنْتَ الشَّافِعُ الْمُشَفَّعُ
الْمَوْعُوْدُ بِالشَّفَاعَةِ الْعُظْمٰى وَ الْمَحْمُوْدُ وَقَدْ جِئْنَاكَ ظَالِمِيْنَ لِأَنْفُسِنَا مُسْتَغْفِرِيْنَ
لِذُنُوْبِنَا سَائِلِيْنَ مِنْكَ أَنْ تَسْتَغْفِرَلَنَا اِلٰى رَبِّكَ فَأَنْتَ نَبِيُّنَا وَ شَفِيْعُنَا فَاشْفَعْ لَنَا اِلٰى رَبِّكَ وَ
اسْئَلُهُ أَنْ يُّمِيْتَنَا عَلٰى سُنَّتِكَ وَ مَحَبَّتِكَ وَ يَحْشُرَنَا فِيْ زُمْرَتِكَ وَ أَنْ يُّوْرِدَنَا حَوْضَكَ غَيْرَ
خَزَايَا وَلَا نَادِمِيْنَ○

حضرت ابن ابی فدیک رحمہ اللہ کہتے ہیں' میں نے اپنے ایک ملنے والے سے سنا' وہ کہہ رہے تھے: ہمیں پتہ چلا ہے کہ جو شخص نبی کریمﷺ کی قبرِ انور کے سامنے ٹھہرے اور پڑھے إِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا تو اللہ حضورﷺ پر درود و سلام بھیجتا ہے۔ ایک روایت کے مطابق وہ فرماتا ہے: اے محمد! اللہ تعالیٰ آپ پر درود بھیجتا ہے۔ یہ الفاظ ستّر مرتبہ فرماتا ہے' اس پر فرشتہ اس شخص کو آواز دیتا ہے اے فلاں! اللہ تعالیٰ تم پر رحمت فرما رہا ہے' آج تمہاری کوئی ضرورت پورے ہونے سے نہ رہ جائے گی۔

میں کہتا ہوں' مناسب یہ ہے کہ یہ کام دعا اور آپ کا وسیلہ مانگنے سے پہلے کر لے۔ کچھ حضرات کہتے ہیں لیکن بہتر یہ ہے کہ یوں کہے: صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ' اگرچہ روایت میں الفاظ یہ آتے ہیں: یا محمّد کیونکہ ادب یہی ہے۔ مقصد یہ ہے' آپ کی خصوصیت یہ ہے کہ آپ کو آپ کے نام مبارک سے آواز نہ دی جائے بلکہ یا رسول اللّٰہ یا نبیّ اللّٰہ وغیرہ کہہ کر آواز دی جائے۔ ظاہر یہ ہے کہ یہ اس آواز میں ہے جب اس کے ساتھ صلٰوۃ و سلام کا ذکر نہ ہو۔

علامہ مجد رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ حضرت اصمعی نے کہا: ایک دیہاتی قبرِ انور کے بالمقابل کھڑا ہوا اور کہنے لگا: ''اے اللہ! یہ تیرے محبوب ہیں' میں تیرا بندہ ہوں اور شیطان تیرا دشمن ہے' اگر تو مجھے بخش دے گا تو تیرے حبیب خوش ہوں گے' تیرا یہ بندہ کامیاب ہو جائے گا اور تیرے دشمن کو ناراضگی ہوگی لیکن اگر تو نے نہ بخشا تو تیرے حبیب کو خوشی نہ ہو گی' تیرا دشمن خوش ہو گا اور تیرا یہ بندہ برباد ہو جائے گا۔ تجھے یہ جچتا نہیں کہ تیرے محبوب پریشان ہوں' تیرا دشمن خوش ہو اور تیرا بندہ تباہ و برباد ہو' الٰہی! عرب کا دستور یہ ہے کہ جب ان میں سے کوئی فوت ہو جاتا ہے تو وہ اس کی قبر پر غلام آزاد کرتے ہیں' یہ تو دونوں جہان کے سردار ہیں' ان کی قبرِ انور پر مجھے بھی آزاد کر دے۔ اصمعی کہتے ہیں کہ میں نے کہا اے

عربی بھائی! تیرے اس پیارے سوال کی وجہ سے اللہ نے تمہیں بخش دیا اور آگ سے بچا لیا ہے۔

علامہ مجد کہتے ہیں کہ دیر تک کھڑا ہونا ہو تو بیٹھ جائے اور بہت سارا درود و سلام پڑھے۔

حضرت ابوموسیٰ اصفہانی کہتے ہیں کہ زیارت کرنے والے کو اختیار ہوتا ہے' چاہے تو کھڑا رہے اور چاہے تو بیٹھ جائے' بالکل یونہی جیسے زندگی میں آدمی اپنے بھائی کی زیارت کرتا ہے تو کبھی اس کے پاس بیٹھا ہوتا ہے اور کبھی کھڑے کھڑے اور چلتے ہوئے اسے دیکھتا ہے۔ انتہی۔

علامہ مجد کہتے ہیں کہ مکمل طور پر درود پڑھے اور اس میں اختلاف مشہور ہے تاہم میں تو یہ پڑھا کرتا ہوں

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَ اَزْوَاجِهٖ

جیسے منقول ہے یعنی وہ صلاۃ جس کے پڑھنے کے بارے میں سائل نے بتایا (اس کے ساتھ یہ ملا کر پڑھے):

عَدَدَ مَا خَلَقْتَ وَ عَدَدَ مَا اَنْتَ خَالِقٌ وَّزِنَةَ مَا خَلَقْتَ وَ زِنَةَ مَا اَنْتَ خَالِقٌ وَّمِلْاَ مَا خَلَقْتَ وَمِلْاَ مَا اَنْتَ خَالِقٌ وَّمِلْاَ سَمٰوٰتِكَ وَمِلْاَ اَرْضِكَ وَمِثْلَ ذٰلِكَ وَ اَضْعَافَ ذٰلِكَ وَ عَدَدَ خَلْقِكَ وَ زِنَةَ عَرْشِكَ وَ مُنْتَهٰى رَحْمَتِكَ وَ مِدَادَ كَلِمَاتِكَ وَ مَبْلَغَ رِضَاكَ وَ حَتّٰى تَرْضٰى وَ عَدَدَ مَا ذَكَرَكَ بِهٖ خَلْقُكَ فِيْ جَمِيْعِ مَا مَضٰى وَ عَدَدَ مَا هُمْ ذَاكِرُوْكَ فِيْمَا بَقِيَ فِيْ كُلِّ سَنَةٍ وَّ شَهْرٍ وَّ جُمُعَةٍ وَّ يَوْمٍ وَّلَيْلَةٍ وَّ سَاعَةٍ مِّنَ السَّاعَاتِ وَ نَسَمٍ وَّ لَمْحَةٍ وَّطَرْفَةٍ مِّنَ الْاَبَدِ اِلَى الْاَبَدِ اَبَدَ الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ اَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ لَا يَنْقَطِعُ اَوَّلُهٗ وَلَا يَنْفَدُ اٰخِرُهٗ○

اسے دو یا تین پر پڑھے اور پھر یونہی پڑھے:

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ۔

اس کے بعد حضور ﷺ کے سامنے جتنا ممکن ہو' تلاوتِ قرآن کرے' خیال رکھے کہ ان آیات کی تلاوت کرے جن میں صفاتِ ایمان اور توحید کے معانی کا ذکر ہو۔ انتہی۔

علامہ نووی کہتے ہیں: پھر دعا اور وسیلہ کا سوال کر کے چہرۂ انور کے سامنے سے سرِ انور کے سامنے ہو جائے چنانچہ قبر انور اور وہاں موجود ستون کے درمیان کھڑا ہو اور قبلہ کو رُخ کر لے اللہ تعالیٰ کی حمد و ثناء کرے' اپنے' اپنے والدین' خویش و اقارب' اپنے مشائخ' بھائیوں اور باقی تمام مسلمانوں کے لئے دعا کرے۔ حنفی حضرات کی کتابوں میں یہی لکھا ہے۔

علامہ عزّ بن جماعہ کہتے ہیں' یہ جو انہوں نے لکھا ہے کہ آپ کے چہرۂ انور کی طرف لوٹ آئے اور زیارت کے بعد سرِ مقدس کی طرف آ جائے' ایسا نہ تو صحابہ کرام سے ثابت ہے اور نہ ہی تابعین سے۔

میں کہتا ہوں، رہی یہاں دعا اور وسیلہ مانگنا تو اس کا ان کے پاس ثبوت ہے اور جو ان سے منقول نہیں، وہ یہ خاص ترتیب ہے اور ظاہر یہ ہے کہ اس سے مراد شیخین کو سلام پیش کر کے، دعا بعد میں پڑھنا ہے اور سلف صالحین کے دونوں موقعوں کو جمع کرنے کی صورت یہ ہے کہ پہلا طریقہ حجروں کو مسجد میں شامل کرنے سے پہلے اپنایا جاتا تھا جبکہ دوسرا اس کے بعد اپنایا جاتا ہے اور یہ اچھی بات ہے بلکہ پانچویں باب کی چھٹی فصل میں ابن شبہ کی روایت میں ہے کہ نبی کریم ﷺ جب اپنے صاحبزادے سیّدنا ابراہیم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے دفن سے فارغ ہوئے تو ان کے سرہانے فرمایا تھا:

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ

اور اس سے صاف پتہ چلتا ہے کہ سلام سر کی طرف ہونا چاہیے۔

آداب ہی میں سے یہ بھی ہے کہ منبر کی طرف آئے اور وہاں کھڑا ہو کر اللہ سے دعا کرے اور جتنا ممکن ہو حمد الٰہی بجا لائے، حضور ﷺ پر درود پڑھے، اللہ تعالیٰ سے بہتری کی دعا مانگے اور پناہ کی درخواست کرے، جیسے ابن عساکر نے کہا ہے۔ علامہ اقشہری نے اس کے بعد یہ لکھا ہے: جیسے صحابہ کرام کرتے تھے۔ ان کا اشارہ اس طرف ہے جسے یزید بن عبداللہ بن قسیط نے لکھا ہے کہ میں نے کئی صحابہ کو دیکھا کہ مسجد خالی ہوتی تو وہ منبر کی انار جیسی اس جگہ کو پکڑتے جسے رسول اللہ ﷺ ہاتھ میں پکڑا کرتے تھے، پھر قبلہ رُخ ہو کر دعائیں کیا کرتے تھے۔

قاضی عیاض کی شفاء میں ابو قسیط اور عتبی رحمہما اللہ میں ہے کہ رسول اللہ ﷺ کے صحابہ کرام مسجد خالی ہونے پر منبر کی انار جیسی شکل کو تھام لیتے اور قبلہ رو دعائیں کیا کرتے۔

علامہ نووی نے اپنی پہلی تحریر کے بعد لکھا ہے کہ: پھر ریاض الجنہ میں آئے، کثرت سے دعا کرے اور درود پڑھے پھر قبرِ انور کے پاس کھڑا ہو کر دعائیں کرے۔

میں بتاتا چلوں کہ اسطوانۂ مہاجرین کے پاس بھی کھڑا ہو اور وہاں درود پڑھنے کی سعادت حاصل کرے یونہی اسطوانۂ ابولبابہ، اسطوانۂ حرس، اسطوانۂ وفود اور اسطوانۂ تہجد کے قریب بھی دعائیں کرے لیکن یہ کام حضرت سیّدہ فاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی خدمت میں سلام عرض کر کے کرے، اس محراب کے پاس کھڑا ہو جہاں مقصورہ شریفہ کا اندر کا حصہ ہے کیونکہ ایک روایت کے مطابق آپ کو یہیں دفن کیا گیا ہے۔

آداب میں سے یہ بھی ہے کہ حجرہ کی دیوار کو ہاتھ لگانے، اسے چومنے، اس کا طواف کرنے اور اس کی طرف درود پڑھنے سے پرہیز کرے۔ علامہ نووی کہتے ہیں کہ حضور ﷺ کی قبرِ انور کا طواف جائز نہیں، نیز قبرِ انور کی دیوار کے ساتھ پیٹ اور پیٹھ لگانا مکروہ ہے چنانچہ حلیمی وغیرہ لکھتے ہیں: دیوار کو ہاتھ لگانا اور چومنا مکروہ ہے بلکہ ادب یہ ہے کہ اس سے ویسے ہی دور رہے جیسے آپ کی زندگی میں دور رہا کرتا تھا، یہی درست ہے اور یہی وہ بات ہے جو علماء کہتے ہیں اور جس پر ان کا اتفاق ہے اور جس کے دل میں یہ بات کھٹکتی ہو کہ ہاتھ وغیرہ لگانے میں زیادہ برکت حاصل ہوتی ہے تو یہ اس کی جہالت اور غفلت ہے کیونکہ برکت تو اسی کام میں ہوتی ہے جو شرع کے موافق ہو اور علماء کے اقوال پر پورا

اُترے۔ انتہیٰ۔

احیاء میں ہے کہ قبروں کو ہاتھ لگانا اور چومنا نصاریٰ اور یہودیوں کی عادت ہے۔ علامہ اقشہری لکھتے ہیں علامہ زعفرانی نے اپنی کتاب میں لکھا ہے کہ قبرِ انور پر ہاتھ رکھنا' اسے چُھونا اور چومنا ان بدعتوں میں شمار ہوتا ہے جسے شریعت اچھا نہیں جانتی۔

حضرت انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے بارے میں آتا ہے کہ انہوں نے ایک آدمی کو دیکھا جس نے اپنا ہاتھ قبرِ انور پر رکھا تھا' آپ نے اسے منع کیا اور فرمایا کہ حضورﷺ کے دورِ مبارک میں تو ہم نے ایسا ہوتا کبھی نہیں دیکھا تھا۔ پھر امام مالک' شافعی اور احمد نے بھی اسے بہت برا جانا ہے۔

کچھ علماء کا کہنا ہے' اگر ہاتھ رکھنے سے اس کا مقصد میت سے مصافحہ کرنا ہے تو اُمید ہے کہ اس میں حرج کی کوئی بات نہیں لیکن بہرحال جمہور کے طریقے کو اپنانا زیادہ مناسب ہے۔ انتہیٰ۔

پھر تحفۂ ابنِ عساکر میں ہے: یہ سنت طریقہ نہیں کہ قبر انور کی دیوار کو ہاتھ لگائے اور اسے چومے بلکہ اس کا طواف بھی نہیں کرنا چاہئے' پھر ابونعیم کے طریقے پر ہے کہ حضرت ابنِ عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما قبرِ انور کو کثرت سے ہاتھ لگانا پسند نہ کرتے تھے۔

حضرت ابوبکر الاثرم کہتے ہیں' میں نے ابوعبداللہ احمد بن حنبل سے قبرِ انور کے بارے میں پوچھا کہ اسے ہاتھ لگا سکتے ہیں؟ تو انہوں نے کہا کہ میں اسے اچھا نہیں سمجھتا' میں نے کہا: منبر کے بارے میں بتایئے' انہوں نے کہا کہ ہاں' اس کے بارے میں ثبوت ملتا ہے چنانچہ حضرت ابنِ عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے بارے میں آتا ہے کہ انہوں نے اسے ہاتھ لگایا تھا۔

شیخِ امام مالک حضرت یحییٰ بن سعید رحمہ اللہ کے بارے میں آتا ہے کہ جب انہوں نے عراق جانے کا ارادہ کیا تو منبر کے پاس آئے اور اسے ہاتھ لگا کر دعا کی۔ میں سمجھتا ہوں کہ انہوں نے اسے اچھا جانا۔ میں نے حضرت ابوعبداللہ سے کہا کہ لوگ قبرِ انور کی دیوار کے ساتھ پیٹ چمٹا لیتے ہیں جبکہ علم والے اہلِ مدینہ کو میں نے دیکھا ہے کہ اسے چھوتے نہیں' اس کی ایک جانب کھڑے ہو جاتے ہیں اور سلام پیش کرتے ہیں۔ انہوں نے کہا: ہاں' حضرت ابنِ عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما یونہی کیا کرتے تھے۔

علامہ عز بن جماعہ کے مطابق علامہ سروجی حنفی نے کہا ہے کہ آدمی اپنا پیٹ دیوار سے نہ لگائے اور نہ اسے ہاتھ لگائے۔ قاضی عیاض شفاء شریف میں لکھتے ہیں' قبر انور پر کھڑا ہونے والے کے بارے میں احمد بن سعید ھندی کی کتاب میں لکھا ہے کہ اس سے نہ تو چمٹے' نہ اسے چھوئے اور نہ ہی زیادہ دیر تک اس کے قریب کھڑا ہو۔

ابن قدامہ حنبلی نے المغنی میں لکھا ہے کہ نبی کریمﷺ کی قبرِ انور کی دیوار کو ہاتھ لگانا اچھا نہیں اور نہ ہی اسے چوما جائے۔ احمد نے کہا ہے' میں اسے پسند نہیں کرتا' اثرم کہتے ہیں' میں نے اہلِ مدینہ کے عالموں کو دیکھا' وہ قبرِ انور کو

ہاتھ نہیں لگاتے تھے بلکہ اس کی ایک جانب کھڑے ہو جاتے اور سلام پیش کرتے' پھر ابو عبد اللہ نے کہا کہ حضرت ابنِ عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما ایسے ہی کیا کرتے تھے۔ انتہٰی۔

حضرت عزؒ "کتاب العلل والسوالات" میں لکھتے ہیں کہ عبد اللہ نے کہا: میں نے اپنے والد سے اس آدمی کے بارے میں پوچھا جو منبرِ رسول اللہ ﷺ کو ہاتھ لگانا متبرک سمجھے اور اسے چومے اور یونہی ثواب کی نیت سے قبرِ انور سے معاملہ کرے (تو کیسا ہے؟) انہوں نے کہا: اس میں حرج نہیں۔ علامہ عزّ بن جماعہ کہتے ہیں کہ یہ روایت علامہ نووی کی اس روایت کو باطل کرتی ہے جس پر اجماع ثابت ہے۔

میں کہتا ہوں کہ علامہ نووی نے اجماع نقل نہیں کیا بلکہ ان کے زورِ کلام سے اجماع کا ثبوت ملتا ہے۔

مسئلہ زیارت میں علامہ سبکی نے ابن تیمیہ کا رد کرتے ہوئے لکھا ہے کہ قبرِ انور کو ہاتھ نہ لگانے پر اجماع کا ثبوت نہیں ملتا چنانچہ ابو الحسین کے مطابق مطلب بن عبد اللہ بن حطب بتاتے ہیں کہ مروان بن حکم آیا تو اس نے ایک شخص کو قبر انور سے لپٹا دیکھا۔ مروان نے اسے گردن سے پکڑا اور کہا: جانتے ہو تم کیا کر رہے ہو؟ اس نے مڑ کر مروان کی طرف دیکھا اور کہنے لگا: ہاں جانتا ہوں' میں نہ تو کسی پتھر کے پاس ہوں اور نہ ہی کسی اینٹ کے پاس آیا ہوں' میں تو رسول اللہ ﷺ کے پاس حاضر ہوں' جب اھل دین یا حاکم موجود ہو تو دین پر رونے کی ضرورت نہیں' اس وقت رونا چاہئے جب نااھل حکمران ہو۔

مطلب کہتے ہیں کہ وہ شخص حضرت ابو ایوب انصاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ تھے۔

اس سے پہلے بھی گذر چکا ہے کہ حضرت بلال رضی اللہ تعالیٰ عنہ زیارتِ نبی کریم ﷺ کے لئے جب شام سے حاضر ہوئے تو قبرِ انور پر حاضری دی' رونے لگے اور اپنا چہرہ اس سے ملتے رہے۔

تحفۂ ابنِ عساکر کے مطابق حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ بتاتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ کو جب قبرِ انور میں دفن کیا جا چکا تھا تو حضرت فاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا آپ کی قبرِ انور پر حاضر ہوئیں' وہاں سے مٹی کی ایک مٹھی بھری' اپنی آنکھوں پر ملی اور روتے ہوئے کہا:

"حضرت احمد ﷺ کی قبرِ انور کو سونگھنے والے کو کیا ہوا کہ اس نے گرانقدر مٹی کو سونگھا نہیں۔
مجھ پر مصائب کے وہ پہاڑ ٹوٹے کہ اگر وہ دنوں پر وارد ہوں تو یہ راتیں بن جائیں۔"

خطیب بن حملہ کے مطابق حضرت ابنِ عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما اپنا داہنا ہاتھ قبرِ انور پر رکھا کرتے اور حضرت بلال رضی اللہ تعالیٰ عنہ بھی اپنا رخسار رکھا کرتے تھے۔

علامہ خطیب پھر کہتے ہیں' انتہائی محبت کا تقاضا یہ ہے کہ اس چومنے وغیرہ کی اجازت ہونی چاہئے' مقصد تو احترام اور تعظیم ہوتا ہے' لوگ اس معاملے میں یونہی مختلف قسم کے خیال رکھتے ہیں جیسے آپ کی زندگی میں ہوتا رہا چنانچہ کئی لوگ آپ کو دیکھ کر آگے بڑھتے' انہیں اپنے آپ پر قابو نہ رہتا اور کچھ وہ تھے جو جھجک کر پیچھے ہٹ جاتے لیکن سب کا کام

اچھا تھا۔

ابن حجر رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ شرعی طور پر حجر اسود کو چومنے سے کچھ علماء نے یہ مسئلہ نکالا ہے کہ ہر عظمت والی چیز کو چومنا جائز ہے، وہ انسان کی ہو یا کوئی اور، رہا آدمی کا ہاتھ چومنا تو یہ آداب میں آ چکا ہے، باقی رہا ہاتھ کے علاوہ چومنا تو اس کے متعلق حضرت احمد سے پوچھا گیا کہ منبر اور قبرِ انور کو چومنا کیسا ہے؟ آپ نے فرمایا، کوئی حرج نہیں، تاہم ایک نے آپ کی یہ بات تسلیم نہیں کی۔

ابن ابی صیف شافعی یمانی رحمہ اللہ سے قرآن کریم، حدیث کے اوراق اور صالحین کی قبریں چومنے کا ثبوت ملتا ہے۔

علامہ طیب ناشری نے محبّ طبری سے روایت کیا ہے کہ وہ قبر کو چومنے اور ہاتھ لگانے کو جائز سمجھتے تھے، وہ بتاتے ہیں کہ علماءِ صالحین اسی پر عمل کرتے رہے ہیں اور پھر یہ شعر پڑھا:

> ”اگر ہم سلیٰمی کی کوئی نشانی دیکھ لیں تو اس کے لئے دس لاکھ سجدے کریں۔“

ایک اور شاعر نے کہا:

> ”میں دیارِ لیلیٰ سے گذرتا ہوں تو کبھی اس دیوار کو چومتا ہوں اور کبھی اس کو، میرے دل میں ان گھروں کی حد درجہ محبت کا خیال نہیں ہوتا، مجھے تو اس سے محبت ہے جو اس میں رہائش رکھا کئے تھا۔“

حضرت اسماعیل بن یعقوب تیمی بتاتے ہیں کہ ابن المنکدر اپنے مریدوں میں بیٹھے تھے (ان پر چپ طاری تھی) پھر یوں کھڑے ہوئے کہ جیسے وہ قبر انور سے رخسار لگاتے ہیں، پھر واپس ہو جاتے۔ کہنے لگے، میرے دل میں کھٹکا لگتا ہے اور جب یہ حالت ہوتی ہے تو قبرِ انور سے مجھے سکون مل جاتا ہے۔ پھر مسجد میں وہ ایک جگہ پر آتے جو صحن میں تھی، وہاں مٹی ملتے اور لیٹ جاتے۔ اس بارے میں پوچھا گیا تو بتایا کہ اس مقام پر میں نے نبی کریم ﷺ کو دیکھا ہے۔ لگتا ہے کہ انہوں نے خواب میں دیکھا ہوگا۔ انتہی۔

ایک ادب یہ ہے کہ سلام عرض کرتے وقت قبر کے سامنے جھکنے سے گریز کرے۔ ابن جماعہ کے مطابق کچھ علماء کہتے ہیں کہ یہ ایک بدعت ہے کیونکہ بے علم اسے یوں دیکھ کر سمجھتا ہے کہ شاید یہ تعظیم کی علامت ہے اور پھر اس سے بھی بری بات یہ ہے قبر کی مٹی کو چومے کیونکہ پہلے اکابر نے یہ کام نہیں کیا جبکہ بھلائی حضور ﷺ کی اتباع کرنے سے ملتی ہے اور جس کے دل میں یہ بات آتی ہے کہ مٹی کو چومنا زیادہ برکت والا ہوتا ہے تو یہ اس کی جہالت اور غفلت ہے کیونکہ برکت تو اس چیز میں ہوتی ہے جو شریعت کے موافق ہو اور سلف صالحین کے قول و فعل کے مطابق ہو۔

وہ کہتے ہیں، مجھے اس شخص سے تعجب نہیں جسے اس کا پتہ ہی نہیں اور وہ یہ کام کئے جا رہا ہے، تعجب تو اس پر ہے جو اسے اچھا کہنے کا فتویٰ دیتا ہے حالانکہ اسے معلوم ہے کہ یہ کام اچھا نہیں اور سلف صالحین کے عمل کے خلاف

ہے۔

میں کہتا ہوں کہ میں نے ایک ایسا جاہل قاضی بھی دیکھا ہے جو لوگوں کے سامنے یہ کام کرتا ہے اور پھر اس سے بھی زیادہ یہ کہ قبر پر سجدے کی طرح پیشانی رکھ دیتا ہے اور لوگ اس کی اتباع شروع کر دیتے ہیں۔ **لاحول ولاقوۃ الا باللہ۔**

ایک ادب یہ ہے کہ جب بھی قبرِ انور کی طرف سے گذرے، ٹھہرے اور سلام عرض کیا کرے، خواہ وہ مسجد کے اندر سے آئے یا باہر سے، اسے چاہئے کہ زیادہ سے زیادہ قبرِ انور کی طرف آئے اور زیارت کیا کرے۔

علامہ اقشہری رحمہ اللہ کے مطابق ابو حازم کہتے ہیں کہ ایک آدمی میرے پاس آیا اور بتایا: اس نے نبی کریم ﷺ کو خواب میں دیکھا کہ آپ سے فرما رہے ہیں: تم میری قبر کے قریب سے گذرتے وقت ایک طرف کو ہو کر گذر جاتے ہو، کھڑے ہو کر مجھ پر سلام کیوں نہیں پڑھتے؟ چنانچہ جب سے ابو حازم نے یہ خواب سنی پھر یہ کام کرنا ترک نہیں کیا۔

ابن رشد کی کتاب الجامع میں ہے کہ حضرت مالک سے قبرِ انور کے قریب سے گذرنے والے شخص کے بارے میں پوچھا گیا کہ آیا جب بھی وہاں سے گذرے، سلام عرض کیا کرے؟ انہوں نے کہا، ہاں میں اسے جائز سمجھتا ہوں اس پر لازم ہے کہ جب بھی گذرے، سلام عرض کرے کیونکہ لوگ اکثر یوں کرتے ہیں اور اگر وہاں سے نہیں گذرتا تو میں اس پر لازم قرار نہیں دیتا پھر یہ حدیث پڑھی: ''الٰہی میری قبر کو بت کا درجہ نہ دینا۔'' الحدیث۔

وہ کہتے ہیں کہ لوگ اکثر ایسا کرتے ہیں اور اگر وہاں سے نہیں گزرتا تو اس سلسلے میں اسے اختیار ہوتا ہے۔ کہتے ہیں کہ مسافر کے بارے میں ان سے پوچھا گیا جو روزانہ قبرِ انور کی طرف آتا ہے تو انہوں نے کہا، کوئی حرج نہیں۔

ابن رشد کہتے ہیں کہ اس کا مطلب یہ بنتا ہے، وہ جب بھی وہاں سے گذرے اس پر لازم ہے کہ سلام عرض کرے ہاں اس پر یہ لازم نہیں کہ وہ ہر روز سلام عرض کرنے آئے ہاں جاتے وقت الوداعی سلام ضرور عرض کرے، یہ بات مکروہ ہے کہ اکثر وہاں سے گذرا کرے اور سلام عرض کرتا رہے تاکہ وہ اپنے فعل کے ذریعے قبر انور کو مسجد نہ بنا لے جس میں ہر روز وہ نماز پڑھنے آتا ہے کیونکہ حضور ﷺ نے اپنے اس قول کے ذریعے اسے منع فرمایا ہے کہ: الٰہی میری قبر کو بت کی صورت نہ بنا دینا۔ الحدیث۔

قاضی عیاض رحمہ اللہ نے شفاء شریف میں لکھا ہے: حضرت مالک نے کتابِ محمد میں لکھا ہے کہ قبرِ انور کے پاس آتے جاتے وقت سلام عرض کیا کرے یعنی مدینہ میں ہوتے ہوئے۔

امام مالک رحمہ اللہ نے المبسوط میں لکھا ہے: اہلِ مدینہ میں سے قبرِ انور پر آتے جاتے وقت کسی کے لئے وہاں ٹھہرنا لازم نہیں، یہ صرف مسافروں کے لئے ہے۔

امام مالک نے یہ بھی لکھا ہے کہ اگر کوئی سفر سے واپس آئے یا سفر پر روانہ ہو تو اس میں کوئی حرج نہیں کہ قبر انور کے پاس ٹھہرے درود پاک پڑھے' آپ اور ابوبکر و عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے لئے دعائیں کرے۔ اس پر ان سے کہا گیا' اہلِ مدینہ میں سے کچھ لوگ وہ ہیں جو نہ تو سفر سے آ رہے ہوتے ہیں' نہ ہی جا رہے ہوتے ہیں' پھر بھی وہ روزانہ ایک یا زیادہ مرتبہ یوں کیا کرتے ہیں پھر وہ جمعہ یا دوسرے دنوں میں ایک' دو یا زیادہ مرتبہ قبرِ انور کے پاس ٹھہرتے ہیں اور سلام عرض کرتے اور کچھ دیر تک دعائیں کرتے ہیں۔ اس پر انہوں نے کہا کہ ہمارے شہر میں تو یہ بات نہیں ہے ہاں نہ کیا جائے تو اچھا ہے' اُمت کے آخری لوگوں کے لئے وہی کام اچھا ہے جو پہلے لوگ کرتے آئے ہیں اور میرے علم میں یہ بات نہیں آئی کہ پہلے لوگوں نے یوں کیا ہو۔ آپ سفر سے آنے یا جانے والوں کے علاوہ کسی اور کے لئے اسے ناپسند کرتے تھے۔

علامہ سبکی رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ مذہب مالک کا حاصل یہ ہے کہ زیارت ایک عبادت ہے لیکن کثرت سے وہاں جانے کی عادت بنا لینے میں خرابی ہے جبکہ دوسرے تین مذاہب اسے مستحب جانتے ہیں۔

علامہ نووی نے زیارت کے موقع پر ذکر کا بیان کرتے ہوئے لکھا ہے کہ کثرت سے زیارت کرنا مستحب ہے پھر بتاتے ہیں کہ بھلائی اور فضیلت والے حضرات کی قبروں کے پاس ٹھہرنا زیادہ سے زیادہ ہونا چاہیے۔

پھر چوتھے باب کی بیسویں فصل میں حجرہ مبارکہ کی دیوار گرنے کے بیان میں حضرت عبداللہ بن محمد بن عقیل بن ابو طالب رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے یہ روایت گذر چکی ہے' وہ بتاتے ہیں کہ میں رات کے آخری حصے میں روزانہ مسجد میں آیا کرتا' حضور ﷺ کی خدمت میں حاضری دیتا اور سلام عرض کرتا۔ اور پھر اپنے جائے نماز پر آجاتا۔ وہاں نمازِ صبح پڑھنے تک بیٹھا رہتا۔

ابن زبالہ کے مطابق حضرت عبد العزیز بن محمد رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ میں نے اہلِ مدینہ میں سے ایک شخص کو دیکھا جسے محمد بن کیسان کہتے تھے' وہ جمعہ کے دن عصر کی نماز پڑھ کر آتا (ہم حضرت ربیعہ بن ابو عبد الرحمٰن کے پاس بیٹھے ہوتے) وہ نبی کریم ﷺ کی خدمت میں سلام عرض کرتا اور شام تک دعائیں کرتا رہتا۔ حضرت ربیعہ کے پاس بیٹھنے والے کہتے: اسے دیکھو' کیا کر رہا ہے؟ آپ کہتے کہ جانے دو' ہر آدمی کی اپنی اپنی نیت ہوتی ہے۔

ابن عجلان سے کسی امیر نے کہا: تم لمبے کپڑے پہنتے ہو' لمبا خطبہ پڑھتے ہو اور قبر انور پر بہت کثرت سے آتے ہو' اگر اس میں جلد بازی نہ کرو تو نہ آسکو۔

ایک اَدب یہ ہے کہ جب تک آدمی قبر انور کے پاس ہو' نبی کریم ﷺ پر کثرت سے صلوٰۃ و سلام پیش کرتا رہے اور ہر قسم کے ذکروں میں اسے اولیت دے۔

ایک ادب یہ ہے کہ جہاں تک ممکن ہو' یہاں روزے رکھنا غنیمت جانے اگرچہ تھوڑے دن ٹھہرنا ہو۔

ایک ادب یہ بھی ہے کہ مسجد نبوی میں پانچویں وقت نماز باجماعت کی کوشش کرے اور زیادہ سے زیادہ نفل

پڑھے اور کوشش یہ کرے کہ حضور ﷺ کے دور والی مسجد میں ٹھہرے البتہ پہلی صف اگر اس مسجد سے خارج ہو تو یہی بہتر ہوتی ہے۔ اسے چاہیئے کہ جہاں تک ممکن ہو مسجد سے باہر نہ نکلے ہاں کوئی ضرورت ہو یا کوئی مصلحت ہو تو الگ بات ہے، بہرحال مسجد میں رہنا غنیمت جانے اور جب بھی مسجد میں داخل ہو، نئے سرے سے اعتکاف کی نیت کرے، کسی نے کہا ہے:

> ”اگر تمہیں قربِ قبرِ انور حاصل ہو ہی گیا ہے تو اس سے خوب فائدہ اُٹھاؤ اور جہاں تک ہو سکے ثواب اکٹھا کرو۔“

ابنِ عساکر لکھتے ہیں کہ مسجد میں رات گذارنے کی حرص کرے اگرچہ ایک رات ہی گذارے، رات بھر ذکر کرتا رہے، دعائیں کرے، تلاوتِ قرآن کرے، بارگاہِ الٰہی میں گڑگڑائے اور جو انعامات اللہ نے فرمائے ہیں ان پر حمد و شکر کرتا رہے، مسجد میں قرآن ختم کرنے کی بھی کوشش کرے کیونکہ اس بارے میں روایت ملتی ہے۔

حضرت ابو مخلد لکھتے ہیں کہ اکابر حضرات تینوں مسجدوں کی طرف جاتے تو ان سے نکلنے سے قبل ان میں ختم قرآن کرتے یعنی مسجدِ حرام، مسجد رسولِ اکرم ﷺ اور مسجدِ بیت المقدس۔

ایک ادب یہ ہے کہ کسی بھی حالت میں نماز کے علاوہ قبرِ مقدس کی طرف پیٹھ نہ کرے نیز اپنے قول و فعل میں شریعت کے آداب پر قائم رہے چنانچہ شیخ عز الدین بن سلام کہتے ہیں کہ جب تم نماز کا ارادہ کرو تو حجرۂ مبارکہ کی طرف پیٹھ نہ پھیرو اور نہ ہی اسے سامنے رکھو کیونکہ حضور ﷺ کا ادب آپ کے وصال کے بعد بھی ویسا ہی ہے جیسے آپ کی زندگی میں لازم تھا، جو تم آپ کی زندگی میں کرنا مناسب جانتے ہو، وہی کچھ آپ کے وصال کے بعد بھی کرتے رہو چنانچہ احترام کرو، سر جھکائے رکھو، جھگڑا نہ کرو، آپ کے یہاں بیکار باتیں نہ کرو لیکن اگر یہ ممکن نہ ہو تو واپس آ جانا ہی بہتر ہے۔

یہ بھی ادب میں داخل ہے کہ جاہلوں والے اس کام سے پرہیز کرو جو وہ صیحانی کھجوریں کھا کر گٹھلیاں مسجد ہی میں پھینک کر کرتے ہیں۔

ایک ادب یہ بھی ہے کہ ہمیشہ حجرۂ مبارکہ کو دیکھتا رہے کیونکہ خانہ کعبہ پر قیاس کرتے ہوئے یہ بھی ایک عبادت ہے۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ مدینہ میں ٹھہرنے والے کے لئے مناسب یہ ہے کہ جب تک مسجد میں ہو، مسلسل حجرۂ مبارکہ کی طرف دیکھتا رہے اور جب مسجد سے باہر ہو تو ڈرتے کانپتے گنبدِ خضریٰ کو دیکھتا رہے۔

علامہ نووی رحمہ اللہ کے مطابق یہ بھی ادب ہے کہ روزانہ بقیع کی طرف جانا مستحب شمار کرے اور یہ کام حضور ﷺ پر سلام پیش کرنے کے بعد کرے اور جب بقیع پہنچے تو یوں کہے:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ اَنْتُمُ السَّابِقُوْنَ وَ اِنَّا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَا حِقُوْنَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاَهْلِ بَقِيْعِ الْغَرْقَدِ اَللّٰهُمَّ لَا تُجْرِمْنَا اَجْرَهُمْ وَلَا تَفْتِنَّا بَعْدَهُمْ وَ اغْفِرْلَنَا وَلَهُمْ ۝

یہ اس کا خلاصہ ہے جو اس سلسلے میں بیان ہوا ہے، قاضی حسین نے اس میں یہ اضافہ کیا ہے:

اَللّٰھُمَّ رَبَّ ھٰذِہِ الْاَجْسَادِ الْبَالِیَۃِ وَ الْعِظَامِ النَّخِرَۃِ الَّتِیْ خَرَجَتْ مِنَ الدُّنْیَا وَ ھِیَ بِکَ مُؤْمِنَۃٌ اَدْخِلْ عَلَیْھَا رَوْحًا مِّنْکَ وَ سَلَامًا مِّنِّیْ اَللّٰھُمَّ بَرِّدْ مَضَا جِعَھُمْ عَلَیْھِمْ وَ اغْفِرْلَھُمْ ۝

اس کے بعد بقیع شریف میں دکھائی دینے والی قبروں کی زیارت کرے جیسے حضورﷺ کے لخت جگر حضرت ابراہیم رضی اللہ تعالیٰ عنہ، حضرت عثمان، حضرت عباس، حضرت حسن بن علی، حضرت علی بن حسین، حضرت محمد بن علی اور حضرت جعفر بن محمد وغیرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم کی قبریں ہیں (لیکن آج کل سعودی حکومت نے کسی مزار کا نشان باقی نہ چھوڑا، انا للہ وانا الیہ راجعون) اور پھر زیارت کرتے ہوئے آخر میں حضورﷺ کی پھوپھی حضرت صفیہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی قبر انور کی زیارت کرے۔

علامہ فضل الدین بن قاضی نصیر الدین غوری رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ جب بقیع شریف کی طرف جانے کا ارادہ کرے تو شہر کے دروازے سے نکل کر حضرت عباس بن مطلب اور حضرت حسن بن علی رضی اللہ تعالیٰ عنہم کی مبارک قبروں کی طرف آئے۔

پھر انہوں نے باقی قبروں کی طرف آنے کا ذکر کیا اور کہا کہ: بقیع کی زیارات ختم کرتے وقت آخر میں حضورﷺ کی پھوپھی حضرت صفیہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے مزار انور پر آئے۔

ان روایات سے پتہ چلتا ہے کہ حضرت سیدنا عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ اور ساتھ ہی حضرت حسن رضی اللہ تعالیٰ عنہ وغیرہ کی زیارت سے ابتداء کرے اور شاید یہ اس لئے کہا ہے کہ شہر سے نکلنے والے کے سامنے سب سے پہلے یہی قبریں آتی ہیں کیونکہ یہ اس کی دائیں طرف آتی ہیں تو ان کو سلام کہے بغیر آگے گذر جانا ظلم بنتا ہے اور جب وہ اس راستے پر چلے تو جہاں جہاں سے گذرے، سلام عرض کرتا جائے اور جب وہ واپس آئے گا تو حضرت صفیہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے مزار پر پہنچے اور زیارت یہاں ختم کرے۔

علامہ برھان بن فرحون کہتے ہیں کہ سب سے پہلے آنے والا مزار مبارک حضرت سیدنا عثمان بن عفان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا ہے، اسے عظمت حاصل ہے کیونکہ وہ حضرت ابوبکر و عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے بعد لوگوں میں سے افضل تھے۔ وہ کہتے ہیں، کچھ حضرات نے حضرت ابراہیم بن رسول اللہﷺ و رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے مزار سے ابتداء کرنے کا کہا ہے۔ انتہی۔

## زیارت کہاں سے شروع کرے؟

اس بارے میں تین آراء ملتی ہیں اور پہلے بتایا جا چکا ہے کہ حضرت اسماعیل بن جعفر صادق رضی اللہ تعالیٰ عنہما کا مزار مبارک حضرت عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے مزار کی غربی جانب ہے البتہ وہ مدینہ کی حفاظتی دیوار میں آ چکا ہے جبکہ

بقیع کے تمام مزارات حفاظتی دیوار سے باہر ہیں چنانچہ زیارت کرنے والا جب واپس آئے تو آخر میں اس کی زیارت کرے، پھر حضرت مالک بن سنان رضی اللہ تعالیٰ عنہ اور نفسِ زکیہ کی زیارت کرے کیونکہ یہ دونوں بقیع میں نہیں ہیں۔

یہ بھی آداب میں داخل ہے کہ شہداءِ احد کی قبروں پر جانا مستحب جانے۔ علامہ نووی وغیرہ کہتے ہیں کہ اس کے لئے جمعرات کا دن افضل ہوتا ہے۔

میں بتاتا چلوں کہ یہ خصوصیتِ جمعرات مجھے کہیں نہیں ملی، پھر میں نے امام غزالی کی الاحیاء کے اندر زیارتِ قبور کے بیان میں دیکھا تو انہوں نے لکھا کہ حضرت محمد بن واسع رحمہ اللہ جمعہ کے دن زیارت کو جاتے، اس پر ان سے کہا گیا کہ آپ اسے اتوار تک پیچھے لے جائیں تو بہتر ہے، انہوں نے کہا: مجھ تک یہ روایت پہنچی ہے کہ فوت شدہ لوگ جمعہ، ایک دن پہلے اور ایک دن بعد زائرین کو پہچانتے ہیں۔ انتہٰی۔ اور جب جمعہ کے دن جلدی کی ضرورت ہوتی ہے شہداء کی قبریں دور ہوتی ہیں اور ہفتہ کو قباء کی طرف جانا ہوتا ہے لہٰذا اس لئے جمعرات کا دن خاص ہو گیا اور حضور ﷺ کے چچا جان سے شروع کرے، مسجد نبوی میں نمازِ صبح کے بعد ادھر نکل جائے تا کہ واپس آ کر وہاں نمازِ ظہر باجماعت پڑھ سکے۔

حضرت کمال بن ہمام حنفی رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ خود احد پہاڑ کی بھی زیارت کرے کیونکہ صحیح حدیث میں آتا ہے کہ: اُحد وہ پہاڑ ہے جو ہم سے محبت رکھتا ہے اور ہم اس سے محبت رکھتے ہیں۔

یہ بھی آداب میں سے ایک بہت ضروری ادب ہے کہ مسجدِ قباء کو جائے، بہتر یہ ہے کہ ہفتہ کو جائے، قربِ الٰہی کے لئے اس کی زیارت کرے اور اس میں نفل پڑھے اور جاتے وقت وضو کر کے جائے، وضو اتنا دیر سے نہ کرے کہ وہاں پہنچ ہی جائے۔

پھر یہ بھی ایک ادب ہے کہ باقی مسجدوں اور حضور ﷺ سے تعلق رکھنے والے مدینہ میں آثار کی زیارت کو جائے جن کی معیّن جگہ کا پتہ ہو یا ان کی جانب کا علم ہو اور یونہی ان کنوؤں کی زیارت کے لئے جائے جن سے آپ نے پانی پیا تھا، وضو فرمایا تھا یا پھر غسل کیا تھا، بطور تبرک ان کا استعمال کرے۔ شافعی حضرات کی ایک جماعت نے یہ سب کچھ مستحب لکھا ہے کیونکہ حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما ان مقامات پر نفل پڑھتے، وہاں ٹھہرتے اور وہاں سے گذرتے جہاں حضور ﷺ داخل ہوئے تھے یا کوئی اور کام کیا تھا۔

حضرت مالک رحمہ اللہ نے حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی پیروی میں جو کچھ اس کے خلاف نقل کیا ہے تو ان کے پاس حضرت معرور بن سوید رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی یہ روایت ہے کہ وہ ایک حج کے موقع پر حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ہمراہ گئے اور جب حج سے واپس آئے تو لوگوں کو ایک مسجد کی طرف جاتے دیکھا۔ آپ نے پوچھا، یہ کیا کر رہے ہو؟ انہوں نے کہا، یہ وہ مسجد ہے جہاں رسول اللہ ﷺ نے نماز پڑھی تھی، آپ نے فرمایا کہ تم سے پہلے اہلِ کتاب نے انبیاء علیہم السلام کے آثار کو متبرک جان لیا تھا لہٰذا اگر نماز کا وقت آ جائے تو یہاں نماز پڑھ لیا کرو ورنہ آگے چلتے جاؤ۔

علامہ قاضی عیاض نے شفاء شریف میں لکھا ہے: حضور ﷺ کی تعظیم اور بڑی سعادت اسی میں ہے کہ آپ کی

تمام اشیاء کو عظیم سمجھے، ہر جگہ کا احترام کرے اور ان چیزوں کا بھی احترام کرے جنہیں حضور ﷺ نے ہاتھ لگایا تھا۔ انتہی۔

میں کہتا ہوں کہ یہ مقصد اسی صورت میں حاصل ہو سکتا ہے کہ ان کی زیارت کرے اور وہاں جائے۔

علامہ خلیل مالکی رحمہ اللہ نے اپنی ''منسک'' میں زیارت بقیع اور مسجد قباء وغیرہ کی زیارت کو مستحب لکھا ہے، پھر لکھتے ہیں: یہ اس وقت ہے جب اکثر وہ مدینہ پاک میں مقیم رہے ورنہ آپ کے پاس ہی زیادہ سے زیادہ وقت گذارنا زیادہ بہتر ہے چنانچہ ابن ابی جمرہ رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ میں جب مسجدِ مدینہ میں داخل ہوا تو اتنی دیر ٹھہرا جتنا نماز میں بیٹھتے ہیں اور وہاں ٹھہرا رہا حتیٰ کہ سوار چل پڑا، میں بقیع وغیرہ کی طرف نہیں گیا اور نہ ہی حضور ﷺ کے علاوہ کسی اور کی زیارت کی، میرے دل میں کھٹکا ہوا کہ بقیع کی طرف جاؤں چنانچہ پھر میں نے سوچا کہ کہاں جاؤں؟ یہ اللہ کا دروازہ ہے جو مانگنے اور گڑگڑانے والوں کے لئے کھلا ہے، اسے چھوڑ کر کہیں اور جانے کی ضرورت نہیں۔

انہی آداب میں سے یہ بھی ہے کہ جب تک مدینہ میں ہو، ذہن میں مدینہ کی عظمت کو سمائے رکھے کیونکہ یہ وہ مقدس شہر ہے جسے اللہ تعالیٰ نے اپنے خاص نبی ﷺ کے لئے ان کی زندگی اور وصال کے بعد پسند فرما رکھا ہے، ذہن میں یہ بات رکھے کہ حضور ﷺ اس میں چلتے پھرتے رہا کرتے تھے، آپ کو اس سے محبت تھی، یہیں حضرت جبریل علیہ السلام وحی لے کر آتے رہے چنانچہ مدینہ سے محبت رکھے، اس کے مقامات، وادیوں اور پہاڑوں سے محبت رکھے اور خصوصاً ان سے محبت رکھے جن سے خود آپ نے محبت کا اظہار فرمایا۔

انہی آداب میں سے یہ بھی ہے کہ جب تک پیدل چل سکتا ہو، سواری نہ کرے بلکہ پیدل چلنے کو اوّلیت دے جیسے امام مالک نے بیان فرمایا ہے کیونکہ وہ یہاں سواری نہیں کیا کرتے تھے اور کہا کرتے تھے مجھے ڈر رہتا ہے کہ سواری کا پاؤں کہیں اس جگہ نہ پڑ جائے جہاں حضور ﷺ چلے تھے۔

امام شافعی رحمہ اللہ سے ایک روایت ہے، وہ کہتے ہیں کہ میں نے حضرت مالک رحمہ اللہ کے گھر کے دروازے پر خراسان اور مصر کے خوبصورت گھوڑے دیکھے، میں نے ان سے کہا: یہ کتنے خوبصورت ہیں، انہوں نے کہا کہ اے ابو عبد اللہ! یہ میں آپ کو بطور ہدیہ پیش کرتا ہوں۔ میں نے کہا آپ ان میں سے ایک چوپایہ رکھ لیں کہ اس پر سواری کر سکیں۔ انہوں نے کہا، میں اللہ سے اس بارے میں حیاء کرتا ہوں کہ رسول اکرم ﷺ کی تربت پاک کو چوپائے کے پاؤں سے لتاڑوں۔

انہی میں سے یہ بھی ہے کہ اہلِ مدینہ، اس میں رہنے والے مجاوروں، نوکروں چاکروں سے محبت رکھے اور ان کی تعظیم کرے خصوصاً علماء، صلحاء، اشراف، فقراء اور حجرۂ مبارکہ کی خدمت کرنے والوں سے پیار کرے۔ علامہ مجد کہتے ہیں کہ یونہی یہاں کے عام و خاص، بڑوں اور چھوٹوں، زراعت پیشہ لوگوں، دیہاتیوں اور شہریوں سے محبت رکھے، یہ محبت ہر ایک کے حال، رتبہ، رشتہ داری اور قبرِ رسول اللہ ﷺ سے قرب کی بناء پر ہونی چاہئے اور یہ اس لئے کہ انہیں حضور ﷺ کا پڑوسی ہونے کا شرف حاصل ہے، ان میں برائی خواہ کتنی ہی کیوں نہ پائی جائے، ہمسائیگی کا لفظ ان سے الگ نہیں کیا جا سکتا، اس

ہمسائے کے لئے حضور ﷺ کے یہ الفاظ عام ہیں، ”جبرائیل مجھے ہمسائے کے بارے میں زور دیتے رہے۔“ آپ نے کسی خاص قسم کے پڑوسی کے بارے میں یہ نہیں فرمایا چنانچہ اگر کوئی شخص کسی اہلِ مدینہ کے بدعتی اور اتباع نہ کرنے کو دلیل بنا کر پیش کرے تو اس کی عزت افزائی میں فرق نہیں کیا جائے کیونکہ پڑوسی کہلانے سے اسے روکا نہیں جا سکتا اگرچہ وہ ظالم ہو اور نہ ہی یہاں کی رہائش کا شرف ان سے زائل ہو سکتا ہے' اس کے بارے میں یہ گمان رکھنے کی ضرورت ہے کہ اس کا خاتمہ بالخیر ہو گا اور ظاہری ہمسائیگی کی وجہ سے اسے برکت حاصل ہو گی چنانچہ اس شعر پر غور کر لیجئے:

”طیبہ کے اردگرد رہنے والو! تم میں سے ہر ایک حبیب کی وجہ سے حبیب و محبوب ہے۔“

انہی آداب میں یہ داخل ہے کہ ان پر ممکن حد تک صدقہ کرے کیونکہ یہ مستحب ہے جیسے نووی اور ابن عساکر نے ذکر کیا ہے' پھر پہلے گذر چکا ہے کہ مدینہ میں صدقہ کا ثواب دوگنا ملتا ہے' اس سلسلہ میں آپ کے رشتہ داروں کو کچھ زیادہ دے کیونکہ حدیث زید بن ارقم رضی اللہ تعالیٰ عنہ میں ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا: ”میں تمہیں اپنے رشتہ داروں کے بارے میں تاکید کر رہا ہوں۔“ حضرت ابوبکر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا کہ حضرت محمد ﷺ کے اہلِ بیت کا دھیان رکھا کرو اور وہ اس لئے کہ وہ آپ کی آل ہیں۔“

یہ بھی ایک ادب ہے کہ مدینہ کا پڑوسی بن کر رہے اور ہمت کے مطابق ادب و آداب پیشِ نظر رکھے۔

یہ بھی ادب ہے کہ ہمیشہ خوش دل رہے کیونکہ اسے نبی کریم ﷺ کی بارگاہ میں حاضری کا موقع ملا ہوتا ہے اور پھر اس نعمت کے شکرانے پر حسبِ توفیق کثرت سے دعائیں کرتا رہے اور اس میں آداب کا خیال رکھے اور پھر اس بارے میں اللہ کی طرف دھیان رکھے کہ وہ اس حاضری میں ہونے والی کوتاہیوں سے درگزر فرما دے اور یہ ذہن میں رکھے کہ سلف صالحین کے مقابلے میں اس کے آداب و اعمال کم درجہ رکھتے ہیں نیز ان اکابر کے حالات' صفات اور آداب میں غور و فکر کرتا رہے۔

یہ بھی ضروری ادب ہے کہ جب تک اس پاکیزہ مقام پر ٹھہرا ہوا ہے اپنے آپ پر خوف' ڈانٹ اور اللہ رسول کی عظمت طاری رکھے' عاجزی اختیار کرے اور یہاں اپنی آواز کو پست رکھے' اس کے پیش نظر یہ آیت ہونی چاہئے:

اِنَّ الَّذِیۡنَ یَغُضُّوۡنَ اَصۡوَاتَہُمۡ عِنۡدَ رَسُوۡلِ اللّٰہِ اُولٰٓئِکَ الَّذِیۡنَ امۡتَحَنَ اللّٰہُ قُلُوۡبَہُمۡ لِلتَّقۡوٰی لَہُمۡ مَّغۡفِرَۃٌ وَّ اَجۡرٌ کَرِیۡمٌ○

صحیح مسلم شریف میں حضرت انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ بتاتے ہیں کہ جب یہ آیت نازل ہوئی:

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَرۡفَعُوۡۤا اَصۡوَاتَکُمۡ فَوۡقَ صَوۡتِ النَّبِیِّ تا وَ اَنۡتُمۡ لَا تَشۡعُرُوۡنَ○

تو حضرت ثابت بن قیس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہنے لگے: بخدا میں حضور ﷺ کے ہاں آواز بلند کرتا ہوں اور لگتا ہے کہ مجھی پر اللہ تعالیٰ ناراض ہوا ہے چنانچہ وہ سخت غمگین ہوئے اور ان کا رنگ پیلا پڑ گیا۔

حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں کہ حضور ﷺ نے انہیں آتے نہ دیکھا تو ان کے بارے میں پوچھا:

عرض کی گئی، یا رسول اللہ! وہ کہتے ہیں، مجھے ڈر ہے کہ کہیں دوزخی نہ بن جاؤں۔ حضرت انس کہتے ہیں کہ اس کے بعد ہم انہیں اپنے درمیان ایک جنتی شخص کے طور پر دیکھتے تھے۔

حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں کہ جب یہ آیت نازل ہوئی اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ تو میں نے قسم کھالی کہ میں جب بھی رسول اللہ ﷺ سے بات کروں گا، راز دار بھائی کی طرح کروں گا۔

یہ ادب بھی ضروری ہے کہ جب تک مدینہ پاک میں موجود ہے ممکن حد تک مختلف قسم کے بھلائی کے کام انجام دیتا رہے، مریضوں کی عیادت کرے، جنازوں کے ہمراہ چلے، ضعیفوں کی امداد کرے، غمزدہ لوگوں کے غم دور کرے، مدینہ میں رہنے والوں اور باہر سے آنے والوں سے اچھا برتاؤ کرے، زیارت کرنے والوں کی عزت کرے اور مدینے کے فقراء سے تعاون کرے خواہ انہیں ایک لقمہ کھلائے، ایک کھجور کھلائے اور ممکن ہو تو پانی کا ایک گھونٹ ہی پلائے۔ ایسے بھلائی کے کاموں کا دھیان رکھے۔

انہی آداب میں سے ہے کہ مدینہ کے فقراء و مساکین کو اس بات میں تنگی نہ دے کہ صدقات وغیرہ وصول کرتا پھرے، ہاں شدید ضرورت پڑے تو ضرورت کے مطابق وصول کرے اور نہ ہی کوئی دنیوی فائدہ اُٹھانے کی کوشش کرے یعنی وہاں امامت، اذان، تدریس، ختم قرآن کر کے فائدہ نہ اُٹھائے، نہ ہی حرم میں ایسا کوئی اور فائدہ اُٹھائے، ہاں خلوصِ نیت سے ایسے کام کر سکتا ہے یا اس صورت میں کر سکتا ہے کہ بہت عاجز ہو جائے چنانچہ ایسی صورت میں صدقات وغیرہ ضرورت کے مطابق وصول کر سکتا ہے۔

یہ ادب بھی پیشِ نظر رکھے کہ جب واپسی کا ارادہ ہو اور اپنے وطن وغیرہ کو آنا چاہے تو علامہ نووی کے مطابق مستحب یہ ہے کہ مسجد نبوی میں دو رکعت نفل پڑھے، یہ نفل مصلاّے نبی کے مقام پر پڑھے یا اس کے قریب کسی ایسی جگہ پڑھے جو ریاض الجنہ میں شامل ہو پھر حمد الٰہی بجا لائے، حضور ﷺ پر درود و سلام پڑھے اور پسند کے مطابق یوں دعائیں کرے:

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ فِيْ سَفَرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَ التَّقْوٰى وَ مِنَ الْعَمَلِ مَا تُحِبُّ وَ تَرْضٰى، اَللّٰهُمَّ كُنْ لَّنَا صَاحِبًا فِيْ سَفَرِنَا وَ خَلِيْفَةً عَلٰى اَهْلِنَا، اَللّٰهُمَّ ذَلِّلْ لَّنَا صُعُوْبَةَ سَفَرِنَا وَ اطْوِعَنَّا بُعْدَهٗ○ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ مِنْ وَّعْثَاءِ السَّفَرِ وَ كَاٰبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِي الْاَهْلِ وَ الْمَالِ○ اَللّٰهُمَّ اَصْحِبْنَا بِنُصْحٍ وَ اقْبِلْنَا بِذِمَّةٍ اَللّٰهُمَّ اكْفِنَا مَا اَهَمَّنَا وَمَا لَا نَهْتَمُّ لَهٗ وَ ارْجِعْنَا سَالِمِيْنَ مَعَ الْقُبُوْلِ وَ الْمَغْفِرَةِ وَ الرِّضْوَانِ وَ لَا تَجْعَلْهُ اٰخِرَ الْعَهْدِ بِهٰذَا الْمَحَلِّ الشَّرِيْفِ○

اس کے بعد وہی دعا اور سلام دوبارہ ادا کرے جو زیارت کے بیان میں آ چکا ہے اور پھر یوں کہے:

اَللّٰھُمَّ لَا تَجْعَلْ ھٰذَا اٰخِرَ الْعَھْدِ بِحَرَمِ رَسُوْلِكَ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ وَ حَضْرَتِہِ الشَّرِیْفَةِ وَ یَسِّرْ لِیْ لِلْعَوْدِ اِلَی الْحَرَمَیْنِ سَبِیْلًا سَھْلَةً وَ ارْزُقْنِی الْعَفْوَ وَ الْعَافِیَةَ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ ۝

علامہ کرمانی رحمہ اللہ کہتے ہیں کہ جب واپسی کا ارادہ کرے تو مستحب یہ ہے کہ قبرِ انور کے پاس آئے اور سلام و دعاء کرنے کے بعد یوں عرض کرے:

وَدَّعْنَاكَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ غَیْرَ مُوَدَّعٍ وَّ سَامِحِیْنَ بِفُرْقَتِكَ نَسْأَلُ اللّٰہَ تَعَالٰی اَنْ لَّا یَقْطَعَ اٰثَارَنَا مِنْ زِیَارَةِ حَرَمِكَ وَ اَنْ یُّعِیْدَنَا سَالِمِیْنَ غَانِمِیْنَ اِلٰی اَوْطَانِنَا وَ اَنْ یُّبَارِكَ لَنَا فِیْمَا وَھَبَ لَنَا وَ اَنْ یَّرْزُقَنَا الشُّکْرَ عَلٰی ذٰلِكَ اَللّٰھُمَّ لَا تَجْعَلْ ھٰذَا اٰخِرَ الْعَھْدِ مِنْ زِیَارَةِ قَبْرِ نَبِیِّكَ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ ۝

میں کہتا ہوں کہ یہ اس سلسلے میں بالکل واضح ہے کہ نبی کریم ﷺ سے الوداع ہونے کو مسجد میں دو رکعتیں پڑھنے سے پہلے رکھے جبکہ ابو سلیمان داؤد شاذلی مالکی رحمہ اللہ نے اپنی کتاب النیات و الانتصار میں وضاحت کی ہے کہ حضور ﷺ سے الوداع ہونے سے پہلے مسجد میں نفل پڑھے، اس سلسلے میں اصل یہ ہے، حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ بتاتے ہیں کہ نبی کریم ﷺ جب بھی کہیں ٹھہرا کرتے تو وہاں سے الوداع ہوتے وقت دو نفل پڑھا کرتے تھے۔

انہی آداب میں سے ایک یہ بھی ہے کہ اس کے بعد وہ سیدھے رُخ واپس ہو اور پچھلے پاؤں نہ جائے واپس جاتے وقت پُرغم ہو کہ حضور ﷺ کے ہاں سے جدا ہو رہا ہے، وہ اپنی یہاں کی کوتاہیوں پر افسوس کرے، یہاں محبت کرنے والوں کے آنسو نہیں رُکتے، عشق کے زور سے چھلکتے چلے جاتے ہیں۔

یہ بھی ادب ہے کہ جاتے وقت اپنے ساتھ مدینے سے کوئی تحفہ لے کر جائے تاکہ اس کے گھر والے اور جان پہچان والے لے کر خوش ہوں لیکن اس سلسلے میں تکلف سے کام نہ لے خصوصاً مدینہ کے پھل اور کنوؤں کا پانی لے کر جائے لیکن حرم مدینہ کی مٹی لے کر نہ جائے، یونہی مٹی اور پتھر کے لوٹے اور کوزے لے کر نہ جائے کیونکہ یہ ناجائز ہے۔

یہ ادب بھی ہے کہ مدینہ سے نکلتے وقت کچھ نہ کچھ صدقہ کرے اور نیت میں تقویٰ و پرہیزگاری رکھے اور اسی بناء پر یہ تیاری رکھے کہ قیامت کے دن اللہ اور اس کے رسول سے ملاقات ہوگی اور پھر واپس آ کر گناہ کرنے سے مکمل طور پر پرہیز رکھے کیونکہ دوبارہ گناہ کرنا مرض سے بدتر ہوتا ہے نیز یہاں رہ کر اللہ سے کئے گئے عہد پورا کرنے کی کوشش کرے، خیانت سے کام نہ لے کیونکہ جو عہد توڑ دیتا ہے اس کا بوجھ اسی پر ہوتا ہے اور جو اللہ سے کیا عہد پورا کرتا ہے تو جلد اللہ اسے عظیم اجر عطا فرمائے گا۔

پھر یہ بھی ادب ہے کہ دائمی طور پر مزارِ انور دیکھنے کا شوق رکھے' ان عظیم آثار کو دیکھنے کی خواہش رکھے' اس کا دل ان دیار کی طرف آنے کے لئے دھڑکتا رہے اور اس بارے جو آثار اور اخبار رہتے ہیں ان میں شوق سے غور و فکر کرتا رہے اور نفیس اشعار پڑھتا رہے۔

الٰہی! ہمیں اپنی رضا کی خیرات عطا فرما' ہمیں اپنے حفظ و امان میں رکھ' ہم پر احسان فرما اور اپنے حبیب مصطفےٰ ﷺ کا پڑوس عطا فرما' اس دنیا میں بھی اور آخرت میں بھی' ہم آپ کی سنت پر عمل پیرا ہو کر اپنی آنکھیں ٹھنڈی کر سکیں' ہمارے دلوں کو راہِ راست پر رکھ' انہیں بگڑ جانے سے محفوظ فرما' ہمیں فتنوں اور آزمائشوں سے بچائے رکھ' اس دنیا کی حیاتی میں آنے والی کدورتوں سے نجات عطا فرما' ہمیں توفیق عطا فرما کہ اپنے قول و فعل میں تیرے احکام پر عمل کرتے رہیں' ہماری توبہ قبول فرما کیونکہ تو بہت توبہ قبول فرمانے والا اور مہربان ہے' ہمیں اپنے جود و کرم سے نواز دے کیونکہ تو ہی جود و کرم فرمانے والا ہے اور یہ کرم ہمارے والدین' ہمارے مشائخ' ہمارے احباب اور تمام مسلمانوں پر فرما' خصوصاً ان پر بھی کرم فرما جو اس کتاب میں مشغول ہوں' ان طالب علموں کو بھی یہ انعامات عطا فرما جو اس کتاب کو دیکھا کریں' اسے اپنی بارگاہ میں قبول فرما اور جنتِ نعیم تک پہنچنے کا ذریعہ بنا اور اسے حسد کرنے والوں سے بچائے رکھ۔

میں مدینہ منورہ میں اس کتاب کی تالیف سے چوبیس جمادی الآخرہ ۸۸۶ھ کو فارغ ہوا اور پھر اس میں وہ حصہ شامل کیا جو نئی عمارت کی شکل میں یہاں بنا ہے' پھر جب رمضان المبارک کو میں مکہ پہنچا تو مجھے پتہ چلا کہ مدینہ منورہ میں آتشزدگی کی وجہ بہت سے مسلمانوں کا نقصان ہو گیا ہے تو اسے میں نے اس کے مقام پر درج کر دیا' عنقریب میں اس تعمیر کا بھی ذکر کروں گا جس کی توقع کی جا رہی ہے انشاء اللہ تعالیٰ۔

پھر حرمِ مکہ میں خانہ کعبہ کے سامنے اس پر نظر ثانی کر کے شوال کے آخر ۸۸۷ھ میں فارغ ہوا اور مدینہ واپس آ کر نئی عمارتوں کو ان کے مقامات پر شامل کر دیا' یہ ۸۸۸ھ کی بات ہے۔

و الحمد للّٰہ وحدہ وصلّی اللّٰہ وسلّم علٰی من لّا نبیّ بعدہ و علٰی 'الہ
الطّیّبین الطّاھرین وصحابتہ الاکرمین' رضوان اللّٰہ علیھم اجمعین○

الحمد للہ کہ وفاء الوفاء شریف کی چوتھی جلد کے ترجمے سے آج مؤرخہ یکم شوال ۱۴۲۷ھ شبِ عید بروز ہفتہ رات ۱۱:۴۵ بجے فارغ ہوا۔ اللہ تعالیٰ اسے قبولیت سے نوازے اور میری اخروی نجات کا سبب بنا دے۔

اس ترجمہ کی تکمیل پر میرے فدایانہ دعائیہ الفاظ ان کریم ترین اساتذہ کرام کے لئے جن کی تعلیم اور روحانی سرپرستی سے میں مشکلات کے باوجود ترجمہ جیسی کٹھن وادی سے گذرا' ان اہم ترین مقبولانِ خدا اور رسول تو سفر آخرت فرما چکے مغفور اللہ مضاجعہم البتہ مشفق ترین ایک استاذ گرامی شیخ الحدیث علامہ ابوالحسنات محمد اشرف سیالوی اطال اللہ برکاتہ بکرمِ خداوندی بأحسن وجوہ خدماتِ دینیہ نبھا رہے' ترتیب تعلیم سے باقی اساتذہ کرام یہ ہیں:

۱۔ فقیہ اعظم حضرت مفتی ابوالخیر الحاج محمد نور اللہ نعیمی، بصیر پور (صاحب فتاویٰ نوریہ و مہتمم دارالعلوم حنفیہ فریدیہ بصیر پور)

۲۔ حضرت علامہ مفتی اعظم پاکستان مفتی محمد حسین نعیمی، مہتمم جامعہ نعیمیہ لاہور۔

۳۔ مفتیٔ اعظم پاکستان حضرت سیّد ابوالبرکات سیّد احمد الوری، شیخ الحدیث حزب الاحناف لاہور۔

دعا ہے کہ اللہ تعالیٰ ان پاک شخصیات کے طفیل زیادہ سے زیادہ ترجموں کی توفیق ارزانی فرمائے۔

اب تک مکمل ترجموں کی تفصیل یوں ہے:

۱۔ احوال القبور (ابن رجب حنبلی) مطبوعہ کرمانوالہ بک شاپ، لاہور۔

۲۔ شرح الصدور (امام سیوطی) مطبوعہ کرمانوالہ بک شاپ، لاہور۔

۳۔ حصن حصین شریف مطبوعہ نوری بک ڈپو، لاہور۔

۴۔ الخلفاء الراشدون (محمد رشید رضا) مطبوعہ ضیاء القرآن پبلی کیشنز، لاہور۔

۵۔ الادب المفرد (امام بخاری) مطبوعہ ادارہ پیغام القرآن، اردو بازار، لاہور۔

۶۔ رسالہ قشیریہ (امام ابوالقاسم قشیری) مطبوعہ ادارہ پیغام القرآن، اردو بازار، لاہور۔

۷۔ اللمع (امام ابونصر سراج) مطبوعہ ادارہ پیغام القرآن، اردو بازار، لاہور۔

۸۔ معجزات النبی صلی اللہ علیہ وسلم (امام ابن کثیر) مطبوعہ ادارہ پیغام القرآن، اردو بازار، لاہور۔

۹۔ (یہ کتاب) وفا الوفاء شریف (امام سہودی) مطبوعہ ادارہ پیغام القرآن، اردو بازار، لاہور۔

۱۰۔ سوانح حیات حضرت علی المرتضیٰ رضی اللہ عنہ (برائے علامہ سیّد عرفان مشہدی، لاہور)

* * *

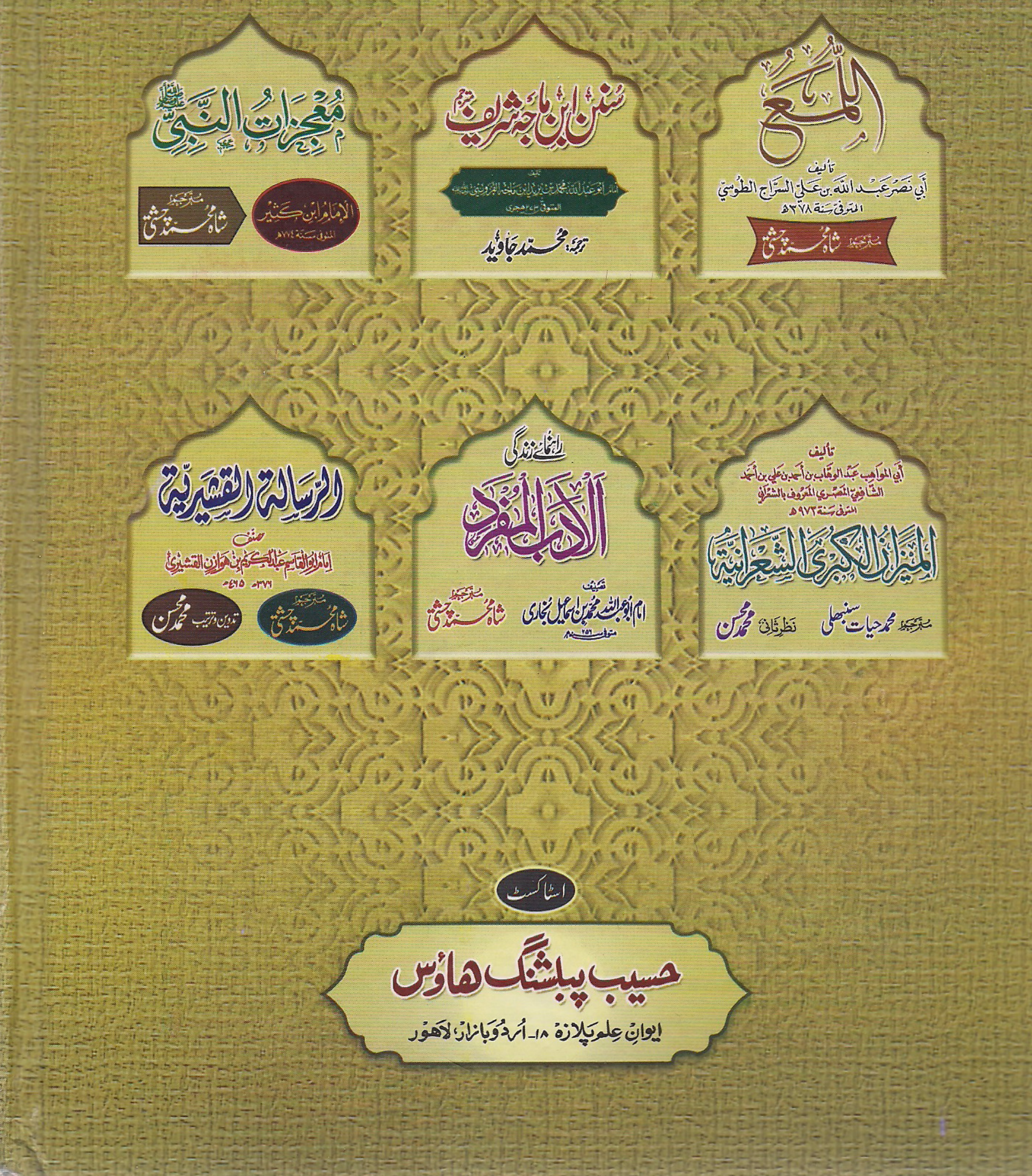

اَللُّمَعُ
تألیف
أبي نصر عبد الله بن علي السرّاج الطوسيّ
المتوفی سنة ۳۷۸ھ
مترجم شاہ محمد چشتی

سُنن ابن ماجہ شریف مترجم
تالیف
امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ القزوینی رحمۃ اللہ
المتوفی ۲۷۳ ہجری
ترجمہ: محمد جاوید

مُعجزاتُ النّبیّ ﷺ
الإمام ابن کثیر
المتوفی سنة ۷۷۴ھ
مترجم شاہ محمد چشتی

تالیف
أبي المواهب عبد الوهّاب بن أحمد بن علي بن أحمد
الشافعي المصري المعروف بالشعراني
المتوفی سنة ۹۷۳ھ
المیزان الکبریٰ الشعرانیة
مترجم محمد حیات سنبھلی
نظرِ ثانی محمد محسن

راہنمائے زندگی
الأدب المفرد
تصنیف
امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری
متوفی سنہ ۲۵۶ھ
مترجم شاہ محمد چشتی

الرسالة القشیریة
مصنف
امام ابو القاسم عبد الکریم بن ہوازن القشیریؒ
۳۷۶ھ - ۴۶۵ھ
مترجم شاہ محمد چشتی
تدوین و ترتیب محمد محسن

اسٹاکسٹ

**حسیب پبلشنگ ہاؤس**
ایوانِ علم پلازہ ۱۸۔ اُردو بازار، لاہور